राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

[सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थांक ७२

मुंहता नैणसीरी ख्यात

[भूतपूर्व मारवाड़ राज्य के महाराजा जसवंतसिंह प्रथम के दीवान मुंहता नैणसी द्वारा राजस्थानी भाषा में लिखित राजस्थान और उससे संबंधित एवं संलग्न गुजरात, सौराष्ट्र और मध्य भारत आदि स्थित भू.पू. राज्यों का मध्यकालीन मूल इतिहास]

भाग ३

सम्पादक

आ. श्री बदरीप्रसाद साकरिया

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

चतुर्थ संस्करण—500 प्रतियाँ | मूल्य—164 ₹

2014

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक–पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

[सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थांक ७२

मुंहता नैणसीरी ख्यात

[भूतपूर्व मारवाड़ राज्य के महाराजा जसवंतसिंह प्रथम के दीवान मुंहता नैणसी द्वारा राजस्थानी भाषा में लिखित राजस्थान और उससे संबंधित एवं संलग्न गुजरात, सौराष्ट्र और मध्य भारत आदि स्थित भू.पू. राज्यों का मध्यकालीन मूल इतिहास]

भाग ३

सम्पादक

आ. श्री बदरीप्रसाद साकरिया

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

चतुर्थ संस्करण–500 प्रतियाँ मूल्य–164 ₹

2014

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक–पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

[सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थांक ७२

मुंहता नैणसीरी ख्यात

[भूतपूर्व मारवाड़ राज्य के महाराजा जसवंतसिंह प्रथम के दीवान मुंहता नैणसी द्वारा राजस्थानी भाषा में लिखित राजस्थान ओर उससे संबंधित एवं संलग्न गुजरात, सौराष्ट्र और मध्य भारत आदि स्थित भू.पू. राज्यों का मध्यकालीन मूल इतिहास]

भाग ३

सम्पादक

आ. श्री बदरीप्रसाद साकरिया

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

प्रथम संस्करण–1964 – 750 प्रतियाँ
द्वितीय संस्करण–1984 – 500 प्रतियाँ
तृतीय संस्करण–1993 – 500 प्रतियाँ
चतुर्थ संस्करण–2014 – 500 प्रतियाँ

मूल्य–164 ₹

2014

निदेशकीय

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला के अन्तर्गत विभिन्न विषयों के अनेक ग्रन्थों का प्रकाशन किया गया है। इसी श्रृंखला में मुंहता नैणसी री ख्यात भाग-3 के तीन संस्करण क्रमशः 1964, 1984 तथा 1993 में प्रकाशित करवाए गए थे।

तृतीय संस्करण की अनुपलब्धता एवं शोधार्थियों के सतत् आग्रह के स्वरूप चतुर्थ संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है कि इस संस्करण के प्रकाशन से शोधार्थियों एवं अध्येताओं को शोध कार्यों हेतु अवश्य लाभ होगा।

निदेशक
राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर

संचालकीय वक्तव्य

मुंहता नैणसी री ख्यात के भाग-१ सन् १९६० ई. में व भाग-२ सन् १९६२ ई. में राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला के क्रमशः ग्रन्थांक ४८ और ६२ के रूप में प्रकाशित हो चुके हैं। अब इस ग्रन्थ का तीसरा भाग ग्रन्थांक ७२ के रूप में प्रकाश में आ रहा है। इस ख्यात में बातों के रूप में अनेक ऐसे ऐतिहासिक आख्यान संकलित हैं जो ऐतिहासिक तथ्यों को प्रकट करने के साथ-साथ अत्यन्त रोचक भी हैं। इन कथानकों में प्रयुक्त राजस्थानी गद्य का आदर्श भी द्रष्टव्य और अध्ययनीय है।

जैसा कि दूसरे भाग के संचालकीय वक्तव्य में सूचित किया गया था कि तीसरे भाग में ग्रन्थगत-नामानुक्रमणिका ओर संपादकीय प्रस्तावना भी प्रकाशित की जावेगी, वह प्रस्तुत ग्रन्थ के कलेवर-विस्तार के भय से इसमें नहीं दी जा रही है। विद्वान् सम्पादक की विस्तृत तथ्य-गर्भित एवं अध्ययनात्मक प्रस्तावना, ग्रन्थगत विशिष्ट ऐतिहासिक व्यक्तियों एवं स्थलों की नामानुक्रमणिका तथा शब्द-कोष आदि का समावेश चतुर्थ भाग में किया जा रहा है, जिसकी यथाशक्य शीघ्रातिशीघ्र प्रकाशित करने का प्रयत्न जारी है। यह सामग्री इतिहास और राजस्थानी भाषा के अनुसंधान-कर्त्ताओं के लिए विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध होगी।

मुहंता नैणसी री ख्यात के इस तृतीय भग के प्रकाशन में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय से 'आधुनिक भारतीय भाषा-विकास-योजना' के अन्तर्गत राजस्थानी भाषा के विकासार्थ सहायता-अनुदान प्राप्त हुआ है, तदर्थ हम भारत सरकार, केन्द्रीय शिक्षा-मंत्रालय के प्रति आभार प्रकट करते हैं।

मुनि जिनविजय
सम्मान्य संचालक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

दि. १६ सितम्बर, १९६४

निदेशकीय

पिछले दो भागों की तरह इस तृतीय भाग की भी ७५० प्रतिया सन् १९६४ में मुद्रित हुई थी। तीनों भागों का पुनर्मुद्रण कराया गया है। यह बात हमें गर्वित अवश्य करती है, किन्तु इस गौरव को प्रदान करने में हमारे पाठकों का भी उतना ही योगदान है। पारखियों तक हमारे प्रकाशन पहुँच रहे हैं। इसी कारण हमारे अनेक अन्य प्रकाशन भी द्वितीय संस्करण की और बढ़ते जा रहे हैं।

प्रूफ–शोधन आदि में विभाग के कनिष्ठ तकनीकी सहायक श्री गिरधरवल्लभ दाधीच एवं पुस्तकालय सहायक श्रीमती गणेशी आत्रेय का पर्याप्त सहयोग रहा; अतः इन्हे धन्यवाद दिया जाना श्रेयस्कर है। जैन प्रिण्टर्स के व्यवस्थापक ने अन्य मुद्रण कार्य की तुलना में हमारे कार्य को जो प्राथमिकता दी उसके लिए हम उन्हें धन्यवाद देना अपना कर्त्तव्य समझते हैं।

पद्मधर पाठक
निदेशक

(द्वि. सं. १९८४)

॥ ॐ शिव ॥

मुंहता नैणसीरी ख्यात

भाग ३री

विषयानुक्रमणिका

मुंहता नैणसीरी ख्यात

भाग ३

वात राव रिणमलजी अर महमंद[रै] आपसमें लड़ाई हुई तै समैरी

महमंद मांडवरो पातस्याह ।

महिपो पमार पहीरा डूंगरसूं नीसरियो सु मांडवरै पातसाहरै पूठ आयो ।[1] ताहरां रांणो कुंभो मांडवरै पातसाह ऊपर आयो ।[2] तद रिणमलजी पण हुतो ।[3] सु पातसाह महिपैनूं राख अर हद ऊपर सांम्हां आयो ।[4] लड़ाई हुई पातसाहसूं । सु पातसाह तो हाथी असवार, ऊपरा लोहरै कोठैमें हुतो ।[5] सु साथ तो सारो ही कांम आयो । ताहरां रिणमलजी जांणियो–बरछी सिलारैसूं काढि मनमें आंणी ज्युं हाथी ऊपर जाऊं ।[6] सु पातसाह मांहै बैठै रिणमलजीरो छोह जांणियो–'जु ईयैरी बरछी आगै कोठो वचणरो नहीं ।'[7] ओ संको राख पातसाह खवासरी ठोड़ बैठो नै खवासनूं आगै बैसांणियो ।[8] तितरै तो रिणमलजी आय बरछीरी दीवी कोठैरै । कोठो फोड़ खवासनूं मारियो ।[9] ताहरां खवास कह्यो–'हजरत ! मैं तो मरा ।' ताहरां उण वैण रिणमलजी सुणियो । ताहरां रिणमलजी जांणियो–'पातसाह वंचियो ।'[10] रिणमलजी पूठा फिर देखैं तो हाथीरी पाछली,

---

1 महिपा पँवार पहीके पहाड़से निकला सो मांडवके बादशाहकी शरणमें आया । 2 तब राणा कुंभा मांडवके बादशाहके ऊपर चढ़ कर आया । 3 तब रिणमलजी भी साथमें थे । 4 बादशाहने महिपेको तो पीछे रख दिया और खुद सीमा ऊपर सामने आया । 5 सो बादशाह तो हाथी पर सवार, परन्तु उसके ऊपर एक लोहेका कोठा था, उसमें बैठा हुआ था । 6 एक बरछीको शस्त्रागारसे (?) निकाल कर सोचा कि हाथी पर आक्रमण कर दूं । 7 सो बादशाहने अंदर बैठे हुए रिणमलजीके क्रोधावेशको भांप लिया कि इसकी बरछीके प्रहारसे कोठा बचनेका नहीं । 8 सो यह भय मान बादशाह तो खवासकी जगह बैठ गया और खवासको आगे बैठा दिया । 9 कोठा फोड़ कर खवासको मार दिया । 10 तब रिणमलजीने उसके शब्द सुने और जाना कि बादशाह बच गया ।

पीठ दियां पातसाह बैठो छै ।[1] नै रिणमलजी रै आखड़ी हुंती जो पूठ दियै ताहरां वार वाहै नहीं ।[2] ताहरां घोड़ो डकाय हाथीरी बराबर आय फेटसूं पातसाहनूं उठाय लियो ।[3] लेनै कनै सिला थी तै ऊपर पटकियो । सु पातसाहरो जीव नीसर गयो । सु पातसाह ईयै विध मारियो ।[4]

पछै राणो कुंभो, रिणमलजी मांडवगढ ऊपर आया । ताहरां भीतरलां पण सांको राखियो ।[5] ताहरां महिपै पमारनूं वां कह्यो–'हमैं म्हांसूं राखियो न जावै ।'[6] ताहरां महिपै कह्यो–'हमैं मोनूं पकड़ मतां देवो ।'[7] ताहरां इहां कह्यो राव रिणमलजीनूं–'म्हे पकड़ न देवां ।'[8] ताहरां रावजी कह्यो-'म्हांनूं देखाळ देवो ।'[9] ताहरां कोटरै दरवाजै फोज आय ऊभी रही । अर महिपो घोड़ै चढि दरवाजैरै डावै कांनी घोड़ै चढियो हीज कूदियो ।[10] जिकै ठोड़सूं कूदियो हुंतो, तिकण ठोड़रो नांम पाखंड कहीजै छै ।[11] पछै गयो । पछै महिपैनूं सिकोतरीरो वर हुओ ।[12]

इति वात महमंद राव रिणमलजी मारियो तै समैरी वात संपूर्ण ।।

।। श्रीरस्तु

---

1 रिणमलजी पीछेकी ओर फिर कर देखते हैं तो हाथी पर पीछेकी ओर पीठ दिए हुए बादशाह बैठा हुआ है । 2 रिणमलजीकी यह प्रतिज्ञा थी कि जो पीठ दे दे तो उस पर वार नहीं करना । 3 तब उन्होंने घोड़ेको लंघवा कर और हाथीके बराबर आकर बरछीकी एक फेटसे बादशाह को उठा लिया । 4 लेकर के पासकी एक सिला पर दे पटका सो उसका तो प्राणांत हो गया । इस प्रकार बादशाह को मार दिया । 5 तब अंदर वालोंको भी भय हुआ 6 अब हमसे तुम नहीं रखे जा सकते । 7 अब मुझे पकड़ कर उनके सुपुर्द नही करना । 8 तब इन्होंने राव रिणमलजी को कहा–'हम महिपेको पकड़ कर आपको नहीं देंगे ।' 9 तब रावजीने कहा 'हमको उसे दिखा दो ।' 10 महिपा घोड़े पर चढ़ कर दरवाजे की बायीं ओर से घोड़े पर चढ़ा हुआ ही कूद गया । 11 जिस जगह से वह कूदा था उस जगहका नाम 'पाखंड' कहा जाता है । 12 बाद में महिपेको सिकोतरी का वरदान मिला था ।

अथ रावल् जगमालजीरी वात

रावळ जगमाल मालावत मेहवै राज करै। त्यांरै महळ चहुवांण वेटा ३[1]। वडो मंडळीक, दूसरो भारमल, तीजो[2] रिणमल। सु पछै जगमालजी वळै गेहलोतै परणिया। ताहरां चहुवांणी रीस कीवी। गांम छोडियो। बेटा ले तलवाड़ै जाय रही मेहवैरै नजीक[3]। तद रजपूतां रावळ जगमालजीनूं ले चहुवांणरै घरे गया। पण चहुवांण मांनी नहीं[4]। तद तलवाड़ैथी चहुवांण पीहर गई बाहड़मेर[5]। लोक साथै घणो हुंतो, सु चहुवांणांरै उजाड़ रोज घणो करै[6]। तद चहुवांण सूजो बाहड़मेररो धणी तिके दीठो–'अै बुरा[7]।' तद कह्यो– 'भांणेज ! और ठोड़ां रहो। थें म्हांरो देस छाडो[8]।' सु अै छाड़ै नहीं[9]।

तद चहुवांण मंडळीकरी घोड़ियांरा पूंछ वाढिया; अर भैंसियांरा मगर तेलसूं बाळिया[10]। तरै ओ किसो मनमें राखि अर आपरै लोकांमें समचो कर अर आपरा मांमासूं चूक कियो[11] सु भूंजाई जीमतां ऊपर मंडळीक जाय पड़ियो। सु सब चहुवांण मारिया। बाहड़मेर कोटड़ो लिया[12]। अर जगमालजीनूं खबर पोहचाई–'जु म्हां ओ कांम

---

1 रावल जगमाल मालावत मेहवेमें राज्य करते हैं। उनकी स्त्री चौहान (रानी) जिससे जगमालजीके तीन पुत्र हुए। 2 तीसरा। 3 जगमालजीने गहलोतोंके यहां दूसरा विवाह किया, जिससे चौहान (रानी) नाराज हो गई। उसने गांव छोड़ दिया। अपने बेटोंको साथमें लेकर मेहवेके नजदीक तिलवाड़ामें जा रही। 4 तब जगमालजीको साथमें लेकर राजपूत लोग चौहान (रानी)के घर उसे मनानेको गये, परंतु चौहानीने नहीं माना। 5 तब चौहानी तिलवाड़ासे अपनी पीहर बाहड़मेर चली गई। 6 साथमें बहुत मनुष्य थे, वे चौहानोंके नित्य बहुत नुकसान करते हैं। 7 बाहड़मेरका स्वामी सूजा चौहान–उसने देखा ये लोग तो बुरे हैं। 8 तब उसने कहा–'भानजों ! तुम लोग दूसरी जगह जा रहो, हमारा देश छोड़ दो। 9 परंतु ये छोड़ते नहीं। 10 तब चौहानोंने मंडलीककी घोड़ियोंके पूंछ काट दिये और भैंसों (भैंसियों)की पीठें गरम तेलसे जला दी। 11 तब इन्होंने (भानजोंने) इस वातको अपने मनमें रखा और अपने आदमियोंको संकेत करके मामाके ऊपर धोखेसे आक्रमण कर दिया। 12 भोजन करते हुए पर मंडलीक जा पड़ा और उसके साथ सब चौहानोंको मार दिया। बाहड़मेर और कोटड़े पर अधिकार कर लिया।

कियो[1] । जगमालजी सुण राजी हुआ[2] । जगमालजी पछै मंडळीक मेहवै राज कियो[3] । भारमल बाहड़मेर राज कियो । रिणमल कोटड़ै राज कियो [4] ।

।। इति रावळ जगमालजीरी वात संपूर्णं ।।

---

1 और इन्होंने जगमालजीको सूचना दी कि हमने यह काम कर दिया है । 2 जगमालजी सुन कर प्रसन्न हुए । 3 जगमालजीके बाद मेहवेमें मंडलीकने राज्य किया । 4 भारमलने बाहड़मेरमें राज्य किया और रिणमलने कोटड़ेमें राज्य किया ।

॥ श्री रांमजी ॥

अथ वात राव जोधाजीरी लिख्यते

राव जोधो काहूनी गाडै वास कियां विराजै[1] । तद नापो सांखलो ईयांरै थको चीतोड़ रांणैजी गोढै हुंतो, सु नापै कहाय म्हेलियो–'जु श्रीरावजी पछै ही कदै राव रिणमलजीरै वैर पधारसो तो आज पधारज्यो[2] ।' तद रावजी तयारी कर असवार हुआ ।

तद पूछियो–'जु मेहवै जावतांनूं वसती कठै-कठै आवसी[3] ?' लोकै वीनती कीवी–'जु, श्रीरावजी ! वसती ठिकांणै थोड़ै छै[4] । पण ठिकांणै आगै सै मोढी मूळवांणीरा गाडा छै[5] ।

तद उठारा चढिया मोढी मूळवांणीरै गाडां आया[6] । मोढीनूं खबर हुई । तद मोढी घणा वांना किया[7], आय उतरिया तद मोढी विचारयो–'परमेश्वर ! राव जोधै सरीखो प्रांहुणों अठै कद-कद आवसी[8] ? भगत किसूं कीजै[9] ?' सु किणहीक साहूकाररी मजीठ अर फळ खांड थांपणूं थकी पड़ी हुती[10] । अर घी गायांरो घणो ही हुतो । तद विचारियो–'जु आ मजीठ अर खांड पछै कद कांम आसी[11] ?' अबै मजीठ खोटी अर मैंदो करायो[12] । घी खांड घात

---

1 राव जोधा काहूनी गांवके पास गाडोंमें घर बना कर रह रहे हैं। 2 उन दिनोंमें नापा सांखला इनकी ओरसे चित्तौड़में राणाजीके पास रहता था। नापाने संदेश भेजा कि 'यदि रावजी (जोधाजी) राव रिणमलके बैरका बदला लेनेको कभी आनेका विचार हो तो आज आ जायँ।' 3 मेहवे जानेके मार्गमें कौन-कौनसे गांव आयेंगे ? 4 लोगोंने अर्ज किया कि रावजी ! 'मार्गमें बस्ती बहुत कम स्थानों पर है ।' 5 परंतु आगे सब जगह (जहां-जहां बस्ती है) मोढी मूलवानीकी गाडा बस्ती है। 6 तब वहांके चढ़े हुए मोढी मूलवानीकी गाडा-बस्तीमें आये। 7 मोढीने बहुत खातिर की। 8 आकर ठहरे तब मोढीने विचार किया कि 'भला परमेश्वर ! राव जोधा जैसा अतिथि यहां कब-कब आयेगा ?' 9 किस भांति इनका आतिथ्य किया जाय ? 10 किसी साहूकारकी मजीठ, सूखा मेवा और खांड उसके यहां गिरवी रखे हुए थे। 11 यह मजीठ और खांड फिर कब काम आयेगी ? 12 अब (तब) मजीठको कूट करके उसका मैंदा बनवाया।

अर सीरो वणायो[1] । कैर-बाटो हुतो तिणरी तरकारियाँ वणाई[2] । भगतरी तैयारी हुई[3] । आंण वीनती कीवी–'श्रीरावजी ! आरोगण तैयार छै[4] ।'

पछै आप सारा लोकांसूं आरोगण पधारिया[5] । त्यां परीसारो हुओ[6] । सारै साथनूं सीरो, तरकारियां, भाजी, इण भांति परीसारो हुओ । लोक जीमियो । आप ही आरोगिया ।[7] रातरी भगत हुई[8] ।

पाछली रात रावजीरो कूच हुओ[9] । परभात हुवो, त्यां सारां ठाकुरां हाथ दीठा[10] । राता-लाल दीसण लागा[11] । तद सारा ठाकुरांरा आप-आप मांहै देखण लागा[12] । त्युं किणी हेक कह्यो[13]– 'जु इण वातरी खबर मोढीनूं पूछायां पड़ै ।' तद रावजी असवार दोय मोढीनूं पूछणनूं म्हेलिया[14] । त्यां मोढी असवार आवता देख सांम्ही आइ कह्यो–'जिकै वई आया सु जांणियो[15] ।' कह्यो–'श्री रावजी रिणमलजीरै वैर पधारै छै सु परमेसरजी थाँनू रंग चाढियो[16] । अर अठै खेती काई न होवै छै सु धांन थोड़ो पाईजै[17] । सु मजीठ पड़ी हुती तियेरो सीरो कियो हुतो । सु परमेसरजी थांनूं रंग चाढियो । श्रीरावजीनूं आसीस कहिज्यो । अर मालम करजो; भोजन थांनै अमृत हुसी[13] ।'

---

1 घृत और खांड डाल कर हलुआ बनवाया । 2 कैर-बाटा था जिसके साग बनवाये । (कैर-बाटा = करीलके कच्चे और ताजे फल) 3 भोजनकी तैयारी हुई । 4 आ करके विनती की, 'श्री रावजी ! भोजन तैयार है ।' 5 तब आप सब लोगोंके साथ भोजन करनेको पधारे । 6 फिर परोसगारी हुई । 7 स्वयं (राव जोधाजी) ने भी भोजन किया । 8 यह भोजनकी तैयारी सब रात्रीको हुई थी । 9 पिछली रातको रावजीने वहांसे कूच कर लिया । 10 ज्योंही प्रभात हुआ तो सभी ठाकुरोंने अपने हाथोंको देखा । 11 एकदम लाल दिखने लगे । 12 तब सभी ठाकुर परस्पर एक दूसरेके हाथोंको देखने लगे । 13 तब किसी एकने कहा । 14 तब रावजीने दो सवारोंको पूछनेके लिये मोढीके पास भेजा । 15 जिसके लिये आये हो सो मैंने जान लिया । 16 उसने कहा– 'श्री रावजी रिणमलजीके वैरका बदला लेनेके लिये जा रहे हैं सो परमेश्वरने तुम पर रंग चढाया है ।' 17 यहां पर खेती नहीं–जैसी होती है अतः धान्य थोड़ा प्राप्त होता है । 18 यह भोजन आपको अमृतके समान होगा ।

यां[1] आय रावजीनूं मालम करी। रावजी सुण बोहत राजी हुवा।

पछै उठारा चढिया सांखला हरभौंरै गांव बैंहगटी आया[2]। हरभौंजी सौंणी हुता[3]। सु हरभौंरो भांणेज जेसो भाटी आपरै गोढै ऊभो हुतो[4], सु हुकम कर भेळो बेसाँणियो[5]। सो सलांम कर भेळो बैठो[6] त्यां हरभौं माथो धूणियो[7]। तद अरज कीवी–'जु रावळै रिजकरो सीरवी ओ हुसी। अर म्हे धरतीरा हीज सीरवी हूस्यां[8]?' रावजी आरोग अर सौंण पूछिया[9]। त्यां हरभौं अरज कीवी–'जु सौंण इसड़ा छै जु आज जितरी धरतीमें श्रीरावजी घोड़ो फेरै इतरी धरती श्री रावजीरा पूत पोतरांनूं हुसी[10]। रावजीरो वडो इकबाल हुसी[11]।' तदी[12] रावजी बोहत राजी हुवा। असवार हुवा। असवार होतां भुंवर ढोल हरभौं कना मांग लियो[13]।

अठारा असवार हुवा सेतरावै रावत लूणेरै पधारिया[14]। रावत लूंणो भली भांत मिळियो नहीं। तैसौं श्री रावजी मन मांहै क्यौंहीक अतराज सा हुवा[15]। त्यां रावतरै महिळ सोनगरी। सो रावजीरै नांनांणै दिसासौं साख हुतो, सु रावजी जुहार कहायो[16]। त्यां श्री रावजीनै भीतर बोलाया। निछरावळां कीवी। अर कह्यो–'बाबा! रिजक, विसायत दीसै छै सु थांहरी छै। भोजन करो। सर्व भलां

---

1 इन्होंने। 2 पीछे वहांसे चढ़े हुए सांखला हरभूके गांव बैंहगटीको आये। 3 हरभूजी शकुनी थे। 4 हरभूका भानजा भाटी जैसा आपके (राव जोधाजीके) पास खड़ा था। 5 सो आज्ञा देकर अपने साथ बैठाया। 6 सो सलाम करके भोजन करनेको साथ बैठ गया। 7 उस समय हरभूने सिर धुना। 8 आपकी सम्पत्तिका भागीदार यह होगा और हम धरतीके ही भागीदार होंगे? 9 रावजीने भोजन करके शकुनका फल पूछा। 10 ये शकुन ऐसे हैं कि आज जितनी धरतीमें रावजी अपना घोड़ा फिरा देंगे उतनी धरती रावजीके पुत्र-पोतोंके अधिकारमें हो जायगी। 11 रावजीका वड़ा प्रताप बढ़ेगा। 12 तब। 13 सवार होते समय हरभूके पास जो भँवर ढोल था वह उससे मांग कर ले लिया। 14 यहांसे सवार हो कर सेतरावा गांवमें रावत लूणाके यहां पधारे। 15 रावत लूणा रावजीसे अच्छी प्रकार नहीं मिला, इससे रावजीके मनमें कुछ नाराजी हुई। 16 रावतकी स्त्री सोनगरी, जिसके साथ रावजीका ननिहालकी ओरसे कुछ सम्बन्ध था सो रावजीने उसे जुहार कहलवाया।

हुसी[1] ।' ताहरां श्री रावजी उतरिया। भगत हुई। आरोगिया। पण मन मांहिलो गुस्सो मिटियो नहीं[2] ।

त्यां रावत लूंणों रावजीसूं सीख कर जाय पोढियो[3] । पाछा सोनगरी जाय महल कुलफ कर लीन्हों[4] । रावजीनै खबर दराई ।[5] श्री रावजी सर्व घोड़ा, विसाइत, माल-मता लूंटी[6] । यां करतां और पण सर्व लोग भोमिया डरिया[7] । आय सलांमी हुवा[8] । अठाहूं असवार हुआ सो विचमें जिके भोमिया हुता सरब सलांमी करी[9] । साथ लिया[10] ।

पछै रूण सांखलांरै पधारिया[11] । सांखला नाळेर ले रावजीरै सांम्हां आया[12] । सांखलो टीकायत रावत कहावतो तिणरी बेटी रावजीनूं परणाई[13] । अर रावजी पण खरा मैंहरवांन हुय व्याह कियो। या खबर रांणोजीनूं जाय पोहती[14] ।

तद नापै सांखलैनै रांणोजी हजूर बुलायो। बुलायनै पूछियो[15]– 'थांहरै काई रावजी दिसिलि खबर आई[16] ?' आगै पूछता तद कहतो घणों सो–'आवण वाळो समांन काई न छै[17]।' अर ईयै वेळा पूछियो तद कह्यो[18]–'जु दीवांण ! वात साची छै। आ खबर म्हारै पण

---

1 उसने श्री रावजीको अंदर बुलवाया, निछरावलें की और कहा–'बाबा ! जो कुछ भी धन-माल और धरती आदि आप देखते हो, वह सब आपका है। भोजन करिये। सब ठीक होगा। 2 तब रावजी ठहर गये। भोजनकी तैयारी हुई, भोजन किया; परंतु मनका क्रोध मिटा नहीं। 3 फिर रावत लूणा तो रावजीसे आज्ञा प्राप्त कर जा सोया। 4 बादमें उसकी पत्नी सोनगरीने जा कर महलके ताला लगा दिया। 5 रावजीको इसकी खबर करवा दी। 6 तब रावजीने सब घोड़े और माल मता एवं सामग्री लूट ली। 7 इस प्रकार करनेसे दूसरे सभी लोग और भोमिये भी डर गये। 8 आधीनता स्वीकार कर और सलामी बन हाजिर हुए। 9 यहांसे चढ़कर चले तो बीचमें जो भोमिये थे उन सभीने सलामी बनना (आधीनता) स्वीकार किया। 10 (उन सबको अपने) साथ लेते गये! 11 फिर रूणमें सांखलों के यहां आये (गये)। 12 (रावजीको अपने यहां आते हुये सुन) सांखले नारियल लेकर रावजीके स्वागतार्थ सामने आये। 13 टीकायत सांखला जो राव कहलाता था, जिसकी बेटी रावजीको व्याही गई। 14 और रावजीने पूर्ण महरबान होकर विवाह किया। यह खबर राणाजीको जा पहुंची। 15 बुलवाकर पूछा। 16 तुम्हारे पास रावजीकी ओरसे कोई खबर आई है क्या ? 17 पहले कभी पूछा जाता तो प्रायः यही कहता–'जो समाचार आने वाले थे (आये हैं) वे सामान्य हैं, कोई विशेष वात नहीं हैं। 18 और इस बार पूछा गया तो उसने कहा।

आई छै ।[1]' इतरो सुणतां दीवांण रै मुंहडैरो रंग फुर गयो ।[2] सांखलै नापै नूं कह्यौ—'किणही भांत सुलह पण हुवै ?'[3] तद नापै अरज करी--'दीवाण सलांमत, राठोडांरै वैररो मांमलो खरो जोरावर छै ।[4] अर वळै वैर ही राव रिणमलरो ।[5] त्यां-त्यां दीवांण खरा डरण लागा। तद नापै अरज कीवी--'जु दीवांण ! वैर जोरावर छै । किणही भांत धरती दीन्हां टळै तो दीवांण ! धरती दीजै ।[6]' आ वात दीवांणरै पण मनमें आई ।[7]

नापै दरबार सौं डेरै आय तुरत रावजी सांम्हां कासीद दोड़ाया । 'जु श्रीरावजी ! अठै बळ काई न छैं। वेगा पधारो सु विध करज्यो ।[8]

पछै श्री रावजीरी फोजां ठोड़-ठोड़ मेवाड़में आय लूंबी[9] । देसरो जळळ जादा दीवांणजीनूं पहुंतो ।[10] दीवांणजीनै फिकर सबळो[11] हुवो । सांखलै नापैनै कह्यो—'जो किणी भांत वात होवै तो भलो हुवै ।'[12]तद नापै अरज कीवो—'श्री दीवांण ! परधानों करावो ।[13] मोटो मांणस मेल्यां वात हुसी ।'[14] तद रांणैजीरा परधांन श्री रावजी कनै[15] आया, अरज कीवी ।[16] 'श्री रावजी ! हूणी हुती सु हुई ।[17] अर ओ तो मुलक ही थांहरो वसायो छै । थे मारस्यो तो कुण राखसी ?[18] तद रावजी बोल्या—'जु आ वात तो खरी पण वैर ही करणा आसांण छै,

---

1 'जी, दीवान ! बात सत्य है । यह खबर मेरे पास भी आई है । 2 इतना सुनते ही दीवांनके चेहरेका रंग फिर गया । 3 किसी भी प्रकार सुलह भी हो सकती है 4 दीवांन दीर्घायु हो ! राठौड़ोंके बैर का मामला निश्चय ही दुष्कर है । 5 और जिसमें बैर भी राव रिणमल का ? 6 यदि धरती (देशका कोई भाग) देनेसे यह संकट किसी भाँति टल जाय तो (मेरी प्रार्थना है कि) धरती दे दीजिये । 7 यह बात दीवान को भी जँच गई । 8 यहां कुछ शक्ति (करामात) नहीं है । आप यहां जल्दी पहुँच जायें ऐसा उपाय करें । 9 आकर फैल गईं । (आकर लूट पाट करने लगी) 10 देशकी इस दुर्दशाका दीवानजी (राणा)को अधिक दुःख हुआ । 11 बहुत ज्यादा । 12 यदि किसी भी प्रकार परस्पर सुलहकी बात हो तो ठीक हो । 13 प्रधान मनुष्योंको भेज कर सुलह की बात करवाइये । 14 बड़े आदमीको भेजने पर ही बात हो सकेगी । 15 पास । 16 अर्ज की । 17 जो बात होनी थी सो हो गई । 18 और यह देश तो आपका ही बसाया हुआ है । आप ही मारेंगे तो फिर रक्षा कौन करेगा ?

वैर छूटणा मुसकल छै।'[1] ताहरां[2] फेर[3] दीवांणरा परधानां अरज कीवी नै रावजीरा उमरावां-परधानांनै कह्यो-'जु, धरती दीवी। अर सरतरी वेढ करो।[4] आ वात दीवांणरा परधानां कबूल कीवी'। पाछा दीवांण पासै आया।[5] दीवांण निपट राजी हुआ।[6] यां करतां फोजां आय निजीक लागी।[7] वीच खेत बुहारांणों।[8] खंभो रोपियो।[9] रावजीरी फोज लड़ाईनूं खरी आगमनी, दीवांणरी फोज पाछमनी।[10] पण श्री रावजीरा परधानांरै मनमें आई-'जु धरती लीजै तो भली छै'। तद परधानां रावजी सौं भांत-भांत अरज कीवी[11]-जु बोल-बंधांणा कर धरती मंडोवर वांसै घातीजै तो भलां छै।[12] लड़ाईमें तो श्री-रावजी आगै ग्रै टिग सकै नहीं।[13] 'धरती लेणरी वात रावजीरै पण मनमें आई।[14] परधानां अरज कीवी-'जु, रावजी हुकम करै तो लड़ाई परी थापां।[15] एक सांवंत रावजीरो ही ऊतरै; अर एक सांवंत वांरो ऊतरै। जिकांरो सांवंत जीपै जिकैरी हीज जीत।'[16] अर परधानै फेर अरज कीवी-'जु रावजी ! थांहरो नक्षत्र इसड़ौ दीसै छै; श्रीरावजी-रो सांमंत जीपसी।'[17] अरज रावजी मांनी।[18] अर दीवांणरा पर-

---

1 यह बात तो ठीक है, बैर करना तो आसान है परंतु बैर मिटना कठिन है। 2 तब। 3 फिर। 4 (बैरके बदलेमें) धरती दी और (अथवा) शर्त्तकी लड़ाई करना स्वीकार। 5 फिर दीवान (राणा)के पास आये। 6 दीवान बहुत प्रसन्न हुए। 7 इतनेमें सेनाएं परस्पर निकट आ लगीं। 8 रणक्षेत्र साफ किया गया। 9 सीमा-स्तम्भ गाड़ा गया। 10 रावजीकी सेना ठीक पूर्वकी ओर और राणाजीकी सेना पश्चिमकी ओर। आगमनी-पाछमनी=(१) आगे-पीछे। (२) पूर्वाभिमुख और अपराभि-मुख। (३) पूर्व-पश्चिम। (४) पूर्वमें और पश्चिममें। 11 तब प्रधान लोगोंने अनेक प्रकार रावजीसे अर्ज की। 12 वचन-बद्ध करवा कर धरती (मेवाड़ राज्यका भू-भाग) ले ली जाय और उसे मंडोर (मारवाड़ राज्य) में मिला दी जाय तो अच्छा है। 13 लड़ाईमें तो श्री रावजीके सम्मुख ये (मेवाड़के महाराणा) टिक नहीं सकते। 14 धरती लेनेकी बात रावजीको भी जँच गई। 15 प्रधान लोगोंने अरज की कि यदि श्री रावजी आज्ञा करें तो लड़ाई करनेकी बातका भी परस्पर निश्चय करलें 16 एक योद्धा रावजीका और एक उनका (मेवाड़के राणाजीका) मैदानमें उतर जायँ और (आप दोनोंमें से) जिनका सामंत जीत जाय उसीकी जीत समझी जाय। 17 और प्रधानोंने फिर अर्ज की कि रावजी ! आपका नक्षत्र ऐसा दिखता है कि श्री रावजीका सामंत जीतेगा। 18 रावजीने उसकी अर्ज मान ली।

धांनां पण दीवांणसौं याही वात ठहराई छै ।[1] तदी दीवांणरै वडो सांमंत विक्रमायत झालो हुतो, तिको आय ऊभो रह्यो ।[2] अर अठीसूं विजे ऊदावतनूं श्री रावजी हुकम कियो ।[3] ताहरां विजो सलांम कर विक्रमायत सांम्है हुवो । सु विजै गोढै ढाल हुती नहीं ।[4] तद रावजी कह्यो–'वांरै सांमंत कनै ढाल छै ।' विजैनूं पण कह्यो–'ढाल लै ।' सु विजौ पाछौ घिरियो ही नहीं ।[5] जावतै हीज मुंह आगै रावजीरो अरावो खड़ो हुतो सु एकै रहकळैरो पहोड़ो चढियै हीज काढि अर हाथ कर लियो ।[6] जाइ भेळो हुवो ।[7] दीवांणरै सांमंतनूं कह्यो--'जु पैहला थे वाहो ।'[8] ईयै पण मरणासूं डरतै पैहला घाव कियो ।[9] सु पहियो आडो दीन्हो सु पहियो आधोहेक वढियो ।[10] अर विजै तरवार काढी त्यां आंच झालै सौं झल सगी नहीं । सु अँवळै हीज पागड़ै उतरण लागो ।[11] इतरै पैहलो ऊदावत विजै वाही सु दोय सूत हुवा ।[12] तिसड़ै सांखलो नापो दीवांण गोढै ऊभो हुतो सु अरज कीवी—'जु, दीवांण सलांमत ! खांडो एकै धारो हीज वाहै ।'[13] दीवांणरै सांमंत मांहै जिका हुई सु दीवांण मांहै पण होत । पण दीवांणरो भाग वडो। धरती दे लड़ाई टाळी। इतरै कहतां वीच रावजीरै फोजांरी वागां ऊपड़ी ।[14] त्यां दीवांणरो फोज पाछी मुड़ी । इतरै

---

1 और दीवानके प्रधानोंने भी दीवानसे यही बात नक्की की है। 2 तब दीवानका वड़ा सामंत विक्रमायत (विक्रमादित्य) झाला था सो आकर खड़ा हुआ। 3 और इधरसे विजय ऊदावतको श्री रावजीने हुक्म किया। 4 विजयके पास ढाल नहीं थी। 5 सो विजय (ढाल लेनेको) वापिस लौटा नहीं। 6 जिधरको जा रहा था उधर सामने ही रावजीका अराबा खड़ा था, उसमेंसे एक रहकलेका पहिया सवारी किये हुए ही निकाल लिया और हाथमें थाम लिया। 7 जा करके (विक्रमादित्यसे) मिला। 8 पहले तुम प्रहार करो। 9 इसने मर जानेके भयसे पहले प्रहार कर दिया। 10 विजयने ढालकी जगह पहिया आड़ा कर दिया, विक्रमादित्यके प्रहारसे पहिया आधाइक कट गया। 11 फिर जब विजयने तलवार निकाली तो उसके तेजको विक्रमादित्य झाला सहन नहीं कर सका, वह घोड़े परसे पीठकी ओर मुड़ कर उलटा उतरने लगा। अँवळै पागड़ै उतरणो (मुहा०)–सामनेकी ओर नहीं उतर कर पीछेकी ओर उतरना। उलटा उतरना। 12 इसके पहले ही विजय ऊदावतने प्रहार किया सो विक्रमादित्य दो टुकड़े हो गया। 13 उस समय सांखला नापा दीवान (राणाजी) के पास खड़ा था, उसने अर्ज की–दीवान चिरायु हो ! देखिये, खड्ग एक प्रवाहकी तरह ही चला रहा है।' 14 इतना कहते ही रावजीकी सेनाकी बागें उठीं।

केइक वडेरा ठाकुर वीच पड़िया, जु कयो—'ठाकुरां ! भागां पाछै कांई जावौ ?'[1] तद फोजां आघी ही चलाई सु पीछोलै जाय घोड़ा पाया ।[2] देस दीवांणरो मार पैमाल कियो ।[3] फेर पाछा मंडोहर पधार अर जोधपुर वसायो । राज कियो ।

॥ इति राव जोधाजीरी वात संपूर्ण ॥

---

1 इतनेमें कई एक बड़े-बुड्ढे ठाकुर बीचमें पड़े और कहा ठाकुरो ! भागते हुओंके पीछे क्या जा रहे हो ? 2 तब फौजोंको मोड़ कर आगे चलाया और पीछोला तालाब पर जा कर घोड़ोंको पानी पिलाया । 3 दीवानका देश (मेवाड़) लूट कर उसे पैमाल कर दिया ।

अथ वात राव वीकाजीरी लिख्यते

जाट साहरण भाड़ंग[1] मांहै रहै । अर गोदारो पांडो[2] लाधड़ियै[3] रहै, सु वडो दातार । अर साहरणरै बैर वैहणीवाळ मलकी ।[4] सु मलकी मांटीनूं कह्यो[5]—'गोदारो धणी कहावै छै सु चोधरी इसो दे जिसो गोदारैसूं ऊपनो[6] हुवै ।' सु जाट दारूरो छाकियो[7] हुतो सु चोधरणरै चावखैरी[8] दीवो । कह्यो--'जाह पांडैके, जो रीझी छै ।'[9] ताहरां[10] जाटणी कह्यो--'घरबूडा[11] ! म्हैं तो वात कही थी ।'[12] पछै जाटणी कह्यो--'जो थारै मांचै आवूं तो भाईरै आवूं ।'[13] जाटसूं अबोलणो घातियो ।[14] मास १ सूं पांडै गोदारैनूं कहाव मेल्हियो[15]—'जु तैं वदळै म्हनैं ताजणो वाह्यो ।'[16] पांडै कह्यो--'आवै तो हूं आय ले जाऊं ।' यूं रहतां मास ६ हुआ । तद साहरण सरब भेळा हुआ[17]—'जु चोधरी चोधरण अबोलणो छै सु भांजां ।[18] अठै साहरणां बाकरा मराया ।[19] दारू मंगायो । भगत हुई छै ।[20] इतरै पांडो गोदारो ऊंठां साठेक ६० सौं आय, गांमरै गोरमैं उतरियो ।[21] जाटणी साळ मांहै गोलीनूं सुवांण भीतर कांहटो दरायो ।[22] अर कह्यो--'तनैं मारै तो कहै पांडो ले गयो ।' यूं कहि मलकी तो पांडैरै साथ हालती हुई ।[23] जाटां भगत

---

1 एक गांवका नाम । 2 गोदारा शाखाका पांडा नामक व्यक्ति । 3 गांवका नाम । 4 साहरणकी पत्नी मलकी बेनीवाल शाखाकी । 5 मलकीने अपने पतिसे कहा । 6 उत्पन्न । 7 शराबके नशेमें छका हुआ । 8 चाबुककी । 9 यदि उस पर मुग्ध हो गई है तो चली जा पांडेके यहां । 10 तब । 11 घर-घालक, घरको डुबाने वाला । 12 मैंने तो यों ही बात कही थी । 13 तेरेसे हम-बिस्तर होऊं तो भाईसे होऊं । 14 जाटसे नहीं बोलनेकी प्रतिज्ञा ले ली । 15 एक मासके बाद गोदारा पांडेको संदेश भेजा । 16 तेरी खातिर मुझे चाबुकसे मारा है । 17 इकट्ठे हुए । 11 जाट जाटनीके परस्पर नाराजी (बोलना-चालना बंद) है उसे तुड़वा दें । 19 यहां साहरण जाटोंने बकरे मरवाये । 20 भोजनकी तैयारी हुई है । 21 इतनेमें पांडा गोदारा भी ६० ऊंटोंके साथ गांवके किनारे आ कर ठहरा । 22 जाटनीने साल (कमरे)में अपने स्थान पर एक गोलीको सुला कर भीतर सांकल-कुंडी दिलवा दी । 23 यों कह करके मलकी तो पांडेके साथ चलती बनी ।

जीमी ।[1] अर मलकीनूं मांणस म्हेलिया ।[2] कह्यो--'चोधरणनूं ले आवो ।' जाय घर मांहै साद कियो ।[3] बोलै कोई नहीं । जाट आयर कह्यो--'चोधरण तो आडो जड़के सुय रही ।[4] कह्यो--'जावो, किंवाड़ भांज जगाय ले आवो ।' वे जाट जाय किंवाड़ भांजि मांहि जाय देखै तो गोली बैठी छै । गोलीनूँ मारी । तद गोली कह्यो--'म्हनैं क्युं मारो ? पांडो ले गयो । ताहरां जाटां पग लिया ।[5] जठै[6] चढिया तठै[7] सूधा[8] देख आया । तद साहरणां कह्यो--'आंपां पहुंच सगां नहीं ।[9] गोदारां राव वीकैजी मगरै छै ।[10] ताहरां भाड़ंगरा जाट सिवांणी गया । नरसिंघदास जाट सिवांणी रहै । तद नरसिंघदासनूं जाटां जायनै कह्यो--'मांहरो देस तोनूं दीन्हौ[11] तूं साहरणांरो ऊपर कर ।[12] तद नरसिंघदास आपरी[13] फोज ले अर चढियो । लाधड़ियो गांम मारियो ।[14] सात-वीस[15] गोदारा कांम आया । मारनै पाछा वळिया[16]; ताहरां नकोदर पांडैरो बेटो राव वीकैजी पासै गयो । आयनै रावजीनूं कह्यो--'थांहरो जाट नरसिंघदास जाटू मारियो जाय छै ।'[17] तद राव वोकोजी सिधमुख[18] सौं[19] चढिया, सु सिधमुखसौं दोए कोसै ढाका छै, तेथ जाय पुहता ।[20] साथ सारो तळाव ऊपर उतरियो हुंतो ।[21] अर नरसिंघदास जाटू आय गांम मांहै सासरै[22]

---

1 इधर जाटोंने भोजन कर लिया । 2 और मलकीको बुलानेके लिये मनुष्य भेजे । 3 घरमें जा कर आवाज मारी । 4 चौधरन तो किंवाड़ बंद करके सो गई है । 5 तब जाटोंने (मलकीके पांवोंकों देख कर) खोज की । 6 जहां । 7 तहां, वहां । 8 तक । 9 अपन (पांडेके पीछे) नहीं पहुंच सकते (अपने वशकी बात नहीं है) । 10 राव बीकाजी गोदारोंके पीछे (सहायक) हैं । 11 हमारा देश तेरेको दिया । 12 तू सहारणोंकी सहायता कर । 13 अपनी । 14 लाधड़िया गांवको लूट लिया । 15 (१) सत्ताईस । (२) 'सातवीस'से तात्पर्य—सात बार बीस अर्थात् एकसौ चालीस भी हो सकता है । राजस्थानमें दशमांस गिनतीके लिये 'विंशति-पद्धति' (बीसकी संख्या के प्रयोगकी पद्धति) रही है । गाँवोंमें अब भी है । इसे 'वीसी' भी कहते हैं । बीस वस्तुओंके समूहको पाँच भागोंमें विभाजित करके बीससे गुणा करनेसे जो गुणनफल आता है उसे 'पांच-वीस' या 'पांच-वीसी' कहते हैं । एक सौ दशको 'साढी पांच-वीसी' और तीन सौ को 'पन्द्रह-वीसी' कहते हैं । इसी प्रकार और भी । 16 मार-काट करके या लूट करके वापिस लौटे । 17 तुम्हारे जाटको नरसिंहदास जाटू मार कर जा रहा है । 18 गांवका नाम । 19 से । 20 वहां पर जा पहुंचे । 21 था । 22 ससुरालमें ।

उतरियो हुंतो। आधी रातरी समै हुती; तद भाडंगरा आधा जाट रावजीसौं आय मिळिया। कह्यो–'म्हे नरसिंघनूं मरावां।' तदी[1] जाट राव वीकैजीनूं ले गया। जठै नरसिंघ सूतो हुतो, तठै ऊपर ले गया। नरसिंघ ऊठियो। घोड़ो भुंवर काढण लागो।[2] कांधळजी आडा हुवा। जितरै मांहि नरसिंघनूं मार लियो।[3] जाटुवांरी फोज भागी। धन वित हुतो सु खोस लियो।[4] राव वीकैजीरी फतै हुई। तद[5] जाटो डूंम दूहो कहै—

> वीको वाहर नावड़्यो, भुंवर नकोदर हाथ।
> हम्म तुम झगड़ो नीवड़्यो, नरसिंघ जाटू साथ॥[6] १

पछै आंण[7] सिधमुख मांहै डेरो कियो। पाछा फतै कर वळिया। पाछा आवतांनै[8] दासू वैहणीवाळ आय मिळियो। दासू कह्यो–'राज म्हारो वैर छै। जो लरावो[9] तो धरती थांहरी[10] छै, सो लेवो।' तद राव वीकोजी हालिया[11] सु हाराणी-खेड़ै[12] सौंहर जाट रहतो हो[13] सु मारियो। दासूरै वैर मांहै दासू मारियो।[14] दासू छोकरियां पासै गुण गवाया।[15] पाछा हालिया।[16] अरड़कमल कांधळोत भटनेरनूं दोड़ियो।[17] मार, माल-वित वीकानेर ले आयो।[18] फतै कर आयो। धरती सारी ही लीवी।

॥ इति श्री राव वीकाजीरी वात संपूर्ण ॥

---

1 तब। 2 भुंवर घोड़ेको निकालने लगा। 3 इतनेमें नरसिंहको मार दिया। 4 पशु और धन-माल था सो खोस कर ले लिया। 5 उस समय। 6 भुंवर घोड़ेको और पांडेके बेटे नकोदरको अपने अधिकार में करके राव बीका नरसिंह जाटूके विरुद्ध वाहर चढ़ा। नरसिंहको मार करके सफलता प्राप्त की। नरसिंह जाटूके साथ जो तुम्हारा वैमनस्य था वह हमने निपटा दिया। 7 फिर आ करके। 8 आते हुएको। 9 ले लें। 10 तुम्हारी। 11 चले। 12 गांवका नाम। 13 था। 14 दासूने अपने वैरमें उसे मार दिया। 15 दासूने अपनी इस सफलतामें (सौंहरकी) दासियोंसे अपनी प्रशंसाके गीत गवाये। 16 वापिस लौटे। 17 अरड़कमल कांधलोतने भटनेर पर चढ़ाई की। 18 भटनेरको लूट कर पशु और धन बीकानेर ले आया।

अथ भटनेररी वात

भटनेर पातसाह हमाऊर [1] थांणो रहै। तद खेतसी अरड़कमलोत कांधळोत, सु तैनूं[2] एक कानूंगो आय मिळियो। कह्यो–'तनै कोट दरावां। जो तूं म्हांरौ वांसो राखै तो।'[3] तद इयै कांनूंगानूं बीजो कांनूंगो धकाय काढियो हुतो सु पछै खेतसी कनै आयो।[4] तद खेतसी कह्यो–'वाह, वाह ! म्हनै इतरोई जोइजै छै।'[5] तद खेतसी, कांनूंगौ हेरै साथै चढ़ि खड़िया।[6] खेतसीरैं साथै काको[7] नींबो अर पूरणमल कांधळोत। और ही आपरै साथसूं भटनेर गया। तद मारग में जावतांनूं सवण हुवा[8]–'जु नाहरी जिनावररो माथौ लियैं जाय छैं।' तद सवणी आय कह्यो–'कोट तो थे लेसो; पण थांसूं ही जासी।'[9] तद खेतसी कह्यो–'हेकरसौं जाय बैसां।'[10] पछै जाय[11], कोटनूं जाय लागा।[12] ऊपरसौं कांनूंगै वरत नांखी।[13] खेतसी सारै ही साथसौं ऊपर चढियो। कोट लियो। वरस १० भटनेर इँयांरै रह्यो।[14]

अर जती १ वडगच्छौ वीकानेर रहै।[15] तियै कनैं[16] एक भली वस्तु हुती सु राव जैतसी जाय मांगी। जती दीवी नहीं। तद जतीनै मारनै वस्तु लीवी। पछै कुंवरो पातसाह[17] सोबो पांणीपथ सौं हिन्दुस्तान ऊपर चढियो। तै समै वै जतीरो चेलो साम्हां जाय मिळियो। कह्यो–'जु थे चालो, भटनेर लेवां।' तद कुंवरै कह्यो–'पांणी नहीं।'[18] ताहरां

---

1 हुमायु बादशाहका। 2 उसको। 3 यदि तू मेरी सहायता करे तो। 4 उस समय इस कानूंगोको एक दूसरे कानूंगोने निकलवा दिया था, इसका बदला लेनेके लिये वह खेतसीके पास आया। 5 वाह, वाह ! मुझे तो यही चाहिये। 6 तब खेतसी और कानूंगो साथ ले कर चढ़ चले। 7 चचा। 8 तब मार्गमें जाते हुएको शकुन हुए। 9 तब शकुनीने आकर कहा कि कोट तो तुम ले लोगे परंतु तुमसे भी चला जायेगा। 10 एक बार तो जा बैठें। 11 फिर जाये तो जाय। 12 कोटके पास जा पहुंचे। 13 कानूंगोने ऊपरसे रस्सा डाल दिया। 14 दश वर्ष तक भटनेर इनके पास रहा। 15 बड़े गच्छका एक जती बीकानेरमें रहता है। बड़गच्छ—जैन सम्प्रदायके चौरासी गच्छोंमें से एक। 16 उसके पास। 17 कामरां बादशाह। 18 कामरांने तब कहा कि इधर पानी नहीं है।

जती कह्यो–'पांणीरी हूं जांणूं।'[1] तद कुंवरो जतीनूं साथ लेनै भटनेरनूं चालियो। मारग मांहै पांणी नहीं। कटक मरण लागो। तद जतीनूं कह्यो–'पांणी पैदा कर।' सु जतीनूं खेतपाळरो वर हुंतो[2], सु रोही[3] मांहै जाइ खेत्रपाळजीरी आराधना करी। तद मेह हुवो। तद चालिया-चालिया भटनेर गया। तद खेतसी सांम्हां जाय मिळियो। खेतसी कनां आगू मांगियो सु आगू खेतसी दियो।[4] राह छोड रोही मांहै चलाया सु आगै कुंवरो चालै, अर पाछै खेतसी चालै। तद साथरां लोकां कह्यो–'वांसै गनीम आवै छै।'[5] तद पाछां फिर खेतसीनूं मारियो। जुंहर हुवो।[6] लोक घणो कांम आयो। पछै कुंवरै भटनेर थांणो राख, आप बीकानेर आयो।

आगै राव जैतसीजीसूं लड़ाई हुई। रातीवाहो हुवो।[7] कुंवरो भागो। तुरक बुरी तरै नाठा।[8] तद वांडीरो चढियो राव अहमंद चाहिल भटनेर आयो।[9] कोट झालियो। थांणो हुतो सु नाठो।[10] पछै[11] भटनेरमें अहमंद राज कियो।

तद ठाकुरसीजीनूं राव कल्यांणमलजी सात-वीस सीह वाग दिया। तद ठाकुरसी जैतसीजीरै नांवै[12] जैतपुरो वसायो।[13]

एक दिन, भटनेरमें भद्रकाळीरो देहरो[14] छै, तठै ठाकुरसीजी अहमंद मिळिया। गोठ कीवी।[15] उठै देवी आगै भैंसौ वकर करणनूं तयार कियो छै[16] तद सांगै भाटीनूं ठाकुरसीजी कह्यो–'भैंसैनूं ठरको करो'[17] भाटी ठरको कियो। भैंसैरो सिर लटक पड़ियो। तद ठाकुरसी

---

1 तब जतीने कहा कि पानीका मुझे पता है। 2 जतीको क्षेत्रपालका वरदान दिया हुआ था। 3 जंगल। 4 खेतसीके पास अगुआ मांगा सो उसने दे दिया। 5 पीछे दुश्मन आ रहा है। 6 जौहर हुआ। 7 रात्रि-आक्रमण किया। 8 कामरां भाग गया और उसके साथके मुसलमान भी बुरी हालतमें भाग गये। 9 इधर बांडी से रवाना हो कर राव अहमद चाहिल भटनेर पर चढ कर आ गया। 10 उसने कोट पर अधिकार कर लिया और वहां जो थाना कामरांने रख छोड़ा था, उस थानेके आदमी भी भाग गये। 11 पीछे, फिर। 12 नामसे, नाम पर। 13 बसाया। 14 भद्रकाली देवीका मंदिर। 15 दावत की। 16 वहां देवीके आगे बलि देनेके लिये एक भैंसा ला कर खड़ा किया गया है। 17 भैंसे पर प्रहार करो।

सौंण वांदियो ।[1] कह्यो–'कोट लेईस ।'[2] पछै ठाकुरसी पाछौ जैतपुर आयो । जैतपुर भटनेररो तेली १ परणियो हुतौ ।[3] तद ठाकुरसीजी तेलीरा होड़ा कराया । राजी कियो ।[4]

एक दिन अहमद ईयैरो[5] बेटो परणावण[6] गयो । वांसै[7] भाई पीरोजनूं राख गयो हुतो । तदो[8] ठाकुरसी उठासूं चढियो, भटनेर गयो । रात पड़ी । कोट नीचे जाय ऊभो रह्यो ।[9] तेलीसूं सारत हुती ।[10] तद तेली हेठै लाव नांखी ।[11] तद ठाकुरसी सारा साथसूं ऊपर चढ़ियो । भीतर गयो । लड़ाई हुई । पीरोज कांम आयो । कोट लियो । राव श्री कल्यांणमलजीरो आंण फेरी ।[12] कूंची गढरी राव कल्यांणमलजीनूं मेल्हाई ।[13] तद कोट रावजी ठाकुरसीनूं बगसियो ।[14] पछै कितरैहेक दिने ठाकुरसी देवलोक हुवो ।[15] वाघ टीकै बैठौ । वाघसौं जैतपुर उतार लियो ।[16] पछै वाघ भटनेर रह्यो । पातसाही चाकर हुवो । वाघ पण देवलोक हुवो । पछै वाघरा बेटां कनै[17] महाराज श्री रायसिंघजी पधारिया । अर[18] कह्यो–'थे छांडो अठैसूं, ज्यौं आ धरती वीकानेर वांसै घातां ।'[19] तद ईंयां[20] छाड भाठवां[21] आय गूढो[22] वसाय रह्या । भटनेर, नोहर वीकानेर वांसै घातिया ।[23]

भटनेर महाराजा श्री रायसिंघजीरै हुवो । महाराजा श्री सूरसिंघजीरै हुवो । अर महाराजा श्री करणसिंघजीरै हुतौ ।[24] तद साहजहां पातसाहरै अमलमें संवत १६९...खालसै हुवो ।[25] ताहरां लड़ाई हुई । जोगीदास कांधळोत, कल्यांणदास भाटी कांम आया । पछै भटनेर खालसै रह्यो ।[26]

।। इति भटनेर री वात संपूर्ण ।।

---

1 तब ठाकुरसीने इसे शकुन समझ कर वंदन किया अर्थात् इसे शुभ शकुनके रूपमें माना । 2 कोट लूंगा । 3 जैतपुरमें भटनेरका एक तेली ब्याहा हुआ था । 4 तब ठाकुरसीने तेलीकी बहुत खातिर की और उसे प्रसन्न किया । 5 इसका । 6 ब्याहनेको । 7 पीछे । 8 उस समय । 9 कोट नीचे जा कर खड़ा रहा । 10 तेलीसे पहिले बातचीत हो ही चुकी थी । 11 तेलीने रस्सा नीचे डाल दिया । 12 ठाकुरसीने राव कल्याणमलजीकी आन-दुहाई फिरवा दी । 13 गढ़की चाबी राव कल्याणमलजीके पास भिजवा दी । 14 राव-जीने तब उस गढ़को ठाकुरसीको बक्ष दिया । 15 कितनेक दिनोंके बाद ठाकुरसी मर गया । 16 वाघके पाससे जैतपुर जब्त कर लिया गया । 17 पास । 18 और । 19 तुम इस धरती परसे अपना अधिकार छोड़ दो सो इसे बीकानेरके अधिकारमें ले लें । 20 इन्होंने । 21 एक स्थानका नाम । 22 गुप्त रक्षास्थान । 23 भटनेर और नोहर बीकानेरके अधिकारमें लिये । 24 भटनेर महाराजा रायसिंहजीके अधिकारमें रहा, महाराजा सूरसिंहजीके भी अधिकारमें रहा और जिसके बाद जब महाराजा करणसिंहजीके अधिकारमें था । 25 तब बादशाह शाहजहांके शासन कालमें संम्वत् १६९...वह खालसे हो गया । 26 फिर भटनेर खालसे ही रहा ।

वांत राव वीकैजीरी, वीकानेर वसायो तै समैरी

पैहली तो गढ कोड़मदेसररी ठोड़ मांडणरो विचार कियो हतो, पण उठै तो टिग सगिया नहीं।[1] तद राव सेखैनूं जाय पूछियो। कह्यो–'म्हांनै काई वसणनूं जागा वतावो।'[2] तद सेखै कह्यो–'परैरी सी मांडौ जागा।'[3] तद इंयां कह्यो–'परा तो म्हे नहीं जावां।[4] ईयै मगरै जागा देख वसस्यां।'[5] तद सेखै कह्यो–'तो थांहरी दाय आवै जठै रहो।'[6] तद अै जायगा देखता फिरता हुता।[7] तद सांखलै नापै आ[8] जागा दीठी[9]। अठै एक गाडर व्याई हती।[10] तैनूं नाहर लागो छै, पण ऊरणैनै गाडर ले रही।[11] तद नापै सांखलै राव वीकैजीनूं बोलाय कह्यो–'आ जायगा देखो।' तद रावजी पधारिया। जायगा दीठी।[12] आ जायगा खुस कीवी।[13] तद अठै कोटरी नींव भराई। सवण[14] लैणनूं नापो सांखलो अर कांन्हो गया। अठै[15] आया। जठै हणै कोट छै तठै आया।[16] अठै खुडियैरो उनाव हंतौ सु अठै आय रातो-रात सूता।[17] तद सवणो तो सरब भेळा हुवा।[18] घड़ी ४ चारैहेक अै सूता।[19] तठै सिरांणै इंयांरै एक नाग आय, एक मुरटरो बूंटो हुतो, तियैरै ओळो-दोळो हुई, अर पूंछ हुती सु मुंह में झाली अर इयै भांत बैठो छै।[20] अै परभातै ऊठिया।[21] तद नापै इयै[22] नागनूं देख

---

1 राव वीकाजीने पहिलेतो कोडमदेसर गांवकी जगह गढ़ बनवानेका विचार किया था, पर वहां तो यह टिक नहीं सके। 2 हमें बसनेके लिये कोई स्थान बतलाओ। 3 यहांसे कुछ दूर जा कर बसनेका स्थान बनालो। 4 दूर तो हम नहीं जायेंगे। 5 इसी समतल भूमिमें कोई ठौर देख कर बस जायेंगे। 6 तो जहां तुम्हारी इच्छा हो वहां जा कर रह जाओ। 7 ये स्थान देखते फिर रहे थे। 8 यह। 9 देखी। 10 यहां एक भेड़ने बच्चा दिया था। 11 एक नाहर उसके पीछे पड़ा हुआ है, परंतु भेड़ बच्चे को बचा रही है। 12 स्थान देखा। 13 यह जगह पसंद की। 14 शकुन। 15 यहां। 16 जिस जगह इस समय कोट बना हुआ है उस जगह आये। 17 यहां खुड्डोंका उनाव था यहां ही रातो-रात आ कर सो गये। 18 तब सर्व शकुनी भी यहां इकट्ठे हो गये। 19 चार घड़ी अनुमान ये सोये। 20 वहां इनके सिरहानेकी ओर मुरट नामक घासका एक क्षुप था जिसके चारों ओर गोलाकार रूपमें मुंहमें पूंछ पकड़े हुए एक सर्प बैठा हुआ है। 21 ये प्रभातमें जग कर उठे। 22 इस।

कांन्हैनूं कह्यो–'छेड़ो मती। अर नागनूं देखो। अै तो सारा उठैसूं नीसरिया, पण सरप उवै ही जागां तै भांत बैठौ रह्यो।[1] इंयांरी[2] निजर पड़ियो इतरै तांई[3] वै हीज भांत बैठौ दोठौ।[4] तद इंयां उठैसूं लीक टोरी।[5] देखां, कठैसूं आयो छै?[6] जिकै[7] लीक गया। सु नाग पुरांणै कोटसूं आयो। तद नापै कह्यो–'आखर कोट उठै हुसी, जठै सरप कुंडाळो कर बैठौ।'[8] तै इतरौ कह्यो–[9]'कोट पुरांणै कोटरी जायगां करावो।' पछै कोट करायो। सहर वसायो। वीकानेर नांम दियो। तद केल्हण भाटीनूं खबर हुई, जु उठै कोट करायो। तद केल्हण सेखैनूं कह्यो। तद सेखै कह्यो–'हूं तो कोई हालूं नहीं।[10] ताहरां भाटी कळकरण वीकैजी ऊपर साथ कर आयो।[11] तद नापै सांखलै रावजीनूं कह्यो–' म्हैं सवण जोयो छै।[12] आंपणो अठै थिरचिक राज छै।[13] घणी पीढी तांई थांहरै पूतांरै रहसी।[14] आंपां[15] भाटियांसूं लड़ाई करस्यां। आंपणी फतै हुसी।'[16] तद साथ थोड़ो हीज हुतो, पण लड़ाई कीवी, घोड़ा नांखिया।[17] कलकरणनूं मार लियो। सारो ही साथ भागो। राव वीकैजीरी फतै हुई। तठा पछै[18] भाटी कोई नहीं आयो।

॥ इति श्री राव वीकैजीरी वात, वीकानेर वसायौ तै समैरी संपूर्ण ॥

---

1 ये तो वहांसे निकले परंतु सर्प उसी जगह उसी प्रकार बैठा रहा। 2 इनकी। 3 इतने समय तक। 4 उसी प्रकार बैठा देखा। 5 तब इन्होंने इसकी लीककी तलाश की। 6 देखें, कहांसे आया है? 7 उस। 8 जहां सर्प कुंडली बना कर बैठा है, (सब जगह तलाश करने पर) आखिर कोट वहां ही बनेगा। 9 तब उसने इतना कहा। 10 मैं तो कोई चलूं नहीं। 11 तब भाटी कलिकरण बीकाजीके ऊपर अपनी सेनाके साथ चढ़ कर आया। 12 मैंने शकुन देखा है। 13 अपना राज्य यहां स्थिर रहेगा। 14 बहुतसी पीढ़ियों तक तुम्हारे वंशजोंका अधिकार रहेगा। 15 अपन। 16 अपनी फतह होगी। 17 उस समय साथमें मनुष्य थोड़े ही थे, परंतु घोड़ों को झोंक कर लड़ाई की। 18 जिसके बाद।

बात कांधलजीरी । कांधलजी कांम आयौ तै समैरी

कांधळजीरो साथ गाडां सूधो[1] गांम सेरड़ै जाय रह्यो। पछै हांसाररै फोजदार सारंगखांनरो जोर आकरो[2] हुवो। ताहरां उठै ठहर सगिया नहीं।[3] ताहरां उठैसूं गाडा लेनै राजासर आय रह्या। पछै राजासरसूं साथ करनै कांधळजी दोड़िया[4] सु हांसाररो कांठो[5] सरब मारियो।[6] घणो उजाड़ कियो।[7] उठारा चढिया पछै साहवैरै तळाव आय उतरिया। वांसैसूं[8] हांसाररो फोजदार सारंगखांन आप[9] फोज कर आयो। ताहरां इयांनूं[10] खबर हुई। ताहरां कांधळजी पण चढ सांम्हां ऊभा रह्या।[11] चलती लड़ाई कीवी। ताहरां साथ फोजदाररो नजीक[12] आय लागो। ताहरां घोड़ैनूं खुरी कराई। कांधळजी घोड़ो खुरी करावता ताहरां सदा तंग, पुस्तंग,[13] दुमची,[14] आगबंध[15] तूट जावता, सु तूट गया। ताहरां दीकरा[16] राजो, सूरो, नींबो, बीजो ही साथ हुतो तैनूं कह्यो कै–'थे फोजरो मुंहडो झालो[17], जितरै हूं तंग सुंवार ल्यां'[18] सु साथ ठैहराय न सक्यो। पासैसूं कर वध गयौ।[19] ताहरां कांधळजी कह्यो–'जावोरे कपूतां ! म्हे तो थांनूं वाघैरै भरोसै पछवाहीरो[20] कह्यो हुतो, कै वाघो सदा ही पछवाई करतो हुतो।' पछै कांधळजी वांसै[21] ऊभा रहि सारंगखांनसूं लड़ाई कर कांम आया। आ खबर राव वीकैजीनूं हुई। ताहरां चढण लागा। तद सांखलै नापै कह्यो–'रावजी ! जोधैजीनूं खबर करण देवो, पछै चढ़ो।' तद नापो राव जोधै कनै गयो। तद जोधैजी कह्यो–'कांधळरो वैर हूं लेईस।' तै ऊपर राव जोधो उठैसूं वडी खेड़ कर

---

1 सहित। 2 तीव्र, बहुत अधिक। 3 तब वहां नहीं ठहर सकें। 4 आक्रमण किया। 5 सीमा। 6 लूट-मार की। 7 बहुत नुकसान किया। 8 पीछेसे। 9 स्वयं। 10 इनको। 11 तब कांधलजी भी चढ कर के सामने आ कर खड़े रहे। 12 निकट। 13 पीछेका तंग। 14 घोड़ेके साजकी चमड़ेकी पट्टी जो उसकी दुमके नीचे दबी रहती है। 15 आगेका बंध। 16 बेटे। 17 तुम फौजको आगेसे रोको। 18 जितनेमें मैं तंग दुरुस्त करलूं। 19 पासमें होकर आगे बढ़ गया। 20 फौजका पीछेका भाग। 21 पीछे।

चढिया ।[1] हिंसारसूं सारंगखांन चढियो । गांव झासलरै[2] ताई हांके हापह पूछैणां जाह पांखां लारथा लड़ाई हुई ।[3] हरोळ राव वीकोजी हुता । वडी लड़ाई हुई । उठै सारंगखांननूं मारियो श्रौर ही सारंग-खांनरो घणौ साथ मारियो ।

॥ इति कांधळजी कांम आया तै समैरी वात संपूर्ण ॥

---

1 जिसके ऊपर राव जोधा बड़ी सेना लेकर चढ़ा। 2 एक गांवका नाम। 3 यह वाक्य स्पष्ट नहीं है।

वात राव तीडैरी अर रावल सांवतसी सोनगरै इयां दोनांरै भीलमाल वेढ हुई तै समैरी

सोनगरां अर राव तीडैजीरै वेढ[1] हुई। सोनगरांरा पग छूटा।[2] तरै राठोड़ां वांसो[3] कियो। सु सोनगरांरी सीसोदणी सुवळी नांम साथ हुती।[4] सु सीसोदणीरी वैहल[5] दोळा[6] तीडैजीरा असवार आय फिरिया। तीडोजी पण[7] आय फिरिया। कह्यो–'थे वैहल फेरो।' तद सीसोदणी सुवळी कह्यो–'कासूं करसो ?'[8] तद कह्यो–'घरवासो'।[9] तद सीसोदणी कह्यो–'एक कोल द्यौ ज्युं हालूं।'[10] तद तीडैजी कह्यो–'मांगो।' तद कह्यो–'म्हारो जायो पाटवी हुवै।'[11] तद तीडैजी कह्यो–'भलां, पाटवी थांहरो जायोड़ानूं करस्यां।'[12] तद सीसोदणी सुवळीनूं घरे लाया। तठै ओखांणो दूहो कहै छै[13]–

'सुवळी तीडै भिळ गई, सो संवळ सो सत्थ।'

पछै सुख कियो, तरै बेटौ कान्हड़देव जायो।[14] म्होटो हुवो। कुंवरपदो कान्हड़देजीनूं दियो।[15] सलखो रुळियो फिरियो।[16] अर सीसोदणी तीडोजीरै राजरी धणियांणी[17] हुई। जिकूं सीसोदणी कियो सो प्रमांण हुवो।[18] तरै कांन्हड़देजी बेटो टीकायत हुवो।[19]

इतरै करतां गुजरातरै पातसाहरी फोज आई।[20] तद मेहवो

---

1 लड़ाई। 2 सोनगरे हार कर भाग गये। 3 पीछा। 4 थी। 5 बहली। 6 इधर-उधर, चारों ओर। 7 भी। 8 क्या करोगे? 9 पुनर्लग्न। 10 एक बात का वचन दो तो मैं चलूं। 11 मेरा पुत्र पाटवी (राज्याधिकारी) हो। 12 तब तीडेजीने कहा–'अच्छी बात है। तुम्हारेसे उत्पन्न पुत्रको पाटवी बनायेंगे।' 13 ऐसे आख्यान पर यह कहावत रूप (आधा) दोहा कहा जाता है। ओखांणो=(१) आख्यान। (२) कहावत। इस ओखांणोका भावार्थ यह है कि–'सुबली तीडेके साथ हो गई और बहली और भोजन आदिकी जो सामग्री साथमें थी वह भी साथमें लेती गई।' 14 सुबलीके साथ सहवास किया जिससे उसके कान्हड़दे नामका पुत्र उत्पन्न हुआ। 15 राज्याधिकारी कुंवर (पाटवी कुंवर)-का पद कान्हड़देको दिया गया। 16 सलखा रुलता फिरा। 17 स्वामिनी, मालकिन। 18 जो सीसोदनीने कर लिया या कह दिया सो सही हुआ। प्रमाण=सही, प्रामाणिक। 19 इसलिये (सलखेसे छोटा होते हुए भी) टीकायत पुत्र कान्हड़दे हुआ। 20 इतनेमें गुजरातके बादशाहकी फौज चढ़ कर आई।

तीडैजीनूं हुतो ।[1] झगड़ो हुवो पातसाहसूं तद तीडोजी कांम आया । सलखोजी पकड़ीजिया । फोज परी गई ।[2] पछै राव कान्हड़देजी टीकै बैठा । बीजां राठोड़ां सलखैजीरो घणो ही कह्यो, पण इलाज कोई हुवो नहीं ।[3] ताहरां प्रोहित वाहड़, विजड़ श्रै दोनूं भाईयां विचार कियो ।[4] श्रौर तो किही भांत जाय सगीजै नहीं ।[5] तद काया हुय जोगी हुवा ।[6] मुद्रा घाती ।[7] गुजरात गया । श्रै प्रोहित दीदारू सखरा पण ।[8] श्रर वीण श्राछी वजावै ।[9] तद सहर मांहै वखांण हुवो,–[10]'जु जोगी पण भला, वीण श्राछी वजावै ।' तद पातसाहजी तांई मालम हुई ।[11] पातसाहजी बोलाया । तद पातसाहरी हजूर गया । इंयां कनै विद्या हुती सु दिखाई ।[12] पातसाह रीझियो ।[13] तद पातसाह कह्यो– 'मांगो ।' तद इंयां हाथ जोड़ श्ररज कीवी–'जु म्हांरो भोमियो कैद मांहै छै सु पावां ।'[14] तद पातसाहजी कह्यो–'कोणसो है ?'[15] इंयां कह्यो– 'महेवैरो सलखै नांमै छै ।'[16] तद पातसाहजी कह्यो–'छोड़ द्यौ ।' तद सलखैनूं छुड़ायनै महेवै लाया । कांन्हड़देजी पटो दियो ।[17] उमरा कियो ।[18] तै कान्हड़देजीरै त्रिभुवणसी हुवो । श्रर त्रिभुवणसीरै ऊदो हुवो । तैसौं (ऊदावत) राठोड़ हुवा ।[19]

॥ वात राव तीडैजीरी संपूर्ण ॥

शुभं भवतु

---

1 तब मेहवा तीडेजीके श्रधिकारमें था । 2 फौज चली गई । 3 दूसरे राठौड़ोंने सलखा-जीको टीका देनेके संबंधमें वहुत कहा, परंतु कोई उपाय काम नहीं श्राया । 4 तब पुरोहित बाहड़ श्रौर विजड़, इन दोनों भाईयोंने विचार किया । 5 श्रौर तो किसी भी प्रकार (सलखेको वापिस लानेके लिये) जाना नहीं हो सकता । 6 तब हैरान होकर ये दोनों भाई जोगी हो गये । 7 कानोंमें मुद्रायें डाल दीं । 8 ये पुरोहित दोनों भाई रंग-रूपमें दीदार वाले थे । 9 श्रौर वीणा श्रच्छी बजाते हैं । 10 तब शहरमें प्रशंसा हुई । 11 तब बादशाहको भी खबर लगी । 12 इनके पास जो कला थी सो वहां दिखलाई । 13 बाद-शाह प्रसन्न हुश्रा । 14 हमारा भोमिया-सरदार श्रापकी कैदमें है । सो हमें मिल जाय । 15 कौनसा है ? 16 इन्होंने कहा–'मेहवैका निवासी श्रौर सलखा उसका नाम है ।' 17 कान्हड़जीने जागीर दी । 18 श्रपने दरवारका उमराव बनाया । 19 जिससे ऊदावत राठोड़ोंकी शाखा चली ।

वात पताई रावळ साको कियो तैरी

वेगड़ो महमद गुजरात पातसाही करै ।[1] सु पताई रावळ ऊपर मुहीम कीवी ।[2] सु पावैगढनूं वरस १२ तांई घेरियो ।[3] पछै पताई रावळरै साळो सइयो वांकलियो तिकेरो वडो मांमलो, वडो इतबार; गढीरी कूंची तै वसू ।[4] तद पातस्याहसूं स्याजस कीवी ।[5] कह्यो जु–'म्हनै सगळां ऊपर करो तो हूं गढरी कूंची देऊं ।[6] तद पातस्याह कोल दियो । गढरी कूंच्यां पातस्याहनूं दीवी । तद पताई रावळनूं खबर हुई जु–'गढ पालटियो ।'[7] तद पताई रावळ भीतर रांणियांनूं अर बीजाही[8] जनांनै सारैनूं कह्यो–'थे ज्युंहर करो ।'[9] तद रांणियां कह्यो–'म्हे ही रजपूतांणियां छां,[10] म्हे ऊंची चढस्यां; अर नीचे लकड़ियांरो भूंपो करो ।[11] ज्युं-ज्युं थे कांम आस्यो, त्युं-त्युं म्हे कूद पड़स्यां ।' पछै गढ भिळियो,[12] अर कांम आवण लागा; तद अै रजपूतांणियां आग मांहै कूद-कूद पड़वा लागी । तद सइयो वांकलियो पातस्याह कनै ऊभो पातस्याहनूं दिखावै छै–[13] 'ओ फलांणो रजपूत कांम आयो अर आ रजपूतांणी कूद पड़ी ।'[14] तद पातस्याह देख अर कह्यो जु–'साबास अै रजपूत, रजपूतांण्यां कूं ।' पछै सरब कांम आय चुका । सर्व रजपूतांण्यां आग मांहै पड़ी, तद पातस्याह सइये वांकलियेनूं साबास दीवी । अर

---

1 गुजरातकी बादशाहत महमूंद वेगड़ा कर रहा है। 2 वह पताई रावल के ऊपर सेना लेकर चढ़ आया। पताई रावल का नाम यशवंतसिंह था, पर इसका प्रसिद्ध नाम यही था। यशवंतसिंह बड़ा प्रतापी वीर पुरुष हुआ है। 3 पावागढको १२ वर्ष तक घेरे रहा। पावागढ, बड़ोदाके निकट बड़ोदा-रतलाम रेलवे लाइन पर चांपानेरसे पावागढको जाने वाली एक शाखा लाइन पर स्थित है। 4 रावल पताईका एक सइयो वांकलियो नामका साला, जिसका बड़ा रौब, बड़ा एतबार बाला, गढकी चाबियां उसके अधिकारमें। 5 उसने बादशाहसे मिल करके साज़िश कर ली। 6 मुझको सबसे ऊपरी (ओहदेदार) करो तो मैं गढकी चाबी दे दूं। 7 गढ(का अधिकारी) बदल गया। 8 दूसरेभी। 9 तुम जौहर करो। 10 हम भी राजपूतानियाँ हैं। 11 नीचे सुलगती हुई लकड़ियोंका गंज लगा दो। 12 फिर गढ पर अधिकार हो गया। 13 तब सइयो वांकलियो बादशाह के पास खड़ा रह कर बादशाहको दिखा रहा है। 14 यह अमुक राजपूत मरा और यह उसकी (पत्नी) राजपूतानीने ऊपरसे आग में कूद कर जौहर किया।

गढ मांहै आप आयो तद कह्यो–'अबै माल-मता वताय ? 'पछै वताई।'[1] पछै कांम आया था, जितरांरा[2] माथा काटनै भेळा किया।[3] पछै सइयै वांकलियेरो माथो काट सगळां माथां ऊपर मेलियो।[4] कह्यो–'हमारा कोल था वह पूरा किया। इसने जिसका वहुत खाया, तिसका ही हुवा नहीं;[5] सु हमारा क्या होयगा ?' पातस्याह गढ लियो। पताई रावळ कांम आयो। अर सइयो वांकलियो ही मारियो। गढ पालटियो।

बात पताई रावळरी संपूर्ण

अथ वात राव सलखैजीरी

राव सलखैजीरै पुत्र नहीं सु एक दिन सिकार पधारिया तद दूर पधारिया अर असवारी हुती सु सर्व वांसै रह गई।[6] अर आप सिकाररै वास्तै एकल असवार कोस ४ तथा ५ आगै पधारिया। सु तृखा[7] लागी। तद जळरी ठोड़ जोवण लागा।[8] तद आगै दरखतांरो झाड़ो दीठौ, तठै पधारिया।[9] तद वळै देखै तो एकै ठोड़ धुंवो नीसरै छै।[10] तठै पधारिया।[11] उठै देखै तो तपस्वी १ जोगी रावळ बैठो छै। उठै जाय ऊभा रह्या, नै जोगीरै पगै लागा।[12] तद जोगी कह्यो–'बाबा ! थारी किसी ठोड़ ?'[13] तद कह्यो–'बाबाजी ! हूं सिकार आयो थो सु म्हारो साथ वांसै[14] रहि गयो। अर हूं सिकाररै वांसै लागो थको आगै आय नीसरियो।[15] सु म्हनै[16] तृखा लागी छै सुं पांणी

---

1 अब माल-मता बता दे ? तब बता दी। 2 उन सबके। 3 इकट्ठे किये। 4 सभी कटे हुए मस्तकोंके ढेरके ऊपर रखा। 5 उसका भी नहीं हुआ। 6 और जो वाहन और उनके सवार थे सो पीछे रह गये। 7 तृषा। 8 तब पानीका स्थान देखने लगे। 9 आगे वृक्ष-समूह दिखाई दिया वहां गये। 10 पुनः उस ओर देखते हैं तो देखा कि एक जगहसे धूआँ निकल रहा है। 11 वहां गये। 12 वहां जा कर खड़े रहे और योगीका चरण स्पर्श किया। 13 तुम्हारा कौन स्थान ? (कहां रहते हो ?) 14 पीछे। 15 और मैं शिकारके पीछे लगा हुआ आगे आ निकला। 16 मुझे।

पावो ।' तद जोगी कह्यो–'इयै कमंडळ मांहि पांणी छै, थे पीवो, अर घोड़ो तिसियो हुवै तो घोड़ानूं ही पावो ।'[1] पछै सलखैजी आप ही पीयो, अर घोड़ैनूं ही पायो । पण कमंडळ खाली नहीं हुवो तद सलखैजी दीठो[2] जु 'ओ अतीत सिद्ध ।'[3] तद आप अरज कीवी । 'और तो सर्व थोक छै, पण म्हारै पुत्र नहीं छै ।'[4] तद सिद्ध मेखळी मांहै हाथ घातनै गोटो १ बभूतरो, सोपारी ४ काढ दीवी ।[5] 'ओ बभूतरो गोटो रांणीनूं देई, तैरै वडो पुत्र हुसी । तैरो नांम मलीनाथ काढे ।[6] और च्यार पुत्र बीजा हुसी ।[7] वडै बेटेनूं टीको देई ।'[8] तद पाछा घरे पधारनै जे भांत[9] जोगी कह्यो हतो ते भांत रांणियांनूं बभूतरो गोटो, सोपारियां विहच दीवी ।[10] पछै कितरैकै दिने पुत्र हुवो । फेर ४ पुत्र बीजा हुवा । पछै कितरैके[11] दिने वडै बेटैनूं टीको दियो । जोगीनूं बोलाय, जोगीरा आभरण पैहराय रावळ मलीनाथ नांम दियो ।[12] पछै सुख सौं राज कियो । तपो बळी हुवो ।

॥ वात राव सलखैजीरी संपूर्ण ॥

---

1 इस कमंडलमें पानी है सो तुम पी लो और यदि घोड़ा प्यासा हो तो उसको भी पिला दो। 2 देखा, जाना। 3 यह साधु सिद्ध है। 4 और तो सब बातें हैं, परंतु मेरे पुत्र नहीं है। 5 तब सिद्धने झोलीमें हाथ डाल कर उसमेंसे विभूति (भस्मी) का एक गोला और चार सुपारियां निकाल कर दीं। 6 भस्मी का यह गोला बड़ी रानी को देना, उसके बड़ा पुत्र होगा और उसका नाम मल्लिनाथ दिलवाना। 7 और चार पुत्र दूसरे और होंगे। 8 बड़े बेटे (मल्लिनाथ) को टीका देना। 9 जिस प्रकार। 10 बांट दीं। 11 कितने एक। 12 योगीको उस समय बुला कर (बड़े बेटेको) योगीके वस्त्र पहिना कर उसका नाम रावळ मल्लिनाथ रखा गया।

अथ गढ सझिया* तैरी ख्यात लिख्यते[1]

संमत ११०० नाहड़राव पड़िहार मंडोवर वसायो।

संमत १३०० जाळोर मंडायो[2]।

संमत १३७ ··· अलावदीन पातस्याह आयो। कान्हड़देजी अलोप हुवा। वीरमदे कांम आयो।[3]

संमत १६१८ मालदेवजी लियो। बीजै फेरै संमत १६७४ कुंवर गजसिंघजी लियो।[4]

संमत १५१५ ज्येष्ट सुदि ११ दोपहर सनिवार राव श्री जोधैजी जोधपुर वसायो।

संमत ··· चित्रांगद मोरी चीतोड़ वसायो।

संमत १३१० फागण वदी १३ महमंद पातस्याह महमदावाद वसायो।

संमत १०७७ भोज पंवार रै बेटै वीरनारायण सिवांणो वसायो।

संमत १५१५ [illegible] जोधावत मेड़तो वसायो।

संमत १६११ राव मालदेवजो लियो।[5]

संमत १५२५ वीको कुंवर जोधपुरसूं आय जांगळू वसियो।

संमत १६४५ फळोधीरो कोट राव हमीर करायो।

संमत ··· राव वीदै मेहवो वसायो। पैहला भिरड़ रहता।[6]

संमत १६१२ अकबर पातसाह आगरो वसायो।

---

* अनूप संस्कृत लाइब्रेरीकी प्रतिमें 'सझिया'के स्थान पर 'मंडिया' लिखा है।

---

1 गढ बनाये गये अथवा विजय किये गये उनका वृत्तान्त। 2 सम्वत् १३००में जालोरका किला बनवाया गया। 3 सम्वत् १३७····में बादशाह अलाउद्दीन जालोरमें आया, उस समय कान्हड़दे तो अलोप हो गया और वीरमदे लड़ाईमें काम आ गया। 4 सम्वत् १६१८में मालदेवजीने जालोर ले लिया। दूसरी बार सम्वत् १६७४ कुंवर गजसिंहजीने ले लिया। (एक प्रतिमें संवत् १६७४के स्थान पर संवत् १६४४ लिखा है।) 5 राव मालदेवजीने सम्वत् १६११में मेड़ता पर अपना अधिकार कर लिया। 6 राव वीदेने मेहवा नगर वसाया, पहले भिरड़कोटमें रहते थे। मेहवा नगर और भिरड़कोट मारवाड़ देशके मालानी प्रान्तमें बसे हुए थे। दोनों सदियों पूर्व उजड़ गये। मेहवा नगर पहाड़ोंसे घिरा हुआ था। इस समय वहां एक विष्णु मंदिर और एक शिव मंदिर तथा तीन बड़े-बड़े जैन मंदिर स्थित हैं।

संमत १२१२ श्रावण सुदि १२ मूळ नक्षत्र भाटी जेसळ जेसळमेर वसायो
संमत ८०२ वैसाख सुदि ३ वनराज चावड़ैं पाटण वसायो।[1]
संमत १११५ कैंमास दाहिमैं नागोर वसायो।[2]
संमत १५७६ रावळ जांम नवोनगर[3] वसायो।
संमत १४५२ वैसाख वदि ७ देवड़ै सहसमल सिरोही वसाई।

अथ वात राव सीहोजी (रै वंश)री

सीहेजीरो अंतेवर[4] सोळंकणी, सिद्धराव जैसिंघदेरी बेटी। तैंरो बेटो आसथांन—१।

दूजो वीमाह चावड़ी सोभागदे मूळराज वाघनाथोतरी बेटी।[5] जिणरै[6] बेटो—अज—१, सोनग—२।

आसथांनजीरै रांणी उछरंगदे ईंदी, वूढ मेघराजोतरी बेटी। तिणरा[7] बेटा—१. धूहड़—१, १ धांधळ—२, १ चाचग—३।

धूहड़जीरी रांणी द्रोपदा चहवांण, लखमसेन प्रेमसेनोतरी बेटी। तैंरै[8] बेटा—१. रायपाळजी १, १ पीथड़—२, १ वाघमार—३, १. कीरतपाळ—४, १ जगहथ—५।

रायपाळजीरै अंतेवर रांणी रतनादे भटियांणी रावळ जेसळ दुसाझोतरी बेटी। तैंरा बेटा—१ कान्ह १। १ सांडो २। १ लखमणसेन ३। १ सहणपाळ ४।

कान्हरो अंतेवर किल्यांणदे देवड़ी। सलखा लूंभावतरी बेटी। तैंरा बेटा—१ राव जालणसी १। वीजैपाळ २।

---

1 वनराज चावड़ाने वि० संवत् ८०२ वैशाख शुदि ३को 'अणहिलपुर-पट्टन' बसाया। यह नगर सरस्वती नदीके किनारे पर उत्तार गुजरातमें बसा हुआ है। यह कभी 'पीरान-पाटण' भी कहा जाता था। अब तो केवल 'पाटण' नामसे ही प्रसिद्ध है। 2 सम्वत् १११५में कैमास दाहिमाने नागोर बसाया। [एक प्रतिमें १२१५ सम्वत्में बसाया जाना लिखा है।] 3 आधुनिक जामनगर। 4 पत्नी, अन्तःपुर। 5 दूसरा विवाह मूलराज बाघनाथोतकी पुत्री सौभाग्यदेवी चावडीसे हुआ। 6 जिसके। 7 उसके। 8 उसके।

राव जालणसीरो अंतेवर रांणी सरूपदे गोहिलांणी, गोदा गजसिंघोतरी बेटी। तैरो बेटो छाडो १।

राव छाडैरो अंतेवर रांणी वीरां हुलणी। तैरो बेटो तीडो १

राव तीडैरो अंतेवर चहुवांण रांणी तारादे, रांण वरजांगोतरी बेटी। तैरो बेटो सळखो १।[1]

राव सळखैजीरो अंतेवर रांणी जांणदे, चहुवांण मंजुपाळ हेमराजोतरी बेटी। तैरा बेटा—१ रावळ मलीनाथ—१। १ जैतमाल—२।

बीजो वीमाह जोईयांणी, राव वीरमजीरी मा। जोईया धारदे मदोतरी बेटी।[2]

तीजो वीमाह[3] गोरज्या गोहिलांणी, गैमल गजसिंघोतरी बेटी। तिकैरो[4] बेटो सोभत—१।

राव वीरमजीरो अंतेवर भटियांणी जसहड़ रांणादे। तैरो बेटो राव चूंडोजी—१।

दूजी[5] रांणी मांगळियांणी लालां, कांन्ह केल्हणोतरी बेटी। तैरो[6] बेटो जैसिंघ—१।

तीजो विमाह चांदण आसराव रिणमलोतरी बेटी। तैरो[7] बेटो गोगादेजी—१।

चोथो वीमाह ईंदी लाछां, उगमणसीह सिखरावतरी बेटी। जिकणरो[8] बेटो १. देवराज—१, विजैराव—२।

रावजी चवंडैरै अंतेवर सांखली सूरमदे, वीसळरी बेटी। तिकणरो[9] बेटो रिणमलजी—१।

दूजी रांणी तारादे गेहलोतणी, सोहड़ साह्लू सूरावतरी बेटी। तैरो बेटो सतो—२।

तीजी[10] रांणी भटियांणी लाडां, कुंतळ केल्हणोतरी बेटी। तैरो बेटो अरड़कमल—३।

---

1 राव तीडेके अन्तःपुरमें चहुवान राण वरजांगोतकी पुत्री तारादेवी रानी जिसका पुत्र सलखा। 2 दूसरा विवाह जोईया धारदेव मदोतकी पुत्री जोईयानी जो राव वीरमजीकी माता थी। 3 तीसरा विवाह। 4 जिसका। 5 दूसरी। 6 जिसका। 7 जिसका। 8 जिसका, उसका। 9 उसका। 10 तीसरी।

चौथो महळ[1] सोनां, मोहिल ईसरदासरी बेटी। तैरो बेटो कांन्हो—४।

पांचमो महळ ईंदी केसर, गोगादे उगमणोतरी बेटी। तैरा बेटा—१ भीम। २ सहसमल। ३ बरजांग। ४ रुदो। ५ चांदो। ६ अजो।

राव रिणमलजीरो अंतेवर रांणी भटियांणी। तिकैरो बेटो जोधोजी।

राव जोधैजीरो अंतेवर रांणी सांखली नवरंगदे, रांणै मांडण रुणावतरी बेटी। तैरो बेटो राव श्री वीकोजी—१ वीदोजी—२।

बीजो महळ हाडी जसमादेजी। तैरा बेटा—१ राव सातळ—१। १ राव सूजो—२। १ नींबो—३।

तीजो महळ जांणांदे हुलणी। बेटी भारमल जोगावतरी।

राव वीकैजीरो अंतेवर भटियांणी रंगादे, राव सेखैरी बेटी पूगळरै धणीरी[2]। तैरो बेटो रावजी श्री लूणकरणजी।

राव लूणकरणजीरै अंतेउर देवड़ी रांणी लालां। देवड़ै सहसमलरी बेटी। तैरो बेटो रावजी श्री जैतसीजी।

जैतसीजीरै राव श्री कल्यांणमलजी। सोढै जैतमालरा दोहीता। रांणी श्री कसमीरदेजीरा बेटा।

महाराजा श्री रायसिंघजी सोनगरै अखैराजरा दोहीता। रांणी श्री भगतांदेजीरै पेटरा।[3]

महाराजा श्री सूरसिंघजी भाटी रावळ हरराजरा दोहीता। रांणी श्री गंगाजीरो बेटो। सासरैरो नांम सोभागदेजी।[4]

महाराजा श्री दलपतसिंघजी सीसोदियै रांणै श्री उदैसिंघजीरा दोहीता। मा रो नांम रांणी श्री जसवंतदेजी।[5]

महाराजा श्री करणसिंघजी कछवाहै हिमतसिंघजीरा दोहितरा।[6] मा रो नांम रांणी सरूपदेजी।

---

1 पत्नी। 2 पूगलके स्वामी राव सेखाकी पुत्री भटियानी रंगादेवी राव बीकाजीके अन्तःपुरकी रानी। 3 महाराजा रायसिंहजी सोनगरा अखैराजके दोहिते। भक्तादेवीजी रानीकी कोखसे उत्पन्न। 4 रानी श्री गंगाजीका पुत्र। जिसका ससुरालमें दिया गया नाम सौभाग्य देवीजी। 5 माताका नाम रानी श्री जसवंतदेवीजी। 6 दोहिता।

महाराजा श्री अनूपसिंघजी चंद्रावत रुखमांगदजीरा दोहितरा । मा
रो नांम रांणी श्री कसतूरदेजी । पीहररो नांम इंद्रकुंवर ।[1]

महाराजा श्री सुजांणसिंघजी, राजावत श्री अमरसिंघजीरा दोहीता ।
मा रो नांम रांणी श्री चंद्रकुंवरजी ।

महाराजा श्री जोरावरसिंघजी, रांणावत इंद्रसिंघजीरा दोहीतरा ।
माजी रो नांम रांणीजी श्री रतनकुंवरजी ।

महाराजा श्री गजसिंघजी, सेखावत सांवतसिंघजीरा दोहितरा । माजी
रो नांम रांणी श्री अतभागदेजी । पीहररो नांम व्रजवरजी ।[2]

महाराजा श्री सूरतसिंघजी, कछवाहै रायसिंघजीरा दोहितरा । माजी
रो नांम रांणीजी श्री गाहिड़देजी ।

---

1 महाराजा श्री अनूपसिंहजी रुक्मांगदजी चन्द्रावतके दोहिते । माताका नाम रानी श्री कस्तूरदेवीजी और पीहरका नाम इन्द्रकुंवरि । 2 माताजीका नाम रानी श्री अति भाग्यदेवीजी । पीहरका नाम व्रजवरजी ।

अथ जेसलमेररी वात

संमत १२१२ श्रावण सुदि १२ मूळ नक्षत्रे रावळ जेसळ जेसळमेर स्थापितं ।।

१. रावळ जेसळ वरस ५ राज कियो ।

२. रावळ सालिवाहन जेसळरो । जेसळमेर वरस १२ राज कियो ।

३. रावळ वैजल सालिवाहनरो । मास २ दिन १५ राज कियो ।

४. रावळ काल्हण जेसळरो बेटो । वैजलनूं काढिनै राज लियो ।[1] वरस १८ राज कियो ।

५. रावळ चाचगदे काल्हणरो बेटो । वरस ३२ दिन २० वीस राज कियो ।

६. रावळ कर्ण चाचगदेरो । वरस २९ मास ५ दिन २० राज कियो ।

७ रावळ लखणसेन कर्णरो । वरस १८ राज कियो ।

८. रावळ पुनपाळ लखणसेनरो । मात्रे हीसूं चूको ।[2] पछै भाटिए मिळनै पुनपाळनूं कोटसूं उतारियो ।[3] मास ६ राज कियो । पछै भाटियां जैतसीनूं टीको दियो । जैतसी तेजरावरो । तेजराव चाचगदेरो, तिण गढ लियो ।[4] पछै पुनपाळ पूगळ गयो ।

९. रावळ जैतसी तेजरावरो वर्ष १८ मास ६ दिन ६ राज कियो । पछै जैतसी वृद्ध हुवो तद काष्ट भक्षण कियो ।[5]

१०. रावळ मूळराज जैतसीहरो टीकै बैठो । वरस ११ मास ८ राज कियो । पछै तुरक[6] आया । जेसळमेर विग्रह[7] हुवो । वरस १२ कमालदीन रह्यो । पछै सामांन तूटो ।[8] ताहरां

---

1 वैजलको निकाल करके रांज्य हस्तगत किया । 2 किसी विमातृसे अनुचित संबंध हो गया । 3 भाटियोंने मिल करके पुण्यपालको गढसे नीचे उतरवा दिया । 4 जिसने गढ पर अधिकार कर लिया । 5 जैतसी वृद्ध हुआ तब कालाकृष्ट हो गया (काष्ठने जलाकर भक्षण कर लिया) । 6 मुसलमान, तुर्क । 7 युद्ध । 8 फिर सामान समाप्त हो गया ।

रावळ जैतसी, भाई रांणो रतनसी जुंहर[1] कर बे[2] भाई कांम आया ।

११. रावळ दूदो जसहड़रो । जसहड़ पाल्हणरो । पाल्हण काल्हणरो पोतरो ।[3] तिण आयनै जेसळमेर सूनो पड़ियो हुतो सु लेनै टीकै बैठो ।[4] वरस १० दिन ७ राज कियो । पछै पातसाही फोजां आई तद बेऊं भाई ज्युंहर कर कांम आया ।[5]

१२. रावळ घड़सी । रावळ जैतसीहरो बेटो घड़सी टीकै बैठो । वरस ३ मास ९ दिन १२ राज कियो । तिण रावळनूं जसहड़े मारियो ।[6]

१३. रावळ केहर देवरो । देवराज मूळराजरो । मूळराज जैतसीरो । केहर वरस ३४ मास १० दिन ६ राज कियो । रावळ केहररै बेटा ४—१ लखमण । १ केल्हण । १ सोम । १ कलिकर्ण ।
सु लखमण टीकै बैठो । केल्हण पूगळ, मरोठ, वीकूंपुर लिया ।[7]
सोम देरावर लियो ।[8]

जेसा जोधपुररी धरती मांहै वडा ठाकुर जेसा-भाटी कहीजै ।[9]

१४. रावळ लखमण केहररो । वरस ३१ दिन २३ राज कियो ।

१५. रावळ वैरसी लखमणरो । वरस १९ मास ९ दिन १७ राज कियो ।

१६. रावळ चाचो वैरसी रो । वरस १८ मास १ राज कियो । पछै अमरकोट ऊपर गयो हुतो, तठै सोढै मांडण कूड़ कर परणावणरो, नै परणायो । पछै राते सूतैनूं मारियो ।[10]

---

1 जोहर । 2 दोनों । 3 पौत्र । 4 जैसलमेर सूना पड़ा था सो उसने आ कर अधिकार कर लिया और राज्य-तिलक कढ़वा लिया । 5 फिर जब बादशाही फौजोंने आक्रमण किया तब दोनों भाई जौहर करके काम आ गये । 6 इस रावल (घड़सी)को जसहड़-भाटियोंने मार दिया । 7 केल्हणने पूगल, मारोठ और विकूंपुर पर अधिकार किया । 8 सोमने देरावर पर अधिकार किया । 9 जैसा भाटीके वंशज भाटी-राजपूत जोधपूरकी धरतीमें बड़े ठाकुर हैं और वे जैसा-भाटी कहलाते हैं । 10 फिर वह अमरकोट पर चढ कर गया था, किन्तु वहां सोढे मांडणने विवाह कर देनेका कपट कर उसका विवाह कर दिया और रातको सोते हुएको मार दिया ।

१७. रावळ देवीदास चाचैरो बेटो। तियै बापरै वैर उमरकोट पाड़ियो। सोढै मांडणनूं मारियो।[1] पछै टीकै बैठो। वरस २५ मास ४ राज कियो।

१८. रावळ तेजसी देवीदासरो। वरस ३५ मास ४ दिन १० राज कियो।

१९. रावळ लूणकर्ण जैतसीरो। वरस २२ मास १० दिन ३ राज कियो।

२०. रावळ मालदे लूणकर्णरो। वरस १० मास ७ दिन २० राज कियो।

२१. रावळ हरराज मालदेरो। वरस १६ दिन १८ राज कियो।

२२. रावळ भीम हरराजोत। वरस ३५ मास ११ दिन १२ राज कियो।

२३. रावळ कल्यांणदास हरराजरो। वरस १४ मास ६ दिन १५ राज कियो।

२४. रावळ मनोहरदास कल्यांणदासोत। वरस २२ राज कियो। निसंतत।[2]

२५. रावळ रामचंद सिंघरो। सिंघ भांनीदासरो। भांनीदास हरराजरो टीकै बैठो। मास १० दिन २० राज कियो। पछै राज फिरियो।[3]

२६. रावळसबळसिंघ दयाळदासरो। दयाळदास खेतसीहरो। खेतसीह मालदेरो। रावळ सबळसिंघ रामचंदनूं काढिनै टीकै बैठो।[4] वरस ··· मास ··· दिन ··· राज कियो।

२७. रावळ अमरसिंघ सबळसिंघरो बेटो। वरस ··· मास ··· दिन ···· राज कियो।

---

1 उसने (देवीदासने) अपने बापको मार देनेकी शत्रुताके बदलेमें अमरकोटका विध्वंस किया और सोढे मांडणको मार दिया। 2 निःसंतति रहा। 3 बादमें (रावल रामचन्दके जीते-जी ही) राज्य-गद्दी बदल गई। 4 रावल सबलसिंह, रामचंदको निकाल करके राज्य-गद्दी पर बैठा था।

२८. रावळ जसवंतसिंघरै वडो कुमर जगतसिंघ हुतौ । कुंवरपदै ही कटारी मार मुंवो ।[1] तैरो[2] बेटो बुधसिंघ टीकै बैठो । पछै बुधसिंघनै दादी विष दे मारियो । राज तेजसिंघ जसवंत-सिंघोतनै दियो । पछै तेजसिंघसूं हरिसिंघ अमरसिंघोत तळाव घड़सीसर ऊपर चूक कर राज रावळ अखैसिंघनूं दियो ।[3]

पूगल राव

१. राव केल्हण ।
२. राव चाचो ।
३. राव वैरसल ।
४. राव सेखो ।
५. राव हरो ।
६. राव हरसिंघ । (राव वरसिंघ)[4]
७. राव जेसो ।
८. राव कान्ह ।
९. राव आसकरण ।
१०. राव जगदेव ।
११. राव सुदरसण ।
१२. राव गणेसदास ।
१३. राव विजैसिंघ ।
१४. राव दलकरण ।
१५. राव अमरसिंघ ।

वीकूंपुर राव

राव वरसिंघ कुंवरपदै राव गोपै कान्हां वीकूंपुर लियो । राव हरै जीवतां । जाहरां राव वरसिंघ पूगळ टीकै बैठो, जाहरां बेटै दुरजणसलनूं वीकूंपुर दियो ।[5]

१. राव दुरजणसल ।
२. राव डूंगरसीह ।
३. राव उदैसिंघ ।
४. राव सूरसिंघ ।
५. राव मोहणदास ।
६. राव जैसिंघ । पाछै जैसिंघनूं विहारी सूरसिंघोत सबळसिंघ रावळसूं मिळनै

---

1 वह कुमारपदमें ही अपने हाथों पेटमें कटारी मार कर मर गया । 2 उसका । 3 फिर हरिसिंह अमरसिंहोतने घड़सीसर तालाबके ऊपर तेजसिंहको धोखेसे मार डाला और राज्य रावल अखैसिंहको दे दिया । 4 किसी प्रतिमें हरिसिंह और किसीमें वरसिंह है । 'वरसिंह' ठीक जान पड़ता है । 5 पूगलके राव हराके बेटे वरसिंहने अपने बाप हरेके जीते-जी ही कुमारपदमें राव गोपाके पाससे विकूंपुर ले लिया । लेकिन हरेके मरनेके बाद जब वरसिंह पूगलमें टीके बैठा तो विकूंपुर अपने पुत्र दुर्जनसलको दे दिया ।

जैसिंघनूं काढियो। पछै विहारीदास टीकै वैठो। पछै विहारीदासनूं किसनै मारियो।[1]

७. राव विहारी।

८. राव जैतसी।

९. राव सुंदरदास।

१०. राव लाडखांन।

११. राव हरनाथ।

वैरसलपुर राव

राव बैरसल वैरसलपुर वसायो।[2]

१. राव खींवो। राव सेखैंरो बेटो।

२. राव तेजसीह।

३. राव मालदे।

४. राव मंडळीक।

५. राव नेतसीह।

६. राव प्रिथीराज।

७. राव दयाळदास

८. राव करणसिंघ।

९. राव भांनीदास। (राव भवांनीदास)[3]

१० राव केसरीसिंघ।

११. राव लखधीर।

१२. राव अमरसिंघ।

१३. राव मानसिंघ।

मुगल-चकता-भाटी कहै छै[4]

१ चकतो भोपतरो बेटो।

१ भोपत बाळबंधरो।

१ बाळबंध सालवाहनरो। (बाळवध)[5]

१ राजा रिसाळू सालवाहनरो।

१ भाटी सालवाहनरो।

१ सालवाहन अरधबिंबरो।

खारवारैरा भाटी

१ वाघो राव सेखैंरो बेटो।

२ किसनो वाघावत।

३ तेजमाल किसनावत।

४ खंगार तेजमालोत।

५ नाथो खंगारोत

६ कुंभकरण नाथावत।

७ विहारी कुंभैरो।

८ जोध विहारीरो।

९ जैतो जोधैरो।

---

1 बिहारीदास सूरसिंहोतने रावल सबलसिंहसे मिल कर राव जयसिंहको निकाल दिया और बिहारीदास गद्दी पर बैठ गया, लेकिन बिहारी दासको किशनने मार दिया।
2 राव वैरसलने वैरसलपुरको बसाया। 3 भानीदास और भवानीदास दोनों नाम प्रतियोंमें लिखे मिलते हैं। 4 ये मुगल-चकता भाटी कहे जाते हैं। 5 इन दो नामोंके सिवा 'वाळावध', 'वाळद' और 'वाळव' पाठान्तर भी लिखे मिलते हैं।

॥ श्री रामजी ॥

अथ वात दूदै जोधावत मेघो नरसिंघदासोत सींधल मारियौ तै समैरी

राव जोधो पोढ़ियो हुतो ।[1] वातपोस वात करता हुता ।[2] राजवियांरी वातां करता हुता । ताहरां एक कह्यो–'एकण भाटियांरो वैर न रह्यो ।'[3] एक बोलियो–'राठोड़ांरो वैर है ।' ताहरां एक बोलियो–'राठोड़ांरै वैर एक रह्यो'–कह्यो 'किसो ?'[4] कह्यो–'आसकरण सतावतरो वैर रह्यो । नरबदजी सुपियारदे ल्याया तदरो वैर रह्यो ।'[5] ताहरां राव जोधाजी वात सुणी । ताहरां वांनूं पूछियो[6]–'थे कासूं कहो छौ ?'[7] कह्यो 'जी–क्यूंही नहीं ।'[8] ताहरां बोलिया–'ना ! ना ! कहो ।'[9] ताहरां कह्यो 'जी–आसकरणरै ही छोरू नहीं नै नरबदजीरै पण छोरू नहीं, तै वैर युंही रह्यो ।'[10] आ वात सुणनै राव जोधैजी मनमें राखी ।

प्रभातै दरबार वैठा छै, तितरै कुंवर दूदै मुजरो कियो आयनै ।[11] सु दूदैसूं रावजी कुमया करता ।[12] ताहरां रावजी कह्यो–'दूदा ! मेघो सींधळ मारियो जोइजै ।'[13] ताहरां दूदै सलांम कीवी । ताहरां रावजी बोलिया–'दूदा ! आसकरण सतावतनूं नरसिंघदास सींधळ मारियो हुतो;[14] नरबदजी सुपियारदे ल्याया, तियैं वदळै,[15] सु नरसिंघदासरो बेटो मेघो, तियैंनूं जाह मार ।[16] ताहरां दूदो सलांम करनै

---

1 राव जोधा सोया हुआ था । 2 बातपोश लोग बातें (चर्चा) कह रहे थे । 3 एक भाटियोंका वैर अब नहीं रहा । 4 कौनसा ? 5 नरबदजी सुपियारदेको लाये उस समयका वैर रह गया । 6 तब उनको पूछा । 7 तुम क्या कहते हो ? 8 कुछ भी नहीं । 9 तव कहा – नहीं – नहीं ! कहो । 10 आसकरणके भी कोई पुत्र नहीं, और न नरबदजीके भी कोई पुत्र, वह वैर यों ही रह गया । 11 इतनेमें कुमार दूदाने आ कर मुजरा किया । 12 रावजी दूदासे नाराजगी रखते थे । 13 तव रावजीने कहा–दूदा ! मेघा सींधल मारा जाना चाहिये । 14-15 दूदा ! नरबदजी सुपियारदेको ले आये थे उसके बदलेमें आसकरण सत्तावतको नरसिंहदास सींधलने मार दिया था । 16 सो उस नरसिंहदासका बेटा मेघा है उसको तू जा कर मारदे ।

चालियो। ताहरां रावजी कह्यो–'दूदा ! युं जा नांह, सराजांम कर थूं। आगै मेघो सींधळ छै।[1] तैं मेघो कांनै नहीं सुणियो छै। ताहरां दूदो कहै–'का तो दूदो मेघै; का मेघो दूदै।'[2]

ताहरां दूदो डेरै आयनै आपरो[3] साथ लेनै चढियो। जायनै जैतारणहूं[4] कोस ३ उतरियो। आदमी मेलियो।[5] जायनै मेघैनूं कह्यो–'दूदो जोधावत आयो छै। आसकरण सतावतनूं मांगै छै।'[6] आदमियै जाय मेघैनूं कह्यो। ताहरां मेघै कह्यो–'मोड़ा क्युं आया ?'[7] ताहरां कह्यो–'समझ पड़ी पछै तो दूदै पांणी आगै आय पीयो छै।[8]

ताहरां मेघो माळिये[9] चढियो। कह्यो–'रे घोड़ चां ईयै तरफ मतां उछेरो ![10] दूदो जोधावत आयो छै, घोड़चां ले जासी,'[11] ताहरां दूदो बोलियो। कह्यो–'ओ कुण बोलै ?'[12] कह्यो 'जी, मेघो बोलै छै। ताहरां कह्यो–'रे ! इतरी भुंय सुणीजै छै ?'[13] ताहरां कह्यो–'जी, मेघो सींधळ कांनै सुणियो छै किनां नहीं ?'[14] ताहरां मेघैनूं कहाड़ियो–'म्हारै घोड़ियांसूं कांम नहीं।[15] मालसूं कांम नहीं। म्हारै थारै माथैसूं कांम छै।[16] परतरी वेढ करस्यां।'[17]

ताहरां बीजै दिन मेघो साथ करनै आयो। इयै तरफसूं दूदो आयो। ताहरां मेघो कहै–'दूदाजी ! थां अवसर लाधो, रजपूत तो म्हारा सरब म्हारै बेटैरी जांन गया। अठै तो हूं छूं।'[18] ताहरां दूदो

---

1 बत रावजीने कहा–दूदा ! इस प्रकार मत जा; तू सरंजाम कर, आगे मेघा सींधल है। 2 या तो दूदा मेघाके हाथ, या मेघा दूदाके हाथ। 3 अपना। 4 जैतारणसे। 5 आदमीको भेजा। 6 आसकरण सत्तावतको मारनेके बैरका बदला मांगता है। 7 देरीसे क्यों आये ? 8 मालूम हो जानेके बाद तो दूदाने पानी भी (अपने घर पर नहीं पी कर, मार्गमें) आगे आकर पिया है। 9 महल पर। म्हाळियो मा'ळियो, माळियो=छत पर बना हुआ शयन-गृह। 10 अरे घोड़ियोंको इस ओर चरनेको मत ले जाओ। उछेरणो=गाय, भैंस आदि चौपायोंके समूहको जंगलमें चरनेको ले जाना। 11 घोड़ियोंको ले जायगा। 12 यह कौन बोल रहा है ? 13 अरे ! इतनी दूरी पर सुना जाता है ? 14 अजी यह मेघा सींधल है, कानोंसे कभी सुना है कि नहीं ? 15 तब मेघेको कहलवाया–मेरेको घोड़ियोंसे कोई सरोकार नहीं है। 16 मेरेको तो तेरे सिरसे प्रयोजन है। 17 अपन अकेले ही परस्पर दांवकी लड़ाई करेंगे। 18 दूदाजी ! आपको यह मौका मिला है, मेरे राजपूत तो सभी मेरे बेटेकी बारातमें गये हुए हैं, यहां तो केवल मैं ही हूं।

कहै–'मेघाजी ! आपां परतरी वेढ करस्यां, रजपूतांनूं क्युं मारां ? का दूदो मेघै, का मेघौ दूदै। आंपांहीज सांफळ हुसी।'[1] ताहरां साथ दोनां सिरदारांरो अळगो ऊभो रह्यो।[2] एकी तरफ मेघो आयो, एकी तरफ-सूं दूदो आयो। ताहरां दूदै कह्यो–'मेघा ! कर घाव।'[3] ताहरां मेघो कहै–'दूदा ! थे करो घाव।'[4] ताहरां दूदै फेर[5] कह्यो–'मेघा ! थे घाव करो।' ताहरां मेघै घाव कियो, सु दूदै ढालसूं टाळ दियो। दूदै पाबूजीनूं समरनै मेघैनूं घाव कियो सु माथो धड़सूं अळगो जाय पड़ियो। मेघो कांम आयो। ताहरां मेघैरो माथो दूदो ले हालियो।[6]

ताहरां आपरा रजपूतां कह्यो–'मेघैरो माथो धड़ ऊपरा मेलो। वडो रजपूत छै।'[7] ताहरां माथो दूदै धड़ ऊपर मेलियो।[8] पछै दूदैजी कह्यो–'कोई गांमरो उजाड़ मतां करो।[9] आंपणै मेघैसूं कांम हुतो।'[10] मेघैनूं मार दूदोजी अपूठा फिरिया।[11] आयनै रावजी श्री जोधैजीनूं तसलीम कीधी।[12] रावजी बोहत राजी हुवा। रावजी दूदानै घोड़ो सिरपाव दियौ।[13]

।। इति श्री दूदै जोधावतरी वात संपूर्ण ।।

---

1 अपनी परस्परमें ही झड़प होगी। 2 तब दोनोंका साथ (राजपूत सैनिक समूह) दूर खड़ा रहा। 3 मेघा ! तू प्रहार कर। 4 दूदा ! तुम प्रहार करो। 5 फिर। 6 तब मेघेका सिर दूदा लेकर चला। 7 तब अपने (उनके) राजपूतोंने कहा—मेघेका सिर धड़ ऊपर रख दो, बड़ा राजपूत है। 8 तब दूदाने सिरको धड़के ऊपर रख दिया। 9 कोई भी गांवका कुछ भी नुकसान नहीं करना। 10 अपना काम मेघेसे था। 11 मेघेको मार कर दूदाजी वापिस लौटे। 12 आ करके रावजी श्री जोधाजीको प्रणाम किया। 13 रावजी (जोधाजी) ने दूदाको घोड़ा और सिरोपाव दिये।

अथ वात खेतसीह रतनसीहोत सीसोदियै चूंडावतरी लिख्यते

रतनसी नाढावत सींधळ, सींधळावटीरो गांम जाखोरो, तिण मांहै रहै।[1] तैरै बेटी मोटी हुई।[2] ताहरां कह्यो–'राज ! नाळेर मेलो।'[3] तो कह्यो–'रावळ रतनसीहरो बेटो खेतसीह छै, तैनूं नाळेर मेलो।'[4] अर भांनो सोनगरो वींदणीरै[5] मांमो हुवै तिकैनूं[6] कह्यो–'भांना ! जाओ, नाळेर रावत रतनसीहरै बेटै खेतसीहनै देराड़िज्यो।'[7] ताहरां भांनै कह्यो–'वाह-वाह ! रावत साहिबीरो धणी छै। आज तो भूखो छै; पण साहिबी छै।' नाळेर खेतसीहनूं झलायो।[8] पनरै दिनांरो साहो थापियो।[9] ब्राह्मणांनूं सीख दीवी।[10]

रावत तो बेटैसूं बुरो हुतो, अर खेतसीहरै घरमें क्युं देणनै हुतो नहीं।[11] सु ब्राह्मणांनूं दियो क्युंही नहीं। ताहरां ब्राह्मणां कह्यो–'बाबा ! घरमें उरमें ऊंदरा थिड़ी करै छै।[12] भूखां मरै छै।[13] 'तो कहियो–'म्हारी दीकरी भूखमें दईस ?[14] हूं कूवै पड़ूं पण देवूं नहीं।[15]

ताहरां सगरो बालीसो सूरजमल बालीसैरो बेटो, उवैनूं पनरै दिनांरो साहो थापि नाळेर मेलियो।[16] ताहरां बालीसां जांनरी तैयारी कीवी।[17] अठै भांनै सौनगरै कह्यो–'रावतजी ! साहो नैड़ो आयो,

---

1 सींधल रतनसी नाढावत, सींधलावाटीके गांव जाखोरोमें रहता है। 2 उसके एक बेटी है जो वयस्क हो गई। 3 तब कहा–श्रीमान् ! इसके विवाह-सम्बन्धके लिये कहीं नारियल भेजिये। 4 रावल रतनसिंहका बेटा खेतसिंह है उसको नारियल भेजिये। 5 दुलहिनके। 6 जिसको। 7 भाना ! जाओ और यह नारियल रावत रतनसिंहके बेटे खेतसिंहको दिलवा देना। 8 ग्रहण करवाया, दिया। 9 पन्द्रह दिनों (के बाद)का लग्न निश्चित किया। 10 ब्राह्मणोंको रवाना किया। 11 रावत तो बेटेसे नाराज था और खेतसिंहके घरमें देनेको कुछ था नहीं। 12 घरमें-वरमें तो चूहे थिड़ी करते हैं। 13 भूखों मरते हैं। गरीबी भुगतते हैं। 14 मेरी लड़की क्या मैं ऐसे दरिद्रावस्था वालेको दूंगा ? 15 मैं कुंएमें पड़ जाऊं परंतु ऐसेको नहीं दूं। 16 तब सूरजमल बालीसेके लड़के सगरा बालीसेको पन्द्रह दिनोंका लग्न निश्चित कर नारियल भेजा। 17 तब बालीसोंने बारातकी तैयारी की।

खेतसीहनूं परणावस्यां ।'[1] ताहरां रावतजी कह्यो–'ओ खेतसीह छै, ले जाय परणावो ।'[2]

ताहरां कह्यो–'वींदरै चढ़णनूं घोड़ो नहीं छै, सु आपरो असवारीरो घोड़ो देरावो ।'[3] ताहरां रावतजी कह्यो–'भांना ! ओ घोड़ो द्युं नहीं ।[4] पण तोईज कनै राखीजै जाहरां तोरण वांदै ताहरां चढणनूं देई ।'[5] ताहरां भांनै कह्यो–'भलां, राज ! मो कनै हीज राखीस।'[6] जणा ४० साथै दिया। कई ऊंठै चढिया, कई घोड़ै चढिया। भांनो साथै हुवो। हालिया।[7] आगै घाटो[8] उतर घांणोरा गांव छै तठै[9] डेरो कियो। उठै गोठरी तैयारी हुई छै।[10] बाकरा[11] मारिया छै। तठै तळाव ऊपर बावड़ी[12] छै। तिण ऊपरा वड़ छै।[13] तठै गांमरो पणघट[14] लागै छै। भांनौ अर खेतसीह जंगळ चालिया।[15] जंगळ जायनै खेतसीह वै वड़री साख झाल ऊभो छै।[16]

जितरै वै वावड़ी मांहै एकै बैर एक बैरसूं कहै छै[17]–'ओ वींद परणीजण हालियो छै[18], तिकै ऊपर एक वळै ही आवै छै।[19] पछै ओ परणीजसी, कना ऊ परणीजसी ?'[20] आ वात खेतसीह सांभळी।[21] इतरैमें[22] भांनो आयो। ताहरां खेतसीह बोलियो–'भांनाजी ! आवो, वधाई देवां।' ताहरां कह्यो—'सखरी वधाई देई।'[23] कहियो—'जिको आंपां वींदणी परणीजण हालिया छां, तिकैनूं और पण वींद परणीजण

---

1 इधर भाना सोनगरेने कहा—'रावतजी ! लग्न नजदीक आ गया है, खेतसिंहकी शादी करेंगे। 2 यह खेतसिंह है, लेजा कर ब्याह दो। 3 अपनी सवारीका घोड़ा दिलवाइये। 4 भाना ! यह घोड़ा इसे नहीं दूं। 5 लेकिन तेरे पास ही रखना, जब तोरण-वंदन करे, तब इसे चढ़नेको दे देना। 6 अच्छा श्रीमान् ! मेरे पास ही रखूंगा। 7 रवाना हुए, चले। 8 पहाड़का तंग मार्ग, दर्रा। 9 वहां। 10 वहां पर भोजनकी तैयारी हुई है। 11 बकरे। 12 बावली, वापी। 13 जिसके ऊपर एक वट-वृक्ष है। 14 पनघट। 15 भाना और खेतसिंह शौच निवृत्तिको चले। 16 शौच-निवृत्तिसे आ कर खेतसिंह उस बरगदकी एक बरोहको पकड़ कर खड़ा है। वड़री साख=वट-वृक्षकी जटा, बरोह। 17 उस समय उस बावलीमें एक स्त्री एक अन्य स्त्रीसे कहती है। 18 यह दूल्हा विवाह करनेको चला है ! 19 इसके ऊपर एक और (दूल्हा) भी आ रहा है। 20 तब फिर यह ब्याहेगा किंवा वह ब्याहेगा ? 21 यह बात खेतसिंहने सुनी। 22 इतनेमें। 23 अच्छी बधाई देना।

आवै छै ।'[1] कह्यो—'जी, थांनूं किण कह्यो?'[2] —'जी, यां वैरां कह्यो।'[3] ताहरां भांनो रीस कर कहण लागो–'क्युं जी रांडां ! थे काहूं कहो छो ?'[4] ताहरां वैरां कह्यो–'जी, इयै गांम मांहै कूंभार नहीं छै, वेह म्हां घड़ी छै।[5] म्हांनूं चोकस समंचार छै।'[6] ताहरां भांनै कह्यो—'थानूं[7] चोकस खबर छै ?' ताहरां पिणहारियां कह्यो–'सगरो सूजावत आवसी।'

ताहरां भांनै कह्यो—'हूं जाईस, म्हारै वैहनेई छै। तियांनूं पूछिस। ओ कासूं ?'[8]

ताहरां भांनै चढि खड़िया ।[9] गांम आयो। आगै ढोल वाजै छै। न्यौंतिहार आवै छै।[10] भांनाजी तोरण जाय खड़ा रह्या। कहियो–'भांनोजी ही आया।' ताहरां कोई न कहै 'आवो न जावो।'

ताहरां भांनो भीतर वैहन, वैहनेई कनै आयो, कह्यो—'जांन चूंडावतांरी आई छै।' ताहरां कहियो–'भांना ! चवंडावत नूं दीकरी परणावां नहीं।'[11] ताहरां भांनै कह्यो–'ठाकुरां ! थे बुरी करो छो;[12] अर म्हैं मांहि हुयनैं सगाई कीवी छैं।[13] हूं थांहरै आगै पेट मारनै मरस्यूं।'[14] ताहरां बोलियो–'भांना ! थारी कटारी मैली छै; आ ले म्हारी कटारी।[15] म्हैं काले ही वाढ दरायो छै।'[16] ताहरां भांनै कह्यो–'समधा जी !'[17]

भांनै तो चढ खड़िया। पाछौ खेतसीह कनै आयो। रोटा हुवा

---

1 जिस दुल्हिनको अपन ब्याहनेको चले हैं, उसको और भी कोई दूल्हा ब्याहनेको आ रहा है। 2 तुमको किसने कहा ? 3 इन स्त्रियोंने कहा। 4 क्यों हे रंडाओ ! तुम क्या कह रही हो ? 5 इस गांवमें कोई कुम्हार नहीं है अतः वेह हमने बनाई है। वेह=विवाह-मंडपके चारों कोनोंमें रखे जाने वाले (बड़े घड़ेके ऊपर क्रमसे छोटा इस प्रकार) समायुत सात-सात मिट्टीके घड़ोंका एक मंगल-कलश-समूह। 6 हमको सही पता है। 7 तुमको। 8 मैं जाऊंगा, वह मेरा बहनोई है, उनसे पूछूंगा, यह क्या (कबाड़ा) ? 9 तब भाना चढ करके रवाना हुआ। 10 निमंत्रित लोग आ रहे हैं। 11 चूंडावतको बेटी नहीं ब्याहेंगे। 12 ठाकुरो ! तुम बुरा कर रहे हो। 13 मैंने अंदर रह कर सगाई की है (मेरी मौजूदगीमें सगाई हुई है।) 14 मैं तुमारे सामने पेटमें कटारी मार कर मरूंगा। 15 तेरी कटारी मैली (कुंद) है, यह ले मेरी कटारी। 16 मैंने कल ही इसके धार लगवाई है। 17 समझ गये जी।

हुता, रोटा जीमिया।[1] जीम'र कह्यो–'चालो पाछा जावां।' ताहरां खेतसीह कह्यो–'वाह, वाह। भावै थे परणाय ले जावो, भावै थे कंवारो ले जावो।'[2] चढि खड़िया। पाछली थापी।[3]

ताहरां कह्यो–'भांनाजी! ओ ऐराकी तो द्यो, कोस २ चढां।[4] रावतजी कह्यो–'थां तोरणरी वेळा चढण देज्यौ; सु तोरण ही रह्यो।'[5] ताहरां भांनो घोड़ो देण में न हुतौ, पण साथ सारो ही कहै–'घोड़ो द्यो।'[6] ताहरां भांनै घोड़ो दियो। खेतसीह घोड़ै चढियो। ताहरां भांनै दोय जलेबदारांनै कह्यो–'घोड़ैरी वाग झालो।'[7] ताहरां वैं गांवरी वावड़ी कनै आया।[8] ताहरां खेतसीह बोलियो–'हो भांना! औ औरां कहै छै, जु ओ वींद रोवतो जावै छै; सु थे म्हांनूं काय भांडौ।'[9]

इतरै मांहै जलेबदारां वाग छोड़ी।[10] ताहरां दोय तीन गज्यंदा नखाय[11] घोड़ैनूं, मूंछां हाथ फेरनै कह्यो–'इसड़ो कुण छै मा-जायो, सु म्हारी मांग परणीजसी?'[12] यु कहै आपड़ां पाछा खड़िया।[13] ताहरां भांनै कह्यो सगळै ही साथनूं[14] –'ज्यो थे पाछा पधारौ, हूं खेतसीहनूं मनाय ले आवूं छूं।' ताहरां भांनै आपड़ियो वांसांसूं खेतसीहनूं।[15] वतळायो; खेतसीह बोलै नहीं। ताहरां खेतसीहनूं कह्यो–'तूं तो पाछौ नी घिरै, पण मोनूं मुवैहो सरंत।'[16] तो कहियो–'हवै!'[17] ताहरां कह्यो–'आवां मिळां।' ताहरां मिळिया।

---

1 रोटा (एक भोजन) हो गये थे अतः रोटे खा लिये। 2 चाहे विवाह करके ले जाओ चाहे कँवारा ही ले जाओ। 3 लौटनेका निश्चय किया। 4 यह ऐराकी घोड़ा तो दे दें, दो कोस तो इस पर चढ़ लूं। 5 रावतजीने कहा था कि तुम इसे तोरन-वंदनके समय चढनेको देना, सो तोरन-वंदनकी बात तो अब नहीं रही। 6 तब भानाकी मर्जी घोड़ा देनेकी नहीं थी, लेकिन सभी साथ वाले कहते हैं कि घोड़ा दे दो। 7 घोड़े की बाग पकड़े रहो। 8 तब उस गांवकी बावलीके पास आये। 9 ये औरतें कहती हैं कि यह दूल्हा तो रोता हुआ जा रहा है सो तुम मुझे क्यों बदनाम करवा रहे हो। 10 इतनेमें जलेब-दारोंने लगाम छोड़ दी। 11 कुदवा कर। छलांगें भरवा कर। 12 ऐसा कौन अपनी माताका वीर पुत्र है सो मेरी मंगेतरको व्याह लेगा? 13 यों कह कर तेज दौड़ा कर लौट चले (आपड़ां=घोड़े ऊंट आदिकी तेज दौड़) 14 तब भानाने सभी साथ वालोंको कहा। 15 तब पीछेसे तेज़ चल कर भाना खेतसिहको पहुंच गया। 16 परंतु मुझेतो मरना ही पड़ेगा। 17 हां।

ताहरां खेतसीह कह्यो–'भांनाजी ! थे आगै खड़ौ, भूमिया छौ ।'[1] पछै बेहूं भेळा हुयनै खड़िया ।[2] तितरै दीह आथम्यौ । ताहरां कह्यो– 'जी, इयै धरतीमें जाळां हुवै छै,[3] कोई आगू लीजै तो भलौ । ताहरां उवै[4] धरती मांहै आगू सरगरा हुवै छै । ताहरां सरगरैनूं कहियो । ताहरां सरगरै कहियो—'च्यार फदिया लेइस ।'[5] ताहरां कहियो—'अै च्यार फदिया, एक दुपटो ।' तितरै एक ऊठि आयो,[6] इंयांरो पटेल । पटेल कहियो—'अठै जांनरो ऊंठ भागो छै,[7] सु वसत गाडै घालनै आंणता हुता ।'[8] ताहरां ईंयां पूछियो[9]–'जांन कैरी ?'[10] ताहरां कहियो—'जांन बालीसांरी छै ।'[11] कहियो—'अैही जाय मुंह आगै हाथी असवार हुवा ।'[12]

पछै अै ठाकुर आय भेळा हुवा ।[13] खड़िया पांच सै असवारांरी गांठ चाली जावै छै ।[14] अर अठै उतर हाथी सौं अर जीणपोस नांखनै प्याला ३ दारूरा पिया ।

इतरै सांमेळो सांमो आयो ।[15] जांनी, मांढी भेळा हुवा ।[16] पछै खड़िया पांच सौ असवारांरी गांठ चाली जावै छै । ताहरां भांनै कह्यो– 'खेतसीह ! खाथो मतां हुवै ।'[17] कहियो—'नां, जी, खाथो कोई हुवुं नहीं ।'

अठै तोरण हेठै आय ऊभा रह्या छै पागड़ा छाड़ि नै ।[18] कई

---

1 तुम जानकार हो आगे चलाओ । 2 तब दोनों सामिल होकर चले । 3 इस धरतीमें जालोंके वृक्ष बहुत होते हैं । 4 उस । 5 चार फदिये लूंगा (फदिया=एक छोटा सिक्का) 6 इतनेमें एक ऊंट-सवार आया । 7 यहां बारातका ऊंट टूट गया है । 8 सो उस परकी चीज-वस्तु गाड़में डाल करके ला रहे थे । 9 तब इन्होंने पूछा । 10 बरात किसकी है ? 11 बारात बालीसा राजपूतोंकी है । 12 ये मुंहके आगे (थोड़ीही दूरी पर) ही हाथी पर सवार होकर जा रहे हैं । 13 पीछे ये ठाकुर आ कर सामिल हो गये । 14 पांचसौ सवारोंका समूह अपने वाहनोंको चलाते हुए चला जा रहा है । 15 इतनेमें सामेला सामने आया । (सांमेळो=कन्या पक्षकी ओरसे किया जाने वाला बरातका एक स्वागत-आयोजन) 16 बराती और कन्या पक्ष वाले इकट्ठे हुए । 17 उतावला मत हो । 18 वाहनोंसे उतर करके यहां तोरनके नीचे आ कर खड़े हुए हैं ।

चढ़िया खड़ा छै। वरहेड़ौ सांमो आवै छै।[1] वींद तोरण हेठै ऊभौ छै।[2] वरहेड़ौ आयो। इतरै मांहै खेतसीह वाहीज।[3] ताहरां वींदनूं 'खमा' कहियौ।[4] ताहरां खेतसीह कहियौ-'खमा मो खेतसीहनूं।'[5] केही न वाहतां दीठी न म्यांन करतां दीठी।[6] इम हीज घोड़ो डकायो।[7] कहियो-'भांना! आवौ। हमैं ज्यो उतरिया सु उतरिया। अर चढिया ऊभा हुता तिकै उवांरै वांसै हालिया। कह्यो-'हां, जावण न पावै, आपड़िया!'[8] खेतसीह तो मोहरै छै।[9] अर भांनैनूं लोहड़ा हुवा।[10] भांनो मारियो।

मार अर पाछा आया। आय अर कह्यो-'हो ठाकुरे! मांहरै कोई वैर नहीं। ओ खेतसीह कुण?'[11] ताहरां कह्यो-'जी, ओ खेतसीह चूंडावत। आ सगाई इयै भांत कीवी हुती।'[12] ताहरां कहियो-'फिटो, आ वात म्हांनूं पैहली कही हुवंत, जु वींदणी आंट भरी छै, ज्युं म्हे जतन करंत।[13] पण हिवै म्हां खेतसीह मारियो छै।[14] आवो जोवां।'[15] जाय अर जोयो। ताहरां कह्यो-'जी, ओ भांनो सोनगरो छै। ओ खेतसीह न हुवै।'[16]

---

1 साम्हनेसे वरहेड़ा आ रहा है। (वरहेड़ो=वरके लिये स्वागत-पूजा आदिकी सामग्री। इसे वरबेड़ो या वरवेहड़ो भी कहते हैं। कहीं कहीं तोरन पर आये हुए वरको पुंखनेके लिये आरती आदि मांगलिक उपकरणोंके साथ वरवेहड़ो भी होता है। वरके साथ बारातका स्वागत करनेके समय तो इसका उपयोग सर्वत्र होता है। वरवेहड़ो प्रायः सुराही जितना मिट्टीका छोटा घड़ा होता है जिसके ऊपर एक इससे भी छोटी मिट्टीकी लुटिया रखी रहती है। वरवेहड़ो अनेक रंगोंसे चित्रित होता है और उसमें दूब अक्षत आदि मांगलिक वस्तुएँ रखी रहती हैं। यह एक मंगल कलश है, जिसे विवाहादि अवसरों पर गीत गाती हुई अनेक स्त्रियोंके साथ एक सधवा स्त्री इसे अपने सिर पर उठा कर मंगल शकुनोंके रूपमें वर और बारातका स्वागत करती है।) 2 दुल्हा तोरनके नीचे खड़ा है। 3 इतनेमें खेतसीहने प्रहार कर ही दिया। 4 उस समय पासके खड़े लोगोंने दुल्हेको 'खमा' कहा। ('खमा' शब्दका अर्थ—क्षमा होता है; परंतु राजस्थानमें इसका 'आयुष्मान्' जैसा आशीर्वादात्मक अर्थ होता है। राजाओंको अभिवादनके समय इसका प्रयोग किया जाता रहा है।) 5 तब खेतसिंहने कहा— खमा तो मुझ खेतसिंहको है। 6 किसीने न तो प्रहार करते देखा और न तलवारको म्यान करते ही किसीने देखा। 7 इसी प्रकार उसने घोड़ेको भी लँघवा (कुदवा) दिया। 8 कहा—हां, जाने न पावे, पकड़ लेना। 9 खेतसिंह तो सब से आगे है। 10 और भानाको तलवारके प्रहार लगे। 11 यह खेतसिंह कौन? 12 यह सगाई इस प्रकार इसके साथ की हुई थी। 13 अस्तु, जो होना था सो हो गया, यह बात हमें पहले कह दी होती कि यह दुल्हिन टंटेकी है तो हम प्रबन्ध करते। 14 परंतु अब तो हमने खेतसिंहको मार दिया है। 15 आओ देख लें। 16 यह खेतसिंह नहीं है।

ताहरां कह्यो–'ठाकुरे ! म्हे खेतसीह पावां ।'[1] कहियो–'खेतसीह तो नहीं पावौ । पण खेतसीहरो भाई जगौ चूंडावत, सात वीस [2] गांमांरो धणी,[3] म्रिगासर परणीजणनूं आयो छै,[4] सु थे जावौ, जगौ थांहरै हाथ आवसी ।'[5] इयां दोय सै असवारां खड़िया ।[6] पण खेतसीह तौ पैहली जगै कनै[7] आयो, आयनै कहियो–'मैं सगरौ वालीसौ मारियौ; और वालीसा सारा ही अठै छै,[8] सो हालो[9] आपां कूंभळमेर जावां ।' औ चढि अर घाटो उतरिया ।[10] औ असवार पाछै आया । आयनै ऊभा रहिया ।[11] मारै किणनूं ?[12] कहियो–'ठाकुरे ! अठै जगो न आयो हुतौ ? म्हे न्यौंतिहार आया छां ।'[13] कहियो–'जी, खेतसीह सगरौ वालीसौ मारियो, सु जगैनूं ले अर कुंभळमेररै घाटै उतरिया ।'

ताहरां औ असवार पाछा आया । आयनै देखै तो सगरौ तोरण नीचै पड़ियो छै । ताहरां कह्यो–'जी, सती हुवौ, सगरैनूं लेनै ।[14] सतीनूं कहौ जु बाहिर आवै, ज्युं सगरैनूं दाग देवां ।'[15] ताहरां वींदणीनूं भीतर जाय कहियो । ताहरां वींदणी कह्यो–'खेतसीह मारियो हवै तो हूं सती न हवूं ।[16] सगरैनूं घींसनै नांख देवौ ।'[17] पाछै आयनै कहियो–'जी, संभै नहीं ।'[18] ताहरां कहियो–'जी, म्है एकलै ही सगरैनूं बाळां ?'[19] तो कही–'म्है अणसंभाही ही सती करां ?'[20] ताहरां कह्यो–'आवौ बारै ।'[21] ताहरां जांनी ही सिलह पहरै छै, मांढी ही सिलह पहरै छै । बेहुं हथियार बांधै छै, सिलह पैहरीजै छै ।[22]

---

1 हमें खेतसिंह मिलना चाहिये । 2 सत्ताइस (१४०?) । 3 स्वामी । 4 मृगासर गांवमें व्याहनेको आया है । 5 जगा तुम्हारे हाथ आ जायेगा । 6 ये दोय सौ सवारोंके साथ चले । 7 पास । 8 और सभी बालीसे यहां हैं । 9 चलो । 10 ये चढ करके घाटी पार हो गये । 11 आ करके खड़े रहे । 12 किसको मारे ? 13 हम निमंत्रित होकर आये हैं । 14 तब कहा कि सगरेको ले करके सती हो । 15 तो सगरेको जला दें । 16 तब दुल्हिनने कहा—इसे खेतसिंहने मारा है अतः मै अब सती नहीं होऊंगी । 17 सगरेको घसीट कर फेंक दो । 18 तैयार नहीं हो रही है । 19 तब कहा कि क्या हम अकेले ही सगरे को जलायें ? 20 तो उत्तर दिया कि क्या हम बिना तैयार हुई (बिना व्याही हुई) को भी सती कर दें ? 21 तब कहा—लड़नेके लिये बाहर आ जाओ । 22 तब बराती भी सिलह पहिन रहे हैं और मांढी (कन्या पक्ष वाले) सिलह पहिन रहे हैं । दोनों ओर शस्त्र बांधे जा रहे हैं और सिलह पहिने जा रहे हैं ।

ताहरां वींदणी दीठौ, अर मा अर बापनै कहियो–'हे ठाकुरां-रजपूतां ! हूं बैर खेतसीहरी छूं; अर एकलीरै वास्तै घणा जीव मरै छै, तै हूं सगरै साथ बळीस ।'[1] वींदणी बाहिर आयनैं सगरै साथै बळी ।[2] बाळ अर बालीसा हुता तिके नाडूल आया ।[3] सींधळ सींधळावटी आया ।

॥ इति खेतसीहरी वात संपूर्ण ॥

---

1 तब दुल्हिनने देखा और अपने माता-पितासे कहा (और राजपूतोंसे भी कहा) कि राजपूत ठाकुरो ! मैं खेतसिंहकी पत्नी हूं, परंतु मुझ एकके लिये कई प्राणी मरनेको तैयार हुए हैं अतः मैं सगरेके साथमें जल जाऊंगी । 2 सगरेके साथमें जल गई । 3 जला करके बालीसा राजपूत थे वो नाडोलको चले गये ।

।। श्री गुणेशाय नमः ।।

अथ गुजरात देश राज्य वर्णनम्

संमत ८५२ वर्षे श्रावण सुदि २ गुरुवार चावड़ै वणराज अणहल-पुर-पाटण वसायो । पाटणनी स्थापना कीधी ।[1]

वणराज वर्ष ६० राज कियो ।

तत्पट्टे वणराज पुत्र योगराजेन राज्यंकृतं वर्ष ६ ।[2]

संमत ८९१ वर्षे शलादित्य° वर्ष ३ राज्यं कृतं ।

संमत ८९४ वर्षे राजा वैरसिंघ राज बैठो। वर्ष ११ राज्यं कृतं ।

तत्पट्टे[3] राजा खेमराज राज्यं कृतं वर्ष ३९ ।

तत्पट्टे राजा चामंड वर्ष २७ राज्यं कृतं ।

तत्पट्टे राजा घाघड़दे* वर्ष ३५ राज्यं कृतं ।

तत्पट्टे अड़राज+ वर्ष २९ राज्यं कृतं ।

संमत १०१७ वर्षे एतले चावड़ां वंश राज्य पूरो हुवो ।[4]

वरस १६६ चावडां अणहलपुर-पाटण राज कियो । पछै दोहीतरै[5] मूळराज राज लियो ।°

संमत १०१७ मूळदेव अणहलपुर-पाटण राज बैठो । दोहीतरैंनू राज आयो ।[6] वर्ष ४५ राज कियो ।

° रत्नादित्य और राणादित्य पाठ भी कई प्रतियोंमें लिखे हैं । दूगड़जीने 'रत्नादित्य' नाम लिखा है। 'वात अणहलवाड़ा पाटणरी' (प्रथम भाग, पृ २५९में) नैणसी ही ने 'राजादित' लिखा है ।

*कई प्रतियोंमें घायड़दे, गाहड़दे और गाहड़देव नाम लिखे हैं। अणहलवाड़ा पाटण-की वातमें 'गूंडराज' नाम है ।

+'वात अणहलवाड़ा पाटणरी'में ८वाँ शासक 'भोवंडराज' लिखा है। और छठा शासक चामंडकी जगह 'चूंडराव' लिखा है ।

°सम्वत् १०१७ तक चावड़ोंके राज्यको १६६ वर्ष ही होते हैं, परंतु जिन आठ चावड़े शासकोंका राज्य-काल लिखा है, उनका योग २१३ होता है । ४७ वर्षोंका अंतर है ।

---

1 पाटणकी स्थापना की । 2 जिसके पाट पर वणराजके पुत्र योगराजने ६ वर्ष राज्य किया । 3 जिसके पाट पर । उसके वाद उसके पाट पर । 4 सम्वत् १०१७में इतने चावड़ा वंशके शासकोंके बाद चावड़ोंका राज्य समाप्त हुआ । 5 दोहिते । 6 सम्वत् १०१७में मूलदेव अणहलपुर-पाटणके राज्य-सिंहासन पर बैठा । दोहितेको राज्य प्राप्त हुआ ।

तत्पट्टे चंदगिर वर्ष १० राज्यं कृतं
तेहनै[1] पाट राजा कर्ण वर्ष ३० राज्यं कृतं ।

[पृष्ठ ४६ की टिप्पणी चालू]

परंतु 'वात अणहलवाड़ा-पाटणरी' (प्रथम भाग, पृ. २५६) में इन आठों शासकोंके शासक-कालका योग १६८ वर्ष ६ मास ही होता है। वहां जो इन शासकोंकी सूचीके नीचे जो कवित्त दिये गये हैं उनके हिसाबसे भी इन आठोंका शासन-काल १६८ वर्ष होता है, परंतु प्रथम कवित्तकी अंतिम झड़—

चावड़ां राज अणहलनयर, कीध वरस सौ छीनवह ।।

और दूसरे कवित्तकी प्रथम और दूसरी झड़में भी—

आठ छत्र चावड़ा, कीध पाटण धर रज्जह ।
वरस एकसौ छिनु, गया भोगवी सकज्जह ।।

के अनुसार १९६ वर्ष ही होते हैं। इसी प्रकार चावड़ोंके बाद सोलंकियों और वाघेलोंके शासकों और उनके शासन-कालमें भी इन दोनों स्थानोंमें परस्पर बहुत अधिक अंतर है। वातमें सोलंकियोंके शासक १० हैं जिनका शासन-काल २९९ वर्ष है और यहां ९ शासकोंके शासनके २५१ वर्ष ३ मास और २८ दिन हैं।

वाघेलोंके वातमें पांच शासक हैं और १०६ वर्ष उनके शासन-कालके बताये गये हैं। देवराजके समय माधव ब्राह्मण अलाउद्दीनको ले आता है। इधर दो पीढ़ियोंके ७० वर्ष ७ मास और ४ दिनके बाद तीसरे शासक करण गेहलेके समयमें माधव अलाउद्दीनको ले आता है।

ख्यातों, विगतों तथा हकीकतों एवं वंशावलियोंमें शासकोंके राज्य-काल और नगरों और गढ़ों आदिके निर्माण-कालका अनेक विध विवरण गद्य-पद्योंमें मिलता है; परंतु उनमें समानता बहुत कम पाई जाती है। हमारे संग्रहकी अनेक विगतकी प्रतियोंमें से, एक प्रतिकी, जिसमें मास, दिनका विशेष विवरण होनेके कारण, उक्त दोनों विगतोंकी तुलनाके लिये केवल अणहलपुर पाटणकी विगत यहां दे रहे हैं, जिससे सही वात जाननेका आधार मिल सके।

'संवत् ८०२ वर्षे वैशाख सुदि ३ रवौ रोहिणी, तत्कालं मृगशिर नक्षत्रे वृषस्थे चंद्रे, साध्य योगे, गर करणे, सिंह लग्ने, मध्यान्ह समये अणहिल्लपुरस्य शिलानिवेशस्तस्यायुर्बद्ध वर्ष ५२०० मास ७ दिन ९ घटी ४४। तत्रपूर्व्वं वणराज स्थिति; वर्ष १८९ मास ६ दिन १९ चाउडा छत्र व्यक्तितः। तत्रपूर्व्वं स्थिति—

१. वृद्ध वणराज राज्यं वर्ष ६५ मास २ दिन १
२. जोगराज राज्यं वर्ष १० मास १ दिन १
३. राणादित्य राज्यं वर्ष ३ मास ३ दिन ४
४. वयरसीह राज्यं वर्ष ११ मास × दिन २
५. क्षीमराज राज्यं वर्ष ३८ मास ३ दिन १७
६. चामुंडराय राज्यं वर्ष ३४ मास ४ दिन १७

---

1 जिसके, उसके।

संमत ११५० वर्ष सिद्धराज जैसिंघदे वर्ष ४६ राज्यं कृतं। पछै वर्ष ३ सिद्धराजरी पावड़ी राखिनै सरब अमराव कांमेती दरबार करता।[1]

[पृष्ठ ४६ की टिप्पणी चालू]

७. आकड़राय राज्यं वर्ष २६ मास १० दिन २०
८. राय भूवड़ राज्यं वर्ष २७ मास ६ दिन ५

ततो वर्ष २६६ मास १ दिन २० सोलंकी राज्यं १२ तेषां व्यक्ति—

१. वृद्ध मूलराज राज्यं पूर्व वर्ष ५६ मास १ दिन २४
२. वलभराज राज्यं वर्ष…मास ५ दिन २६
३. दुर्ल्लभराज राज्यं वर्ष १२ मास… दिन ५
४. वृद्ध भीमदेव राज्यं वर्ष ४२ मास १० दिन ६
५. वृद्ध कर्णदेव राज्यं वर्ष २६ मास ८ दिन १२
६. जयसिंहदेव राज्यं वर्ष ४८ मास ८ दिन १८

पाट शून्या ततो वर्ष…मास २ दिन १२

७. कुमारपाल राज्यं वर्ष ३० मास १ दिन २७
८. अजयपाल राज्यं वर्ष ३ मास १ दिन २८
९. लघु मूलराज राज्यं वर्ष २ मास… दिन ४
१०. लघु भीमदेव राज्यं वर्ष ६५ मास २ दिन २०
११. लघु जयसिंघदेव वर्ष ३ मास ६ दिन…
१२. तिहुणपालदेव वर्ष २ मास…दिन १२

एवं द्वादस छत्राणि।

तदनुवर्षं ५८ मास ३ दिन ४ वाघेला छत्र ४ पुर्व्व

१. वीसलदेव वर्ष १६ मास ७ दिन ११
२. अर्जनदेव वर्ष १३ मास ७ दिन २३
३. सारंगदेव वर्ष १०
४. कर्णदेव वर्ष ८

एवं २४ छत्र जातानि

अणहिलपुर शिलानिवेश तदनुगत वर्ष ५४७ मास १ दिन २५ यावत् ततः संवत् १३४६ वर्षे मास ८ दिन २६ छत्र २४ ततो वर्षे १ मास ४ दिन १० राज भय त्रस्त रह्यउ। एवं संवत् १३५१ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे दशम्यां तिथौ गुरुवारे महं० माधवेन म्लेछा आनीता।

वातमें कोटकी नींव भरनेका सम्वत् ९०१ वैशाख सुदि ३ है, तो यहां सम्वत् ८५२ सावन सुदि २को स्थापना होना लिखा है। अनूप संस्कृत लाइब्रेरी बीकानेरकी ख्यातकी प्रति

१ पीछे तीन वर्ष तक सिद्धराजकी खड़ाऊ सिंहासन पर रख कर सभी उमराव कामेती दरबार भरते।

पछै वरस ३ राज्य चलायो ।

पछै जैसिंघदेरो भाई रांणो तिहुयणपाळ, तैरो बेटो कुंवरपाळ टीकै बैठो ।[1] संवत ११९९ काती सुदि ३ कुंवरपाळ टीकै बैठो । वर्ष ३० मास १ दिन ७ राज्यं कृतं ।[2]

तियैरै पाट छोटो भाई महिपाळदे वर्ष १३ मास २ दिन ७ राज कियो ।

तत्पुत्र[3] अजयपाळ वर्ष ३ मास ६ राज्यं कृतं ।

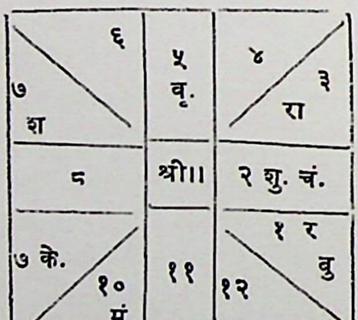
तत्पट्टे लघु मूळदेव वर्ष ३२ मास ४ दिन ६ राज्यं कृतं ।

तत्पट्टे राजा भीम वर्ष ३४ मास ११ दिन ८ राज्यं कृतं ।

तठा पछै वाघेलां पाटणनो राज लियो । संवत् १२५३ राज फुरियो ।[4]

[पृष्ठ ४९ की टिप्पणी चालू]

पत्र ६७में पाटणकी कुंडलीके साथ सम्वत् ९०२ वैशाख सुदि ३ लिखा है और विगतोंमें सर्वत्र ८०२ संवत है। अनूप संस्कृत लाइब्रेरीकी कुंडली और हमारे पास एक विगतकी कुंडलीमें भी साधारण अंतर है। लाइब्रेरीकी कुडलीमें शनि तीसरे घरमें और मंगल छठे घरमें स्थित है और हमारे पासकी विगतमें शनि दशवें घरमें, शुक्र चंद्रमाके साथमें और मंगल ११वें घरमें राहुके साथ बैठा हुआ है। अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेरकी ख्यातमें लिखी हुई कुंडली इस प्रकार है—



वि. सं. ९०२रा वैसाख सुद ३ रोहणी नक्षत्र मध्यान विजय मुहूर्त्त पाटणरा कोटरी राग भरी।

ख्यातकी अन्य हस्तलिखित प्रतियोंमें कुंडली नहीं लिखी हुई है। परंतु 'अणहलवाड़ा पाटणरी वात' में यह लिखा हुआ सभी प्रतियोंमें पाया जाता है कि—'अणहलवाड़ा पाटणरी जन्मपत्रिका लिख्यते ।' (दे० प्रथम भाग, पृ० २५८, अंतिम पंक्ति)

---

1 जिसके बाद जयसिंहके भाई राणा तिहुणपालके बेटे कुंवरपालको टीका हुआ। 2 तीस वर्ष १ मास और सात दिन राज्य किया। 3 उसका पुत्र, जिसका पुत्र। 4 जिसके बाद वाघेलोंने पाटणका राज्य लिया। सम्वत् १२५३में राज्य-परिवर्तन हुआ।

राजा धीरधवळ* पाटण लियो । वर्ष ४५ मास ३ दिन १ राज्य कियो ।

तेहिनै[1] पाट वीसळदे हुवो। वर्ष २५ मास ४ दिन ३ राज कियो।

तेहनै पाट गैहलू कर्ण ।[2] राजा कर्ण माधव बांभण नागर तियैरी पुत्री घर मांहै घाती ।[3] तिको जायनै पातस्याह अलावदीन आगै पुकारियो ।[4] पातसाही फोजां लायो ।[5] पछै गुजरात तुरकै लियो । पछै तुरकांणी राज हुवो । हिंदवांणो मिटियो ।[6]

पातस्याह अलावदीन अमराव ४ गुजरात मांहै राखिया ।

१ मदफ्फरखांन, २ ततारखांन, ३ अहमदखांन, ४ महमदखांन ।

अहमदखांन अहमंदाबाद वसायो । पैहला आसैं भीलरी आसल-वासी हुती, तठै अहमंदावाद वसायौ ।[7]

पछै पातसाह अलावदीन बेटो कुतबदीन, तिकैनूं[8] अहमंदावाद दियो । सतर खांन बोहतर उमराव साथै दिया ।[9] सुरतांण कुतबदीन भद्र मंडाया ।[10] राज बैसी इयां मस्तक २१ छत्र धारिया ।[11] तिहां मदन-भेर वजावी ।[12] तिवारां पछै बीजा वाजा वजाया ।[13] ढिलीसूं लक्ष्मीनी मूरत आंणी ।[14] ते भद्र मांहि लाख टका खरचनै लक्ष्मी मूरत बैसारी ।[15] ते आगळ पहलो नांणो कुतवस्याही करायो । इसो नांणो (कोई न) नीपजायो ।[16] तिवारैं पछै गुजरात बीजो नांणो प्रवर्तायो । पछै जलाला आद देनै नांणा प्रवर्तिया ।[17]

---

*वीरधवल और धारधवल नाम भी लिखे मिलते हैं ।

---

1 उसके, जिसके । 2 जिसके पाट गहला-कर्ण बैठा । 3 राजा कर्णने नागर ब्राह्मण माधवकी पुत्रीको घरमें डाल दिया । 4 उसने बादशाह अलाउद्दीनसे पुकार की । 5 बादशाही सेनाको चढ़ा लाया । 6 पीछे गुजरात तुर्कोंने ले लिया । हिंदुआना राज्य मिट गया और तुर्कानी राज्य हो गया । 7 अहमदखानने, जहां पहले आसा भीलका आसलवासी गांव था, उस स्थान पर अहमदाबाद बसाया । 8 जिसको । 9 सत्तर खान और बहत्तार उमराव भी साथमें दिये । 10 सुल्तान कुतबउद्दीनने दुर्गा देवीके मांगलिक भद्रा कृतियोंका निर्माण करवाया । 11 इस प्रकार सिंहासनासीन होने पर उसने २१ छत्रोंको धारण किया । 12 फिर वहां उसने विख्यात कल्याणप्रद मदन-भेरी नामक वाद्य बजवाया । 13 उसके बाद दूसरे वाद्य बजवाये गये । 14/15 दिल्लीसे लक्ष्मीकी मूर्तिको लाया और लाख टके खर्च करके भद्रमें स्थापित की । 16 उसने सबसे पहले कुतुबशाही रुपया प्रवर्त किया । इसके पहले ऐसा सिक्का किसीने नहीं चलाया । 17 जिसके बाद जलालशाही आदि दूसरे सिक्के गुजरातमें प्रवर्त हुए ।

सुरतांण कुतबदीननै[1] पाट सुरतांण महमंद बैठो। महमंद बारै लोकांनै १८ कर लागा।[2] ते कही[3]—

१ (प्रथम) दांण।	१० वळ।
२ (बीजौ) पूंछी।	११ लांचो।
३ हळगत।	१२ घोड़ा-चारण।
४ मोभ।	१३ कवारनी सूंखड़ी।
५ भेट।	१४ पाघड़ी-वरोड़।
६ तलार।	१५ ढोरनी चराई।
७ सूंखड़ी।	१६ वाड़ीनी लाग।
८ वधामणो लाग।	१७ कांटी वाळी लाग।
९ मळवो लाग।	१८ काजीनी लाग।

संमत १५१६ कर इतरी रकम अधिकी व्है छै।[4] वर्ष ५२ महमंद राज कियो।

[(1) दांण=उपार्जित धन पर लिया जाने वाला राज्य-भाग। (2) पूंछी=चौपायों पर लिया जाने वाला कर। (3) हळगत=खेत को जोतने पर हलोंके हिसाबसे लिया जाने वाला कर। (4) मोभ=मकान बनाने पर लिया जाने वाला कर। (प्रथम पुत्रसे भी तात्पर्य हो सकता है।) एक प्रतिमें इसके स्थान पर भोम लिखा है। (5) भेट=उत्सव आदि अवसरों पर अनिवार्य रूपसे लिया जाने वाला कर। (6) तलार=नगर रक्षक (कोटवाल)के खर्चेके रूपमें लिया जाने वाला कर। (7) सूंखड़ी=अतिरिक्त कर (सर चार्ज), दस्तूरी। (8) वधामणो लाग=पुत्र जन्म और विवाहादि पर बधाईके रूपमें लिया जाने वाला कर। (9) मळवो लाग=गांवकी सफाईके लिये लिया जाने वाला कर। (10) वळ=बलि या भोज पर लिया जाने वाला कर। (11) लांचो=खर्चमें कमीकी पूर्त्तिके लिये लिया जाने वाला कर। (12) घोड़ा-चारण=घोड़ेकी चराईका कर। (13) कवारनी सूंखड़ी=राजाके पाटवी पुत्रको दिया जाने वाला नजराना। इसके कुंवर सूंखड़ी, कुंवर नजराणो, कुंवर पछेवड़ो, कुंवर पांमरी, कुंवर माणो आदि कई भेद होते थे। (14) पाघड़ी-बरोड़=व्यक्ति कर। इसको मूंडका-वेरो भी कहते हैं। (15) ढोरनी चराई=पशुओंकी चराई का कर। (16) वाड़ीनी लाग=साग सब्जी आदिका कर। (17) कांटी वाळी लाग=तोलनेकी छोटी कांटी पर लिया जाने वाला कर (?) (18) काजीनी लाग=काजीके नाम पर लिया जाने वाला कर।]

1 कुतबुद्दीनके। 2 मुहम्मदने १२ (कृषक) जातियों पर १८ कर लगाये। 3 वे कौनसे? 4 सम्वत् १५१६से इन करों में इतनी अधिक रकम प्राप्त होती है।

संमत १५६७ सुरतांण मुदाफर टीकै बैठौ। वडो पातस्याह हुवौ। बेटा तीन हुवा—

१ सिकंदर। २ महमंद। ३ बहादुर।

संमत १५८१ सिकंदरस्याह पाट बैठो। मास २ दिन १७ राज कियो।

पछै भाई महमंद टीकै बैठो। मास ३ दिन ५ राज कियो।

संमत १५८२ सुरतांण बहादुर पाट बैठो। बहादुर वडो पातस्याह हुवौ। खुरसांण लगै धाक हुई।[1] पछै बहादुर पातस्याह चीत्रोड़ ऊपर कटक कियो।[2] संमत १५८९ फागण सुदे १ चीत्रोड़गढ गळी।[3] लाखूटानी पोळ घोड़ा १८०००० अनै हाथी १४००० एतलो दळ लाखोटानी पोळै थौ।[4] चीत्रोड़ भंग हुवौ। तठै रांणै रांणी करमेतीनूं जुहर कियौ।[5] आदमी हजार ४००० जुहर हुवौ।[6] सरोवर, कुवा, वाव, एतलां मांहैसूं बाळक ३००० जाळ नखावै काढिया।[7] अस्त्री ७००० पोताना लघु तीत साथै अफीम घोळ पीधौ।[8] अवर लोकांनै वांद पड़ीनी संख्या नी।[9] इसौ उपद्रव रोमीखांन करायौ।[10] पछै बाहदरसाह गुजरात गयौ।

पछै चीत्रौड़ मांहै तुरक हुता सु सीसोदियां कूट काढिया।[11]

पछै मुगल आया। मुगले दिली लीधी।[12]

पछै संमत १५९२ श्रावण सुदे ११ चांपानेर मुगल आया, पछै चांपानेर पालटियौ।[13]

---

1 खुरासान (फारस) तक धाक जमाई। 2 पीछे बादशाह बहादुरने चित्तौड़ पर आक्रमण किया। 3 सम्वत् १५८९ फागुन सुदी १को चित्तौड़गढ़का पतन हुआ। 4 घोड़े १८०००० और हाथी १४०००–इतना दल लाखोटाकी पौलमें जमा था। 5 वहां राणाने राणी करमेतीको जौहर करवाया। 6 ४००० आदमी जौहर कर जल मरे। 7 सरोवर, कुंएँ और बावड़ियें इनमेंसे ३००० बालकोंको जाल डाल कर निकलवाया गया। 8 सात हजार स्त्रियोंने अपने छोटे बच्चोंके साथ अफीम घोल कर पी लिया। 9 और बंदी कितने लोग बनाये गये इसकी कोई संख्या ही नहीं। 10 यह इस प्रकारका उपद्रव रोमीखानने करवाया। 11 बादमें चित्तौड़में जो तुर्क थे उन्हें शिशोदियोंने मार कर भगा दिया। 12 मुगलोंने दिल्ली पर अधिकार किया। 13 फिर सम्वत् १५९२ की सावन सुदी ११को मुगल चांपानेर (गुजरात) पर चढ़ कर आये, चांपानेरका राज्य पलटा।

पछै संमत १५९३ जेष्ट मास मांहै मुगल अहमदाबाद आया। आसोज वद १४ बाहदर पातस्याह नाठौ, दीव गयौ।[1] आगै बाहदर पातस्याह उमराव २ वसाया हुता—हिंदु खांट मांडण वरसौ पाटणरा भूमिया छमीछाना धणी, तियांनूं।[2] गांव १२ मांडणनूं दिया था। गांव १२ बारै वरसैनूं दिया था।[3] तिकां, बीजां भूमियां, हिंदु, तुरक भेळा होयनै मुगल मार काढिया।[4] नै पादस्याहनूं दीव मांहै फिरंगीए मारै खाड़ी समुद्ररी मांहै नांख दियौ।[5] संमत १५९३ फागण सुदे ५ बाहदर मारियौ।[6]

पछै अमरावां मिळ महमंद बेगड़ो पाट बैसारियौ, अहमदाबादमें पातस्याह कियौ।[7]

पातसाह महमंद वडो धरमात्मा हुवौ। औ ओखदांरी हाट ४ मंडावी, वैद्य राखिया।[8] वेमारांनूं दारू धरमरो दीजै।[9] रोगियांनूं खावानूं दीजै, ओढण-विछावण दीजै।[10] वैद्य नाड़ जोवै, ओखद देवै गरीबनै। सिरदार दावैसूं फकीरांनूं रजायां, विहाल्यां दीजै।[11] जिकूं आप जीमतौ तिसड़ौ खाणौ फकीरांनूं दीजै।[12] इसो धर्मात्मा पातस्याह हुवौ।[13]

संमत् १६१० फागण वदे १३ वार गुरु रात पोहर १ गयां पात-

---

1 आसोज वदी १४को बादशाह बहादुर भाग कर दीव बंदरको चला गया। 2 पहले बादशाह बहादुरने छमीछाके स्वामी पाटनके दो खांट जातिके हिंदू भोमिये मांडण और वरसाको उमराव बना कर बसाया था। 3 बारह गांव मांडणको और बारह गांव वरसाको दिये थे। 4 उन्होंने दूसरे भोमिये, हिंदू और तुर्कोंने मिल कर मुगलोंको मार निकाल दिया। 5 फिरंगियों (पुर्तगालियों)ने बादशाह बहादुरको मार करके दीव बंदरकी समुद्रकी खाड़ीमें डाल दिया। 6 सम्वत् १५९३ की फागुन सुदी ५को बादशाह बहादुरको मारा। 7 फिर उमरावोंने मिल कर मुहम्मद बेगड़ेको सिंहासन पर बिठाकर अहमदाबादका बादशाह बनाया। 8 इसने औषधियोंकी चार दुकानें खुलवा कर उनमें वैद्योंको नियत किया। 9 बीमारोंको औषधियां मुफ्तमें दी जाती हैं। 10 रोगियोंको खाना और ओढना-बिछोना दिये जाते हैं। 11 सरदारोंकी भांति ही फकीरोंको भी रजाई बिछोने दिये जाते हैं। 12 जैसा स्वयं भोजन करता वैसा ही फकीरोंको दिया जाता है। 13 ऐसा धर्मात्मा बादशाह हुआ।

स्याह महमंदनै ब्रहांनखां मारियौ ।[1] उमराव ३५ भला भला छा सु ब्रहांनखां मारिया ।[2]

पछै ब्रहांननै भाटी सिरवांन ब्रहांनदीननूं मारियौ ।[3] पातस्याह महमंदरौ वैर लियौ ।

पछै पातस्याह महमंदरो बेटो अहमद टीकै बैठौ ।

तठा पछै संमत १६२९ मुगल पातस्याह अकबर गुजरात लीधी ।[4] हिवै मुगलांरै गुजरात देस हुवौ ।[5] पातस्याह अहमदनूं मारियौ ।

॥ इति गुजरातरै देशरी ख्यात संपूर्ण ॥

अथ वात मकवांणा रजपूतांरी

ईयांरै मा हुती सु कोई देव अंस हुती, सु धारेचो कियो हुतो ।[6] सु वा कहण लागो–'जाहरां हूं प्रगट हुई ताहरां नहीं रहूं ।[7]

तद कितरैके दिने ईयेरै बेटो जायो ।[8] खेलण सरीखौ हुवौ, तद खेलतो थो ।[9] आ ऊंची झरोखै बैठी हती, तद नीचै बैठै बेटैनूं हाथ लांबो पसारैनै झाल लियौ।[10] तद ईयै देव अंस प्रगट करनै अंतर्ध्यान हुई ।[11] तै दिनसूं पछै झाला कहाया ।[12]

॥ इति झालांरी वात संपूर्ण ॥

---

1 सम्वत् १६१०की फाल्गुन वदी १३ गुरुवारको एक पहर रात गये बादशाह मुहम्मदको बुरहानखांने मार दिया। 2 अच्छे-अच्छे ३५ उमराव थे जिनको भी बुरहानखांने मार दिया। 3 फिर भाटी सिरवानने बुरहानखांको मार दिया। 4 जिसके बाद सम्वत् १६२९में मुगल बादशाह अकबरने गुजरातके ऊपर अधिकार किया। 5 अब मुगलोंके अधिकारमें गुजरात देश हो गया। 6 इनकी (मकवांणा-राजपूतोंकी) मा कोई देवांशी थी, जिसने धारेचा कर लिया था। (धारेचो=१ विधवा होने पर किसी अन्यके यहां पत्नी बन कर रहना। २ अपने पतिको छोड़ कर दूसरेके घरमें रहना) 7 जिस समय मैं प्रगट हो गई तब नहीं रहूंगी। 8 तब कितने एक दिनोंके बाद इसके एक पुत्र हुआ। 9 खेलने जैसा हुआ तब वह एक दिन खेल रहा था। 10 यह ऊंची झरोखेमें बैठी हुई थी, तब उसने नीचे बैठे हुए अपने बेटेको अपना हाथ लंबा बढ़ा करके पकड़ लिया। 11 तब अपने इस देवाशको प्रगट करनेके कारण अंतर्द्धान हो गई। 12 इसके बाद ये (मकवाणे-राजपूत) 'झाला' कहाये। (बच्चेकी माँने बच्चेको हाथसे 'झाल' लिया, इसलिये वह बच्चा और उसकी संतान झाला कहाई। मारवाड़ी भाषामें 'झालणों' शब्दका अर्थ— पकड़ना, थामना, संभालना इत्यादि होता है।)

अथ वात पाबूजीरी लिख्यते

धांधळजी महेवै रहै। सु उठैसूं छोड़ अर अठै पाटणरै तळाव आय उतरिया।[1] सु अठै तळाव ऊपर अपछरा उतरै। ताहरां धांधळजीरा डेरां थकां अपछरा उतरी।[2] ताहरां धांधळजी अपछरावां देखनै एकै अपछरानूं आपड़ राखी।[3] ताहरां अपछरा बोली–'वडा रजपूत ! तैं बुरो कियो। मो अपछरानै आपड़णी न हुती।'[4] ताहरां धांधळजी कही–'तूं म्हारै घरवास रहि।'[5] तद अपछरा बोली। कही–'जे थैं म्हारो पीछो संभाळियो तो जाईस।'[6] ताहरां धांधळजी कही–'थारो पीछो कोई संभाळां नहीं।' ए बोल करनै रही।[7] नै उठै पाटणसूं चालिया सु अठै कोळू आया।

अठै पमो घोरंधार राज करै। ताहरां धांधळजी पमै पासै तो न गया। अर कोळू आया, गाडा छोड़िया, तठै रहै।[8] यूं करतां अपछरारै पेटरा दोय टाबर हुआ–एक बेटी; एक बेटो।[9] बेटीरो नांम तो सोनां-बाई, बेटारो नांम पाबूजी। तद अपछरारो महल एकांत कियो।[10] उठै अपछरा रहै। धांधळजी अपछरा घरै नित जावै।

तद एक दिन धांधळजी विचारियो–'देखां, अपछरा कह्यो हुंतो, म्हारो पीछो मती संभाळजै, सु आज तो जायनै देखीस; देखां, कासूं करै छै ?'[11] ताहरां पाछलै पोहर धांधळजी अपछरारै महल गया। तठै आगै अपछरा तो सीहणीरै[12] रूप हुई छै, अर पाबू सीहरै रूप

---

1 सो वहां (महेवै)से रवाना होकर पाटनके तालाब पर आकर ठहरे। 2 जब धांधलजीके डेरे तालाब पर लगे हुए थे उस समय वहाँ अप्सराएँ उतरीं 3 एक अप्सराको पकड़ कर रख लिया। 4 मुझ अप्सराको पकड़ना नहीं था। 5 तू मेरे घर वास (पत्नी रूपमें) रह। 6 जो तुमने मेरा पीछा किया (भेद जानना चाहा) तो मैं चली जाऊंगी। 7 ये कौल करके धांधलजीके साथ रह गई। 8 जिस जगह कोलूमें गाडे छोड़े थे, वहीं रह रहे। 9 इस प्रकार अप्सराकी कोखसे दो बच्चे उत्पन्न हुए—एक लड़की और एक लड़का। 10 तब अप्सराका महल एकान्तमें बनवाया। 11 तब एक दिन धांधलजीने विचार किया कि अप्सराने कहा था कि मेरा भेद जाननेकी कोशिश नहीं करना, परंतु आज तो जाकर देखूंगा कि वह क्या कर रही है ? 12 सिंहिनी।

सीहणीनूं चूंघै छै।[1] तद धांधळजी दीठौ;[2] ताहरां अपछरा आपरो रूप कियो। पाबू टावर हुवो।[3] ताहरां धांधळजी महल भीतर गया। ताहरां अपछरा कह्यो–'राज ! म्हां थां सूं कवल कियो हुंतो जु 'जेही दिन थां पीछौ संभाळियौ जेही दिन हूं जाईस, सो हूं जाऊं छूं।'[4] इतरो कहिनै अपछरा तो उड़ती हुई, सु आकास चढ गई। धांधळजी देखता ही रह्या।

तठा पछै धांधळजी पाबूनै उठै हीज राखियो। धाय पास रही। और छोकरी हुती सु राखी।[5] पछै धांधळजी तो कितरेक दिने देवलोक हुवा।

अर पाबू अर बूड़ो दोय बेटा। तद बूड़ोजी टीकै बैठा। लोक चाकर सरब बूड़ैजीरा हुवा।[6] पाबूजी पासै कोई न रह्यौ। तद धांधळजीरै बेटी दोय हुती, सु पेमांबाई तो जींदराव खीचीनूं परणाई। अर सोनांबाई देवड़े सीरोहीरै धणीनूं परणाई।[7] तद बूड़ोजी तो राज करै। अर पाबूजी वरस पांचेकमें, पण करामातीक।[8] एकै सिकार चढियो एकै सांढ चढियो सिकार लावै। ईयै भांत रहै।[9]

ताहरां सात थोरी भाई, मा-जाया, चांदियो १, देवियो २, खापू ३, पेमलो ४, खलमल ५, खंघारो ६. चासळ ७। अै सात भाई सु अै आंना वाघेलैरै चाकर।[10] सु आंनैरै देस मांहै काळ पड़ै, तद थोरीए एक १ जिनावर वणासियो।[11] ताहरां आंनैरै कुंवरनूं खबर गई जु थोरिये जिनावर मारियो छै। ताहरां कुंवर आयो। थोरियांनूं

---

1 और पाबू सिंहका रूप बन कर सिंहिनीको चूंघ रहा है। 2 तब धांधलजीने देखा। 3 पाबू बच्चेके रूपमें हो गया। 4 तब अप्सराने कहा–'राजन् ! हमने तुमसे कौल करवाया था कि जिस दिन तुमने मेरा भेद जाननेकी कोशिश की उस दिन मैं चली जाऊंगी, सो मैं जा रही हूं। 5 और एक दासी थी जिसको पासमें रखा। 6 प्रजा और सेवकादि सब बूड़ेजीके अधीन हुए। 7 धांधलजीके दो कन्याएँ थीं; एक पेमांबाई जिसको जींदराव खीचीको व्याही और दूसरी सोनांबाई जिसे सिरोहीके स्वामी देवड़ेको व्याही। 8 करामाती। 9 अकेला और अपनी एक ही ऊंटिनी पर चढ कर शिकार लाता है, इस प्रकार वीरताके काम करता है। 10 ये सातों भाई आना वाघेलाके यहां चाकर। 11 सो आनाके देशमें दुकाल पड़ जाता है, उस दुकालमें थोरियोंने एक दिन एक जानवरको मार दिया।

हटकिया ।[1] थोरियां अर कुंवर खानाजंगी हुई ।[2] ताहरां कुंवर कांम आयो। तद अै थोरी कुंवरनूं मार, अर गाडा जोड़नै, टाबर ले नाठा ।[3] ताहरां आंनैनूं खबर गई, जु 'थोरी कुंवरनूं मार नाठा जावै छै।' ताहरां आंनो चढियो, आय पहुंतो।[4] ताहरां अै लड़िया। ताहरां ईंयां थोरियांरो बाप हतो सु कांम आयो ।[5] आंनो ईंयांरो बाप मारनै पाछो वळियो ।[6]

पछै थोरी अै जेहीरै वास जावै सो राखै नहीं। कहै-'आंनै वाघेलैसूं पोहचां नहीं।[7] तद अै थोरी चालिया चालिया पमै घोरंधाररै आया; तद पमै थोरियांनूं राखिया। ताहरां कांमदारां परधानां कही-'राज ! अै थोरी आंनैरं बेटैनूं मार अर आया छै। जो थां राखिया तो आंनैसूं वैर पड़सी ।[8] आपां आंनैनै पोंहच सगां नहीं ।[9] तदी पमै पण आंनैसूं डरतो थोरियांनूं विदा दीवी।[10] कही-'धांधळांरै जावौ; थांनै राखसी।'

ताहरां अै थोरो गाडा लेनै बूड़ैजी पासै आया। आय बूड़ैजीसूं मुजरो कियो[11] नै कही-'राज ! म्हांनै राखो तो रहां।' ताहरां बूड़ैजी तो नीछो दियो।[12] कह्यो-'म्हारै तो दरकार नहीं; अर पाबू भाईरै चाकर नी रहै छै सु थांनै राखसी ।[13]

तद अै थोरो गाडा छोड़नै पाबूजीरै आया ।[14] तद पूछियो-'पाबूजी कठै ?'[15] तद धाय कह्यो जु-'पाबूजी सिकार गया छै।' तद अै थोरी पण वांसै सिकार गया।[16] आगै पाबूजी हिरणनूं तीर सांधियो छै। सांढ बैठी छै।[17] इतरै थोरियां पूछियो-'रे छोकरा ! पाबूजी कठै

---

1 थोरियोंको डांटा। 2 थोरियों और कुंवरके आपसमें लड़ाई हो गई। 3 तब ये थोरी कुंवरको मार, अपने गाडे जोड़ कर और अपने बाल-बच्चोंको लेकर भाग गये। 4 तब आना इनके पीछे चढा और इन्हें जा पहुंचा। 5 थोरियोंका बाप था सो इस लड़ाईमें काम आ गया। 6 आना इनके बापको मार करके वापिस लौटा। 7 आना वाघेलेसे पहुंच (जीत) नहीं सकते। 8 जो तुमने इनको रख लिया तो आनासे शत्रुता हो जायेगी। 9 अपन आनाको नहीं जीत सकते। 10 तब पमेने भी आनाके डरके मारे थोरियोंको छुट्टी दी। 11 आकरके बूड़ोजीको प्रणाम किया। 12 तब बूड़ोजीने मना कर दिया। 13 मेरे तो जरूरत नहीं है, परंतु पाबू भाईके पास कोई चाकर रहता नहीं है सो तुमको रख लेगा। 14 तब ये थोरी अपने गाडोंको छोड़ कर पाबूजीके पास आये। 15 पाबूजी कहां ? 16 तब ये थोरी भी इनके पीछे शिकारको गये। 17 ऊँटिनी बैठी हुई है।

छै ?'[1] तद पाबूजी बोलिया–'पाबूजी तो आघा[2] सिकार खेलणनूं पधारिया छै ।'[3]

ताहरां थोरियां आ समस्या[4] कीवी जु–'ओ छोकरो ऊभो छै,[5] आपां[6] आ सांढ ले जावां, तो आपां आजरी वळ करां ।'[7] इतरी[8] थोरियां विचारो । ताहरां पाबूजी तो कारणीक मरद ।[9] तद पाबूजी ईंयांरै जीवरी लखी ।[10] ताहरां पाबूजी बोलिया । कही–'रे थोरियां ! थे आ सांढ ले जावो, आज री वळ करो । पाबूजी आवसी[11] ताहरां हूं कहि लेइस ।'[12] ताहरां थोरी सांढ लेनै डेरै आया । उठै ईहां[13] सांढ मारनै डेरै वळ कीवी ।

अर पाबूजी हिरण लेनै पाछलै पोहर डेरै आया । ताहरां पाछलै पोहरारा थोरी पण पाबूजोरै मुजरै आया । आगै पाबूजी बैठा छै । तठै थोरियां विचारियो । कही, रे ! ओ[14] तो ऊही,[15] जे आंपांनूं सांढ दीवी हती ।[16] तद थोरियां धायनूं पूछियो– जी ! पाबूजी कठै ?' ताहरां धाय कह्यो–'रे वीरा ! ओ बैठौ, तूं ओळखै नहीं ?[17] तद ईंयां पाबूजीसूं सलांमी कीवी ।[18] तद पाबूजी चांदैनूं कही–'रे चांदा ! म्हैं म्हारी सांढ थांनै झलाई हती सु कठै ?'[19] ताहरां चांदै कही–'राज ! थां म्हांनै वळ मांहै दीवी हुती, सु म्हां खाधी छै ।'[20] ताहरां पाबूजी कही–'का रे ! आ काई हुई छै जु सांढ खाधी ? वळनूं सीधो दरावस्यां । पण सांढ किसी तरै खावो ?'[21] ताहरां पाबूजी कही– 'सांढ थां खाधी नहीं ।'[22] ताहरां थोरियां कह्यो–'सांढ तो म्हां खाधी, हमैं कठा लावां ?'[23]

---

1 इतनेमें थोरियोंने जाकर पूछा कि रे छोकरे ! पाबूजी कहां हैं ? 2 दूर। 3 गये हुए हैं । 4 परामर्श, सलाह । 5 खड़ा है । 6 अपन । 7 आजके भोजनकी तैयारी करें । 8 इतनी । 9 सिद्ध पुरुष । 10 पाबूजीने इनके मनकी बात जानी । 11 आयेंगे । 12 कह दूंगा । 13 इन्होंने । 14 यह । 15 वही । 16 जिसने अपनेको ऊंटिनी दी थी । 17 अरे भाई ! यह बैठा है, तू पहचानता नहीं ? 18 तब इन्होंने पाबूजीको प्रणाम किया । 19 अरे चांदा ! मैंने मेरी ऊंटिनी तुमको सुपुर्द की थी वह कहां ? 20 आपने हमको वलिके लिये दी थी, सो हमतो उसे खा गये हैं । 21 क्यों रे ! यह कभी हुआ है जो ऊंटिनीको ही खा गये ? भोजनके लिये सीधा दिलवायेंगे, लेकिन सांढ किस तरह खा जाओ ? 22 ऊंटिनी को तुमने खाया नहीं । 23 अब कहांसे लायें ?

ताहरां पाबूजी साथै मांणस[1] देनै कही–'ईयांरै[2] डेरै जाय खबर तो करो।' ताहरां थोरी मांणसरै साथै डेरै जाय देखै तो कासूं ?'[3] जठै हाड पड़िया हुता तठै सागे सांढ कसांणो कियां ओगाळै छै।[4] तद अै[5] जाय देखै तो कासूं ? सांढ बैठी छै। तद थोरियां आपरी बैरांनूं[6] पूछियो। कह्यो–'आ सांढ अठै के विध ?'[7] ताहरां बैरां पण कही–'राज ! आगै तो नहीं हती; मांहरैही निजर हणां आई।'[8] ताहरां थोरियां विचारी जु–'ओ वडो करामाती रजपूत छै। आपांनै ओ राखसी।[9] तद अै सांढ लियां-लियां[10] पाबूजी पासै आया। ताहरां पाबूजी कह्यो–'रे ! थे कहता सांढ खाधी।' ताहरां थोरियां कह्यो–'राज ! समझा।[11] म्हांनूं राज परचो दिखायो।'[12] ताहरां पाबूजी कह्यो–'तो थे रहस्यो ?'[13] ताहरां थोरियां कह्यो–'राज ! म्हे रहस्यां।' ताहरां थोरी पाबूजी पासै चाकर रह्या। इयै भांत रहतां हता।

तद गोगैजीनूं बूड़ैजीरी बेटी परणाई। ताहरां बाईरै[14] दायजैरी[15] वखत किहि[16] गायां संकळपी,[17] किही क्युंहो संकळपियो।[18] ताहरां पाबूजी कह्यो–'बाई ! हूं तोनूं दोदै सूंमरैरी सांढांरा वरग आंण देईस।'[19] ताहरां गोगोजी हसिया। कही–'आजै दोदो सूंमरो बीजो-रांवण कहीजै।[20] तैरो सांढां किसी भांत ले आवसी ?' ताहरां पाबूजी बोलिया–'सांढां ले आईस।'[21] पछै गोगाजी तो हलांणो लेनै आपरै ठिकांणै गया।[22] वांसै[23] पाबूजी हरियै थोरीनूं कही–'रे हरिया ! दोदैरी सांढियां हेर आव, ज्युं बाईनूं सांढियां आंण देवां।[24] बाईरा

---

1 मनुष्य। 2 इनके। 3 यह क्या ? 4 जहां हड्डियां पड़ी थीं वहां वही ऊंटनी कसी हुई बैठी है और घास खा कर जुगाली कर रही है। 5 ये। 6 अपनी स्त्रियोंको। 7 यह सांढ़नी यहां किस प्रकार ? 8 हमारे भी नजरमें अब आई है। 9 अपनेको यह रखेगा। 10 लिये-लिये। 11 समझ गये। 12 हमको आपने चमत्कार दिखाया। 13 तो तुम हमारे यहां नौकर रहोगे ? 14 कन्याके। 15 दहेजकी। 16 किसीने। 17 संकल्प की। 18 किसीने कुछ और वस्तु संकल्प की। 19 तब पाबूजीने कहा—'बाई ! मैं तेरेको दोदे सूमरेकी सांढनियोंका वर्ग लाकर दूंगा। 20 आज दोदा सूमरा एक दूसरा रावण कहा जाता है। 21 सांढनियां ले आऊंगा। 22 फिर गोगोजी तो वधू और दहेज लेकर अपने स्थान गये। 23 पीछे, बादमें। 24 हरिया ! तू जाकर दोदेकी सांढनियोंको घेर कर ले आ सो बाईको सांढनियें लेजा कर देदें।

सासरिया हससी; कहसी–काको सांढियां कद आंण देसी ?[1] ताहरां हरियो तो सांढियारै हेरै गयो ।

अर अठै चांदियो नित पाबूजीनूं कहै–'आंनै वाघेलै माथै म्हारो वैर छै, सु राज म्हारो वैर घेरावौ ।[2] ताहरां कह्यो–'रे घेरावस्यां ।'[3]

युं करतां पाबूजीरी बैहन सोनांबाई अर[4] सोनांबाईरै एक सोक[5] वाघेली तिके चोपड़ रमती ही,[6] सु वाघेलीरै बाप गहणो घणो दियो हुंतो,[7] सु वाघेली आपरै गैहणैरो वडाई करै, गहणैरो वखांण घणो करै ।[8] ताहरां ग्रै आपसमें बोल उठी ।[9] ताहरां वाघेली सोनांनूं मेहणो दियो ।[10] कह्यो–'थारो भाई थोरियांसूं भेळो जीमै ।[11] ताहरां सोनां रीस कीवी । ताहरां राव कही जु–'राठोड़ ! रीस क्युं करो, साच कहै छै, जु पाबू थोरियांरै भेळो तो बसै छै ।'[12] ताहरां सोनां कही–'थे कहो सो खरी, पण जिसा[13] म्हारै भाईरै थोरी छै जिसा[14] थांहरै[15] उमराव कोयनी ।' इतरो कह्यो सोनां; तैसूं राव पण रीस कर ऊठियो ।[16] ताहरां ताजणो रावरै हाथ हुंतो, सु राव तीन ताजणा वाह्या ।[17]

ताहरां सोनांबाईं कागद लिखनै पाबूजीनूं मेलियो ।[18] ईयै भांत लिखियो–'वाघेलीरै कहै रावजी म्हारै चोट वाही ।'[19] सु ऊ कागद ले जायनै आदमो पाबूजीरै हाथ दियो ।[20] पाबूजो कागद वांचनै चांदैनूं

---

1 बाईकी ससुराल वाले हँसेंगे और कहेंगे कि इसका काका सांढनियां कब लाकर देगा ? 2 आना वाघेलाके सिर मेरे बापको मारनेका वैर चढ़ा हुआ है सो आप उस वैरका बदला लिवावें । 3 अरे ! घेर लेंगे । 4 और । 5 सौत । 6 खेलती थी । 7 सो वाघेलीके बापने दहेजमें गहने बहुत दिये थे । 8 गहनेकी प्रशंसा बहुत करे । 9 तब आपसमें बोला-चाली (विवाद) हो गई । 10 तब वाघेलीने सोनांको ताना मारा । 11 तेरा भाई थोरियोंके सामिल खाना खाता है । 12 राठोड़ ! रीस क्यों कर रही हो, यह सच कह रही है, पाबू थोरियोंके सामिल बैठते तो हैं । (क्षत्रियोंमें रानियां, ठकुरानियां आदि सम्मानित स्त्रियोंको उनकी पितृ-जातिके नामसे संबोधित किया जाता है, जिनमें कुछ वंश या जातियोंके नाम तो ऐसे हैं जिनमें कोई परिवर्तन नहीं होता, स्त्रीलिंग बनानेकी आवश्यकता नहीं रहती जैसे–शेखावतजी, चहुआणजी, राठोड़जी इत्यादि ।) 13 जैसे । 14 वैसे । 15 तुम्हारे । 16 सोनांने इतना कहा तो राव रीस करके उठा । 17 उस समय रावके हाथमें ताजना था सो तीन ताजने सोनांको मार दिये । 18 तब सोनांबाईने पत्र लिख कर पाबूजीको भेजा । 19 उसमें इस प्रकार लिखा कि वाघेलीके कहनेसे रावजीने मुझे चोट प्रहार की । 20 सो वह पत्र एक आदमीने लेजा कर पाबूजीके हाथमें दिया ।

बुलायौ; अर कह्यो–'तयारी करो। आंपां सीरोही राव ऊपर जास्यां। बाईरो कागद आयौ छै।' ताहरां सात असवार थोरी, एक पाबूजीरै चढण काळवीं घोड़ी।

सु काछेला चारण समुद्र खेप भरण गया हुता,[1] सु ईंयां एक घोड़ी लीवी। लेनै समुद्ररै कांठै[2] आय उतरिया। ताहरां तेजल घोड़ो नीसरनै घोड़ीनूं लागो।[3] तैरी काळवीं वछेरी नीपनी।[4] सु आ घोड़ी जींदराव काछेलां कनां[5] मांगी, तद चारणां न दीवी। अर बूड़जी मांगी तद पण न दीवी। ताहरां पाबूजी मांगी। ताहरां चारणां पाबूजीनूं घोड़ी दीवी। तद कही 'राज! घोड़ी थांनूं[6] दीवी छै, जो म्हांरै कांम पड़ै तद म्हांरी वाहर करज्यो।'[7] ताहरां पाबूजी कही–'थांहरै कांम पड़िये जूती पैहरां नहीं।'[8] ओ बोल कर घोड़ी लीवी छी। तद जींदराव खीची नै बूड़ंजी रीस कीवी चारणांसूं।

पछै पाबूजी असवार हुवै नै बूड़ंजीरै आया।[9] बूड़ंजी सौं[10] मुजरो कियो। पछै पाबूजी भीतर भाभीजीनूं मुजरो कहियो। ताहरां छोकरी[11] भीतर जायनै डोड-गेहलीनूं[12] कह्यो–'बाईजी! थांनूं पाबूजी जुहार कहायो छै।' ताहरां छोकरीनूं डोड-गेहली कह्यो जु–'तूं देवरनूं जायनै कहि, बाईजी भीतर बोलावै छै।' ताहरां छोकरी जाय अर कह्यो।[13] तद पाबूजी भीतर गया। तद डोड-गेहली कह्यो–'पाबूजी! थांनै चारण पासै घोड़ी न लेणी हती।[14] घोड़ी थांरै भाई मांगी हती, तैंसूं थां न लेणी।[15] ताहरां पाबूजी कही 'जो भाईजीरै घोड़ी लेणी छै तो आ[16] हाजर छै।' ताहरां भोजाई कही, हमैं काहिणनूं लै?[17]

---

1 काछेले-चारणोंका कारवाँ समुद्र (के किनारे किसी बंदर) पर माल भरनेके लिये गया हुआ था। 2 किनारे पर। 3 तब तेजल घोड़ा उस घोड़ीसे लग गया। 4 जिससे यह काळवीं बछेरी उत्पन्न हुई। 5 से, पास। 6 तुमको। 7 यदि हमारे काम पड़ जाय (कोई संकट उत्पन्न हो जाय) तो हमारी सहायताके लिये चढ कर आना। 8 तुमारे काम पड़ने पर पाँवोंमें जूती नहीं पहनूंगा। 9 पीछे पाबूजी उस घोड़ी पर सवार होकर बूड़ेजीके पास आये। 10 से, को। 11 दासी। 12 डोड-गेहली, बूड़ेजीकी स्त्रीका नाम। 13 तब दासीने जाकर कहा। 14 पाबूजी! चारणके पाससे तुम्हें यह घोड़ी नहीं लेनी चाहिये था। 15 इस घोड़ीको तुमारे भाईने मांगा था, इसलिये तुमको इसे नहीं लेनी चाहिये थी। 16 यह। 17 अब किसलिये लें?

पण तूं घोड़ीनूं कासूं करीस ?,[1] खेती वाहो, बैठा खावो ।[2] पण दीसै छै, घोड़ी लीवी छै तो धाड़ा करसी ।[3] ताहरां पाबूजी कह्यो– 'बूड़ेजीरै घोड़ी लेणी हुवै तो लो । अर थे मेहणो बोलो छो तो म्हे ई रजपूत छां; घोड़ी म्हांनूं ई चाहीजै छै ।[4] अर धाड़ैरी कहो छो तो डीडवांणैरी होज घोड़ियां ले आईस ।'[5] इतरी पाबूजी कही, तद डोड-गहेली कह्यो–'जी, इसा भाई तो म्हारा ई न छै सु थांनै धाड़ो ले आवण दियै, का तो पहुंच अर मारग में ही राखै, अर जांणै बैहनेईरो भाई छै, मारै नहीं तो अँवळै······आंसवै रोवावै ।'[6] ताहरां पाबूजी कह्यो–'म्हे राठोड़ छां, डोड कदै कोई राठोड़ मारियो सुणियौ हुतौ ?'[7] डीडवांणै डोड राज करता तठै बूड़ोजी परणिया हुता ।[8] तद पाबूजी भोजाईसूं वाद करनै ऊठ डेरै आया ।

ताहरां चांदैनूं बुलायो, कह्यो–'चांदा ! आंपां देवड़ांरै पछै जास्यां; पैहली डीडवांणैरो धाड़ो लास्यां ।'[9] ताहरां पाबूजी असवार हुवा । थोरी सातै[10] भाई असवार हुवा । ताहरां चालिया चालिया डीडवांणैरै निजीक[11] आया । ताहरां पाबूजी तो एक थळ माथै तरकस नांखनै बैठा ।[12] घोड़ी कनै छोडी ।[13] अर थोरियां सांढ़ियांरो वरग लियो ।[14] तठै थोरियां सांढ़ियांनूं चलाई । ताहरां रवारी डोडां आगै जाय पुकारियो । कह्यो–'राज ! सांढियां लीवी, वाहर चढो ।'[15] ताहरां

---

1 परंतु तू घोड़ीको करेगा क्या ? 2 खेती खड़ो और बैठे-बैठे खाओ । 3 परंतु दिखता है कि घोड़ी ली है तो अब धाड़े मारेगा । 4 और जो तुम ताना मारती हो तो हम भी राजपूत हैं. घोड़ी हमको भी चाहिये । 5 और जो धाड़े मारनेकी कह रही हो तो अब पहले डीडवानेकी ही घोड़ियां ले आऊंगा । 6 ऐसे तो मेरे भाई भी नहीं हैं सो तुम्हें धाड़ा करके घोड़ियां ले आने दें, या तो पीछे पहुंच कर मार्गमें ही तुम्हें रख दें या यह जानकर कि बहनोईका भाई है, इसलिये मारें नहीं तो (औंधी मुश्कोंसे बांधकर) खूब रुलावें । 7 तब पाबूजी ने कहा– 'हम राठौड़ हैं, डोडोंने कभी किसी राठौड़को मार दिया हो; ऐसा कभी सुना था तुमने ? 8 डीडवानामें डोड राज्य करते थे वहां बूड़ोजी ब्याहे थे । 9 चांदा ! अपन देवड़ोंके यहां पीछे जायेंगे, पहले डीडवानेका धाड़ा लायेंगे । 10 सातों ही । 11 नजदीक । 12 तब पाबूजी तो एक धोरे पर तरकश डालकर बैठ गये । 13 घोड़ीको पासमें छोड़ दिया । 14 और थोरियोंने सांढनियोंका वर्ग छीन लिया। 15 सांढनियां लेली हैं, पीछा करो ।

डोडां पूछियो; कह्यो–'रे ! कितराइक[1] असवार छै ? ताहरां ईयै कही–'राज ! सात प्यादा थोरी चोरटा लियां जाय छै।'[2] ताहरां वाहर चढिया, सु थोरी तो सांढियां लेनै आघा नीसरिया।[3] अर वांसैसूं[4] वाहररा असवार जे थळ पाबूजी बैठा हता[5], ते[6] थळरी बराबर आया। ताहरां पाबूजी तीरकारी करी।[7] तिकणसूं डोडांरा मांणस १० कांम आया। ताहरां पाबूजी चांदैनूं, बीजा ही[8] थोरियांनूं साद कियो।[9] कह्यो–'पाछा आवो।'[10] ताहरां थोरी पाछा घिरिया।[11] तठै घोड़ा लेनै थोरी चढिया। इतरै वांसासूं डोडांरो सिरदार आय पुंहतो[12]। ताहरां ईहां[13] पाबूजीरै साथरा थोरियां डोड सिरदारनूं आपड़ियो।[14] ताहरां बाकीरो साथ डोडांरो पाछो फिरियो। ताहरां पावूजी कह्यो–'रे ! सांढियां छोड दियो। आंपणै इहां डोडांसूं कांम हुतो सु ले हालो।'[15]

ताहरां औ[16] डोडांनूं लेनै रातो-रात चालिया सु कोळू आया। ताहरां डोडांनूं तो कोटड़ी मांहै राखिया। अर[17] आप महल मांहै जाय पोढिया।[18] तद प्रभात हुवो, ताहरां पाबूजी जागिया। ताहरां धायनूं कही– 'धायजी ! थे डोडगेहलीनै जाय अठै बुलाय लावो।[19] कहो, जु पाबूजी कह्यो छै जु थे भाभीजी आयनै मांहरो माळियो[20] देखो। म्हे नवौ करायो छै।'[21] ताहरां धाय बूड़ैजी री वहू नै बुलावणनै गई। अर थोरियांनूं पाबूजी कही–'चांदा ! थे डोडांनूं पाघांसूं मुसक्यां बांधिनै चुंहटियांसूं तोड़ रोवायनै झरोखै नीचै आंण ऊभा राखौ।'[22] ताहरां चांदौ डोडांनूं लेनै पावूजीरै झरोखै नीचै आंण

---

1 कितनेक। 2 सात पैदल थोरी चोर लेकर जा रहे हैं। 3 सो थोरी तो सांढनियां लेकर आगे निकल गये। 4 और पीछेसे। 5 थे। 6 उस। 7 तब पावूजीने तीर चलाने शुरू किये। 8 दूसरे भी। 9 आवाज दी। 10 पीछे लौट आओ। 11 पीछे लौट आये। 12 आ पहुंचे। 13 इन। 14 पकड़ लिया। 15 अपनेको इन डोडोंसे काम था सो इन्हें ले चलो। 16 ये। 17 और। 18 सो गये। 19 धायजी ! तुम डोड-गहलीको जा कर यहां बुला लाओ। 20 महल। 21 हमने नया बनवाया है। 22 तुम डोडोंको उनकी पघड़ियोंसे मुश्कें बांध कर, चुटकियोंसे तोड़-तोड़ कर; रुला कर और झरोखेके नीचे ला कर खड़ा रखो।

ऊभौ छै ।[1] इतरै धायजी डोड-गेहलीनूं जाय कही–'राज थांनै पाबूजी बोलावै । कहै छै जु–'म्हांरै नवो माळियौ करायौ छै सु थां पधारनै देखो ।

ताहरां डोड-गेहली वैहल बैसनै पाबूजीरो मोहल देखणनूं आई ।[2] आगै पाबूजी बैठा हुता सु ऊठ मुजरो कियो । कह्यो–'भाभीजी ! राज ! झरोखै नीचै तमासौ छै सु देखीजै ।'[3] ताहरां आ झरोखै मांहै देखण लागी, ताहरां थोरियां डोडांनै चुंहटिया तोड़िया; ताहरां रोवण लागा ।[4] ताहरां डोड-गेहली देखै तो कासूं ?[5] भाई नीचै बाधौ छै अर रोवै छै ।[6] ताहरां डोड-गेहली कह्यौ–'पाबूजी ! ओ कासूं सूल छै ?[7] म्हैं तो थांनूं हसती वात कही हती ।'[8] ताहरां पाबूजी कह्यो–'भाभीजी ! हूं पण हसतो ले आयो छूं ।[9] पण रजपूतांनूं वैण बोलीजै नहीं ।[10] मैहणा कपूतांनूं कहीजै ।[11] ताहरां डोड-गेहली कह्यौ–'भली कीवी ।[12] हमैं तो छोड़ो ।[13] ताहरां पाबूजी डोड भोजाईरै कहै छोड़िया ।

पछै डोड-गेहली आपरा[14] भायांनूं ले जाय दिन ४ राखनै घरांनूं सीख दीवी ।[15]

तठा पछै हरियै सांढियांरी हेरप जोयनै आय पाबूजीनै कही[16]–'राज ! दोदैरी सांढियां आंपांरै हाथ आवणरी नहीं ।[17] दोदो जोरावर छै । दोदैरो राज वडो । अर वीचमें पंच नद वहै छै ।[18] ओ ओढो-

---

1 तब चांदा डोडोंको ऐसी दशामें लाकर पाबूजीके झरोखेके नीचे खड़ा है । 2 तब डोड-गेहली बहलीमें बैठ करके पाबूजीका महल देखनेको आई । 3 झरोखेके नीचे तमाशा है सो देखिये । 4 तब थोरियों ने डोडों को चिहुंटियोंसे तोड़ा, तब वे रोने लगे । 5 यह क्या ? 6 भाई नीचे बँधा हुआ है और रो रहा है । 7 पाबूजी ! यह क्या कोई ढंग की बात है ? 8 मैंने तो तुमको हँसीमें बात कही थी । 9 मैं भी इन्हें हँसता-हँसता ही ले आया हूँ । 10 परन्तु राजपूतोंको व्यंग्य वचन नहीं बोलना चाहिये । 11 ताने कुपूतोंको मारे जाते हैं । 12 अच्छा किया ? 13 अब तो छोड़ दो । 14 अपने । 15 विदा किया । 16 जिसके बाद हरियेने सांढनियोंकी खोज-भाल करके पाबूजीको कहा । 17 दोदेकी सांढनियां अपने हाथ आनेकी नहीं । 18 और बीच में पंचनद बहती है ।

रावण वाजै छै ।[1] आंपां उठै पोंहच सगां नहीं ।'[2] इतरी हरियै आयनै कही ।[3] ताहरां पाबूजी कह्यो–'तो भला ! फिरता समझ लेस्यां ।[4] हमार तो देवड़ां ऊपर हालो ।[5] ताहरां ग्रै आठ असवार, नवमौ हरियो प्यादो, ग्रै सारा सीरोही ऊपर चढिया ।[6]

तठै वीच आंनो वाघेलो रहतो । आंनैरी वडी साहबी हुती । पण ग्रै सारा ही करामातीक ।[7] ताहरां चांदै कही–'राज ! आंनौ अठै रहै छै ।[8] अर मांहरौ वैर छै ।'[9] ताहरां ग्रै चलायनै आंनैरै गांव आंनैरै वागमें आय उतरिया । ताहरां आंनैनूं माळी जाय पुकारियौ जु–'राज ! केई असवार आय उतरिया छै, सु वाग सर्व खोसी खाधौ ।'[10] ताहरां आंनै इतरी[11] सुणनै असवारी कर चढियो । ताहरां पाबूजी नै आंनै वाघेलै आपसमें लड़ाई हुई । ताहरां आंनैरो सर्व साथ मारांणो ।[12] आंनो पण कांम आयो । तद पाबूजी आंनैनूं मारनै आंनैरै कुंवरनूं कही—'तनै पण मारीस ।'[13] ताहरां आंनैरै वेटै आपरी मारो गहणौ पाबूजीरी नजर कियौ ।[14] ताहरां पाबूजी आंनैरै बेटैनूं टीकै बैसांणियो ।[15]

आंनैरै बेटैनूं टीकै बैसांणनै[16] आप सीरोहीनूं चढिया, सु रातो-रात सीरोही गया । रावनूं कह्यो जु–'थे जांणसो पाबूजो म्हैंसूं मिलणनै आया छै सो मिलणनूं हूं नहीं आयो छूं ।[17] तैं बाईनूं चावखा वाया तिकै कारण आयो छूं ।'[18] ताहरां राव पण आपरो[19] साथ एकठो करनै चढियो । ताहरां लड़ाई हुई । ताहरां पाबूजी चांदैनूं कही–'चांदा ! रावनूं आंपां मारो मती, नै आपड़ लिया ।'[20] ताहरां लड़ाई

---

1 यह ओढा-रावण कहलाता है । 2 अपन उधर पहुँच सकते नहीं । 3 इतनी बात हरियेने आकर कही । 4 अच्छा, लौटते हुए समझ लेंगे । 5 अभी तो देवड़ोंके ऊपर चलो । 6 ये सभी सिरोही ऊपर चढे । 7 करामाती । 8 आना यहाँ रहता है । 9 और मेरा वैर उससे लेना है । 10 और सारा बाग तोड़ करके खा गये हैं । (उजाड़ दिया है) 11 इतनी । 12 मारा गया । 13 तेरेको भी मारूंगा । 14 तब आनेके बेटेने अपनी माँका गहना लाकर पाबूजीकी नजर किया । 15 तब पाबूजीने आनेके बेटेको टीका करके गद्दी पर बिठाया । 16 बिठा कर । 17 तुम जानोगे कि पाबूजी मेरेसे मिलनेके लिए आये हैं, परन्तु मैं मिलनेको नहीं आया हूँ । 18 तुमने मेरी बाईके चाबुक मारे इसलिये आया हूँ । 19 अपना । 20 चांदा ! रावको अपन मारें नहीं परन्तु पकड़ लेना ।

हुई सु देवड़ांरो साथ घणो मारांणो, अर रावनूं हाथ पड़िया, पकड़ लियो ।[1] नै पाबूजी कह्यो–'मारो मतां । देवीजीरो जायो छै ।[2] ताहरां पाबूजीरी बैहन बैहल बैसनै पाबूजी पासै आई, कह्यो, 'भाई ! तूं म्हनै अमर कांचळी दे, रावजीनूं छोड ।'[3] ताहरां पाबूजी बैहनरै कहै[4] रावनूं छोडियो । अर आंनै वाघेलैरी लुगाईरो गहणो पाबूजी बैहननै दियो, नै कह्यो—'बाई ! ओ गहणो तनै दायजारो छै ।'[5] ताहरां साळै बैहनेई आपसमें रस हुओ ।[6] राव पाबूजीनूं लेनै सीरोहीरा गढ मांही आयो ।

ताहरां बाईनै साथै लेनै पाबूजी वाघेलीनूं बापरो सुणावणनूं गया ।[7] ताहरां सोनां वाघेलीनूं कही जु–'बाईजी ! थे लोकाचार करो ।[8] थांरै आंनै वाघेलै बापनूं म्हारो भाई मार आयो छै, थोरियां-रै वैर मांहै ।'[9] ताहरां वाघेली गोडो वाळियो ।[10]

अर पाबूजी अठै बैहनरै जीम अर चढिया[11], तद चांदैनूं कही–'चांदा ! थारै बापरो वैर लियो छै, अर बाईरो पण वंण वाळियो छै ।[12] हमैं चालो, दोदैरी सांढियां ले अर भातीजीनूं देवां ।[13] उठै पण सगा हससी, मैहणा देसी ।[14]

सु हमैं अठैसूं चढिया सु दोदैरै चालिया । हरियैनै आगै कियो । आगै मारग वीच मिरजै खांनरो राज, तठै अै आय नीसरिया ।[15]

---

1 तब लड़ाई हुई उसमें देवड़ोंके आदमी बहुत मारे गये, रावको भी कुछ हाथ (घाव) लगे और पकड़ लिया । 2 मारो मत, देवीजीका (समधिनका) पुत्र है । 3 उस समय पाबूजीकी बहिन बहलीमें बैठ करके पाबूजीके पास आई और कहा कि भाई ! तू मुझे अमर-कंचुकी (सौभाग्य) दे, रावजीको मारना मत, छोड़ दे । 4 कहनेसे । 5 यह गहना तुझे दहेजमें दे रहा हूँ । 6 फिर साला-बहनोईके आपसमें प्रेम हो गया । 7 तब बहिनको साथ में लेकर पाबूजी वाघेलीको उसके बापके मारे जानेका मृत्यु-सन्देश सुनानेको गये । 8 बाईजी ! तुम लोकाचार करो । 9 तुमारे बाप आना वाघेलेको मेरा भाई थोरियोके वैरका बदला लेनेके लिए मार करके आया है । 10 तब वाघेली रोने बैठी । 11 और पाबूजी बहिनके यहां भोजन करके रवाना हुए । 12 चांदा ! तेरे बापको मारा जिसके वैरका बदला लिया और बहिनको जो वचन दिया था सो भी पूरा किया । 13 अब चलें सो दोदेकी सांढनिया लेकर भतीजीको देदें । 14 वहां भी समधी हँसेंगे और ताने मारेंगे । 15 ये वहां आये ।

सु एक मिरजैरो वाग, तैंमें कोई उतर सगै नहीं ।[1] जो उतरै सो मारियो जाय । अणरो पण वडो राज ।[2] ताहरां पाबूजी मिरजैं-खांनरै वागमें डेरो कियो, सो वाग सोह तोड़ खुवार कियो ।[3] ताहरां माळी जाय खांननूं पुकारियो–'राज ! कोई रजपूत वागमें उतरियो छै, सो वाग सर्व विधूंसियो ।[4]' तद खांन पूछियो–'कैसाक रजपूत है ?' ताहरां माळी कही–'राज ! हिन्दु छै । डावी पाघ बांधियां छै ।'[5] ताहरां खांन कह्यो'–जी, येसूं आंपां पौंहचां नहीं ।[6] तियै आंनो वाघेलो मारियो ।'[7] सो खांन सांम्हां रसाळ ले हालियो ।[8] ताहरां मींयै घोड़ा, कपड़ो, मेवो सांम्हां लेनै वाग आयो । आयनै पाबूजीसूं मिळियो । ताहरां पाबूजी इयैसूं राजी हुवा । तद बीजो तो सर्व पाछो दियो नै एक घोड़ो राखियो, सु घोड़ो पाबूजी हरियैनूं बगसियो ।[9]

अठै खांनसूं मिळनै पाबूजो चढिया सु अठै पंचनद ऊपर आया ।[10] ताहरां पाबूजी चांदैनूं कह्यो–'चांदा ! देखां, पांणीरो थाग लै ।[11] कितरोहेक ऊंडो छै ?'[12] ताहरां चांदै थाग लियो सु पांणी वांसां-डोब ।[13] ताहरां चांदै कह्यो–'राज ! पार हुय सगां नहीं[14] अर अठै डेरो कर दां ।[15] कदै ऊलै पार सांढियां आसी तद आंपां लेस्यां ।[16]

---

1 उसमें कोई नहीं उतर (ठहर) सके । 2 इसका राज्य भी बड़ा । 3 सो सब वाग तोड़ कर नाश कर दिया । 4 सो तमाम वाग विध्वंस कर दिया । 5 वामी पगड़ीके पेच वाला है । (राठौड़ बांयें हाथसे पगड़ी बाँधते हैं इसलिये राठौड़ 'वांमींबंध' कहलाते हैं) 6 इससे अपन नहीं पहुंच सकते । 7 उसने आना वाघेलाको मार दिया है । 8 सो वह खांन रसाल लेकर साम्हने गया । (राजस्थानमें सभी प्रकारके ताजे फलोंको रसाल कहते हैं ।) 9 तब दूसरी सब सामग्री तो पाबूजीने वापिस कर दी, केवल एक घोड़ा रखा जो उन्होंने हरियेको बख्श दिया । 10 यहां खांनसे मिल करके पाबूजी रवाना हुए और यहाँ पंचनद पर आये । ('पंचनद' से तात्पर्य यहाँ सिन्धु नदी ही समझना चाहिए, जिसमें १ सतलज (शतद्रू) २ व्यास (विपासा) ३ रावी (इरावती) ४ चिनाव (चन्द्रभागा) और ५ झेलम (वितस्था) ये पाँच नदियां मिली हैं) 11 देखें, पानीका थाह तो लें । 12 कितनाक गहरा है ? 13 तब चांदाने पानीका थाह देखा तो बांसों-डूब गहरा । 14 पार नहीं हो सकते । 15 और यहाँ ही डेरा लगादें । 16 कभी इस पार सांढियां आ जायेंगी तब ले लेंगे ।

ईयै भांत वात करतां वीच पाबूजी माया फेरी सु पैलै पार जाय ऊभा ।[1] ताहरां चांदै फेर परचो पायो ।[2] ताहरां चांदैनूं कह्यो–'चांदा ! सांढियांरो वरग घेरो ।' तद थोरियां जायनै वरग सर्व घेरियो ।[3] रवारी ढीलनूं बांध लियो ।[4] ग्रै सांढियां लेनै पाबूजी पासै ग्राया । ताहरां ढील रवारीनूं पाबूजी छोडनै बांडै ऊंठ चाढनै कही–'रे ! तूं दोदैरै वाहर घात ।[5] कहे, सांढियांरा टोळा लियां जावै छै ।[6] जे घेर सगै तो वेगो ग्रावै ।[7]

ताहरां रवारी जाय पुकारियो, कही–'मेहरबान सलामत ! सांढियांरा वरग सर्व हकाळिया, वाहर करो ।'[8] ताहरां दोदै कही–'ग्ररे ! भांग खाधी छै नहीं ?[9] ग्रैसो ग्राज कुंण छै जो दोदै सूमरैरी सांढां लियै ?'[10] ताहरां रवारी कही–'राज ! राठोड़ै सांढियां लीवी छै नै कह्यो छै-ग्राय सकै तो वेगो ग्राया ।'[11] इतरो सुणत समां[12] दोदो सूमरो साथ भेळो करनै चढियो । ग्रर पाबूजी तो सांढियांनूं दाकळी[13] सु पांणीरै मांहैसूं तिरनै[14] पैलै पार हुई नै ग्रापरो[15] साथ पार करनै चलाया ग्राघा ।[16]

वांसैसूं दोदो वाहर चढियो[17], सु मिरजै खांनरै गांम ग्रायनै मिरजैनूं कह्यो जु–'राठोड़ां सांढियां लीवी, तूं पण वाहर ग्राव ।' मिरजो दोदैरो चाकर हुतो[18], सु मिरजो पण चढ दोदैरै सांमल हुवो । ताहरां मिरजै कही जु–'ग्राघा मती जावो । सांढियां पाबू राठोड़

---

1 इस प्रकार बातें करनेके बीचहीमें पाबूजीने ऐसी माया फिराई सो उस पार जाकर खड़े हो गये। 2 तब चांदेने फिर पाबूजीके चमत्कारका परिचय प्राप्त किया। 3 तब थोरियोंने जाकर सांढनियोंका सब वर्ग घेर लिया। 4 और रवारी ढीलको बांध दिया। 5 तब ढील रवारीको पाबूजीने छोड़ दिया और उसे एक बांडे (पूंछ-कटा) ऊंट पर चढ़ा कर कहा कि तू दोदेको वाहर करनेकी सूचना दे दे। 6 कहना कि सांढनियोंके वर्गको लिये जा रहे हैं। 7 जो घेर कर ले जा सके तो जल्दी आ जाये। 8 सांढनियोंके सभी वर्ग हांक करके लिये जा रहे हैं, पीछा करो। 9 अरे कहीं भांग तो नहीं खाई है ? 10 ऐसा आज कौन है जो दोदे सूमरेकी सांढनियों-को ले जाये ? 11 यदि आ सके तो जल्दी आना। 12 सुनते ही। 13 तेजीसे हांक दी। 14 तैर करके। 15 अपना। 16 दूर। 17 पीछेसे दोदाने पीछा कया। 18 था।

लीवी । आंपां घोड़ा मारियां ही पोंहचां नहीं ।[1] पाछा फिरो ।[2] जे[3] आंनो बाघेलो मारियो छै सु थांसू[4] मरै नहीं । सु राज ! थे पछै सर्व साथ भेळो करनै[5] जावज्यौ । ताहरां मिरजै इतरो[6] कही, ताहरां दोदो तो पाछो फिरियौ सु आपरै[7] ठिकांणै आयो ।

अर पाबूजी सांढियां लेनै सोढांरै उमरकोट मांहै कर नीसरिया[8] ताहरां कोटरै हेठै कर वूआ, ताहरां सोढी झरोखा मांहै बैठी हुती, सु पाबूजीनूं दीठा[9] । तद सोढी मानूं कहाई–'जु पछै ही म्हनै परणावस्यो, पाबूजो राठोड़ जावै, परणावो ।[10]ताहरां ईये सोढै सिरदारनूं कहियो ।[11] ताहरां सोढै वांसै[12] आदमी मेलियो[13], नै पाबूजीनै कहियो–'राज ! म्हारै परणीजनै पधारो ।'[14] ताहरां पाबूजी कही–'राज ! आज तो सांढियां लियां जावां छां ।[15] पाछै आय परणीजस्यां ।' ताहरां सोढां आदमियां साथै नारेळ मेलियो छै । ताहरां आदमियां पाबूजीरै टीको कर नारेळ पाबूजीरै हाथ देनै[16] सगाई कर पाछा फिरिया ।

पाबूजी आघा पधारिया सो ददरैरै आया ।[17] आगै गोगाजी बिराजिया[18], ताहरां सदा बाईसूं केलण हसतो–'जु काको दोदैरी वाढियां कद आंण देसी ?'[19] इतरै हरियो आयो । आयनै कही–'भीतर अठैसूं मालम करावो, जु पाबूजी पधारिया छै ।[20] दोदैरी साढियां रा वरग तनै संकळपाया हुता सु लायो छै ।[21] संभाळ लेवो । ताहरां गोगा-जी बाहिर आयनै पाबूजीसूं मिळिया । ताहरां सांढियां सरब संभाळ भतीजीनूं दीवी छै । अर कह्यो–'एकै बांडै ऊंठ विना सरब वरग

---

1 अपन घोड़ोंको पीछे देकर भी पहुंच नहीं सकेंगे । 2 वापिस लौट जाओ । 3 जिसने । 4 तुमारेसे । 5 इकट्ठा करके । 6 इतनी । 7 अपने । 8 और पाबूजी सांढनियोंको लेकरके सोढोंके उमरकोट नगरके अंदर होकर निकले । 9 जब कोटके नीचे होकर चले तब सोढी झरोखेमें बैठी हुई थी, सो उसने पाबूजीको देखा । 10 तब सोढीने अपनी माको कहलवाया कि पीछे भी मेरा विवाह करोगे, पाबूजी राठौड़ जा रहे हैं, अभी ब्याह दो । 11 तब इसने सोढे सरदारको कहा । 12 पीछे । 13 भेजा । 14 मेरे यहाँ ब्याह करके पधारें । 15 आज तो सांढनियां लिये जा रहे हैं । 16 देकरके । 17 पाबूजी आगे पधार कर ददरेरे (ददरेवे) आये । 18 बैठे हैं । 19 काका दोदेकी सांढनियां कब ला देगा ? 20 कि पाबूजी आये हैं । 21 दोदेकी सांढनियोंके वर्ग कन्यादानके समय तुम्हें लाकर देनेके लिए संकल्प किया था सो ले आये हैं ।

छै ।[1] ताहरां सारी सांढियां गोगाजी संभाही ।[2] पण गोगाजीरै मनमें विसवास रह्यो नहीं–'जु दोदो आज जोर बळ छै । तैरी सांढियां कैसूं लीवी जावै ?[3] पण कठै बीजी जायगासूं ले आयो छै ।'[4]

ताहरां गोगोजी पाबूजीनूं भगत[5] करी नै[6] विचारी–'जु पाबूरी करामात पण देखीस ।'[7] ताहरां गोगोजी पाबूजी आरोगिया ।[8]

आरोगनै बैठा, ताहरां गोगोजी पाबूजीनूं कही–'पाबूजी ! म्हांरै केईरो नांमलियो वैर छै ।[9] सो थे अठै रहो तो वैर लियां[10] ताहरां पाबूजी कही–'बोहत भलां, रहिस्यां ।'[11]

पछै रात पड़ी । ताहरां गोगैजी पाबूजीनूं कही–'आंपै परभाते सौंण लेस्यां ।[12] जो सौंण आछा हुआ तो चढस्यां ।'[13] ताहरां पाबूजी कह्यो–'सवण किसा लेस्यां ?[14] आप जठी चढस्यो तठी फतै कर आवस्यां ।[15] ताहरां गोगोजी कही–'राज ! आंपणी धरती मांहै स तो सवण मांनीजै छै ।'[16] ताहरां रात तो अै पोढि रह्या ।[17]

अर परभात हुवौ ताहरां गोगोजी पाबूजी दोनूं घोड़ां चढि सवण लेणनूं हालिया ।[18] तठै[19] सवण तो कोई हुवौ नहीं । ताहरां एकै रूंख हेठै ही जाजम बिछायनै दोनूं सिरदार सूता ।[20] घोड़ा दोनूं चरणनूं ढाळिया ।[21] इतरै ठंडो वगत हुवौ ।[22] ताहरां अै जागिया ।[23]

ताहरां गोगैजी कह्यो–'घोड़ा हूं ले आऊं छूं, ज्युं आंपां घरै हालां ।'[24] ताहरां पाबूजी कह्यो–'राज ! आप विराजो ।[25] हूं ले

---

1 एक बांडे (कटी हुई पूंछके) ऊंटके बिना तमाम वर्ग मौजूद है । 2 संभाल ली । 3 उसकी सांढनियां किससे ली जायें ? 4 कहीं दूसरी जगहसे ले आया है । 5 भोजन आदिकी तैयारी की । 6 और । 7 देखूंगा । 8 भोजन किया । 9 मेरे किसीके साथ साधारण-सा वैर है । 10 सो तुम यहां रहो तो वैरका बदला लूं । 11 रहेंगे । 12 अपन प्रभातमें शकुन लेंगे । 13 चढेंगे, चलेंगे । 14 शकुन क्या लेंगे ? 15 आप जिधर चलेंगे उधर ही फतह कर आयेंगे । 16 अपने देशमें तो शकुन देख कर ही काम करना अच्छा माना जाता है । 17 तबरात तो ये सो रहे । 18 चले । 19 वहां । 20 तब एक वृक्षके नीचे जाजम बिछा करके दोनों सरदार सो गये । 21 दोनों घोड़े चरनेको छोड़ दिये । 22 इतनेमें ठंडा वक्त हो गया । 23 तब ये जगे । 24 घोड़े मैं ले आता हूं, फिर अपन घरको चलें । 25 आप बैठिये ।

आईस ।'[1] ताहरां गोगैजी कही– 'थे वडेरा छो[2], छोटा तोई सुसरा छो, पग वडा छो, थे बैसो,[3] हूं ले आईस ।' ताहरां पाबूजी कही–'आ तो साची, पण थे बूढा छो, अर म्हे मोटियार छां ।'[4] ताहरां पाबूजी घोड़ांरी खबर करण गया । आगै जाय देखै तो कासूं ? नाग २ छै, तिके तो सेखड़ हुआ घोड़ा चारै छै ।[5] अर दोय नागांरा घोड़ांरै पगे दांवणा छै ।[6] ताहरां पाबूजी देखनै विचारी जु–'आ म्हनै गोगोजी-करामात देखाळी छै ।[7] ताहरां पाबूजी पाछा आया । आयनै गोगैजी नूं कही–'राज ! घोड़ा तो दीसै नहीं ।[8] कठीनै नीसर गया[9] । म्हनै तो मिळिया नहीं ।[10]

ताहरां पाबूजी तो जाय जाजम बैठा नै गोगोजी हाथमें बरछी लेनै घोड़ांरी खबर करण गया । आगै देखै तो कासूं ? पांणीरो वडो हवद भरियो छै ।[11] तैरै मांहै[12] एक नाव छै, तै[13] नावमें घोड़ा दोनूं तिरै छै । हवद ऊंडो बोहत ।[14] गोगोजी बिचारी जु–आ म्हनै पाबू करामात दिखाळी छै । आ जांणनै[15] गोगोजी पाछा पाबूजी पासै आया । ताहरां पाबूजी कही–'राज ! घोड़ा लाधा ?'[16] ताहरां गोगोजी कह्यो–'राज ! म्हारै मनमें संदेह हुतो, सु हमैं मिटियो ।[17] म्हैं लाधा थांनै ।'[18]

ताहरां पाबूजी गोगोजी भेळा हुयनै घोड़ांनूं गया । आगै देखै तो कासूं ? ऊभा छूटा चरै छै ।[19] तद अै घोड़ा लेय लगामां देनै असवार हुयनै गोगोजीरी कोटड़ी आया । पछै पाबूजीनूं भगत जीमायनै विदा दीवी ।[20]

---

1 मैं ले आऊंगा । 2 तुम बड़ेरे हो । 3 छोटे हो तो भी ससुरे हो, पदमें बड़े हो, तुम बैठो । 4 यह तो सच है, परंतु तुम वृद्ध हो और मैं जवान हूं । 5 वे तो साथ खड़े हुए (फनोंको उठाए हुए ?) घोड़े चरा रहे हैं । 6 और दो सर्पोंकी घोड़ोंके पावोंमें रज्जु (दामर) बँधी है । 7 दिखाई है । 8 दिखाई नहीं देते । 9 कहीं निकल गये । 10 मुझे तो मिले नहीं । 11 पानीका बड़ा हौज़ भरा हुआ है । 12 जिसमें । 13 उस । 14 हौज़ बहुत गहरा । 15 यह जान कर । 16 घोड़े मिल गये ? 17 सो अब मिटा । 18 मैंने आपको अब पहिचाना । 19 छूटे खड़े हुए चर रहे हैं । 20 फिर पावूजीको भोजन करवा कर रवाना किया ।

पाबूजी अर हरियो थोरी असवार हुयनै सांढियां देनै कोळू आया । ताहरां वसेक हुवो ।[1]

ताहरां पाबूजी वरस १२रा हुवा । ताहरां सोढां साहो लिख मेलियो ।[2] कह्यो–'जांन कर वेगा आवज्यो ।[3] ताहरां पाबूजी जांनरी तैयारी कीवी ।[4] जींदराव खीची बोलायो । गोगैजीनूं बोलाया । बूड़ैजीनूं बोलाया । जांनरी तैयारी कीवी । अर सीरोही रै रावनूं पण बोलायो, सो आयो नहीं । ताहरां जांन चढी ।

ताहरां चांदैरी बेटीरो पण वीमाह हुतो ।[5] चांदो विखैमें नीसरियो तद सात गांवै बेटी दीवी हती ।[6] तैरी सातेई जांनां आई । ताहरां चांदैनूं पाबूजी कही–'चांदा ! थारै पण वीमाह छै; तूं अठै रहि ।' ताहरां चांदो तो अठै[7] रह्यो । अर डांवो साथै गयो ।

ताहरां जांननूं मारगमें जावतां वडाकारो सवण हुवौ ।[8] ताहरां सवणियां[9] कही–'राज ! सवण भला न हुवा छै, पाछा फिरो ।[10] बीजै साहै परणीजस्यां ।'[11] ताहरां कहीं–'थे पाछा फिरो । हूं तो कोई फिरूं नहीं । लोक कहै जु पाबूजीरी तेल चढी रही ।'[12] ताहरां पाबूजी तो आघा चढिया अर साथै एक डांबियो हुवो ।[13] अर बीजो[14] साथ सर्व पाछो फिरियो ।

ताहरां पाबूजी घड़ी २ रात गयां धाट जाय पुहता ।[15] उठै सोढां भली भांतसूं वीमाह कियो । ताहरां पाबूजी फेरा लेनै हालण लागा ।[16] ताहरां सोढां कही–'राज ! म्हांमें चूक किसी, सु न जीमो, न कोई भगत लिवो, सु किसै वासतै ?[17] दिन दोय चार रहो, ज्यां

---

1 तब बड़ी विशेष बात मानी गई (हर्षोत्सव हुआ) 2 सोढोंने तब विवाहका लग्न लिख कर भेज दिया । 3 बारात बना कर जल्दी आना । 4 पाबूजीने बारातकी तैयारी की । 5 चांदेकी लड़कीका भी विवाह था । 6 चांदा संकटमें था तब उसने अपनी बेटी–का संबंध सात गांवोंमें कर दिया था । 7 यहां । 8 मार्गमें जाते हुए बरातको अपशकुन हुआ । 9 शकुनियोंने । 10 पीछे लौट जाओ । 11 दूसरे साहे पर ब्याह करना । 12 लोग कहेंगे कि पाबूजीकी तेल चढी हुई ही रह गई । 13 और साथमें केवल एक डांविया थोरी चला । 14 दूसरा । 15 पाबूजी दो घड़ी रात गये धाट देश (उमरकोट) में जा पहुंचे । 16 पाबूजी भाँवर लेनेके बाद चलने लगे । 17 हमारेमें कौनसी भूल जिससे न तो आप भोजन करो और न आप भात (बड़ा भोज) लेओ, सो किस कारण से ?

दायजो देनै विदा करां ।'[1] ताहरां पाबूजी कह्यो जु–'म्हांनूं सुगन लांचा हुआ छै ।[2] तैसूं म्हे रातोरात घरां जावस्यां ।[3] पाछा मासेकनूं आवस्यां ।[4] भगत-दायजो जदी करज्यो ।'[5] ताहरां सोढां कही 'मरजी रावळी, चढो ।'[6] ताहरां पाबूजी चढिया । ताहरां सोढी कह्यो–'हूं पण न रहूं, साथै हालीस ।'[7] ताहरां सोढी पण वैहल बैसनै साथै हुवा, सु पाबूजी रातोरात हलांणों लेनै कोळू आया ।[8] अठै हरख वधाई हुई । पाबूजी सोढी जाय मैहल मांहै पोढिया छै ।[9] डांबो आपरै[10] घरै गयो ।

ताहरां जींदराव खीची आयो हुतो[11] सु पाबूजी बूड़ैजी जींदरावनूं सीख दीवी ।[12] ताहरां जींदराव मारगमें जावतां काछेलां चारणांरो वित लियो ।[13] ताहरां गोहरी[14] आय पुकारियो । कह्यो–'जी ! खीची जींदराव धण[15] चरतो हतो, तठैसूं[16] सर्व लियां जावै छै ।' ताहरां बिरवड़ी चारण आयनै बूड़ै आगै कूकी ।[17] कह्यो–'बूड़ा ! वाहर धाय[18], खीची गायां घेरियां जाय छै ।' ताहरां बूड़ैजी कही–'बाई ! म्हारी आंख दूखै छै । आज तो चढियो ना जाय ।'[19]

ताहरां चारण कूकती-कूकती पाबूजीरै महल आई । आयनै चांदैनूं कही–'चांदा ! पाबूजी नहीं, अर खीची म्हारो धण सर्व लियो, सो तूं चढ ।'[20] ताहरां चांदै कही 'हे ! कूक नां'[21] पाबूजी पधारिया छै ।'[22] इतरै पाबूजी पण झरोखै कर दीठो ।[23] कह्यो–'कासूं छै ?'[24]

---

1 सो दहेज देकरके विदा करें । 2 हमको शकुन अच्छे नहीं हुए हैं । 3 इसलिये हम रातों-रात घरको चले जायेंगे । 4 मास एकके लगभग फिर आयेंगे । 5 भगत (बड़ा भोज) और दहेज उस समय देना । 6 तब सोढोंने कहा–मर्जी आपकी, पधारो । 7 मैं भी नहीं रहूं, साथमें चलूंगी । 8 सोढ़ी भी बहलीमें बैठ कर साथमें हो गई, पाबूजी रातों-रात हलाणा (सोढी)को साथ लेकर कोलू आये । 9 सो गये हैं । 10 अपने । 11 आया था । 12 विदा किया । 13 तब जींदरावने मार्गमें जाते हुए काछेला चारणोंके गो-समूह-को घेर लिया । 14 गायें चराने वाला । 15 गो-समूह । 16 वहांसे । 17 तब चारणी बिरवड़ीने आकर बूड़ेसे पुकार की । 18 वाहरको दौड़ (पीछा कर) । 19 आज तो वाहर नहीं चढ़ा जाता । 20 सो तू उसके पीछे वाहरको चढ़ । 21 अरी ! शोर मत मचा । 22 पाबूजी आ गये हैं । 23 इतनेमें पाबूजी ने भी झरोखेमें हो करके देखा । 24 क्या है ?

ताहरां कही–'राज ! काछेली बिरवड़ीरो धण खीची जींदराव लियो। अर बूड़ोजी चढै नहीं ।'

ताहरां पाबूजी कह्यो–'घोड़ां जीण करावो ।'[1] ताहरां पाबूजी असवार हुवा । थोरी सर्व असवार हुवा । सात-बीस जांनी नै सात चांदैरा भाई, साराई चढिया ।[2] तिकै खीचीनूं पुंहता ।[3] तठै लड़ाई हुई । खीचीरो लोक घणो मारीजियो ।[4] धण सर्व पाबूजी घेर लियो ।

लेनै अै तो कोळू आवै ।[5] गूंजवो कोहर तो, तठै चारणरो व्रित पावण वेई, सु कोहर चाढियो, सु पांणी नीसरै नहीं ।[6] ताहरां चारण बिरवड़ी कही–'वडा राठोड़ घेरी छै ज्युं पाय ।'[7] ताहरां पाबूजी कोहर तेवण आप लागा। ताहरां एक वारो काढियो ।[8] तैसूं कोठा, कूंडयां, खेळियां सर्व भरी ।[9] बिरवड़ी चारणरो धण सर्व पायो ।[10]

अर वांसै[11] बिरवड़ीरी छोटी वैहन बूड़ैजीनूं जाय पुकारी । कह्यो–'बूड़ा ! हमैं तो कितराइक काळ जीवीस ।[12] पाबूजी तो कांम आया ।' इतरी इयै कही[13] । ताहरां बूड़ैजीनूं रीस आई। ताहरां बूड़ैजी चढिया सो खीचीनूं जाय पुहता ।[14] ताहरां बूड़ैजी कह्यो–'रे खीची ! पाबूनं मार कठै हालियो ?[15] पग मांड !'[16] ताहरां खीची संकियो[17]। कह्यो–'राज ! पाबूजी तो धण लेनै पाछा फिरिया, थे लड़ो मती[18]

---

1 घोड़ों पर जीन कसवा दो । 2 एक सौ चालीस बराती और सातों ही चांदेके भाई, सभी चढ़े । 3 वे सभी खीची के पीछे पहुंचे । 4 खीचीके बहुत मनुष्य मारे गये । 5 ले करके ये तो कोलूको आ रहे हैं। 6 मार्गमें गूंजवो नामका कुंआ था, वहां चारणी-के गो-समूहको पानी पिलानेके लिये चरसको चढ़ाया, किन्तु पानी निकलता नहीं । 7 बड़े राठौड़ ! जिस प्रकार अपने हाथोंसे इन्हें घेर कर लाये हो, उसी प्रकार अपने हाथसे ही इन्हें पानी पिलाओ । 8 तब पाबूजी स्वयं चरस खींच कर निकालने लगे और उन्हों-ने एक वारा निकाला । [कोहर=पशुओं आदिके पीनेके लिये चरस द्वारा पानी निकाला जाने वाला कुँआँ ! वारो=चरस (प्रायः बिना सूंड वाला)का कुँएँमेंसे पानी भर करके एक बार निकाला जाना एक 'वारा' कहलाता है ।] 9 उस एक वारासे पानीके कोठे, कूंडिये और खेलियां आदि सब भर गये । 10 बिरवड़ी चारणीके सभी गो-समूहको पिला दिया । 11 पीछेसे । 12 बूड़ा ! अब तू कितने काल तक जीयेगा । 13 इतनी बात इसने कही । 14 जा पहुंचे । 15 पाबूको मार करके कहां चल दिया ? 16 पांव रोप (ठहरजा)। 17 डर गया । 18 पाबूजी तो गो-समूह लेकर लौट गये हैं, तुम लड़ाई मत करो ।

तोई बूड़ोजी मांनै नहीं ।[1] ताहरां लड़ाई हुई । बूड़ो कांम आयो ।

ताहरां खीची आपरा[2] साथसूं कही–'जो आज आंपां पाबूनै मारियो नहीं तो पाछै आपांनै नहीं छोडसी ।'[3] ताहरां खीचीरो साथ पाछो फिरियो । सो कूंडळ पमै घोरंधाररै आयो ।[4] ताहरां पमैनूं कही जु– 'अै[5], राठोड़ थारी[6] धरती दबावता-दबावता आसी[7], सो जे[8] तूं आज म्हांरै सांमल हुवै तो दाव छै, पाबूजीनूं मारां ।' ताहरां पमो पण चढ सामल हुवौ ।

अै चढनै पाबूजो ऊपर आया । तठै[9] पाबूजी गायां पाइनै[10] छोडी छै । इतरै खेह दीठी ।[11] ताहरां पाबूजी कह्यो–'रे चांदा ! आ खेह कैरी ?'[12] ताहरां चांदै कह्यो–'राज ! खीची आयो ।' अर पैहलड़ी लड़ाई मांहै चांदै खीचीनूं तरवार वाही हुती[13], तद पाबूजी तरवार आपड़ लीवी ।[14] कही–'मारो मतां, बाई रांड हुसी ।'[15] ताहरां चांदै कही–'राज ! आप तरवार आपड़ी सु बुरी कीवी ।'[16] अै छोडै छै ?[17] मराया भलां[18] ताहरां चांदै कही–'हरांमखोर आयो ।' ताहरां पाबूजी खेत बुहारनै लड़ाई कीवी ।[19] वडो रोठ वाजियो ।[20] ताहरां पाबूजी कांम आया । सात भाई आहेड़ी[21] कांम आया । जांनां सात आई ही, जिणमें सात-वीस आहेड़ी छा सो सर्व कांम आया ।[22] वडी लड़ाई हुई । खीचीरा पण मांणस घणा

---

1 फिर भी बूड़ोजी मानते नहीं हैं । 2 अपने । 3 जो आज अपनने पाबूको मारा नहीं, तो फिर वह अपनेको नहीं छोड़ेगा । 4 सो वह कुंडलमें पमे घोरंधारके पास आया । 5 ये । 6 तेरी । 7 आयेंगे । 8 यदि । 9 वहाँ । 10 पानी पिला करके । 11 इतनेमें गर्द उड़ती हुई देखी । 12 यह खेह किस बातकी ? 13 पहलेकी लड़ाईमें चांदेने खीचीके ऊपर तलवारको प्रहार करनेके लिए उठाई थी । 14 तब पाबूजीने तलवार पकड़ली थी । 15 कहा कि मारो मत, बाई विधवा हो जायगी । 16 आपने तलवार पकड़ली यह बुरा किया । 17 ये अब कहीं छोड़ने वाले हैं ? 18 मार देना ही अच्छा था । 19 तब पाबूजीने मैदान तैयार करके लड़ाई की । 20 बड़े जोरोंके प्रहारोंसे लड़ाई हुई । 21 शिकारी (थोरी) । 22 सात बरातें आई थीं जिनमें १४० थोरी थे सो सभी काम आ गये । ['सात-वीसका प्रयोग प्रायः 'सात-वीसीकी' भाँति ही १४० के लिये ही होता है । केवल २७के लिए 'सात-वीस'का प्रयोग नहीं होता । वीससे ऊपर दस या बीस समाहार संख्याओंके योगके लिए उन समाहार संख्याओंकी इकाईमें गुणित कर अभिलषित संख्याको बतानेकी परम्परा आज भी अपठित समाजमें देखी जाती है । दशका समाहार वीसका आधा, पांचको चौथाई और १५ को पौनां समझा जाता है । पचासको 'अढाई-वीसी', पचपनको 'पूणा तीन-वीसी' और साठको 'तीन-वीसी'कहा जाता है । इकसठको 'तीन-बीसी नै एक' कहा जाता है । इसी प्रकार सत्ताईसको 'सात-वीस' न कह कर 'एक वीसी नै सात' कहा जाता है ।

कांम आया।[1] खीची तो लड़ाई करनै आपरै ठिकांणै गयो। पमो आपरै ठिकांणै गयो।

पाबूजी लारै सोढी सती हुई।[2] बूड़ैजी लारै डोड-गेहली सती हुवण लागी। तद[3] डोड-गेहलीरै सात मासरो गर्भ हुतो। तद लोकै कही–'आपरै पेट मांहै गर्भ छै सु थे सती मतां हुवो।'[4] ताहरां डोड-गेहली छुरी लेनै पेट झरडैनै बेटो काढियो अर धायनै दियो।[5] कह्यो–'इयैनूं आछी तरैसूं पाळै।[6] ओ वडो देवनीक मरद हुसी।[7] ताहरां इणरो नाम झरड़ो दियो।[8]

पछै झरड़ो वरस १२रो हुवो। ताहरां झरड़ै काकै बापरो वैर लियो।[9] जींदराव खीचीनूं मारियो। पछै राज कियो। तिको झरडो अजू तांई जोवै छै।[10] गोरखनाथजी मिळिया। सिद्ध मरद हुवो।[11]

॥ इति पाबूजी री वात संपूर्ण ॥

॥ शुभं भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥

---

1 खीचीके भी बहुत मनुष्य काम आये। 2 पाबूजीके पीछे सोढ़ी सती हुई। 3 उस समय। 4 आपके पेटमें गर्भ है सो तुम सती मत हो। 5 तब डोड-गहलीने छुरीसे पेटको चीर करके भ्रूणको बाहर निकाला और धायके सुपुर्द किया। 6 इसका पालन अच्छी तरहसे करना। 7 यह देवांशी और वीर होगा। 8 इसका नाम झरड़ा रखा। [छुरीसे झरड़ कर (एक झटकेसे चीर कर) पेटमेंसे बाहर निकाला इसलिये 'झरड़ा' नाम रखा।] 9 तब झरड़ेने अपने काके और बाप के मारने वाले जींदराव खीचीको मार करके बदला लिया। 10 वह झरड़ा अभी तक जीवित है। 11 सिद्ध और वीर पुरुष हुआ।

अथ वात गांगै वीरमदेरी लिख्यते

च्यार ठाकुर मारू, सु अै जोधपुर आया ।[1] इंयांमें[2] रायमल घरे छै, बीजा जोधपुररै दरीखांनै छै ।[3] इतरै मेह आयो ।[4] ताहरां इंयां[5] ठाकुरां वीरमदेरी मा सीसोदणी, तिणनूं कहाड़ियो[6]–'जी, म्हांनूं मेह रोकिया छै[7], मांहरी खबर लेज्यो ।[8] ताहरां रांणी कहाड़ियो–'चकमा ओढनै ठाकुर डेरै पधारो ।[9] अठै थांनूं कुण जीमाड़सी ।[10]

ताहरां इंयां ठाकुरां कह्यो–'आवो, गांगैरी मानूं कहावां ।'[11] ताहरां गांगैरी मानूं कहाड़ियो । ताहरां भीतरसूं कहाड़ियो–'ठाकुर ! दरीखांनै विराजो ।[12] घणा हीड़ा करस्यां ।'[13] ताहरां गांगैरी मा ठाकुरांरा घणा वांना किया ।[14] ठाकुर सारा राजी हुवा । वळै आपरी धाय मेलनै खबर कराई[15], नै कह्यो[16]–'जी, क्युं ही न पहुंतो हुवै सो पहुंचावां ।'[17] ताहरां ठाकुरां कह्यो–'जी, सारा थोक आया ।[18]

ताहरां इंयां ठाकुरां वहूजीनूं भीतर कहाड़ियो–'थांरै बेटै गांगैनूं जोधपुररी ममारखो छै ।'[19] ताहरां धाय भीतर जायनैं वहूजीनूं कह्यो–'ठाकुर थांरै बेटैनूं जोधपुररी ममारखी दीवी छै ।'[20] ताहरां रांणी आसीस कहाड़ो ।[21] अर कह्यो–'जी, जोधपुर म्हां पायो ।[22]

---

1 चार मारू ठाकुर थे सो ये जोधपुर रहनेके लिये आये । 2 इनमेंसे । 3 दूसरे जोधपुरके दरीखानेमें हैं । 4 इतनेमें बरसात आ गया । 5 इन । 6 जिसको कहलवाया । 7 हमको बरसातने घर जानेसे रोक लिया है । 8 हमारी सम्हाल लेना जी । 9 चकमे ओढ कर अपने डेरोंको चले जायँ । 10 यहां तुमको कौन भोजन करायेगा । 11 गांगेकी माको कहलायें । 12 दरीखानेमें बैठें । 13 यथाशक्ति सेवा करेंगे । 14 अनेक प्रकार सेवा की । 15 पुनः अपनी धायको भेज कर खबर करवाई । 16 और कहा । 17 कोई वस्तु नहीं पहुंची हो वह पहुंचा दें । 18 सब वस्तुएँ मिल गई हैं । 19 तुमारे पुत्र गांगेको जोधपुरकी मुबारिकवादी है । 20 ठाकुरोंने तुमारे बेटेको जोधपुरकी मुबारिकवादी दी है । 21 तब रानीने आशिष कहलवाई । 22 (आपने कहा है तो) जोधपुर हमें मिल गया ।

थांईज सारै छै[1], थे देवो जिकेनूं हीज आवै ।'[2] अर कहाड़ियो–'भलां जी, म्हां पायो ।'[3]

युं करतां राव सूजोजी कितरै हेकै दिने विसरांमियो ।[4] ताहरां टीकैरी तयारी हुई । ताहरां इंयां ठाकुरां वीरमदेनूं पकड़ बांह अर गढसूं हेठो उतारियो[5], नै गांगैनूं टीको दियो ।[6]

जाहरां[7] वीरमदे गढ हूं[8] उतरतां विचै रायमल मुंहतो मिळियो, कह्यौ–'रे, ओ पाटवी कुंवर गढसूं क्युं उतारो ?'[9] ताहरां रायमल वीरमदेनूं अपूठो ले आयो ।[10] ताहरां सिगळां ही मिळनै कह्यो[11]–'जी सोझत वीरमनूं द्यो ।'[12] सोझतरो राव वीरमदेनूं कियो ।[13]

ताहरां वीरमदे गेहलो हुवो ।[14] मुंहड़ैसूं बकै–'रे, ओ जोधपुर हुवै ?'[15] ताहरां रायमल मुंहतो सोझत रखवाळै ।[16] वीरमदे ढोलियै बैठो रहै ।[17] जो गांगो सोझतरो १ गांम मारै तो रायमल जोधपुर रा २ गांम मारै ।[18] युं रहतां थकां इंयांरो वेध चालियो जाइ ।[19]

जैतो जोधपुर चाकरी करै । कूंपो सोझत चाकरी करै । सु जैतै री वसी वगड़ी मांहै ।[20] सु वगड़ी वीरमदेरै वांटैमें आई ।[21] वीस हजाररो गांम ।[22] सु जैतैनूं वीरमदे काढै नहीं ।[23] सु किसे वासतै ?[24] कह्यौ–'जी जैतो फोज मांहै सिरदार, सु जैतो वगड़ी

---

1 तुम्हारे ही अधिकारकी बात है । 2 तुम जिसको देदो उसको ही मिले । 3 और उन्हें कहलवाया कि अच्छी बात है, हमें प्राप्त हुआ । 4 इस प्रकार कितनेक दिनोंके बाद सूजोजी देवलोक हुआ । 5 वीरमदेको बाँह पकड़ कर गढसे नीचे उतार दिया । 6 और गांगेको टीका कर दिया । 7 जब । 8 से । 9 अरे ! इस पाटवी कुंवरको गढसे क्यों उतार रहे हो ? 10 तब रायमल वीरमदेको वापिस ले आया । 11 तब सभीने मिल कर कहा । 12 सोजत वीरमको देदो । 13 तब सोजतका राव वीरमदेको बनाया । 14 तब वीरमदे पागल हो गया । 15 मुंहसे बकता है–अरे ! यह जोधपुर है क्या ? 16 उस समय मुंहता रायमल सोजतका रखवाला बना । 17 वीरमदे पलंग पर बैठा रहे । 18 यदि गांगा सोजतका एक गाँव लूटता है तो रायमल जोधपुरके दो गांव लूट लेता है । 19 इस प्रकार इनका झगड़ा चलता रहता है । 20 जैतेकी बसी (जागीरी) बगड़ी में । 21 बगड़ी वीरमदेके बंटमें आई हुई थी । 22 बगड़ी बीस हजारकी आमदनीका गांव । 23 जैतेको वीरमदे निकालना नहीं चाहता । 24 सो किसलिये ?

भोगवै, सोझतरो भलो चाहै।'[1] ताहरां राव गांगै कह्यो–'जैताजी ! थांहरा गाडा बीलाड़ै आंणो।[2] वगड़ी छाडो।'[3]

ताहरां जैतेजी कागळ मेलिया।[4] वगड़ी मांहै धायभाई रेड़ो हुतो।[5] तिकैनूं कहाड़ियो[6]–'रेड़ाजी ! गाडा बीलाड़ै ले जावो।' ताहरां रेड़ै कहाड़ियो–'वगड़ी वीरमदे छोड़ावै नहीं, तो म्हे क्युं छोडां ?'[7] ताहरां रेड़ै वगड़ी छाडी नहीं।[8]

युं करतां वळै[9] वीरमदेरो साथ नै गांगैरो साथ लड़ियो, गांगैजी-रो साथ भागो। ताहरां गागैजी कहै–'म्हारौ साथ भागै, सु कासूं छै ?'[10] ताहरां कहणवाळां कह्यौ–'जी, जैतो वगडी भोगवै जितरै थे जीपो नहीं।'[11] ताहरां राव गांगैजी जैतैनूं तेड़नै ओळंभो दियो।[12] ताहरां जैतै रेड़ैनूं कहाड़ियो–'रे, मोनैं थां रावजी कना ओळंभो दरायो।[13] हिवै वगड़ी वेगी छाडज्यो।'[14]

ताहरां रेड़ै दीठो[15]–'रायमलनूं मारूं तो भलो छै।' ताहरां रेड़ै दीठो–सोझत जायनै रायमलनूं मारूं। ताहरां रेड़ो सोझत गयो। जायनै रायमलसूं मिळियो।[16] रायमल वागो पहरनै मुजरै जावतो हुतो।[17] ताहरां कह्यो–'रेड़ाजी ! हालो, मुजरै हालां।'[18] ताहरां रेड़ैनूं ले अर रांणीरै मुजरै गयो। जायनै रायमल मुजरो कियो। ताहरां कह्यो–'जी, वीरा ! ओ कुण छै ?'[19] कह्यो–'जी, जैतैजीरो धाय भाई छै। ताहरां पगे लगायो।[20] बाहुड़तां रायमलनूं छांनै लेनैं

---

1 जैता फौजका सरदार और सोजतका हितैषी है इसलिये वह बगड़ीको भोगता है। 2/3 राव गांगाने कहा–'जैताजी ! तुमारे गाडे विलाड़े ले आओ (वगड़ी छोड़कर बिलाड़े चले आओ)। वगड़ी छोड़ दो। 4 तब जैतेजीने पत्र भेजा। 5 बगड़ीमें धायभाई रेड़ा था। 6 उसको कहलवाया। 7 तो हम क्यों छोड़ें ? 8 तब रेड़ेने बगड़ी छोड़ी नहीं। 9 फिर। 10 सो यह क्या बात है ? 11 जैता जब तक बगड़ी भोगता है तब तक तुम जीतनेके नहीं। 12 तब राव गांगेजीने जैतेको बुला कर उपालंभ दिया। 13 अरे ! मुझे तुमने रावजीसे उपालंभ दिलवाया। 14 अब बगड़ी जल्दी छोड़ दो। 15 तब रेड़ेने देखा। 16 जाकरके रायमलसे मिला। 17 रायमल बागा पहन कर मुजरा करनेको जा रहा था। 18 चलो, मुजरे चलें। 19 भाई ! यह कौन है ? 20 तब उसे पांवों लगाया।

कह्यौ-'वीरा ! इयैरो वेसास मतां करै ।[1] हूं इयैरी निजर भूंडी देखूं छूं ।'[2] ताहरां रायमल कह्यो-'जी, अै तो आपणाहीज छै ।'[3] पिण सीसोदणी कह्यो-'वीरा ! इणरो वेसास मतां करे ।'

ताहरां रायमल दरीखांनैनूं हालियो छै ।[4] ताहरां धाय भाई रेड़ै जांणियो ।[5] दरीखांनै तो हजार आदमी छै । उठै तो रायमल मरसी नहीं ।[6] अठै अेकलो छै, मारूं ।'[7] ताहरां रेड़ै तो मारणरी बात कीनी, तरवार वाही । अर रायमल भाटो लेणनूं नीचो हुओ, सवळी मेहलै बैठी हुती, तियैरै उडावणनूं ।[8] ताहरां तरवार वाही, सो खाली पड़ी। थोड़ी-सी मोरै लागी ।[9] ताहरां रायमल पाछो फिर अर वाही सु रेड़ै-नूं भोठ परहो कियो ।[10] रेड़ो मारै रायमल ऊभो रह्यो ।[11] ताहरां वगड़ीरा लोक सारा नाठा सु उबरै गया ।[12]

हिवै राव गांगोजी कहै-'जैताजी ! कूंपानूं उरहो ल्यो ।'[13] ताहरां जैतैजी कह्यो-'राज ! हूं ही कागळ दईस, अर आपही कागळ द्यो ।'[14] ताहरां कागळ दे आदमी मूकियो ।[15] कहाड़ियो-'रे भाई ! वीरमदेरै छोरू[16] नहीं छै; पछै ही जोधपुर आवणो छै । अर लाख रुपियांरो पटो कूंपैनूं रावळै[17] देवै छै । सखरा-सखरा[18] गांम मारवाड़रा कहै छै, ल्यो ।' ताहरां कूंपैही दीठो[19]-'भलां कहै छै ।'[20] जाहरां कूंपै राव गांगैजीनूं कहाड़ियो-'जो एक वरस तांई सोभत ऊपर कटकी न करो तो हूं थांहरै आऊं ।'[21] ताहरां रावजीसौं कह्यो । ताहरां दीठो-

---

1 लौटते हुए रानीने रायमलको एकान्तमें लेकर कहा कि 'वीरा ! इसका विश्वास मत करना । 2 मैं इसकी नजर बुरी देख रही हूं । 3 यह तो अपना ही है । 4 चला जा रहा है । 5 विचार किया । 6 वहाँ तो रायमल मारा नहीं जा सकेगा । 7 यहाँ अकेला है, मार दूं । 8 महल पर एक चील बैठी हुई थी उसको उड़ानेके लिये कंकर लेनेको नीचे झुका, उस समय तलवारसे प्रहार कर दिया, परंतु वह खाली चली गई । 9 थोड़ी-सी पीठमें लग कर रह गई । 10 तब रायमलने पीछेकी ओर मुड़ कर प्रहार किया सो रेड़ेका सिर दूर जा पड़ा । 11 रेड़ेको मार करके रायमल खड़ा रहा । 12 वगड़ीके सभी लोग भयके मारे बचनेके लिये भाग गये । 13 कूंपाको भी इधर ले लो । 14 मैं भी पत्र दूंगा और आप भी पत्र दें । 15 तब पत्र देकर आदमी भेजा । 16 पुत्र, संतान । 17 रावजीकी ओरसे । 18 अच्छे-अच्छे । 19 देखा, विचारा । 20 बात तो ठीक कह रहे हैं । 21 जो एक वर्ष तक सोजत पर आक्रमण नहीं करो तो मैं तुम्हारे पास आ जाऊं ।

वरस उरहो आवतो जासी ।[1] कूंपो परहो नहीं जावै ।'[2] कह्यो-'कूंपाजी पधारो ।[3] वरस एक तांई सोझत ऊपर कटकी नहीं करां ।' ताहरां[4] कूंपै रायमल कनै जाय विदा मांगी । 'म्है जोधपुर जावां छां । वीरमदेरै छोरू नहीं, पछै ही जोधपुर जावणो हुसी ।'[5] ताहरां रायमल कह्यो-'कूंपाजी ! वीरमदेरो ढोलियो खेतावतरै हीयै पग दै अर सोझतहूं उतारसी, थे पधारो छो ?'[6]

ताहरां कूंपोजी तो जोधपुर गया । कूंपै जावतां रिणमल सर्व गया ।[7] वांसै सात सै असवार सोझतमें रह्या ।[8] ताहरां कूंपैजी मसलत की । सोझतरा गांभ वरसो-वरस[9] दो-दो चार-चार लेता जावो । ताहरां धौळहरै आंण पायगा बांधी ।[10] राव गांगैरा च्यार हजार चींधड़ थांणै राखिया ।[11] इतरा अमराव साथै दिया ।[12] १ मांनो रूपावत, २ सांडो सांखलो, ३ रायपाळ साहणी, ४ गांगो डूंगरसीओत, औ इतरा ठाकुर घोड़ां पासै राखिया ।

यु करतां होळी आई । होळीरै दिहाड़ै, ताहरां मांडावो अरहट छै, एथ सारो दीह रायमल रह्यो, गोठ कीवी ।[13] अर हेरा लगाया ।[14] आज होळीरो दिन छै सु चोपड़ां गांव छै उठै गांगैरी वसी छै ।[15] सु रायमल कह्यो-'गांगो घरे जासी । सु ताहरां गांगो घरे जावै, ताहरां मोनूं[16] खबर देज्यो । हेरा धौळहर गया ।[17] ताहरां होळीनै मंगळावै नै पहोर १ रात गई, ताहरां गांगो साहणी कनै गयो ।[18] कह्यो-'साहणीजी ! कहो तो घरे जावां ।' ताहरां साहणी बोलियो-'नहीं ।' कह्यो-'जी, क्युं, ना बोलो ?'[19] कह्यो-'जी, रायमल

---

1 एक वर्ष यों ही बीत जायगा । 2 कूंपा कहीं हाथसे चला नहीं जाये । 3 कूंपाजी चले आओ । 4 हम जोधपुर जा रहे हैं । 5 बादमें भी जोधपुर तो जाना ही पड़ेगा । 6 कूंपाजी ! वीरमदेके पलंगको खेतावतोंकी छाती पर पैर देकर सोजतसे उन्हें उतारनेकी बात थी और आप जा रहे हैं ? 7 कूंपेके जानेसे रिणमलोत सभी चले गये । 8 पीछे सिर्फ सात सौ सवार सोजतमें रहे । 9 प्रति वर्ष । 10 तब धोलहरे गांवमें आकर घुड़-सेनाकी पायगा बांधी । 11 राव गांगेके चार हजार चींधड़-सैनिकोंको इस थानामें रखा । 12 इस प्रकार उमराव साथमें दिये । 13 मांडावा नामका एक रहँट है. होलीके दिन रायमल दिन भर यहां रहा और वहां गोठ की । 14 वहां उसने जासूस लगाये । 15 चोपड़ां गांव है उसमें गांगेकी बसी है । 16 मुझको । 17 जासूस धोलहरेको गये । 18 होलीको मंगलानेके बाद जब एक पहर रात बीती तो गांगा साहनीके पास आया । 19 क्यों, मना क्यों कर रहे हो ?

सातै कोसै बैठो छै, अर थे घरे जावो ?'[1] ताहरां गांगो बोलियो–'साहणीजी ! वांणियो गेहर रमै छै, अै कठा आवै ?'[2] ताहरां साहणी कह्यो–'च्यार ४ हजार आदमियांनूं थे सवारै आविनै दाग देस्यो ।'[3] ताहरां गांगो हँसनै चढियो, घरे गयो ।

ताहरां हेरा दोड़िया, रायमलनूं जाय कह्यो–'गांगो घरे गयो ।' ताहरां रायमल चढियो । आयनै चार ४ हजार मांणस तरवार मांहै काढिया ।[4] घोड़ा ले गयो । जायनै वीरमदेजीनूं कह्यो–'अै आपरै बाप-दादैरा घोड़ा लायो छूं ।[5] वांणियै इसौ ज्यांन कियो, सो वरस दो २ तांई तो राव गांगोजी संभ ही नहीं सकियो ।[6]

एथ हरदास ऊहड़ राव गांगैजीरै सौं छाड़ि नै आयो ।[7] ताहरां हरदास कहै–'राव गांगाजीसूं लड़ाई करो तो हूं थांहरै वास रहूं ।' ताहरां इयां कह्यो–'लड़ाई करस्यां ।' ताहरां हरदास रह्यो । ताहरां लड़ाई मांडी ।[8] ताहरां वीरमदेरी असवारीरो घोड़ो हरदासनूं दियो । ताहरां लड़ाई हुई । हरदास घावै पड़ियो ।[9] घोड़ैरै पण घाव लागा । ताहरां हरदासनूं डोहळी घाति सोभत ले आया ।[10] घाव बंधाया ।[11]

ताहरां वीरमदे बोलियो–'जाहरे, हरदास ! तैं म्हारो घोड़ो गमायो ।' ताहरां कह्यो–'जी, हरदास ऊभां घोड़ो गयो हुवै तो ओळंभो द्यो ।'[12]

ताहरां हरदास उण वगत[13] वीरमदेजीरो वास छाड़ियो ।[14] नागोरनूं हालियो, सरखेलखांरै वास रहणनूं ।[15]

---

1 रायमल सात कोस पर बैठा हुआ है और तुम घरको जा रहे हो ? 2 बनिया गेहर रम रहा है, ये कहाँ आने के ? 3 चार हजार आदमियोंका कल आकरके दाह-संस्कार करोगे । 4 आकरके चार हजार आदमियोंको तलवारके घाट उतार दिया । 5 ये आपके बाप-दादेके घोड़े ले आया हूँ । 6 बनियेने इतनी जबरदस्त बरबादीकी कि फिर दो वर्ष तक राव गांगोजी सम्हल नहीं सका । 7 इधर हरदास ऊहड़ राव गांगाजीके यहांसे छोड़ कर इनके पास आ गया । 8 लड़ाई शुरू की । 9 हरदास घायल हुआ । 10 तब हरदासको डोहलीमें डाल कर सोजत ले आये । (डोहळी, डोळी=घायलोंको उठा कर ले जानेकी एक टिकची ।) 11 घावों पर पट्टे बँधवाये । 12 हरदासके आहत हुए बिना घोड़ा गया हो तो मुझे उपालंभ दो । 13 उस समय । 14 छोड़ दिया । 15 नागौरमें सरखेलखांके पास रहनेको चल दिया ।

ताहरां सेखो सूजावत वीरमदेजीरै जो गोत-भाई हुंतो, सु आयो[1] आयनै सीसोदणीसूं मिळियो। कह्यो–'मोनूं थे सांमल ल्यो, ज्युं थांहरो चेळो भारी हुवै।[2] राव गांगो न पहुंचै।[3] ताहरां सीसोदणी रायमलनूं पूछियो। ताहरां रायमल कह्यो–'मतां लेवो।'[4] ताहरां सीसोदणी रायमलरो कह्यो न कियो। सेखा सूजावतनूं सांमल कियो। ताहरां रायमल जांणियो–'म्हारो धर्म नहीं हमैं।[5]

ताहरां राव गांगैजीनूं रायमल कहायो[6]–'अबै थे आवो, हूं लड़ीस।[7] वाघेरै घरै तो धरती रहै, सूजारै धरती न जावै।[8] हूं कांम आईस, धरती थांनूं देईस।[9] ताहरां राव गांगो, मालदे बेहु कटक कर आया।[10] ताहरां रायमल जाय वीरमदेरै ढोलियै प्रदक्षिणा दे, पगे लाग बाहिर आयो।[11] आपरो साथ एकठो कर सांम्हां जाय लड़ियो।[12] रायमल कांम आयो। सोभत राव गांगै लई।[13] वीरमदेनूं काढियो।[14]

इति राव गांगै वीरमदेरी वात संपूर्ण

---

१ तब सेखा सूजावत जो वीरमदे का गोत्र-भाई (द्विमात-भाई) था सो आया। 2 मुझको तुम शामिल ले लो जिससे तुम्हारा पलड़ा भारी हो जाये। 3 फिर राव गांगा तुम्हें नहीं पहुंच सकेगा। 4 मत लेओ। 5 तब रायमलने देखा कि अब उसका यहां रहना धर्म नहीं। 6 कहलवाया। 7 अब तुम आ जाओ, मैं लड़ूंगा। 8 मैं चाहता हूं कि धरती वाघाके घरमें रहे, सूजाके घरमें न जाने पाये। 9 मैं काम आ जाऊंगा और धरती तुमको दे दूंगा। 10 तब राव गांगा और मालदे दोनों कटक लेकर आये। 11 तब रायमलने जाकर वीरमदेके पलंगकी प्रदक्षिणा दी और चरण स्पर्श कर बाहर आया। 12 अपना साथ इकट्ठा करके सामने गया और लड़ा। 13 राव गांगाने सोजत पर अधिकार कर लिया। 14 वीरमदेको निकाल दिया।

अथ वात हरदास ऊहड़री लिख्यते

हरदास मोकळोतनूं कोढणों सात-वीस गांवांसूं ।[1] तिको हरदास लाकड़ चाकरी न करै, दसराहै आइनै सलांम करै ।[2] सु मालदेव कुंवर खोट सांसहै नहीं, ताहरां भांणनूं कोढणों दियो ।[3]

ताहरां हरदास इसड़ी बलाय नहीं जो कोई इयैंनूं कहै ।[4] ताहरां चाकरी भांण करै, कोढणां हरदास भोगवै । युं करतां तीन वरस हुआ । ताहरां हुजदार लड़िया, भांणरा नै हरदासरा ।[5] भांणरा हुजदारां कह्यो–'जी, थे ठकुराई करो । पण म्हांनूं कहो नांहीं ।[6] सावास, जु उतरियै पटै थांनै गांम मांहै रैहण देवां छां ।'[7] ताहरां हरदास सुणियो । कह्यो–'रे, कासूं छै?[8] ताहरां कह्यो–'पटो थांसूं उतरियो ।'[9] ताहरां आ वात सुणनै हरदास कह्यो–'रे, म्हैं बुरी वसत खाधी, उतरियै पटै हूं गांम मांहै रहूं ?'[10] ताहरां हरदास छाडियो ।

ताहरां जायनै सोभत रायमल मुंहतैसूं मिळियो । हरदास वीरमदेरै वास वसियो ।[11] ताहरां हरदास रायमलनूं कहै–'जे थे राव गांगैसूं वेढ करो तो हूं थांरै रहीस, नहीं तो नहीं रहूं ।'[12] ताहरां रायमल कह्यो–'जी, म्हांरै तो आठ पोहर लड़ाईज छै ।'[13]

---

1 हरदास मोकलोतको सात-बीस गांवोंके साथ कोढणा पट्टेमें दिया हुआ था। 2 हरदास इतना अक्खड़ कि चाकरीका काम नहीं करता, केवल दशहरेके दिन मुजरा करनेको ही आता है। 3 सो कुंवर मालदेव ऐसी भूलको सहन नहीं करता, उसने कोढणों गांवका पट्टा भाणको कर दिया। 4 परंतु हरदास ऐसी बलाय कि यह बात उससे कहनेकी किसीकी हिम्मत नहीं होती। 5 तब भाण और हरदासके हुजदार परस्पर एक दिन लड़ पड़े। 6 परंतु हमको बात भी नहीं करो। 7 साबाश हमको है, जो पट्टा उतरने पर भी हम तुमको गांवमें रहने देते हैं। 8 अरे ! क्या बात है ? 9 कोढणाका पट्टा तुमारेसे उतर गया है। 10 यह बात सुन करके हरदासने कहा कि यह तो मैंने अलज खाया, जो पट्टा उतरने पर भी गांव में रह रहा हूं। 11 तब हरदास जाकर वीरमदेके यहां रहा। 12 यदि तुम राव गांगासे लड़ाई करो तो मैं तुमारे यहां रहूं, नहीं तो नहीं रहूंगा। 13 हमारे तो आठों पहर उनसे लड़ाई चल ही रही है।

ताहरां एक दिन लड़ाई हुई, सो वीरमजोरै असवारीरो घोड़ो हरदासनूं चढणनूं दियो हुतो, सु अठै हरदास नै घोड़ो बेऊ घावै पूर हुवा।[1] ताहरां हरदासनूं भांण उपाड़ियो, सोझत पहुंचतो कियो।[2] हरदास सोझत आयो। घाव बंधाया।[3] ताहरां वीरमदे कह्यो–'जाह रे हरदास ! तैं म्हारो पांच हजाररो घोड़ो वढायो।[4] ताहरां हरदास कह्यो–'कुरजपूत ! म्हैं म्हारौ पिंड ही वढायो !'[5] ताहरां हरदास विना घाव सारा हुवां रुसायनै हालियो।[6] वास छाडियो।[7] सरखेलखां दिसा हालियो।[8]

ताहरां सेखो सूजावत पीपाड़ रहै।[9] ताहरां सेखो हरदासरै आडो फिरियो, कहियो–'कहसी, मारवाड़ मांहै कोई रजपूत छै ही नहीं, जु हरदासरा घाव बंधाया नहीं ?'[10] ताहरां हरदास कहै–'सेखा ! समझि अर मोनूं राखै ?[11] जो राव गांगैसूं लड़ै तो मोनूं राखै, नहीं तो मोनूं मतां राखै।'[12] ताहरां सेखै कह्यो–'परमेश्वर भलां करसी, थे रहो।'[13] ताहरां हरदास पीपाड़ सेखैरै वास रह्यो।

हिवै हरदासनै सेखो च्यार पोहर मैहलां मांहै आलोच करै।[14] सु सेखैरी वहुवां च्यार पोहर साड़ी ओढियां बैठी रहै।[15] आछै कपड़ेसूं सीयां मरै।[16] ताहरां एक दिन सेखैरी वहुवां कह्यो–'सासूजी ! म्हे तो सीयां मर गई।' ताहरां कह्यो–'वहू ! क्युं ?' कह्यो–सासूजी ! थांहरो[17] बेटो हरदासजीसूं आलोच करै। म्हे चार पोहर

---

1 सो यहाँ हरदास और घोड़ा दोनों घायल हुए। 2 तब हरदासको भाणने उठाया और सोजत पहुंचा दिया। 3 घावोंकी मरहम-पट्टी हुई। 4 जारे हरदास ! तूने मेरे पांच हजारका घोड़ा कटवा दिया। 5 अरे कुक्षत्री ! मैंने भी तो अपना शरीर कटवा दिया है ? 6 तब हरदास घाव ठीक नहीं होने पर भी रिसा करके चल दिया। 7 वहां रहना छोड़ दिया। 8 सरखेलखांकी ओर चला। 9 सेखा सूजावत पीपाड़में रहता है। 10 सेखा हरदासके आड़ा फिरा और कहा कि 'लोग कहेंगे कि मारवाड़में कोई राजपूत ही नहीं, जो हरदासके घाव नहीं बंधाये गये। 11 सेखा ! समझ करके मुझको रखना। 12 नहीं तो मुझे मत रखना। 13 परमेश्वर ठीक करेंगे, तुम रह जाओ। 14 तब हरदास और सेखा रातको चारों ही पहर महलमें परामर्श करते हैं। 15 सेखे की पत्नियां चारों पहर साड़ियां पहनी हुई बैठी रहें। 16 महीन कपड़े पहिने रहनेसे ठंढमें मरती हैं। 17 तुम्हारा।

सीयां मरती बैठी रहां ।' ताहरां कह्यो–'वहू आज हरदास बाहुड़ै ताहरां मोनूं खबर दिया ।'[1]

ताहरां जियै वहूरो वारो हुंतो, सु मारग रोकि ऊभी ।[2] ज्युं हरदास पाछली रातरो बाहुड़ियो, ताहरां कह्यो–'सासूजी ! हरदास बाहुड़ै छै ।'[3] सासू पण ऊभी हंती ।[4] सु ऊपरांसूं हरदास उतरियो । सु राय-आंगण मांहै मारग ।[5] ताहरां राय-आंगणमें हरदास आयो, ताहरां सेखैरी मा भीतर तेड़ायो ।[6] ताहरां जायनै सलांम कीवी । ताहरां कहियो–'बेटा हरदास ! देखै, सेखैरी मारो टापरो उपाड़तो हवै नीं ?'[7] ताहरां कहियो–'माजी ! पेहली हरदासरी मारो टापरो उपड़सो, ता पछै सेखैरी मारो टापरो उपड़सी । टापरो उपड़ियां विना, माजी ! जोधपुर आवै नहीं । काय टापरो उपड़सी, काय जोधपुर आवसी ।'[8]

ताहरां राव गांगैरा परधांन सेखै कनै आया नै सेखैनूं कह्यो–'सेखा ! जितरी धरती मांहै करड़, इतरी धरती थांरी नै जितरी धरती मांहै भुरट, उतरी म्हांरी ।'[9] ताहरां सेखै कह्यो–'भलां ।'

ताहरां हरदास आयो । सेखै कह्यो–'हरदास ! धरती वांट भलो कहै छै ।'[10] ताहरां हरदास वात मांनै नहीं ।

ताहरां भूटो आसियो दूहो कहै[11]—

ऊहड़ मन आंणै नहीं, हेक वचन हरदास ।
सेखै सिगळो सांमठो, (का) गांगै सिगळो ग्रास ।।

---

1 आज हरदास जब आवे मुझे खबर देना । 2 तब जिस पत्नीकी उस दिन बारी थी वह मार्ग रोक कर खड़ी रही । 3 जैसे ही हरदास पिछली रातको लौटा, तब उसने कहा, 'सासूजी ! हरदास लौट रहा है ।' 4 सासू भी वहीं खड़ी थी । 5 राय आंगनमें होकर मार्ग जाता है । 6 तब सेखेकी मांने अंदर बुलवाया । 7 बेटा ! हरदास ! देखना, कहीं सेखेकी मांका टापरा उजाड़ नहीं हो जाय ? 8 या तो टापरे उजड़ेंगे या जोधपुर आयेगा । 9 सेखा ! जितनी धरतीमें करड़ी उगी हुई है उतनी धरती तुम्हारी और जितनी धरतीमें भुरट उगी हुई है उतनी धरती हमारी (इस प्रकार धरतीका बंट करलें ।) 10 हरदास ! धरती बांट लेनेकी बात ठीक कर रहे हैं । 11 इस पर आसिया चारण भूटेने एक दोहा कहा है, इसका भावार्थ इस प्रकार है—

'हरदास ऊहड़ एक भी बात नहीं मानता । वह कहता है कि या तो समस्त धरती सेखा ही लेगा या फिर गांगा ही लेगा ।'

ताहरां हरदास कहै–'एकै जोधपुरर‍ा कासूं दो वांट करां ? एक डूंगरी छै जोधपुर प्रोय बरछीमें नै थारै पूठै ग्रांणीस ?'[1]

ताहरां परधांन ग्रपूठो गयो ।[2] कह्यो–'जी ! वात मांनै नहीं, लड़ाई करसी ।'

ताहरां राव गांगैजी साथ भेळो कियो । वीकांनेरसूं राव जैत-सीहजीनूं बोलाया । बीजो ही साथ घणौ एकठो कियो ।[3] सेखो नै हरदास नागोर सरखेलखां कन्है[4] ग्राया । सरखेलखानूं कह्यो–'तोनूं नै दोलतखांननै परणावस्यां ।[5] म्हांरी थे मदत ग्रावौ ।' ताहरां सेखो बोलियो–'रे हरदास ! बेटियां किणरी देईस ?[6] म्हारै बेटी नहीं, थारै बेटी नहीं ।'[7] ताहरां हरदास बोलियो–'केरी बेटियां ?[8] तरवारांरा माथै भोठ पड़सी ।[9] जे जीपस्यां तो घणाही रिणमल छै[10], तियांरी दोय डावड़ियां परणावस्यां ग्रर जो कांम ग्राया तो कुण परणीजसी ? कैरी वात ?'[11] यु करनै बैराईरा द्रह तठै ग्राय सेखो दोलतखांन उतरिया ।

जांणाऊ ग्रायो ।[12] ताहरां राव गांगै पूछियो–'दोलतियो कठै ग्रायो ?'[13] कह्यो–'राज बैराई ग्राय पड़ियो ।[14] राजरी जैतहथ ।'[15]

राव गांगोजी घांघांणी ग्राय उतरिया ।[16] कोस दोयरो बीच छै ।[17] तठा उपरंत राव गांगैजी कहाड़ियो–'राज ! ग्राप ग्राय उतरिया, ग्राहीज ग्रांपां सीम । राज ! इतरी राजरी । राज वडा छो, काका छो ।'[18] इसौ परधांनगो कियो ।[19] परधांन फिरिया पण

---

1 एक जोधपुरके क्या दो भाग करें ? एक पहाड़ी है सो जोधपुरके पीछे बरछीमें पिरोकर तेरे पीछे लाऊंगा क्या ? 2 वापिस लौट गया । 3 दूसरा भी बहुत साथ इकट्ठा किया । 4 पास । 5 तुझे ग्रौर दौलतखांनको व्याह देंगे । 6 ग्ररे हरदास ! किसकी लड़कियें व्याहोगे ? 7 मेरे कोई लड़की नहीं ग्रौर तेरे भी कोई नहीं । 8 किसकी बेटियें देना है ? 9 तलवारोंसे सिर उड़ेंगे । 10 यदि जीत गये तो रणमलोत बहुत हैं । 11 उनमेंसे किसीकी दो लड़कियें व्याह देंगे ग्रौर जो काम ग्रा गये तो कौन व्याह करेगा, किसकी बात ? 12 गुप्तचर ग्राया । 13 दौलतखां कहां तक ग्रा गया ? 14 बैराई गांवमें ग्राकर पड़े हैं । 15 ग्रापकी विजय है । 16 राव गांगाजी घांघांणी ग्राकर ठहरे । 17 दो कोसका ग्रंतर है । 18 ग्राप जहाँ ग्राकरके ठहरे हैं, यही ग्रपनी हद, यहाँ तक धरती ग्रापकी, ग्राप बड़े हैं ग्रौर काका हैं । 19 प्रधान द्वारा इस प्रकार कहलवाया ।

अै तो न मांनै ।[1] कह्यो–'जी, भात्रीजो भुंय भोगवै काकै बैठै ? यो तो मोनूं नींद नहीं आवै ।'[2] राव गांगैजीनूं कहाड़ियो–'सेवकीरो खेत्र म्हे बुहारियो छै । आंपै वेढ करस्यां ।'[3] राव गांगै कह्यो–'ठीक छै । हूं छूं जिसो हाजर छूं ।'[4] राजि कह्यो–'सवारै लड़ाई छै ।'[5]

ताहरां गांगैनूं जोसिये[6] कह्यो–'राज सवारै तो जोगणी आपांनूं सांम्ही छै, उवांनूं पूठ छै ।'[7] ताहरां राव गांगैजी राव जैतसीहजीनूं पूछियो–'रावजी ! सवारै तो जोगणी आपांनूं सांम्हां छै । उवांनूं पूठी छै ।' ताहरां राव जैतसीजी कह्यो–'राज ! लड़ाई तो आंपां सारै नहीं छै, उवां सारै छै ।[8] वे सवारै हीज लडै छै ।' ताहरां चारण खेमो किनियो बोलियो–'राज ! जोगणी छै, पण योगणी असवार कांई छै ? ताहरां कह्यो–'जी, जोगणी सींह असवार छै ।' कह्यो–'जी, बांभण[9] बोलावो, पूछो, योगणी बीजैंही[10] वाहण[11] असवारी करै छै ?' ताहरां कह्यो वांभण–'योगणी सवारै[12] काग[13] असवार छै । ताहरां कह्यो–'काग सरांसूं भाजि जाय ।[14] लड़ाई मांहै सर छै सु सेखै गांगैरै विहुं सरे भाजसी ।'[15]

युं करतां दिन ऊगो ।[16] सरखेलखांनरै एक हाथी छै, तिकणरो[17] दरियाजोईस नांम छै । तियैरै चाळीस हाथी एकै बगल[18] चाळीस हाथो बीजो[19] बगल । सु हाथी पाखरिया कर, लोह बांध, गरक किया छै ।[20] सु हाथी फोजरै मुंहडै छै ।[21]

अठासूं[22] राव गांगौ आवै छै । राव गांगौजी फोज वणाय सांम्हां आया ।

---

1 प्रधान आये-गये, परंतु ये नहीं मानते । 2 काकाके बैठे भतीजा धरती भोगता है, इस प्रकार तो मुझे नींद नहीं आती । 3 सेवकीमें रणक्षेत्र तैयार करा दिया है, अपन लड़ाई करेंगे । 4 मैं जैसा हूं वैसा हाजर हूं । 5 कल लड़ाई निश्चित है । 6 ज्योतिषियोंने । 7 योगिनी अपने सामने है और उनको पीठकी ओर है । 8 लड़ाई तो अपने हाथमें नहीं है, उनके हाथमें है । 9 ब्राह्मण । 10 दूसरे भी । 11 वाहन । 12 कल (आने वाला) 13 कौआ । 14 कौआ बाणोंसे भग जाता है । 15 लड़ाई में शर हैं सो सेखा और गांगा दोनोंके शरोंसे भाग जायेंगे । 16 उदय हुआ । 17 जिसका । 18 बाजू । 19 दूसरी । 20 सो हाथियोंके पाखर डाल कर लोहेसे गर्क कर दिये हैं । 21 वे हाथी फौजके आगे हैं । 22 यहांसे, इधरसे ।

सेखै दोलतखांननूं कह्यो हुतो–'दीवांण भाज जास्यै ।'[1] सवारै लोह वजाय सारै साथ हाथ दिखाया,[2] त्यौं दोलतखांन कह्यो–'सेखाजी ! तुम कहते थे, वे भाजि जांहिगे ।'[3] ताहरां सेखोजी बोलिया–'तो खांन साहिब ! जोधपुर छै, यु क्युंकर भाजै ?'[4] ताहरां जांणियो–'चूक न छै ?'[5] मन मांहै चमकियो दौलतखांन ।

तितरै राव बोलियो–'कहो तो हाथीरै द्युं सररी, कहो तो महावतेरै द्युं[6] सररो ?' हाथी आवै छै। महावत पुकारै छै। ताहरां दै महावतरै सररी, महावत पड़ियो। अर दूसरी दै हाथीरै कूंभाथळ[7] में सररो, अर हाथी भागो, अर दौलतखांन ही भागो। अर सेखो मंडियो ।[8] सेखो भाज न जांणै ।[9] सात सै आदमियांसूं सेखै पागड़ा छाडिया, अर वेढ हुई ।[10] सेखो बेटै सहित कांम आयो। हरदास बेटै सूधो[11] कांम आयो। तुरक भागा। घणा मरिया। घणा पाछा वळिया ।[12]

सेखोजी खेतमें ससक छै ।[13] ताहरां राव गांगै पूछियो–'सेखाजी ! धरती कैरी ?'[14] ताहरां राव जैतसीहजी सेखैजी ऊपर छांह कराई ।[15] अमल करायो ।[16] पांणी पायो। ताहरां सेखैजी पूछियो–'तूं कुण छै ?'[17] ताहरां कह्यो–हूं राव जैतसीह छूं ।[18] ताहरां सेखै कह्यो–'रावजी ! म्हैं थांहरौ कासूं उजाड़ियो हुतौ ?[19] म्हे तो काको भतीजो धरतीरै पगा विढता हुंता ।'[20] ताहरां सेखै कह्यो–'जैतसीहजी ! मो गत हुई छै, सो तो गत हूसी ।'[21] यु करतां सेखैरो जीव नीसर गयो । [22]

---

8 दीवान (राव) भाग जायगा। 2 दूसरे दिन तलवारें चला कर सभी साथने अच्छे हाथ दिखाये। 3 तुम कहते थे कि वे भाग जायेंगे। 4 खान साहिब ! आगे जोधपुर है, यों कैसे भाग जायेंगे ? 5 तब ख्याल किया—कहीं धोखा न हो ? 6 दूं। 7 कुंभस्थल। 8 और तब सेखेने पाँव रोपे। 9 सेखा भागना नहीं जानता। 10 सात सौ आदमियोंके साथ सेखा घोड़ोंसे उतरा और लड़ाई की। 11 सहित। 12 बहुतसे मार दिये और बहुतसे पीठ दिखा कर पीछे लौटे। 13 सेखोजी रणखेतमें सिसक रहे हैं। 14 धरती किसकी ? 15 राव जैतसिंहजीने सेखोजीके ऊपर छाया करवाई। 16 अफीम दिया। 17 तू कौन है ? 18 मैं राव जैतसिंह हूं। 19 मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ किया था। 20 हम तो काका भतीज अपनी जमीनके लिए लड़ रहे थे। 21 जैतसिंहजी ! मेरी जो गति हुई है वही गति आपकी होगी। 22 ऐसा कहते ही सेखाका जी निकल गया।

हाथी हुंता सु सखरा-सखरा तो कुंवर मालदे लिया ।[1] अर वडो हाथी खांनरी असवारीरो नाठो सो मेड़तै गयो ।[2] ताहरां मेड़तियां लियो । तियै[3] हाथी वेई[4] मेड़तियांसूं राव मालदे विरुद्ध हुवो ।

अथ घूमर

वीवी पूछै रे दोलतिया !, तैं हाथी केथा किया ।
रूड़ा रूड़ा रावै लिया, पाडा पाछा दिया ।। १
वीवी पूछै रै दोलतिया !, तैं मीया केथा किया ।
ऊंचै मगरै घोर खणाई, बाथै बाथै दिया ।।* २

हिवै[5] हाथी मेड़तियांरै गयो। ताहरां मेड़तियां हाथीरा घाव बाधा ।[6]

हाथीनूं मांहै आंणै सु प्रोळमें हाथी मावै नहीं ।[7] ताहरां प्रोळ खणायनै हाथी मांहै लियो ।[8] ताहरां सवणियां[9] कह्यो–'जु, थां आ बुरी कीधी[10], प्रोळ खणी ।'[11] कहियो–'सु तो हुई । हमैं कासूं ?'[12]

युं करतां राव गांगोजी नै मालदे सुणियो–'जु हाथी मेड़तै वीरमदेरै गयो ।' ताहरां हाथी मालदेजी मंगायो । कह्यो–'जी, हाथी मांहरो छै[13], म्हां लड़नै लियो छै ।'[14] ताहरां मेड़तिया हाथी न दै । ताहरां वीरमदेजी कह्यो–'राव गांगैनूं हाथी परहो द्यौ ।'[15] ताहरां मेड़तियां कह्यो–'म्हे तो हाथी न देवां ।[16] जे म्हांरै प्राहुणौ हुवै तो जीमायनै हाथी देवां ।'[17] ताहरां मालदे चढिनै आयो । ईंयांरै भगत हुई मालदे

---

1 अच्छे-अच्छे हाथी जो लड़ाईमें हाथ आए थे सो उन्हें कुंवर मालदेवने ले लिये । 2 और जो खानकी सवारीका वड़ा हाथी था जो भाग कर मेड़ते चला गया । 3 उस । 4 के लिये । 5 अब । 6 तब मेड़तियोंने हाथीकी मरहम पट्टी की । 7 हाथीको अंदर ले जाना परंतु पौलिमें हाथी समाता नहीं । 8 तब पौलिको तुड़वा कर हाथीको अंदर लिया । 9 शकुनियोंने । 10 तुमने यह बुरा काम किया । 11 पौलिको तुड़वा दी । 12 जो होनी थी सो तो हो गई, अब क्या हो ? 13 हाथी हमारा है । 14 हमने लड़ करके लिया है । 15 राव गांगाको हाथी दे दो । 16 हम तो हाथी नहीं दें । 17 जो हमारे यहाँ महमान हो जायँ तो उन्हें भोजन करवा कर हाथी दें ।

*घूमर का भावार्थ–'दोलतखान जब भाग कर घर गया तो उसकी बीबी पूछती है कि अरे दौलतिया ! तूने लड़ाईमें कितने हाथियोंको जीत कर इकट्ठा किया है ? तो उत्तर देता है कि अच्छे-अच्छे हाथियोंको तो रावने ले लिया है और पाडेके समान वापिस किए हैं । फिर बीबी दौलतियासे पूछती है कि तूने कितने मुसलमान बनाये हैं ? तो कहता है कि जो मेरे साथ थे उन्हें बाथें भर-भर कर रावको लड़ाईमें भेंट कर आया हूं और उनके लिये ऊंचे मगरे पर कबरें खुदवा दी हैं ।

सारू ।[1] ताहरां हाथी रेया हुंतो ।[2] ताहरां भगत तयार हुई । ताहरां कह्यो–'कुंवरजी ! थे पधारो, भगत आरोगो ।[3] तितरै हाथी रेयां छै सु हमार आवै छै ।'[4] ताहरां कह्यो–'जी, हाथी पैहलां लेनै पछै भगत आरोगस्यां ।'[5] ताहरां रायसल दूदावत बोलियो–'जी, इसड़ा डावड़ा अड़ीला म्हारै ई छै, म्है हाथी नी द्यां ।[6] थे पधारो ।'[7]

ताहरां कुंवर रीसायनै कहियो–'जु हाथी तो न द्यो छो, पण म्हारो नांम मालदे छै ।[8] मेड़तैरी ठोड़ मूळा वुहाऊं तो मालदे ।'[9] पछै मालदेजी पाछा जोधपुर आया ।

ताहरां राव गांगैजी कहाड़ियो वीरमदेजीनूं–'जु थे ओ कासूं कियो ?[10] जितरै हूं जीवूं तितरै तो थे म्हारै परमेश्वर छौ,[11] पण हूं पुहतो न ! ताहरां मालदे थांसूं भूंडो छै, थांनूं दुख देसी ।[12] ओ हाथी इयैरै सिर देवो ।'[13] ताहरां वीरमदेजी कहायो–'भलां, जो थांरै दाय आई तो हाथी परहो मेल देस्यां ।'[14] ताहरां घोड़ा राव गांगैजी सारू[15], हाथी मालदेजी सारू मेल दिया ।[16] ताहरां हाथी पीपाड़ आयो, ताहरां घाव फाटिनै हाथी मुंवो ।[17] ताहरां आदमियां घोड़ा ले जाय निजर किया । अर कह्यो–'जी हाथी तो पीपाड़ मांहै आवतो मुंवो ।' ताहरां राव गांगैजी कह्यो–'हाथी म्हारी[18] धरती मांहै आय मुंवो, सो म्हारै आयो ।[19]

ताहरां कुंवर मालदे बोलियो–'जी, हाथी थांहरैं[20] आयो, पण म्हारै हाथी न आयो । जाहरां हाथी ले सकीस ताहरां लेईस ।'[21] तठा पछै वरस १ हीज राव गांगोजी जीवियो ।

---

1 मालदेवके लिये इन्होंने भोजनकी तैयारी की । 2 हाथी रीयां गांवमें था । 3 कुंवरजी ! पधारिये, भोजन अरोगिये । 4 इतनेमें हाथी रीयांसे अभी आ जाता है । 5 हाथी पहले लेकर फिर भोजन करेंगे । 6 ऐसे अड़ियल कुंवर हमारे भी हैं, हम हाथी नहीं देते । 7 आप जायें । 8 हाथी नहीं दे रहे हो, परंतु मेरा नाम मालदेव है । 9 मेड़तेकी जगह मूले बुवाऊं तो मैं मालदेव । 10 तुमने यह क्या कियां ? 11 जब तक मैं जिन्दा हूं तब तक तो आप मेरे लिये परमेश्वरके समान हैं । 12 तुमको तकलीफ देगा । 13 यह हाथी इसके सिर दे दो । 14 अच्छा, यदि तुम्हारी यही इच्छा है तो हाथी भेज देंगे । 15 के लिए । 16 भेज दिये । 17 तब घावोंके फट जानेसे हाथी मर गया । 18 मेरी । 19 हमारे आ गया । 20 तुम्हारे । 21 जब भी हाथी ले सकूंगा तब ही ले लूंगा ।

जाहरां राव गांगोजी देवलोक हुवा, ताहरां मालदेजी टीकै बैठा।

हमैं मालदेजी वीरमदेनूं लागो सु इसो लागो सु इंयांनूं सास न खावण दै।[1] कहै–'मेड़तो छाडो, अर अजमेर जाय वसौ।' ताहरां वीरमदेजी मेड़तो छोडियो। अजमेर मांहै परमार रहता, तिकांनूं[2] मार अजमेर वीरमदेजी लियो। ताहरां सहिसो नासनै[3] मालदे कनै आयो। मालदे पांचां गांवांसूं रेयां दीवी।[4]

जाहरां रायसल आनासागर ऊपर गोठ कीवी, ताहरां साथ सगळो ही बोलायो। ताहरां खीमै मुंहतैनूं कह्यो– 'जावां छां गोठ जीमण।[5] थे रावनूं वींटळी मतां चढण देज्यो। जाहरां वींटळी चढसी ताहरां रेयांरी डूंगरी[6] देखसी, ताहरां सहसो चीतां आवसी।[7] ताहरां कहसी–'सहसैनूं मारियां विगर पांणी नहीं पोऊं।' मुहतैनूं कहिनै रायसल गोठ जीमण गयो।

अर (राव) खीमै मुंहतैनूं कहियो–'आंपां वींटळी जाविनै मिठाई मंगाविस्यां।'[8] वार १--२ मुंहतै खीमै वरजिया, पण रहै नहीं।[9] पछै वींटळी जाय चढिया। चढिनै मारवाड़ सांम्हां जोयो।[10] जोयनै कह्यो–'आ रेयांरी भाखरी नहीं हुवै ?'[11] कहियो–'आ भाखरी तो नैड़ी।[12] इयै सहसैनूं न मारूं तो म्हारो बाप छै।[13] पछै साथै रायसल ही आयो। परधांने तो घणो ही कहियो।

अर राव मालदेवजी हुतो[14] नागोर। ताहरां राव मालदेवजी कहै– 'वीरमदे म्हारी छाती माथै छै।'[15] ताहरां दस हजार घोड़ो रड़ोद थांणै हुतो[16], नै[17] मांहै जैतो, कूंपो, अखैराज सोनगरो, वीदो भार-

---

1 अब मालदेव वीरमदेके पीछे लगा सो ऐसा लगा कि इन्हें स्वास न लेने दे। 2 उनको। 3 भाग कर। 4 मालदेवने पांच गांवोंके साथ रीयांका पट्टा कर दिया। 5 गोठ जीमनेको जा रहे हैं। 6 पहाड़ी। 7 याद आ जायेगा। 8 और रावने खीमे मुंहतेको कहा कि अपन भी वींटली गढ पर जाकरके मिठाई मंगायेंगे। ('वींटली' अजमेरके तारागढका नाम है।) 9 मुंहते खीमे एक दो वार मना किया, परन्तु उसका कहना माना नहीं। 10 गढ़ पर चढ़ करके मारवाड़की ओर देखा। 11 यह रीयांकी पहाड़ी तो नहीं हो ? 12 यह पहाड़ी तो नजदीक है। 13 इस सहसेको न मारूं तो यह मेरा बाप है। 14 था। 15 वीरमदेमेरी छाती पर पड़ा है। 16 उस समय रड़ोदके थानेमें मालदेवके पास दस हजार घोड़ों का समूह था। 17 और।

मलोत अै[1] ठाकुर। अै आइनै रेयां उतरिया।[2] यांनूं हुकम हुतो जु–'अजमेरसूं वीरमदेनूं परहो काढो।'[3]

तिको रातिरो खड़ियो वीरमदे रेयां आयो।[4] अर आगै अण-जांणियो साथ तयार हुतो हीज।[5] पछै लड़ाई हुई। वीरमदेनूं अळवी पड़ी।[6]

वीरमदेरो साथ घणो कांम आयो। तीन घोड़ा वीरमदे हेठै कटिया।[7] छुरी कार घोड़ै चढियो छै। दस बरछी आगलांरी खोस वाग भेळी झाली छै।[8] माथै मांहै घावांरो चौकड़ी पड़ी छै।[9] लोहीरा प्रवाह डाढी मांहै उतरिया छै।[10]

बेऊं फोजां जुद्धसौं धापिनै उवै उवै कांनी ऊभी छै।[11]

वीरमदे घायल आपरा संभाळै छै।[12]

पछै पंचायण आयो। आयनै कहियो–'इसड़ौ वीरमदे कठै लहस्यो; ज आज थे नहीं मारो छो?'[13] ताहरां सिरदारां कहियो–'भाई! म्हे तो एकरसौं छाती ऊपरासौं गिजा नीठ परही कीवी छै।[14] भाई! म्हांरै कियै[15] तो वीरमदे मरै नहीं। अर[16] जो तूं मारै तो ओ वीरमदे छै।'

ताहरां पंचाइण तीसां असवारांसूं वीरमदेजीरै ऊपर आयो। नै वीरमदेजीनूं वतळायो।[17] ताहरां वीरमदेजी कहियो–'रे पंचायण! तूं छै? भलां, आव। पंचायण! तो सरीखा छोकरा मारवाड़ मांहै घणा छै, जो वीरैरी पूठ केहीसौं चांपी जाय तो?[18] ताहरां पंचायण

---

1 ये। 2 इन्होंने आकर रीयांमें मुकाम किया। 3 इनको हुकम हुआ था कि वीरमदेको अजमेरसे निकाल दो। 4 इधर वीरमदे भी रातको चल कर रीयां आया। 5 और आगे अज्ञात सेना तैयार ही थी। 6 वीरमदेको यह लड़ाई दुःसह हुई। 7 वीरमदे-के नीचे (सवारीके) तीन घोड़े कट गये। 8 शत्रुओंकी दस बर्छियां खोस कर बागके साथ हाथमें पकड़ रखी हैं। 9 शिरमें घावोंकी चौकड़ी पड़ गई है। 10 दाढ़ीमें रक्त के प्रवाह बह कर उतर रहे हैं। 11 दोनों सेनाएँ युद्धसे तृप्त होकर अलग.अलग खड़ी हैं। 12 वीरमदे अपने घायलोंको सँभाल रहा है। 13 वीरमदेको ऐसी दशामें फिर कब पाओगे, जो आज तुम उसे नहीं मार रहे हो? 14 हमने तो एक बार बड़ी कठिनतासे छाती ऊपर आई आफतको दूर किया है। 15 हमारेसे तो। 16 और। 17 लल-कारा। 18 पंचायण! तेरे समान मारवाड़में बहुत छोकरे हैं, परंतु वीरमकी पीठ चांपने वाला भी तो कोई हो? (लेकिन मुझे कोई दिखाई नहीं देता।)

उठै हीज वाग खांच ऊभो रह्यो ।[1] ताहरां वीरमदेजी कह्यो–'इसड़ो छै सु उठै ऊभैनूं हीज मारूं, पण परहो जा ।'[2] ताहरां पंचायण पाछी हीज वाग फेरी ।[3]

ताहरां कूंपैजी कह्यो–'राज ! वीरमदे युं सहज सौं नहीं मरै ।[4] पछै वीरमदे आपरा[5] घायल उपाड़नै[6] अजमेर आयो । आ[7] फोज पण नागोर आई । वीरमदेनूं घणी अळही[8] पड़ी । साथ सोह[9] कांम आयो ।

ताहरां रायसलरो रावनूं घणो अत भौ[10], सदा धमक राखै[11] । को[12] कहै रायसल कांम आयो, को कहै कांम नहीं आयो । ताहरां मूळै प्रोहितनूं मेलियो ।[13] आयो, वीरमदेनूं मिळियो । कहण लागो–'बळो, आ धरती ज, थांहीनूं ज्यांन आयो ।[14] रायसल मराड़ियो ।[15]

ताहरां कह्यो–'ऊभा रहिज्यो ।[16] जु, रायसलरै तो आछा सा लोह छै, इसड़ो तो लोह को न छै भारी ।'[17] अर रायसलनूं कहाड़ियो[18]–'थे तकियो देनै वैसज्यो ।[19] मूळो थां कनै मूकां छां ।[20] ताहरां प्रोहित मूळानूं कह्यो–'रायसल कनै थेई पधारो ।'[21] ताहरां रायसल कछी पलांण मंडायनै, आप हथियार बांधनै असवार हुय घोड़ो नखाड़तो-नखाड़तो ईंयां कनै आयो ।[22] ताहरां अै चढनै राव मालदे कनै आया । आयनै कह्यो–'जो, रायसल तो घोड़ो नखाड़तो फिरै छै ।'

---

1 तब पचायण वहीं अपने घोड़ेकी बाग खींच कर खड़ा रहा । 2 लगता तो ऐसा है कि वहाँ खड़ेको ही खत्म कर दूं, परन्तु आँखोंके सामनेसे दूर चला जा । 3 तब पंचायणने बाग मोड़ दी । 4 वीरमदे इस प्रकार सहजमें मरने वाला नहीं है । 5 अपने । 6 उठा कर । 7 यह । 8 दुःसह । 9 सब । 10 रायसलका रावको अत्यन्त भय । 11 सदा धाक जमाये रखता है । 12 कोई । 13 भेजा । 14 जलो, यह धरती ही तुम्हें बला बन करके आई है । 15 रायसलको मरवाया । 16 ठहर जाओ । 17 रायसलके साधारणसे घाव हैं, ऐसे घाव कोई बहुत भारी तो नहीं हैं । 18 कहलवाया । 19 बैठ जाना । 20 मूलाको तुम्हारे पास भेज रहे हैं । 21 रायसलके पास तुम ही चले जाओ । 22 तब रायसल कच्छी घोड़ेके ऊपर जीन कसवा कर स्वयं हथियार बांध करके और घोड़े पर सवार हो करके उसे कुदाता-कुदाता इनके पास आया ।

ताहरां रायसल अपूठो आयो ।[1] ताहरां घाव फाटा ।[2] रायसल मुंवो । जाहरां रायसल मुंवैरी[3] खबर गई, ताहरां फोजां वळै[4] आई । आयनै वीरमदेजीनूं परहा काढिया ।[5]

ताहरां रायमल कछवाहो सेखावत, तिण आगै गया ।[6] ताहरां रायमल इणांरा घणा हीड़ा किया ।[7] वरस १ तांई[8] रायमल रै रह्या । घणी जाब्ता कीवी ।[9] जिण विधरा ईंयांरा चाकर हुता, तिण तिण विधरा हीड़ा किया ।[10] ताहरां वीरमदेजी कह्यो–'रायमलजी ! थे म्हांरै वडा सगा, थां मांहरा वडा हीड़ा किया ।'[11] पछै वीरमदेजी उठासूं सीख कीवी ।[12]

पछै वीरमदेजी बौंळी लीवी, वणहटो लियो, वरवाड़ो लियो ।[13] लेनै अठै बैठा रह्या ।[14]

ताहरां मालदेजीनूं खबर हुई । कह्यो–'वीरमदेजीरै अधिकी साहिबी हुई ।'[15] ताहरां वळै फोजां विदा कीवी वीरमदेजी ऊपर । ताहरां फोजां मौजाबाद आई । ताहरां वीरमदेजीनूं खबर हुई, फोजां मौजाबाद आई । ताहरां वीरमदेजी कह्यो–'हमकै हूं कांम आइस ।[16] हमकै नीसरूं नहीं, घणी ही वार नीसरियो ।[17] पण हमकै हूं छाडै नहीं ।[18] घणी ही वार छांडूं नहीं, हमकै कांम आइस ।

ताहरां मुंहतै खीमै कहियो–'खेतरी ठोड़ तो देखो । जेथ लड़ाई करस्यां सू ठोड़ तो देखो ।'[19] ताहरां वीरमदेजी, मुंहतो खीमो चढनै ठोड़ देखणनूं आया । ताहरां खीमो मुंहतो आघो ही हालियो ।[20]

---

1 तब रायसल वापिस लौटा । 2 तब घाव फट गये । 3 मर जाने की । 4 फिर । 5 आकरके वीरमदेजीको निकाल दिया । 6 उसके आगे गये । 7 तब रायमलने इनकी बहुत सेवा की । 8 तक । 9 बहुत यत्न किया । 10 जिस-जिस प्रकार (दर्जे)के इनके चाकर थे उनको उस-उस प्रकारसे सेवा की । 11 तुम हमारे बड़े सम्बन्धी हो, तुमने हमारी बड़ी सेवा की है । 12 फिर वीरमदेवजीने वहाँसे विदा ली । 13 पीछे वीरमदेजीने बौंळी, वणहटो और वरवाड़ो गांवों पर अधिकार किया । 14 इनको अधिकारमें कर यहाँ ही बैठे रहे । 15 वीरमदेजीके राज्य-वैभव अधिक हो गया । 16 इस बार मैं काम आ जाऊंगा । 17 इस बार निकलूं (बचूं) नहीं, बहुत बार बच गया । 18 इस बार मैं अपनेको छोड़ूंगा नहीं । 19 जहाँ लड़ाई करेंगे वह स्थान तो देखलें । 20 तब मुंहता खीमा उन्हें दूर ले चला ।

ताहरां खीमै कह्यो–'मरणो हुतो तो मेड़तैरी वेढ मरंत, पारकी धरती मांहै क्युं मरो ?'[1] ताहरां खांचनै आघो ले वहीर हुवो ।[2]

ताहरां मलारणै थांणैदार हुतो कोई मुसलमांन, तैसौं जाय मिळिया ।[3] ताहरां वे मुसलमांन कह्यो–'हूं थांनूं रिणथंभोररै किलेदारसूं मिळाइस ।[4] ऊ थांनूं पातसाहसूं मिळासी ।'[5] पछै रिणथंभोररै किलेदारसूं मिळिया । पछै वीरमदेजीनूं ऊ[6] पातसाहरी हजूर ले गयो । पातसाहसूं मिळायो । पछै वीरमदेजीसौं पातसाहजी महरबांन हुवा । पछै वीरमदेजी मालदेजी ऊपर सूर पातसाहनूं ले आया । पछै असी हजार घोड़ांसूं मालदे सांम्हां अजमेर आयो ।

ताहरां वीरमदेजी एक बुध उपाई ।[7] बीस हजार रुपिया कूंपैरै डेरै मेलिया । कह्यो–'म्हांनूं कांबळां मेल देज्यो ।'[8] अर बीस हजार रुपिया जैतैरै डेरै मेलिया । कह्यो–'म्हांनूं सीरोहीरी तरवारचां मूक देज्यो ।'[9] इसड़ा सा चिन्ह किया ।[10] अर मालदेनूं कहाड़ियो–'जैतो कूंपो पातसाहसूं मिळिया छै । थांनूं पकड़नै पातसाहनूं देसी ।[11] तैरो द्रष्टांत–'जे सवाया रुपिया यांरै डेरै देखो तो जांणज्यौ ।[12] ईयांरै खरची घाली छै ।[13]

इतरैमें[14] जलाल जळूको कहण लागो–'पातसाह सलांमत ! एक ऊंवांरी तरफरो तेड़ावो[15], पातसाहरी तरफसूं हूं हुईस[16], अर उंवांरी[17] तरफरो सिपाही तेड़स्यां[18], तै ऊपर हार-जीप थापो ।'[19]

---

1 मरना ही विचार लिया है तो मेड़तेकी लड़ाईमें मर जाना था, दूसरोंकी धरतीमें क्यों मरते हो ? 2 तब खींच करके दूर ले चला । 3 मलारणमें कोई मुसलमान थानेदार था उससे जा मिले । 4 मैं तुमको रणथंभोरके किलेदारसे मिलाऊंगा । 5 वह तुमको बादशाहसे मिलायेगा । 6 वह । 7 तब वीरमदेवजीने एक युक्ति विचारी । 8 हमको कंबलें भेज देना । 9 हमको सिरोहीकी तलवारें भेज देना । 10 इस प्रकार चालबाजी की । 11 तुमको पकड़ कर बादशाहके सुपुर्द कर देंगे । 12 जिसका प्रमाण यह है कि इनके डेरोंमें यदि अतिरिक्त रुपये मिल जायें तो हमारी बात सच जानना । 13 इनको (बादशाहने) खर्चीके लिए भेजे हैं । 14 इतनेमें । 15 एक उनकी ओरका आदमी बुलाया जाय । 16 बादशाहकी ओरका मैं हूंगा । 17 उनकी । 18 बुलायेंगे । 19 इसी बात पर हार जीत तै कर लीजिये ।

ताहरां पातसाह वीरमदेनूं कहियो–'जु, म्हारै एक पठांण कहै छै, आ वात थांरै दाय आवै कै नहीं।'[1] ताहरां वीरमदेजी कह्यो–पातसाह सलांमत ! पठाणनूं म्हैं एक वार दीठो छै।[2] एकर वळै[3] पठांणनूं बुलायजै, ज्युं हूं देखूं।' ताहरां पठांणनूं बुलायो। पछै पठांण आयो। ताहरां वीरमदेजी देखनै कह्यो–'पातसाह सलांमत ! दोय पठांण इसड़ा वळै तेड़ो।[4] आंपणी तरफरा औ तीन मेलो।[5] अर पराया वीदो भारमलोत मेलसी।[6] तिको ईंयां तीनांहीनूं मारनै, हथियार लेनै, साजो-साबतो परहो जासी।[7] आ तो पातसाह सलां-मत ! आप थापो ही मतां।'[8]

पछै वीरमदेजी समंचार कहाड़िया मालदेवजीनूं। ताहरां राव मालदेवजीरै मनमें हुई। खबर कराई, सु अमरावांरै डेरै सवाया[9] रुपिया हुआ। ताहरां मालदेवरै मनमें तो भय हीज ऊठियो।[10] वीरमदेजी के वातां ठहराई, तिकांसूं भय हुवो।[11]

पछै आथणरो पहोर छै,[12] ताहरां जैतो, कूंपो, अखैराज सोन-गरो कूंपाजीरै डेरैमें बैठा छै। जैतो ऊदावत अर खीमो ऊदावत रावजीरै विचै फिरै छै। जिकूं[13] रावजी कहै छै जिकूं ईंयांनूं[14] आय कहै छै। औ कहै छै सु रावजीनूं जाय कहै छै। 'जु म्हे थांनूं[15] जोध-पुर पुहचता करस्यां।'[16] उणांरो[17] जबाब सुणनै रावजी सुखपाळ बैसिनै हालिया।[18] तरै रावजीरो हाथ खीमैरै हाथरै ऊपर छै, अर चालिया जावै छै। ताहरां जैतसी ऊदावत बोलियो–'सीख करो[19], लोग आंपणी वाट जोवै छै।[20] ताहरां खीमोजी बोलिया नहीं। ताहरां

---

1 यह बात तुम्हारे जंचती है कि नहीं। 2 देखा है। 3 एक बार पुनः। 4 दो पठान ऐसे और बुला लिये जायँ। 5 अपनी ओरके ऐसे तीन आदमियोंको भेज दें। 6 और सामने वाले (शत्रु) वीदा भारमलोतको भेज देंगे। 7 वह ऐसा है जो इन तीनों को ही मार कर के इनके हथियार लेकर सकुशल निकल जायेगा। 8 बादशाह सलामत ! यह पंचायती तो आप मुकर्रर करें ही नहीं। 9 अधिक। 10 भय उत्पन्न हुआ। 11 वीरमदेवजीने कई बातें ऐसी बनाईं जिससे भय उत्पन्न हो गया। 12 संध्याका समय है। 13 जो बात। 14 इनको। 15 तुमको। 16 पहुँचा देंगे। 17 उनका। 18 रावजी सुखपालमें बैठ कर चले। 19 रवाना हो जाओ। 20 लोग अपनी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

वळै[1] जैतसीजी बोलिया, कहियो–'खीमाजी ! इतरी भाँय नहीं लाभौ, जोधपुर नै समेळ विचै पावड़ी घणी छै।'[2] ताहरां खेमोजी हाथ मुरड़नै[3] पाछा आंया। ताहरां राव कहियो–'भला, जिकी हुसी सु दीससी।'[4] ताहरां परभातै[5] लड़ाई हुई। लोक कांम आयो।

ताहरां रावजी तो घूघरोटरा पहाड़ां मांहै जायनै रह्या। सूर पातसाह जोधपुर आयो। ताहरां जोधपुर तिलोकसीह वरजांगोत किलेदार हुतो।[6] सु तिको ३०० रजपूतांसूं कांम आयो। सूर पातसाह च्यार मास जोधपुर रह्यो। मालदेजी मेड़तारा बावळ वाढिया[7] ताहरां वीरमदेनूं कहियो। ताहरां वीरमदे कहै–'जोधपुररा आंबा वाढीस।'[8] ताहरां लोके कह्यो–'आ आपनूं हैसाब नहीं।'[9] ताहरां छुरी लेनै कांबड़ी वासतै आंबारी एक डाहळी वाढी।[10] पछै सहु कोई आपो-आपरै ठिकांणै गया।[11] अर पातसाह सूर दिली गयो।

पछै थांणो हरवाड़ै राखियो। थांणों जिकैमें पठांण राखिया हुंता[12] और वीरमदे दूदावत, कल्यांणमल दूणपुररो धणी।[13] ताहरां एक दिनै औ चढनै घूघरोटरा पाहाड़ां मांहै राव मालदेजीरी वसी हुती, तिकैनूं बंध कीवी।[14] बंध करनै हरवाड़ै आयो। ताहरां कोई डोकरी हुंती, तिका कहण लागी–'ओ कुण छै ?'[15] ताहरां कही–'कल्यांणमल दूणपुररो धणी।' ताहरां डोकरी कह्यो–'साबास, म्हारी दादियां-काकियां बंधाड़नै भलो हालियो, माथा ऊपर ओढणो घातनै।'[16] ताहरां ओ जाब कल्यांणमल सांभळियो।[17] ताहरां धांनरो सूंस घातियो।[18]

---

1 फिर। 2 इतनी दूरी नहीं काट सकते, जोधपुर और समेळके बीच अंतर बहुत है। 3 मरोड़ करके। 4 जो होगी सो देख लेंगे। 5 दूसरे दिन प्रभातमें। 6 जोधपुरमें तिलोकसी वरजांगका पुत्र किलेदार था। 7 मालदेजीने मेड़तेके बबूलोंको कटवा दिया। 8 मैं जोधपुरके आमके वृक्षोंको कटवा दूंगा। 9 यह आपको उचित नहीं। 10 तब छुरी लेकर एक आमकी टहनी छड़ीके लिये काट ली। 11 पीछे सभी कोई अपने-अपने स्थानोंको चले गये। 12 रखे थे। 13 द्रोणपुरका स्वामी। 14 तब एक दिन इन्होंने घूघरोटके पहाड़ोंमें जहाँ मालदेजीकी वसी थी उसे बंद कर दिया। 15 एक बुढ़िया थी सो कहने लगी—यह कौन है ?' 16 शाबाश है ! हमारी दादियों-काकियोंको बंधवा कर और सिर पर ओढना डाल करके भला चला जा रहा है। 17 तब यह जवाब (उपालंभ, व्यंग्य) कल्याणमलने सुना। 18 तब अन्न ग्रहण न करनेकी शपथ ली।

कहियो–'बंध छुड़ायनै जमीस।[1] ताहरां वीरमदे कहण लागो–'ग्रै तो ग्रांपणा दुसमण हुंता, ग्रर थे कहो तो भलां!'[2] ताहरां सातमैं दिन दूध ग्रारोगायो, ग्रर ऊठिया।[3] जठै[4] वीरमदे कहण लागो–'ज, हूं उठै[5] पठांणरै जाय ग्रर बंध वेई[6] ग्ररज करूं।' ताहरां कल्यांणमल सवणां मांहै[7] समझतो हुतो; ताहरां कह्यो–'राज! बंध वेई ग्ररज मतां करो।[8] परभातै राव मालदेरी फोज दोड़सी, बंध सारा छूटसी। मरणों छै जिको मरस्यै।[9] ग्रर पठांण भाजसी।'[10] ताहरां वीरमदेजी कहियो–'तो राज ग्रारोगो कांई नहीं?[11] ताहरां कल्यांणदास कह्यो–वीरमदेजी! हूं कांम ग्राईस।[12]

यूं करतां दिन ऊगो। राव मालदेजीरी फोज थांणै ऊपर दोड़ी। ताहरां पठांण तो भागा। कल्यांण सांम्हां ग्रायो। ताहरां राव मालदेजी कह्यो–'कल्यांणमलजी! थे कांई मरो? म्हे तो थांरै हीज वासतै ग्राया छां।'[13] ताहरां कह्यो–'ना साहिब! पातसाहरा थांणा भाजै, ताहरां कईक रूड़ा मांणस मरै।'[14] ताहरां उठै कल्यांणमल कांम ग्रायो। उदैकरण रायमलोत कांम ग्रायो। पठांण भागा सु दिल्ली गया।

राव मालदेजी बंध लेनै घूघरोटरा पाहाड़ां गया। वीरमदेजी मेड़तै ग्राय रह्या। पछै राव मालदेजी जोधपुर ग्राया। कईक तुरक छा सु नास गया।[15]

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

---

1 बंधन छुड़ा करके भोजन करूंगा। 2 ये तो ग्रपने दुश्मन थे, ग्रौर तुम इन्हींके लिए शपथ लेते हो, यह ग्रच्छी रही! 3 तब सातवें दिन दूध पिलाया ग्रौर उठे। 4 जहाँ। 5 वहाँ। 6 लिये, वास्ते। 7 शकुनोंमें। 8 बंधनोंके लिये ग्रर्ज़ मत करो। 9 जिसको मरना है वह मर जायगा। 10 ग्रौर पठान भाग जायेंगे। 11 तो फिर ग्राप भोजन क्यों नहीं करते? 12 मैं काम ग्राऊंगा। 13 कल्याणमलजी ग्राप क्यों मर रहे हो? हम लोग तो ग्रापके लिए ही ग्राये हैं। 14 बादशाहके थानोंको जहाँ तोड़ना होता है, वहाँ कई ग्रच्छे ग्रादमी काम ग्राते हैं। 15 कई तुर्क वहां थे सो भाग गये।

अथ वात राठोड़ नरै सूजावत, खींमै पोकरणौरी

राठोड़ खींवो पोकरण राज करै। पोकरण बाळनाथ जोगीरो आसण छै।[1] अर अठै वैंहगटी हरभौं मेहराजोत सांखलो राज करै।[2] कलिकरण केहरोत[3] जैसळमेररो भाटी हरभौं सांखलैरै परणियो हुतो।[4]

बाई अठै पीहर हीज रहती सांखलैरै।[5] सो बाईरै पेट आसा हुती।[6] कितरेक दिने बेटी जाई।[7] वडे नखत्रै जाई।[8] ताहरां जंगळ-में नांखि आया।[9]

अठै हरभौं सांखलो फळोधी गयो हुतो। आवतां थळ माथै रोवतो टाबर दीठो।[10] ताहरां हरभौंजी पूछियो–'रे, टाबर कठै रोवै छै?'[11] ताहरां कहियौ–'राज ! एक टाबर कहिकै नांखियो छै[12], सो रोवै छै।' ताहरां आप कहियो–'टाबर उठाइ लावो।' ताहरां एक सवण बोलियो।[13] आप सवणी हुता।[14] युं कर आप डावड़ीनूं[15] घरे ले आया, आंणनै मांहै मूंक दी।[16] कहियो–'इयै छोकरीनूं धाय राखो। नै भली जिनस राखज्यो।[17]

ज्यां मांहै डावड़ीनूं ले गया त्यां तो कपड़ो ओळखियो;[18] कह्यो–'जी ! आ डावड़ी क्युं लाया ? भूंडा नखत्रे जाई हुती [19] सु म्हां तो नांख दीनी।'[20] ताहरां हरभूजी कहियो–'आ भले नखत्रे जाई छै।

---

1 पोकरणमें बालनाथ योगीका आसन है। 2 और यहां वैंहगटी गांवमें मेहराजका बेटा हरभू सांखला राज्य करता है। 3 केहरका बेटा कलिकर्ण। 4 ब्याहा था। 5 बाई (हरभूजीकी बेटी) उस समय सांखलेके यहाँ पीहरमें ही रहती थी। 6 बाईको गर्भ था। 7 कितनेक दिनोंके बाद पुत्री उत्पन्न हुई। 8 बड़े नक्षत्र (मूल नक्षत्र) में उत्पन्न हुई। 9 तब उसे जंगलमें डाल दी। 10 लौटते हुए मार्गमें एक बच्चेको एक टीबे पर रोते हुए देखा। 11 बच्चा कहां रो रहा है ? 12 एक बच्चा किसीने लाकर डाल दिया है। 13 उस समय एक शकुन हुआ। 14 स्वयं शकुनी थे। 15 बच्ची-को। 16 ला करके अंदर भेज दी। 17 इस छोकरीके लिए एक धाय रखो और अच्छी तरह रखना। 18 जैसे ही बच्चीको अंदर ले गये वैसे ही उसके कपड़ेको पहचान लिया। 19 इस लड़कीको क्यों लाये ? यह तो बुरे नक्षत्रोंमें उत्पन्न हुई थी। 20 सो महने तो डाल दी।

अर कडूबैंनूं ओठंभो होसो।[1] सासरै पीहर वडा दोनूं कुळ ठांमसी।'[2] ताहरां बाईनूं राखी। बाईरो नांम लिखमी दियो।

तिके हीज रात[3] १ बेटो हरभूजीरै जाई। दोनूं ही बायां मोटी हुई। मासी-भांणजी ज्युं मोटी हुई, त्युं सगाईरी अटकळ करीजण लागी।[4]

ताहरां तेड़ बांभणनूं नारेळ दियो।[5] हरभूजी कहियो-'बाई लिखमीरो नाळेर पोकरणरा राव खींवैनूं ले जाइनै द्यो।'[6] ताहरां बांभण नाळेर ले जायनै राव खींवैनूं बंदायो।[7] ताहरां खींवै कहियो-'कैरो नाळेर?'[8] ताहरां बांभण कह्यो-'जी! कलिकर्ण भाटीरी बेटी, हरभू सांखलैरी दोहितरी।'[9] ताहरां खींवै कहियो-'जो, आ सगाई म्हे नहीं करां।[10] सुणां छां, वींदणीरा दांत मोटा छै।'[11] ताहरां नाळेर अपूठो दियो।[12] अर राव खींवै कहियो-'जो हरभूजीरी बेटो परणावो तो परणीज्यां।'[13]

इतरी[14] वात कही, ताहरां आदमी अपूठा आया। आयनै हकीकत हरभूजीनूं कही। ताहरां हरभूजी कहै-'बेटी जाई जिणरो जनम हारियो।[15] कासूं कीजै?'[16]

ताहरां हरभूजी आपरो[17] बेटीरो नारेळ खींवैनूं मेलियो।[18] खींवै नारेळ वांद लियो। भलै मुहूरत जांन कर आयनै परणियो।[19]

हमैं[20] लिखमी कुंवारी रहगई। ठोड़ २-३ नारेळ मेलिया, सु नारेळ अपूठा आया। ताहरां राव सातळ जोधपुर राज करै।

---

1 कुटुम्बको सहारा-रूप होगी। 2 ससुराल और पीहर दोनों कुलोंका मान बढ़ाने वाली होगी। 3 उसी रात। 4 मौसी और भानजी जैसे ही वयस्क हुईं उनकी सगाई की अटकलें लगाई जाने लगीं। 5 तब ब्राह्मणको बुला करके नारियल दिया। 6 लक्ष्मीबाईकी सगाईके लिए पोकरणके राव खींवेको यह नारियल ले जाकर दे दो। 7 तब ब्राह्मणने नारियल ले जाकर राव खींवेसे उसे वंदन करवाया। 8 नारियल किससे संबंध किये जानेका है? 9 कलिकर्ण भाटीकी पुत्री और हरभू सांखलेकी दोहितीका। 10 यह सगाई हम नहीं करते। 11 सुनते हैं कि वधू (मंगेतर)के दांत बड़े हैं। 12 तब नारियल लौटा दिया। 13 हरभूजीकी बेटी व्याहें तो व्याह कर लेंगे। 14 इतनी। 15 जिसके पुत्री उत्पन्न हुई उसने जन्मको हारा। 16 क्या किया जाय? 17 अपनी। 18 भेजा। 19 अच्छे मुहूर्तमें बरात बना कर और आकर विवाह किया। 20 अब।

सूजो सिकार खेलतो फिरै। सो एक दिनरै समाजोग[1] सूजोजी सिकार खेलता बैंहगटी कनै आय नीसरिया। ताहरां हरभूजी सांखलै सूजै जोधावतनूं लिखमी आपरी दोहितरी परणाई।[2]

लिखमीरै बेटा दोय हुआ–वाघो, नरो। वडा जोरावर हुआ। सातळरै छोरू न हुवो।[3] ताहरां टीको सूजैजीनूं दियो। रांणीपदो लिखमीनूं दियो।[4]

लिखमीरो भाई जैसो आय सूजैरै वास रह्यो। तैरा जैसा-भाटी कहीजै।[5]

ताहरां राव सूजै मारवाड़ सरब साझी।[6] बेटो वाघो वगड़ी राखियो।[7] नरो फळोधी राखियो। रांणी लिखमी फळोधी नरै कनै रहै। असवार ५०० नरैरै तावीन रहै।[8]

एक दिनरो समाजोग छै। रात घड़ी ४-५ गई छै। वरसातरा दिन छै। नरो अरोगणनूं मा कनै आयनै बैठो छै।[9] तिसड़ै[10] चाकर झरोखै आय अर दीठो[11], अर कहियो–'आ आजरी खिवण[12] पोकरण ऊपर छै।' ताहरां लिखमी निसासो मूंकियो।[13] ताहरां नरो बोलियो–'मा! निसासो क्युं मूंकियो? थांहरै वाघै नरै सरीखा बेटा, अर रावजी पण समादिया।[14] थां रांणीपदो पायो।[15] ताहरां कह्यो–'बेटा! पूछ मती-ना। ताहरां नरै कह्यो–'माजी! मोनूं तो कहो। ताहरां लिखमी कह्यो–'बेटा! ईयै पोकरण वाळै मोनूं कंवारी थकीनूं निंदी हुंती। परणीज अर दुहाग देता आया छै; पण ईयै मोनूं कंवारी थकीनूं निंदी।[16] ताहरां नरै कह्यो–'माजी! हूं ईयैसूं गुदरूं छूं थांहरै

---

1 समयका योग, समयकी बात। 2 तब हरभूजी सांखलेने जोधाके पुत्र सूजाको अपनी दोहिती लक्ष्मीको ब्याह दी। 3 सातलके कोई पुत्र नहीं हुआ। 4 लक्ष्मीको पट्टरानीका पद दिया। 5 जिसके वंशज जैसा-भाटी प्रसिद्ध हैं। 6 सम्पादन की, प्राप्तकी, जीत ली। 7 अपने बेटे वाघेको वगड़ीमें रखा। 8 नरेकी तावेदारीमें ५०० सवार रहते हैं। 9 नरा भोजन करनेके लिए अपनी माके पास आकर बैठा हुआ है। 10 इतने में। 11 आकर देखा। 12 बिजली। 13 तब लक्ष्मीने निःस्वास छोड़ा। 14 चिरायु, विद्यमान। 15 आपने रानी पद प्राप्त किया। 16 विवाह करनेके बाद तो अमान्य करते आये हैं, परन्तु इसने मेरी क्वारेपनमें ही निंदा की थी।

वास्तै ।[1] जाणूं छूं थांहरी मासी छै ईयैरै घरै ।[2] नहीं तर हूं ईयैं कनै हमारूं कोट खोस लूं ।[3] ताहरां लिखमी कह्यो–'बेटा ! ढील न करो, वेगा हुवो ।'[4]

ताहरां नरै आपरै प्रोहितनूं कह्यो–'तूं जो एक वात करै तो आंपां पोकरण ल्यां ।'[5] ताहरां प्रोहित कहियो–'हूं हेरो करीस ।'[6] ताहरां नरै प्रोहितनूं कहियो–'हूं तोनूं सवारै बुरो बोलीस ।[7] तूं मोनूं[8] बुरो बोले अर पछै कालै ऊंठ चढनै पोकरण जाए परो ।'[9]

ताहरां बीजै[10] दिन दरबार वेळा प्रोहित दरबार आयो । ताहरां नरो बोलियो–'हरामखोर ! मुहडो दिखाळो नां ।[11] राज मांहै थे दुभांतां घालो ।[12] मांहरै थे न जोईजो ।[13] अठासूं परहा जावो ।'[14] ताहरां प्रोहित बोलियो–'हो नरा ! तूं कियै भांत बोलै छै ?[15] अजूं तो[16] रावजी जीवै छै, अर कुंवर पण घणा छै । तूं किसै वागरी मूळी छै ?'[17] ताहरां प्रोहित चाकर कनां छागळ लेनै कह्यो–नरा ! तोनूं जुहार करै सो बैरनूं करै ।'[18] ताहरां प्रोहित जायनै कोटड़ी मांहै ऊंठ ऊपर कूंची मांडैनै हालियो ।[19] ताहरां चाकरां नरैनूं कह्यो–असवारी रै खासै ऊंठ ऊपर प्रोहित कूंची मांडी छै ।' ताहरां नरै कह्यो–'रे ! हरामखोरनूं परहो जावण दो ।'[20] ऊंठ, घोड़ा ले अर परहो जावो । मुंहडो अदीठ करो । ताहरां प्रोहित ऊंठ चढि पोकरण गयो ।

---

1 मैं आपके लिए ही इससे निभा रहा हूं । 2 ख्याल करता हूँ कि आपकी मौसी इसके घर है । 3 नहीं तो मैं अभी इसके पाससे कोटको छीन कर ले लूं । 4 विलंब मत करो जल्दी करो । 5 तो अपन पोकरण ले लें । 6 मैं जाँच करूंगा । 7 मैं तुझको कल बुरा बोलूंगा (अपशब्द कहूंगा) । 8 मुझको । 9 तू मुझको बुरा बोलना और फिर कल ऊँट पर चढ़ कर पोकरण चले जाना । 10 दूसरे । 11 हराम खोर ! मुंह मत दिखा । 12 राज्यमें तुम विरोध डाल रहे हो । 13 हमको तुम्हारी जरूरत नहीं है । 14 यहांसे चले जाओ । 15 तू किस प्रकार बोल रहा है ? 16 अभी तक तो । 17 तू किस बागकी मूली है ? 18 फिर पुरोहितने चाकरके पाससे छागल ले करके (हाथमें पानी ले करके) कहा कि नरा ! तेरेको अब जो जुहार करे सो अपनी स्त्रीको करे । (छागल=बकरीके बच्चेके चमड़ेका बना हुआ जल-पात्र, दीवड़ी) 19 तब पुरोहित कोटड़ीमें जाकर ऊंट पर पलान कस करके रवाना हुआ । 20 अरे ! हरामखोरको जाने दो ।

पोकरण प्रोहित परणियो हुतो ।[1] सो सासरै रहै । घर मांहैसूं निकळै नहीं, रात-दिन घर मांहै बैठो रहै । ताहरां सुसरो-साळा कहण लागा–'थे बाहिर निकळो नहीं, घर मांहै बैठा रहो, सो किसै वासतै ?'[2] ताहरां प्रोहित कह्यो–'हूं नरैसूं विढ अर आयो छूं ।[3] ताहरां सासरियां राव खींवैसूं कह्यो–'म्हांरो जमाई[4] नरासौं विढ अर अठै आयो छै ।' ताहरां राव खींवै प्रोहितनूं तेड़ायनै[5] कह्यो–'थे नरैसूं रीसांणा तो कासूं हुवो ?[6] थे अठै आवो ।[7] दरबार मांहै बैसो, कुंवरसौं रमो ।[8] खरची ल्यो ।[9] खुशियावळ थका रहो ।[10] एको घर छै ।'[11] कह्यो–'राज ! खरची रावळी[12] हीज छै । अजूं रावजी विराजै छै ।[13] बेटा घणा छै । रावजीरै अेकै नरै सारू कासूं छै ?'[14]

जेठ मास मांहै प्रोहित पण हेरो करण आयो, इसै समइयै आंबली पण फळी हुती ।[15] जोगीरै आसण मांहै हुती सु कुंवर आंबली आइ चढै नै आंबली नित प्रत तोड़ै । ताहरां चेलां बाळनाथनूं कह्यो–'कुंवर आंबली चढै, तोड़ै ।' ताहरां बाळनाथ आयो । बाळनाथरै आवणैसौं कुंवर उतर गया । ताहरां बाळनाथ आंबली सरापी–'निर्फळ होणा । तुमसौं गढ जायगा । हमारे चेलांसूं मठ जायगा । चेला हमारा घरबारी होयगा ।'[16] यूं कहेनै बाळनाथ चालतो हुओ दिखणाधनूं[17] । आडा आदमी घणा ही फिरिया, पण घिरै नहीं ।[18]

ईंदी जीमती ताहरां पेहली बाळनाथनूं जीमण मेलती, पछै आप जीमती ।[19] सु नाथरो इसो भाव । युं करतां जीमण तयार हुओ,

---

1 पुरोहित पोकरणमें ब्याहा था । 2 सो किस लिए ? 3 मैं नरासे लड़ कर आया हूँ । 4 दामाद । 5 बुलवा कर । 6 तुम नरासे नाराज हो गये तो क्यां हुआ ? 7 तुम यहाँ आ जाओ । 8 दरबारमें बैठो, कुंवरके साथ खेलो । 9 खर्चा हमारेसे लो । 10 बड़े आनंदसे रहो । 11 एक ही घर है । 12 आपकी । 13 अभी तक रावजी विद्यमान हैं । 14 रावजीके भी एक नरेके ऊपर ही थोड़ा ही है ? 15 जेठ मासमें पुरोहित जासूसी करनेको आया था, उन्हीं दिनों इमली भी फलित हो गई थी । 16 तब बालनाथने इमलीको शाप दिया कि 'निष्फल हो जाना' । और उन कुंवरोंको शाप दिया कि तुमसे गढ़ जायगा और हमारे चेलोंसे यह मठ जायगा और चेले घरबारी (गृहस्थी) हो जायेंगे । 17 दक्षिणकी ओर । 18 परन्तु वापिस नहीं लौटता । 19 ईंदी भोजन करनेके पहले बालनाथको भोजन भेजती, फिर आप भोजन करती ।

ताहरां नाथनूं भांणो मेलियो ।[1] आदमी ले नाथरै आसण आयो । आयनै पूछियो । ताहरां कह्यो–'जी, नाथजी रमिया ।'[2] कहियो–'रे ! करां ?[3] कह्यो–'जी, आज रमिया ।' कह्यो–'रे ! किसै वासतै ?'[4] कह्यो–जी, कुंवरां दुख दियो । अर जावतां युं कहि गया छै ।

ताहरां ईंदी बिना जीमी ऊभरांणै पगे दोड़ी ।[5] पगो पग गई ।[6] आगे सात कोस लग[7] नाथ गयो । जायनै जाळ[8] हेठै[9] नाथ सूतो, सो नाथनूं तो नींद आ गई । इतरै ईंदी जाय पुहती ।[10] देखै तो नाथ पोढिया छै । ताहरां ईंदी जायनै पगे हाथ दियो ।[11] ताहरां नाथ जागियो । कह्यो–'माता ! तूं क्यों आई ?' ताहरां कह्यो–'नाथजी ! थे मोनूं बोयनै हालिया ।'[12] ताहरां नाथ कह्यो–बेटी ! वचन फुरणेका नहीं ।'[13] ताहरां कह्यो–'नाथजी ! म्हे केथ रहां ?[14] म्हारी किसी गत हुसी ?'[15] ताहरां नाथ कह्यो–'बेटी ! तेरे आसा है[16] सो तेरै बेटा होयगा । बड़ा सामंत होयगा । उसका नाम लूंको देई ।[17] जब बारह बरसोंका होयगा तब धरती आवेगी । पण इस जाळ से पैली आवेगी ।[18] अब मैं और तरफ जाऊंगा ।'

ताहरां ईंदी अपूठी आई ।[19] ऊनाळो उतरियो[20], वरसाळो उतरियो,[21] सीयाळो[22] आयो । न्याळा[23] हुवै छै । रावनूं न्याळांरो बुलावो आयो । ताहरां राव न्याळै आवै । एक दिन ओगरास गांम तिकण मांहै न्याळो हुवो । ताहरां बुलावो आयो रावनूं । ताहरां राव तयार हुवो छै । असवार ८० सूं चढि राव कोट मांहैसूं

---

1 नित्य इस प्रकार करते, जब उस दिन भोजन तैयार हुआ तब नाथके लिए भाणा (थाल) परोस कर भेजा । 2 नाथजी चले गये । 3 अरे ! कब ? 4 अरे ! किस लिये ? 5 तब ईंदी बिना भोजन किए ही नंगे पाँव उसके पीछे दौड़ी । 6 पैरोंके चिन्ह देखती-देखती गई । 7 तक । 8 पीलू वृक्ष । 9 नीचे । 10 इतनेमें ईंदी जा पहुँची । 11 तब ईंदीने जाकर चरण स्पर्श किये । 12 नाथजी ! आप तो हमको डुबा कर चल दिए । 13 वचन पलटनेका नहीं । 14 हम कहाँ रहें ? 15 हमारी क्या गति होगी ? 16 बेटी ! तेरे गर्भ है । 17 देना । 18 परन्तु इस जाल (वृक्ष)से उधर-उधर तक ही मिलेगी । 19 ईंदी लौट आयी । 20 ग्रीष्म ऋतु समाप्त हुई । 21 वर्षा ऋतु बीत गई । 22 शीत ऋतु । 23 मांस-गोष्ठी का एक विशेष आयोजन ।

नीसरियो ।[1] ताहरां प्रोहित पण ऊभो हुतो ।[2] ताहरां राव कह्यो–'प्रोहित ! आवस्यो ?'[3] ताहरां प्रोहित कह्यो–'राज ! म्हां बांभणांरो कासूं कांम छै ?'[4] ताहरां राव तो चढि खड़िया ।[5]

तितरै प्रोळियो कटोरो लियै ऊभो हुतो ।[6] ताहरां प्रोहित कह्यो–'जी, कासूं जोवो ?'[7] ताहरां प्रोळिये कह्यो–'प्रोहितजी ! कहीकैंनूं कटोरो सांपस्यां, ज्युं पुरसाय ल्यावै ।'[8] ताहरां कह्यो–'जी, उरहो द्यो, ज्युं म्हे परुसाय लाय देस्यां ।'[9] कहियो–'जी, प्रोहितजी ! आपनै कटोरो क्युंकर दीजै ?'[10] ताहरां प्रोहित कह्यो–'भय कोई नहीं, चाकर उठाय लेसी ।[11] थांहरो तो कांम कियो जोईजै ।[12] थांसूं लाख कांम छै ।'[13] ताहरां प्रोळियेरो कटोरो प्रोहित लियो ।

पछै चाकरनूं कह्यो–'रे ! ऊंठ ल्याव, सीरख ल्याव, ताहरां चाकर ऊंठ पलांण मांड ल्यायो । सीरख ल्यायो ।[14] चाकरनूं राखियो ।[15] आप ऊंठ चढ अर देहरैरै मारग घालि अर फेरिया । आगै बिटड़्यां कनै जाय नीसरियो । आगै एक पलीवाळ ऊभो हुतो, तियेनूं कह्यो[16]–'रे ! फळोधी जाय, वाहर घाल, वाहर कर ।'[17]

ताहरां बांभण पुकारियो । आगै राव नरैरा जासूस बैठा हीज हुता । सांमांन तयार कियो । बारह ऊंठां माथै सिलह लदियोड़ो हुतो ।[18] अर पांचसै ५०० असवारसूं नरो चढियो आयो । आगै बांभण ऊंठ तांणियो मारग आवतो दीठो ।[19] ताहरां रांमो सोहड़ बोलियो । कह्यो–'जी, बांभण आवै छै । मत क्युं ही कहो ।[20] वाहर

---

1 निकला । 2 खड़ा था । 3 आओगे ? 4 हम ब्राह्मणोंका क्या काम है ? 5 तब राव तो चढ़ कर चल दिया । 6 उस समय प्रौलिया कटोरा लिए खड़ा था । 7 क्या देख रहे हो ? 8 किसीको कटोरा देना है जो परोसवा कर ले आये । 9 इधर दे दो, सो हम परोसवा कर ला देंगे । 10 आपको कटोरा कैसे दिया जाय ? 11 कोई भयकी बात नहीं है, चाकर उठा लेगा । 12 तुम्हारा काम तो करना ही होगा । 13 तुम्हारेसे लाखों काम हैं । 14 तब चाकर ऊंट पर पलान रख कर ले आया । रजाई भी ले आया । 15 चाकरको वहीं रखा । 16 आगे एक पालीवाल ब्राह्मण खड़ा था, उसको कहा । 17 अरे ! फलोधी जाकर खबर दे कि वाहर करे । 18 बारह ऊँटों पर सिलह-शस्त्र आदि लदे हुए थे । 19 आगे ऊंटको खींचते हुए ब्राह्मणको आते देखा 20 इसे कुछ मत कहो ।

रो मांमलो छै। ताहरां नरो बोलियो–'म्हे क्युं ही कहां नहीं, आवो।' ताहरां बांभण पिण चढ आयो, साथ हुवो। जाहरां बिटङ्यां कनै गया, ताहरां रांमो बोलियो। कह्यो–'जी, धंस को दीसै नहीं, मारग कोई पग दीसै नहीं।[1] आंपां जास्यां केथ ?'[2] ताहरां नरो प्रोहित-सौं बाथां घातनै मिळियो।[3] रांमैनूं कह्यो–'म्हे पोकरण लेस्यां।'[4] ताहरां रांमै कह्यो–'कोड़ीधज घोड़ैरो मुंहडो कुहटो।' ताहरां कोड़ी-धजरो मुंहडो कुहटतां कोड़ीधज फरड़को कियो[5], सो गांम उगरास मांहै केरड़ू मगरै तांई सुणियो।[6] ताहरां राव खींवो न्याळै मांहै बैठो हुंतो, कोळी हाथ मांहै लीवी छै, छांट घालतो हुतो।[7] ताहरां कोड़ी-धजरो फरड़को सुणियो ताहरां राव खींवो बोलियो–'भाई! कोड़ी-धज घोड़ैरा फरड़का सुणीजै छै, कोट पण एकलो छै, बांभणियो पण मास ५-६ हुवा आयो बैठो छै, उपद्रव दीसै छै।[8] आजे कुसळ विहावै।'[9]

ताहरां असवार पांच छव चाढिया, 'खबर करो'। ताहरां अै अस-वार मगरै जायनै खड़ा रह्या। अटकळ करण लागा। 'देखां, कुण छै? कुण वहै छै?'[10] ताहरां असवार आय, मारग माथै ऊभा रह्या।[11] जितरै साथ आयनै नीसरियो।[12] ताहरां असवारां पूछियो–'कुण ठाकुर छै?'[13] ताहरां कह्यो–'साथ नरै वीकावतरो छै। अमरकोट परणी-जण जावै छै।'[14] ताहरां कह्यो–'घोड़ो कोडीधज तो नरै सूजावतरो छै।' ताहरां कह्यो–'मांहरै घोड़ो सखरो कोई हुतो नहीं, तिकण पगा

---

1 न तो कोई सेना दिखती है और न मार्गमें किसीका खोज ही दिखाई देता है। 2 अपन जायेंगे किधर? 3 तब नरा पुरोहितसे भुजा पसार कर मिला। 4 हम पोकरण लेंगे। 5 तब कोड़ीधज घोड़ेका मुंह बांधते समय कोड़ीधजने अपना मुंह और नथुना फड़-फड़ाया। 6 सो वहांसे उगरास गांवमें और केरड़ूकी पहाड़ी तक सुनाई दिया। 7 तब राव खींवा न्यालेमें बैठा हुआ था और ग्रास हाथमें लेकर छांट डाल रहा था। (कोळी = देवार्पण निमित्त अंजलिमें लिया जाने वाला या लिया हुआ ग्रास परिमाण जितना पक्वान्न आदि खाद्य-पदार्थ) 8 कोड़ीधज घोड़ेके फरड़के सुने जाते हैं, कोट सूना है और ब्राह्मण भी ५–६ मास हुए आया बैठा है, कोई उपद्रव दिखाई देता है। 9 आज कुशल नहीं है। 10 देखें, कौन हैं? कौन जा रहे हैं? 11 मार्ग पर आकर खड़े रहे। 12 इतनेमें दल आ निकला। 13 कौनसे ठाकुर हैं? 14 उमरकोट व्याहनेको जा रहे हैं।

मांग लियो छै ।[1] तै आगै ऊमरकोट सोढांरै वडा वडा घोड़ा छै ।[2] तै भाभैजो कनां मांग लियो छै ।'[3] ताहरां कह्यो–'इतरै ऊंठे सिलह क्युं छै ?' ताहरां कहियो–'म्हांरै वैर-वाढ छै ।[4] राजा छां, साथै सिलह चाहीजै हीज ।'

इतरो[5] पूछि अर असवारां जाय राव खींवैनूं कह्यो–'जु, कोई उपद्रव छै, साथ वहै छै । कहै–नरो वीकावत अमरकोट परणीजण जावै छै । मौड़ बांधै, केसरिया कियां, खंभायच गाईजै छै ।[6] इण तरहसूं वहै छै । घोड़ो पण कोड़ीधज छै । कहै–'म्है मांग ल्याया छां ।'[7]

युं विचार करै छै । तितरै नरो पोकरण जाय पुहतो ।[8] आगै प्रोहित जायनै प्रोळियैनूं साद कियो ।[9] कह्यो–'वेगो थारो कटोरो ल्यै ।' उतावळसूं ऊठण लागो, त्युं उतावळा साद किया ।[10] ताहरां प्रोळियो ऊठियो । नींदाळ थकै हीज खिड़की खोली ।[11] कह्यो–'कटोरो दो उरहो ।'[12] ताहरां प्रोहित कह्यो–'वाळ रे भाई ! थारो कटोरो । म्हारै मांसरै हाथ लगावै कुण ?'[13] ताहरां प्रोळियो बोलियो–'राज ! निवाजिया म्हांनूं ।'[14] जिसड़ै हाथ आघो काढियो, तिसड़ै नरै वरछी वाही सु पूठ मांहै जाती नीसरी ।[15] धरती ढह पड़ियो ।[16]

नरो प्रोळि खोलि मांहै जाय पैठो ।[17] कह्यो–'नरै सूजावतरी आंण ।'[18] सहर मांहै आंण फिरै छै[19] नरै सूजावतरो आंण । इतरै

---

1 हमारे पास कोई अच्छा घोड़ा था नहीं, इसलिए मांग लाये हैं । 2 क्योंकि आगे सोढोंके पास बड़े बड़े घोड़े हैं । 3 इसलिए बाबाजी (ताऊजी)से मांग कर लिया है । 4 हमारे शत्रुता और लड़ाई है । 5 इतना । 6 मौर बांधे हुए, केशरिया किये हुए हैं और खंभाइच राग गाई जा रही है । 7 हम मांग कर लाये हैं । 8 इतनेमें नरा पोकरण जा पहुंचा । 9 पुरोहितने आगे जा करके पौलियेको पुकारा । 10 वह उतावलीसे उठने लगा त्यों उसने उतावलीसे पुकारा । 11 निद्रालु होते हुए ही खिड़की खोली । 12 लाओ कटोरा दे दो । 13 यह ले रे भाई ! तेरा कटोरा, मेरे कौन मांसके हाथ लगाये ? 14 महाराज ! मेरे पर बड़ी कृपा की । 15 ज्योंही हाथ बाहर निकाला त्योंही नरेने बर्छीका प्रहार किया सो पीठमें जा निकली । 16 धरती पर गिर पड़ा । 17 नरा पोलि खोल कर अंदर जा घुसा । 18 नरे सूजावतकी आन-दुहाई (विजय-घोषणा) । 19 शहरमें विजयकी घोषणा (आन-दुहाई)हो रही है ।

राव खींवै असवार पोकरण मूंकिया ।[1] सो असवार जायनै देखै तो नरै सूजावतरी आंण फिरै छै । असवारां आयनै राव खींवेंनूं कह्यो–'पोकरण नरै सूजावत लीधी ।[2]

ताहरां खीमो पसवाड़ै चालियो पोकरणसौं कोसै तीने च्यारे ।[3] पसवाड़ै वहता हुता, तिसड़ै मारगमें एक एवाळियो मिळियो ।[4] लारै बकरो मारियो हुतो[5] । जीव नीसरियो हुतो, पण साबतो हुतो ।[6] सो कांधै लिये आवतो हुतो ।[7] उणै आंण बकरो दियो ।[8] ताहरां खींवै चाचैनूं पूछियो । कहियो–'चाचा ! ओ कासूं कहै छै ?[9] ताहरां चाचै कहियो–'खींवाजी ! ओ बकरो आंपां जितरै कोसे जाय खावां, तितरै वरसे आंपां नरो मारां ।'[10] ताहरां बाकरो लियो अर पांच छकड़ एवाळियैनूं दिया ।[11] एवाळियो ल्यै नहीं ।[12] ताहरां कह्यो–'रे ! ल्यै, मांहरै सवण छै ।[13] ताहरां उवै लिया ।[14] भिणीयांणै बारह कोसे जायनै बाकरो खाधो ।[15] लोचा-लाचो वणो ही कियो पण उरै बाकरो खावण न पाया । नरैरी चोकियां ठांम-ठांम बैठी छै ।[16]

नरो कोट मांहे पैठो, ताहरां खींवैरी बैर कह्यो–'बेटा ! कासूं म्हानूं काढै, कैर-कांटो खावता हुंतां?'[17] ताहरां कह्यो–'नांनीजी ! थे कैर-कांटो जाय अर खावो । म्हे अठै गेहूं खावस्यां ।'[18] ताहरां

---

1 इतनेमें राव खींवेंने भी अपने सवारोंको पोकरण भेजा । 2 पोकरण पर नरे सूजावतने अधिकार कर लिया । 3 तब खीमा (खींवा) पोकरणसे तीन-चार कोस दूर बाजूमें होकर चला । 4 बाजूमें चले जा रहे थे कि मार्गमें एक गड़रिया मिला । 5 पीठ पीछे एक बकरा मारा हुआ था । 6 प्राण तो निकल गया था परन्तु था साबित । 7 सो कंधे पर लिए हुए आ रहा था । 8 उसने लाकरके बकरा दिया । 9 यह क्या कह रहा है ? 10 यह बकरा अपन जितने कोसों पर जाकर खायेंगे, उतने ही वर्षोंमें अपन नरेको मार सकेंगे । 11 तब बकरा ले लिया और उसकी कीमतके पांच छकड़ गड़रियेको दिये । (छकड़=एक पुराना सिक्का) 12 गड़रिया लेता नहीं । 13 अरे ! लेले, हमारे लिये शकुन है । 14 तब उसने ले लिये । 15 बारह कोस पर भिणियाणे गांवमें जाकर बकरा खाया । 16 खानेकी जल्दी बहुत की परन्तु उधर पूरी तरह खा नहीं पाये । नरेकी चौकियाँ जगह-जगह पर बैठी हुई हैं । 17 नराने जब गढ़में प्रवेश किया तब खींवेकी स्त्रीने कहा कि बेटा ! कैर-कांटा खाते हुओंको क्यों निकाल रहा है ? (कैर-कांटो खावणो= मुहा० १ जैसे-तैसे गुजारा करना । २ साधारण व हलके भोजन पर निर्वाह करना । ३ सुखसे निर्वाह करना ।) 18 हम यहां गेहूँ खायेंगे (मौज करेंगे) ।

राजलोक बाहर काढियो ।[1] पोकरणांरा लोक सर्व बाहड़मेर जाय रह्या । बाहड़मेर जायनै दोड़-धाव करण लागा ।[2] पोकरणरो देस नरै वसायो । सातलमेर कोट करायो । नरासर तळाव करायो । देस आछो रस आयो ।'[3]

ईंयां दोड़ां घणी ही कीवी[4], पण दखल न पहुंचियो ।

युं करतां लूंको बारह वरसरो हुवो । भालै राव[5], घोड़ै असवार हुवौ । ताहरां पोकरणरै देसनूं पोकरणां दखल कीवी । एकरसूं[6] सिगळा ही[7] पोकरणा बाहड़मेरसूं चढिनै आया । राव खींवो, चाचो, वरजांग, लूंको आय नै पोकरणरो वित[8] लियो । ताहरां वांसै[9] चढियो । नरो जाय पुहतो ।[10] ताहरां लड़ाई हुई । साथ कांम आयो । राव खींवैरा रजपूत ही कांम आया । नरैरा ही रजपूत कांम आया । ताहरां पोकरणा नीसरिया, ताहरां नरै लूंकैरै वांसै घोड़ो दियो । ताहरां लूंकैनूं जाय पुहतो । लूंकै वहतै हीज तरवार वाही ।[11] इसड़ी पळसेटी पसवाड़ै हुय नै वुही, धड सौं माथौ अळगो जाय पड़ियो ।[12] धड़ घोड़ो लियै हीज गयो । पांवड़ा दोय सौ ऊपरा जावतो धड़ पड़ियो । पोकरणा सारा ही नरानूं मार, भिणीयांणै जाय उतरिया ।[13]

नरैरो साथ पोकरण आयो । नरै वांसै सतियां हुवण लागी[14], ताहरां नरैरो माथो नहीं, ताहरां सतियां पण हुवै नहीं । ताहरां पोकरणां कना[15] नरारो माथो मंगायो । ताहरां पोकरणां कह्यो-'म्हे नरैरो माथो ल्याया नहीं । धड़हूं परै पांवड़ा सौ दोय माथो पड़ियो छै । एक कैर, एक गांगवण, एक भाड़रो पेड़ छै, उवां भांसां मांहै नरैरो माथो पड़ियो छै ।[16] थे जाय नै ल्यो ।' ताहरां

---

1 तब स्त्रियोंको बाहर निकाल दिया । 2 बाड़मेर जाकर दौड़े-धावे करने लगे । 3 देश भली प्रकार आधीन हुआ । 4 इन्होंने दौड़-धूप बहुत ही की । 5 भाला चलानेमें कुशल । 6 एक बार । 7 सभी । 8 गो-धन । 9 पीछे । 10 जा पहुंचा । 11 चलते हुए ही लूंकेने तलवारका प्रहार किया । 12 बाजूमें होकर ऐसी आड़ी तलवार चली जिससे धड़से सिर अलग होकर जा गिरा । 13 भिणियाणे गांवमें जाकर ठहरे । 14 नरेके पीछे उसकी स्त्रियें सती होने लगीं । 15 पाससे । 16 एक करील, एक गांगवण इन क्षुपोंके अतिरिक्त एक वृक्ष और है. उन झाड़ियोंके अन्दर नरेका सिर पड़ा हुआ है ।

उठै गया ।[1] उठाहूं माथो लेनै पोकरण आया ।[2] वांसै सतियां हुई ।

पछै नरैरै टीकै गोयंद बैठो । हमैं रोज लड़ायां पड़ै । धरती वसै नहीं ।[3] ताहरां राव सूजैजी गोयंदनूं तेड़ायो ।[4] पोकरणांनूं तेड़ाया । धरती आधो-आध वैंहच दीवी ।[5] कोट नरैरै माथै साटै कियो ।[6] उवै जाळसौं सीम पड़ी ।[7]

अजेस पोकरणां कनै तदरी सीम छै ।[8] राव नरो संवत् १५५१ चैत्र वदे २ कांम आयो । गोयंदरै बेटा जैतमाल नैं[9] हमीर हुवा । आधो फळोधीरी धरती हमीरनूं दीवी । जैतमालनै सातळमेर दियो ।

पछै कितरेहेक दिने दोन्युंई कनांसूं गढ राव मालदेजी लिया ।[10]

॥ इति नरै खीमैरी वात संपूर्ण ॥

---

1 तब वहाँ गये । 2 वहाँसे सिरको लेकर पोकरण आये । 3 धरती आबाद नहीं होती । 4 बुलाया । 5 बराबर आधी-आधी धरती दोनोंमें बाँट दी । 6 गढको नरेको सिरके बदले दिया गया । 7 उस जाल वृक्षकी सीमा निर्धारित हुई । 8 पोकरणोंके पास अभी तक उस समयकी निर्धारित सीमा है । 9 और । 10 पीछे कितने ही समयके बाद दोनोंके पाससे राव मालदेवने गढ़ ले लिये ।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अथ जैमल वीरमदेवोत नै राव मालदेरी वात लिख्यते

वीरमदे देवलोक हुवो, ताहरां मेड़तैरो टीको जैमलनूं हुवो। ताहरां राव मालदेजी जोधपुरसौं कहाड़ियो।[1] जैमलनूं कह्यो–'मो सारीखा थारैं दुसमण छै, अर तूं चाकरांनूं सोह पड़गनो मतां दे।[2] क्युंही खालसै ही राख।'[3]

ताहरां जैमलरै ईडवो पावै अरजण रायमलोत।[4] ताहरां जैमलजी अरजणनूं आदमी मेलियो[5], कह्यो–'भाईनूं बोलाय ल्यावो।' अर अरजणनूं पण हुतौ[6] 'तेड़ै आये घरे नावतो, जैमलजी कनै जावतो।'[7] आदमी आयो ताहरां अरजण गांव हूतो।[8]

ताहरां आदमी आयनै कह्यो–'अरजणजी थांनै जैमलजी बोलाया छै। रावजीरो जोधपुरसूं कागद आयो छै, सु आप हालो।'[9] ताहरां अरजणजी बोलिया, कह्यो–'राज! रावजी कागद में कासूं लिखियो छै?'[10] ताहरां कह्यो–'रावजी लिखियो छै, सगळो ही[11] मुलक चाकरांनूं देवै छै, अर क्युंही खालसै ही राखे छै? अर वळै इसड़ो कोई छै जु कोई विचै ही ऊभो रहै?'[12] ताहरां अरजणजी कह्यो–'राज! म्हारै पटो सबळो छै, हूं ऊभो रहीस।'[13] ताहरां वळै कह्यो–'इसड़ो कोई छै जु विचमें ऊभो रहै?' ताहरां अरजनजी बुरो मांनियो।[14] एकरसौं तो न रहै।[15] युं कहै–'रावजी! म्हे अर थे लड़ां ताहरां कोई बीच ऊभो रहै?' ताहरां अरजणजी कह्यो–'जी, राज! हूं ऊभो रहीस।[16] म्हारो ईज पटो सबळो छै।

---

1 कहलवाया। 2 मेरे समान तेरे दुश्मन हैं और तू अपना सभी परगना चाकरोंको मत दे। 3 कुछ खालसेमें भी रख। 4 तब जैमलके अधिकारका ईडवा गांव अर्जुन रायमलोतको मिला हुआ था। 5 भेजा। 6 और अर्जनको यह प्रतिज्ञा थी। 7 बुलाने पर घर पर नहीं जाता, जैमलजीके पास जाता। 8 अर्जुन गाँव गया हुआ था। 9 सो आप चलिये। 10 रावजीने पत्रमें क्या लिखा है? 11 सभी। 12 और फिर कोई ऐसा भी है जो बीचमें खड़ा रहे। 13 मेरे पट्टा बड़ा है, अतः मैं खड़ा रहूँगा। 14 तब अर्जुनजीको बुरा मालूम हुआ। 15 एक बार तो ऐसा विचारा कि नहीं रहें। 16 मैं खड़ा रहूँगा।

ताहरां अरजणजी डेरै आयनै कह्यो-'जु म्हैं म्होटो (बोल) बोलियो छै[1] कहै छै-'रिणकताल पलकेकमें भलो छै जकणरो भलो। भूंडो छै जैरो भूंडो[2] भूल जाय छै। ताहरां सांखलो १ जाळसूरो वास हुंतो।[3] ताहरां उवै कहियो-'जी, याद हूं करावोस।[4] ताहरां कहियो-'साबास, वडा रजपूत!' ताहरां कहियो-'सावधांन हुवो।' ईंयांरै आ लागी हुतीज।'[5]

आसोजी दसराहो पूजि अर मुहिम कीधी।[6] 'ताहरां वडी फोज कर मालदेजी आया हीज। गांम गंगारड़ै आय डेरा किया।[7] फोज च्यारूं ही तर्फ दोड़ी छै। मेड़तैगे रैत लोग खसीजै छै।[8] देस मारीजै छै।[9] देस विध्वंसीजै छै।[10] अर अचळो रायमलोत कहै छै-'जु जैमलजी मोनूं बोलावै छै, पिण हूं विहांणरो दिन अठै बैठो छूं अर जैमलजी घणो गाढ करै छै।'[11] अचळा! तूं आव, पण वेगो आव।' ताहरां अचळै कहाड़ियो-'जु प्रथीराज जी, अखैराजजीनूं बोलावो, जु विहांणरो दिन ऊभौ रहीस। जे म्हांसूं मया करो तो भली करो, नहीं तर सवारै हूं जैमलजी भेळो होईस।'[12]

ताहरां ईंयां[13] कह्यो-'पैहली जैमलनूं मार[14] पछै अचळानूं मारस्यां।[15] अर जो भेळा हूसी तो भेळा ही मारस्यां।'[16] तरै जैमल कहै छै-'ज रावस्यूं अर म्हांरी सधै तो भलां।'[17] ईंयांरै परधांन जैतमलरै ऊपर मुदार।[18] अखैराज भादावत, चांदराज जोधावत, भादो ही मोकळरो, जोधो ही मोकळरो, काका-बाबांरा।[19] ईंयांरै

---

1 मैंने अहंकारपूर्ण कहा है। 2 भलेका परिणाम भला और बुरे का बुरा, इस बातको भी पल भर में भूल जाता है। 3 जालसूका एक सांखला इनके यहाँ रहता था। 4 मैं याद दिलाऊंगा। 5 इनको यह खटक गई थी। 6 आश्विनके दशहरा की पूजन करके सेना तैयार की। 7 गंगारड़ै गांवमें आकर डेरा डाला। 8 मेड़तेकी प्रजा भाग रही है। 9 देशमें लूट-पाट की जा रही है। 10 देशका विध्वंस किया जा रहा है। 11 और जैमलजी बहुत गर्व कर रहे हैं। (यहां 'गाढ़'का अर्थ 'मनुहार' या 'खुशामद' होना चाहिये)। 12 आप हमारे पर कृपा करते हैं तो विशेष प्रकारसे करिये, नहीं तो मैं कल जैमलजीके साथ हो जाऊंगा। 13 इन्होंने। 14 मार करके। 15 मार देंगे। 16 और जो साथमें हुआ तो उसे भी साथमें मार देंगे। 17 रावसे हमारी पट जाय तो अच्छी बात है। 18 दारोमदार। 19 काका-बाबाके वंशज।

माथैं मेड़तैरी मुदार। ताहरां जैमलजी कह्यो–'अखैराजजी ! थे[1] जावो।' ताहरां अखैराजजी कह्यो–'राज ! मोनूं काहिणनूं मेलो ?[2] अर जे मोनूं मेलो छो तो लड़ाईरो सराजांम करो।'[3] ताहरां अखैराजजी, चांदराजजी हालिया।

ताहरां प्रथीराजरै अखैराजसौं क्युंहेक नातरो हुतो।[4] ताहरां अै[5] ठाकुर प्रथीराजजीरै डेरै आया। आयनै प्रथीराजजींनूं रांम रांम कहाड़िया। ताहरां प्रथीराजजी कहाड़ियो–'हूं संपाड़ो करूं छूं[6], पछै हूंई दरबार आईस।'[7] प्रथीराजजीरै डेरै तरवारचांनूं वाढ लागै छै।[8] केई रजपूत बंदूकांरी चोटां करै छै।[9] घणूं ऊधम होय रह्यो छै।[10] ताहरां अै सिरदार देखनै[11] हैरांन हुवा। इतरै मांहे[12] प्रथीराजजी पैहर वागो नै तैयार हुय, वाहर पधारिया। ईंयां[13] ठाकुरांनूं लेनै दरबार आया।

आगै राव मालदेजीरो दरबार जुड़ियो छै। ईंयां सिरदारां जाय राव मालदेवजीसूं मुजरो कियो।[14] एकै खवै नगो भारमलोत बैठो छै, एकै खवै प्रथीराजजी बैठा छै।[15] ईंयां सिरदारांनूं सनमुख बैसांणिया।[16] ताहरां प्रथीराज बोलियो–'रावजी सलांमत ![17] मेड़तैरा प्रधांन आया छै।' ताहरां रावजी कहै छै। कह्यो–'परधांन कासूं कहै छै ?'[18] ताहरां प्रथीराज बोलियो–'इयुं कहै छै महाराज ![19] म्हांनूं मेड़तो दीजै। म्हे रावळी चाकरी करस्यां।'[20] ताहरां रावजी कह्यो–'मेड़तो न देवां। दूजो पटो देस्यां।'[21] इतरै मांहे अखैराज बोलियो–'राज कहो छो, किना किहीरो कहियो कहो छो ?[22] जु मेड़तो दे

---

1 तुम। 2 मुझे क्यों भेज रहे हो ? 3 और जो मुझे भेज रहे हो तो लड़ाईकी तैयारी करो। 4 कुछ नाता था। 5 ये। 6 मैं स्नान कर रहा हूं। 7 फिर मैं भी दरबारमें आऊंगा। 8 पृथ्वीराजजीके डेरेमें तलवारोंको शान चढाकर उनकी धारें तेज की जा रही हैं। 9 कई राजपूत बंदूकोंसे निशाने लगा रहे हैं। 10 बहुत ऊधम मच रहा है। 11 देख करके। 12 इतनेमें। 13 इन। 14 प्रणाम किया। 15 एक बाजू नगा भारमलोत बैठा हुआ है, तो दूसरी एक बाजू पृथ्वीराजजी बैठे हैं। 16 बिठलाया। 17 रावजी चिरंजीवी हो। 18 प्रधान क्या कह रहे हैं ? 19 महाराज ! ये यों कह रहे हैं। 20 हम आपकी चाकरी करेंगे। 21 दूसरी किसी जागीरीका पट्टा कर देंगे। 22 आप स्वयं ही विचार करके कह रहे हैं अथवा किसीके कहनेसे कह रहे हैं ?

कुण, अर ले कुण ?[1] थांनूं जोधपुर दियो छै, तिकै म्हांनूं मेड़तो दियो छै ।'[2] ताहरां नगो भारमलोत बोलियो–'जु थांनूं रावरा पांडव ही मारसी, थे चेतो करो ।'[3] ताहरां चांदराज बोलियो,. कह्यो–'जी, रावजीरा पांडव जैमलजीरा पांडवांनूं मारसी, क जैमलजीरा पांडव रावजीरा पांडवांनूं मारसी ।[4] म्हांनूं थे मारस्यो, क म्हे थांनूं मारस्यां ।'[5] इतरै[6] मालदेजी बोलिया–'हो प्रथीराज ! मेड़तैरा प्रधांन औ हीज छै, कना और ही छै ?'[7] ताहरां प्रथीराज कह्यो–'जीवै महाराज ! औ हीज छै ।'[8] तरै रावजी कह्यो–'मेड़तै प्रधांनांरा पग पातळा भाई ![9]

इतरै मांहै औ खीज अर ऊठिया ।[10] ताहरां अखैराज दुपटो झाटकियो, सु दुपटो ताग ताग न्यारो हुय गयो, अर चांदराज घोड़ैरो ऊकटो खांचियो, सु च्यारै ही पग घोड़ैरा ऊंचा आया ।[11] ताहरां औ तो ठाकुर चढ मेड़तै आया ।

वांसै रावजी आपरै लोकां कना दुपटा घणा ही झाटकाया, पण इसो तो जैमलजीरै रजपूत ही झाटकियो ।[12]

ताहरां औ ठाकुर जैमलजी कनै आया । आयनै जैमलजी आगै वात कही । ताहरां जैमलजी कह्यो–'मोनूं मरणसौं क्युं डरावो ?[13] आ वात हवणकी नहीं ।'[14] ताहरां रावजीरा घोड़ा गंगारड़ै तळाव पांणी पीवणनूं आया हुता सु ईसरदास ले आयो । ताहरां जैमलजी

---

1 मेड़ता कौन तो दे और उसके देनेसे ले कौन ? 2 तुमको जिसने जोधपुर दिया है उसीने हमको मेड़ता दिया है । 3 तुमको तो रावके सईस मारेंगे, होशमें आकर बात करो । 4 या तो रावजीके सईस जैमलजीके सईसोंको मारेंगे या जैमलजीके सईस रावजीके सईसोंको मारेंगे । 5 हमको तो तुम मारोगे या हम तुमको मारेंगे । 6 इतनेमें । 7 मेड़तेके प्रधान ये ही हैं अथवा और कोई हैं ? 8 चिरंजीओ महाराज ! ये ही हैं । 9 मेड़तेके प्रधानोंके पांव पतले हैं भाई ! (कमजोर हैं) 10 इतनेमें ये गुस्से होकर उठे । 11 तब अखैराजने दुपट्टा झटका सो उसके ताग ताग अलग हो गये और चांदराजने घोड़ेका तंग खींचा सो घोड़ेके चारों ही पाँव ऊपर उठ गये । 12 परंतु ऐसा (वैसा) फटकारा तो जैमलजीके राजपूत ही लगा सके थे । 13 मुझको मरनेसे क्यों डरा रहे हो ? 14 यह बात होनेकी नहीं ।

कह्यो–'वडो चौड़ै पाड़ियो ।[1] ताहरां थे जांणो नहीं, राव थांसूं टळै नहीं ?'[2]

वीजै[3] दिन लगती ही फौज आई । पछै वेऊं फोजांरी अणी मिळी ।[4] गोळी दारू छूटै छै ।[5] ताहरां अरजन रायमलोतनूं उवै[6] रजपूत बोल याद करायो। अर कहियो–'राज! थे कहता हुंता "जु म्होटो बोल वोलियो छै," सु तिका वेळा आज छै ।'[7]

ताहरां अरजनजी नगै भारमलोतरै मुंहडै आयो ।[8] नै इतरैमें अखैराज वधनै रावरा हाथी हुंता तिकांरै मुंहडै आगै आयो ।[9] ताहरां अखैराज हाथियां दोळौ हुवो ।[10] ताहरां अखैराजरै घावसूं हाथीरो दोय पासळी भागी ।[11] ताहरां अखैराज कहियो–'म्हारै तो प्रथीराजसौं कांम छै ।' इतरै मांहै प्रथीराज बोलियो । कहियो–'खाटरा ! मोड़ौ क्युं आयो ?'[12] ताहरां अखैराज बोलियो–'रावजीरा हाथियांरी चाकरी कीधी ।' इतरै मांहै प्रयागदास ऐराकी चढियो थको आयो ।[13] घोड़ो सरवरतां थको हीज जैमलजीनूं आय सलांम कीधी ।[14] इतरै जैमलजी बोलिया–'आवै प्रयागियो । इतरै वास्तै ईयेरा गुना ही माफ करतो थो ।[15] इतरै मांहै तो राव मालदेजीरी फोजरा मांटी आया ।[16] अर प्रयागदासरै माथै मांहै घावांरी चौकड़ी पड़ी छै, अर उवै फोजांरो वांसो कियो ।[17] इतरै मांहै जाय पहुंतो अर बरछी तोली ।[18] कहियो–'रावरै माथैमें द्यूं ।' इतरै मांहै तो बरछी कसीसी ।[19] ताहरां

---

1 खूब चौड़ेमें धाड़ा डाला । 2 अब भी आप नहीं समझे कि राव आपसे टलेगा नहीं । 3 दूसरे । 4 फिर दोनों सेनाओंकी अनियें मिलीं । 5 गोलियें बारूद छूट रहे हैं । 6 उन । 7 सो वह समय आज है । 8 सम्मुख आया । 9 और इतनेमें अखैराज जहां रावके हाथी थे आगे बढ कर उनके सामने आया । 10 तब अखैराजने हाथियोंका पीछा किया । 11 अखैराजके घावसे एक हाथीकी दो पसलियाँ टूट गईं । 12 खटरे ! देरीसे क्यों आया ? 13 इतनेमें प्रयागदास ऐराकी घोड़े पर चढ़ा हुआ आया । 14 घोड़े पर सवार और सरपट दौड़ते हुए आकर जैमलजीको जुहार किया । 15 इतनेमें जैमलजी बोले––'प्रयाग आ रहा है । इसीलिये तो मैं इसके दोष माफ कर दिया करता था । 16 इतनेमें तो राव मालदेजीकी सेनाके मनुष्य आ गये । 17 और उसने फौजोंका पीछा किया । 18 इतनेमें तो जा पहुंचा और बर्छी उठाई । 19 इतनेमें तो बर्छी फिसल गई ।

कोई परमेश्वररो ख्याल हुवो, जु कबांण काढनै रावजीरै गळै मांहै घालण करै। ताहरां एक वेळा तो कबांण ऊपर सै रही गळारै।[1] बीजै फेरै घोड़ैरै चाबखो मारनै कबांण गळै मांहै घाती।[2] तरै किहीकै वांसासूं आयनै प्रयागदासनूं घाव कियो।[3] ताहरां प्रयाग दोय टुकड़ा होय पड़ियो। अर कबांण राव मालदेजीरै गळै मांहै हीज रही। अर उवै आघा हीज गया।[4] अर ओ हेठो पड़ियो।[5] प्रथीराज लड़ै छै, नगो भारमलोत लड़ै छै। राव मालदेजीरी बाकीरी फोज सरब भागी। दोय सिरदार लड़ै छै।

ताहरां हींगोळो पीपाड़ो प्रथीराजजीरै चाकर हुंतो[6], तिकणनूं[7] प्रथीराजजी तरवार बगसी हुंती। ताहरां हींगोळै कहियो–'प्रथीराजजी! आप तरवार बगसी म्हनै, सो द्यो।' ताहरां प्रथीराजजी कह्यो–'रे, हींगोळा! रूड़ी वेळा मांहै मांगी।[8] पण नीलैरो असवार आवै छै, सु सही सुरतांण जैमलोत आयो।[9] आयनै, आवतै ही प्रथीराजनूं बरछी वाही।[10] ताहरां प्रथीराज बरछी टाळ नांखी।[11] कहियो–'गीगा! तूं नाव, थारै बापनूं कहि, ज्युं प्रथीराजनूं घाव करै।'[12] पाछै प्रथीराज कड़ियांसूं तरवार तोड़नै हींगोळै पीपाड़ैनूं बगसी।[13] ताहरां कहियो–'भलो प्रथीराज! मारवाड़रो सामंत!'[14] ताहरां प्रथीराजजी कहियो–'ना भाई! कुंवर मेड़तैरो ही भलो।'

प्रथीराज वडो रजपूत। सु प्रथीराजजीरै साम्हां लोह न लागतो, जोगीरो वरदांन हुतो।[15] ताहरां अखैराज भादावत वांसासूं

---

1 तब परमेश्वरने उसे क्या सुझाई सो कमान निकाल कर रावजीके गलेमें डालने लगा। सो एक बार तो वह गलेके ऊपर ही रह गई। 2 दूसरी बार घोड़ेके चाबुक मार कर गलेमें डाल दी। 3 तब किसीने पीछेसे आकर प्रयागदास पर प्रहार कर दिया। 4 और वे लोग दूर चले गये। 5 और यह नीचे गिर गया। 6 पीपाड़ा हींगोला पृथ्वीराजजीका चाकर था। 7 उसको। 8 रे हींगोला! अच्छे समय पर तैंने तलवार मांगी। 9 परंतु नीले घोड़े पर सवार निश्चय ही सुरतान जैमलोत आया दिखता है। 10 बर्छीका प्रहार किया। 11 पृथ्वीराजने बर्छीको टाल दिया। 12 और कहा—'वत्स! तू मत आ, तेरे बापको जाकर कह सो वह आकर पृथ्वीराज पर घाव करे। 13 पीछे पृथ्वीराजने अपनी कमरमें बँधी तलवारके पट्टेको तोड़ कर हींगोले पीपाड़ेको बकसीस करदी। 14 हींगोलाने कहा—'वाहरे पृथ्वीराज! मारवाड़के सामंत! 15 पृथ्वीराजजीके सम्मुख कोई घाव नहीं कर सकता था, उसे योगीका वरदान था।

आय अर प्रथीराजजीनूं लोह वाह्यो ।[1] ताहरां प्रथीराजजी कह्यो–'फिट रे भादैवाळा ! भी हांडी चाटी ।'[2] ताहरां कहियो–'हांडी तो वडै घररी चाटी । मांहै खीच घणो ।'[3] ताहरां प्रथीराजजी उठै कांम आया। नगो भारमलोत पण कांम आयो। राव मालदेजीरी फोज भागी।

ताहरां जैमलजीनूं वधाई दीधी । कहियो–'जी ! राव मालदे भागो ।' ताहरां जैमलजी कहियो–'रे छाती आगासूं खिसियो छै, मेड़तै गयेरी वधाई द्यो ।'[4]

ताहरां नगारा राव मालदेजीरा पड़ाऊ हाथ आया ।[5] ताहरां जुगलो मेड़तैरो बांभी हुतो, तिण साथ नगारा देनै मेलियो ।[6] जाहरां ऊ बांभी गांम लांबियारै कनारै सै गयो ।[7] ताहरां बांभी दीठो–'नगारा तो बजाय लेवां ।[8] अै तो राव मालदेवरा नगारा छै, सो परहा जासी ।'[9] ताहरां बांभी नगारो बजायो तरै अे दीठो जाईयैरै जे जाइजै ।'

ताहरां चांदै कहियो–'म्हांरो भाई छै। थे इतरा किहांणनूं खड़भड़ो ।[10] अै हूं समभाईस ।'[11] तरै कहियो राव मालदे–'चांदा ! म्हांनूं जोधपुर पुंहचाय किणही तरह ।'[12] ताहरां चांदै कहियो–'थे भोमता मांनो, कोई ईश्वर तो न छै ।[13] जैमलरो भय थे मतां[14] करो । आपनूं जोधपुररै कोट दाखल हूं कर देईस ।'[15] ताहरां चांदौ

---

1 अखैराज भादावतने पीछेसे आकर प्रहार किया । 2 धिक्कार है रे भादैवाला ! अच्छी हंडिया चाटी रे ! 3 उसने कहा––'हंडिया तो बड़े घरकी चाटी है और उसमें खीच बहुत है । 4 छाती आगेसे दूर हुआ है, मेड़ते गया होगा, वहांकी बधाई दो । 5 राव मालदेजीके नगारे भागते हुओंके पीछे पड़े रह गये थे सो हाथ लगे । 6 तब जुगला नामका मेड़तेका एक भांभी था उसके साथ नगारे वापिस भेजे । 7 तब वह भांभी लांबिया गांवके पासमें होकर लिकला । 8 भांभीने देखा नगारे तो बजालें । 9 नगारे राव मालदेके हैं सो तो उनके यहां जायेंगे ही । 10 तुम इतने काहेको घबराते हो ? 11 इन्हें मैं समझा दूंगा । 12 चांदा ! मुझे किसी प्रकार जोधपुर पहुंचा दे । 13 तुम उससे इतने डरते हो वह कोई ईश्वर तो है नहीं ? 14 मत । 15 आपका जोधपुर गढके भीतर प्रवेश मैं करा दूंगा ।

राव मालदेजीरै साथै हुयनै घोड़ा, हाथी, घायल हुवा हुंता[1] सु जिके सरब[2] साथै लेनै राव मालदेजीनूं जोधपुर पहुंचाया ।

राव मालदेजी जोधपुर जाय बैठा । जैंमलजी मेड़तैमें सुखसौं राज कियो ।

।। इति मालदेजी जैमालरी वात संपूर्ण ।।

1 जो घायल हो गये थे । 2 उन सबको ।

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

अथ वात सीहै सींधऴरी

सीहो सींधळ कमळां-पावा रहै ।[1] सीहैरै घोड़ा सरब मर गया । एक दिन सीहो बैठो छै । राजपूत सरब बैठा छै । ताहरां सीहो बोलियो—' ठाकुर ! घोड़ा तो नहीं । ताहरां सीहै पूछियो—'केहीरै घोड़ा छै ही ?'[2] ताहरां राजपूतां कह्यो—'राज ! गांम धूळहरै घोड़ा छै ? पिण गोयंद कूंपावत ओथकै रहै छै ।'[3] कहियो—'गोयंद मारो तो घोड़ा हाथ आवै ?' ताहरां सीहो कहै—'घोड़ा तो आंणणा ।'[4] ताहरां सीहो चढियो । चढनै गांम धूळहरै आयो । आयनै गोयंद कूंपावतनूं मारियो । २०० घोड़ा आंणिया ।[5]

ताहरां बीजै दिन सीहो चढिनै मांडहै सोझतरै गांम गयो । उठै महेस कूंपावत रहतो हुतो । ताहरां सीहो ओथकै गयो ।[6] हथियार छोड़िनै कहियो—'म्हांनूं खीच जीमावो ।[7] मोसौं तो ओ कांम वण आयो ।'[8] ताहरां महेस खीच जीमायो नहीं ।[9]

ताहरां आ वात मांडण सुणी । ताहरां मांडण कहियो—'महेस भूंडो कांम कियो । जे सीहो आयो हुतो तो खीच जीमावणो हुतो ।[10] महेस बुरो कियो ।

हिवै मांडण ही दीवांणरो चाकर अर सीहो ई दीवांणरो चाकर ।[11]

ताहरां भांमैसाह दीवांणनूं गोठ कीधी ।[12] सु पुड़ियो एक १ मोतियांसूं भर भरनै पातळां मांहै मेलियो ।[13] सु मेवाड़ा अमराव

---

1 सीहा सींधल कमलां-पावा गांवमें रहता है । 2 किसीके घोड़े हैं भी ? 3 परंतु गोविंद कूंपावत वहाँ रहता है । 4 घोड़े तो लाना ही । 5 दोय सौ घोड़ोंको ले आया । 6 तब सीहा वहाँ गया । 7 शस्त्रोंको छोड़ करके बोला—मुझे खीच जमाइये (दंड दीजिये) । 8 मेरेसे तो यह काम बन गया है । 9 तब महेशने उसको खीच खिलाया नहीं (कोई दंड नहीं दिया) । 10 महेशने बुरा काम किया । जो सीहा आ गया था तो उसे जरूर खीच खिला देना चाहिये था । 11 माँडण भी दीवाण (राणाजी) का चाकर और सीहा भी दीवाणका चाकर ! 12 भामाशाहने दीवाणको गोठ दी । 13 एक एक पत्तलमें एक एक पुड़ा मोतियोंका भर-भर करके रखा ।

मोतियांरा पुड़िया ले ले गया । सीहै सींधळ पुड़ियो लियो नहीं ।[1] ताहरां दीवांण बारियांनूं पूछियो–'रे पातळां में क्युंही लाधो ही ?'[2] कहियो–'जी, और तो पातळां मांहै क्युंही लाधो नहीं, अर सीहैजीरी पातळमें मोती लाधा ।' ताहरां अमराव जीम-जीम ऊठिया । ताहरां सीहैरो जोड़ो[3] मांडण सांम्है कियो। ताहरां सींधळ सारा ही बोलिया– 'भलां, हो सीहा ! थारा भाग, मांडण ही घंस करण लागो ?'[4] ताहरां सीहो बोलियो–'मांडण मोनूं मारसी ।[5] या वात चौकस हुई ।'

युं करतां कितरेके दिने सीहै दीवांणरो वास छोडियो । ताहरां सीहो जायनै जाळोर गजनीखांनरै वास रहियो । डोडियाळ पटै दोधी ।[6] ताहरां मांडण जांणियो–'हिवै[7] सीहो गयो । ताहरां मांडण पण दीवांणरो वास छाडियो ।

ताहरां मांडण मारवाड़ आयो । कले वीदावत कनै[8] गयो । जायनै कटारी छोडी ।[9] मांडणजी कहियो–'कला ! तूं वीदैरो बेटो, जे तूं कटारी बंधाड़ै तो बांधूं ।'[10] ताहरां कलो जितरो[11] आपरो[12] साथ हुंतो, तितरैसौं[13] चढिनै साथै हुवो ।

अठै मारगमें विचै उदैसी देवड़ो रहै बाहरली-पालड़ी ।[14] ईयै देवड़ै सिरदाररै साथ घणो ।[15] भला भला राजपूत । सो सीहैरै परणियो अर मांडणरै ही उदैसी परणियो ।[16] मांडणरी बेटी सुहागण, सीहैरी बेटी दुहागण ।[17] ताहरां मांडण उदैसी कनै चारण मेलियो[18] अर कहियो–'बाईनूं कहजै ज्युं उदैसोनूं गुदरावै ।[19] थांहरै निलाड़ दही

---

1 केवल सीहे सींधलने पुड़िया नहीं लिया । 2 अरे ! पत्तलोंमें कुछ मिला भी ? 3 जूतियोंका जोड़ा । 4 धन्य, ओ सीहा ! तेरा भाग्य ! माँड़ण भी युद्धकी तैयारी करने लगा ? 5 माँडण मेरेको मारेगा । 6 डोडियाल गाँव पट्टेमें कर दिया । 7 अब । 8 पास । 9 जाकरके कटारी छोड़ दी । 10 माँडणने कहा–'कला ! तू वीदेका पुत्र है, अब यह कटारी यदि तूं बँधाएगा तो बाँधूंगा । 11 जितना । 12 अपना । 13 उतनेके साथ । 14 यहाँ रास्तेमें बाहरली-पालड़ी गाँवमें उदयसिंह देवड़ा रहता है । 15 इस देवड़ा सरदारके पास सैन्य दल बहुत । 16 उदयसिंह सीहेके यहाँ ब्याहा था और उदयसिंहके यहाँ भी ब्याहा था । 17 माँडणकी बेटी समादृता और सीहेकी बेटी अनादृता । 18 भेजा । 19 बाईको कहना सो उदयसिंहको हमारी ओरसे गुजारिश करे ।

दियो छै।[1] म्है अठै सौ दोड़ां छां। मांहरै वैर छै।[2] आप मोटा सिरदार छो। आप टाळो करीजसी।'[3]

तितरै सीहैरा गुढा डोडियाळनूं जावै छै, सींधळावटी छाडी छै।[4] तितरैमें च्यार रजपूत बोड़ा सीहैरा चाकर, तिके रीसांणा छै[5], तियांनूं सीहो मनावण आयो छै।[6] सीहो आय उतरियो छै। रजपूत आयनै मिळिया। कहियो-'जो, भगत करां, उतरो।'[7] ताहरां सीहै रजपूतांनूं कहियो-'अठै मांडण नैड़ो[8] छै। हालो, आंपां जाय साथ भेळा हुवां।'[9] ताहरां रजपूत बोलिया-'सीहाजी! तोनूं चांदनूं कुण गोदमें राखै?[10] ताहरां सीहोजी उतरिया।[11] भगतरी[12] तयारी करण लागा रजपूत। ताहरां एक बाकरांनूं गयो, एक गोहूं, चावळ, घीनूं दोड़ियो।[13] कहियो-'सीहाजी! आप म्हांरै डेरै पधारो, अर म्हे भगत कियां विना क्युं कर मेल्हां?'[14] ताहरां उवां[15] राजपूतांरी मा साकरनूं[16] गाडै चढी हुती, सो देखै तो बरछियांरी झळोमळ हुय रही छै।[17]

अठै मांडण टळतो हो, अर बांभणांरा गाडा वेहता हुंता,[18] तेथ जायनै पूछियो[19]-'मैं गजनीखांनका चाकर हूँ। सीहा सींधळ कहां है सो मुझको बतलाओ?' ताहरां बांभण बोलिया-'ओ म्हांरो धणी वड़ हेठै बैठो छै, सीहमाल झळहळाट करै।'[20] त्युं मांडण घोड़ो फेरण लागो।[21] त्युं सूरजरी किरणसौं बरछी झळहळी।[22]

---

1 तुमारी ललाट पर दहीका तिलक किया है (हमारे यहाँ ब्याहे हो)। 2 यहाँ हमारी शत्रुता है, इसलिये हम यहाँ लूटमार कर रहे हैं। 3 आप उसे टाल देंगे (उस ओर ध्यान नहीं दें)। 4 इधर सीहेके गुढेके लोगोंने सींधलावाटी छोड़ दी है और डोडियालको जा रहे हैं। 5-6 और इधर सीहेके चार बोड़ा राजपूत चाकर रिसा गये थे, जिन्हें सीहा मनानेको आया है। 7 यहाँ ठहरें, हम आपके लिये भोजनकी तैयारी करें। 8 निकट। 9 चलें, अपन जाकर अपने लोगोंके सामिल हो जायें। 10 तुझ चाँदको कौन गोदमें रख सकता है (तुझको कौन शरण दे). ? 11 ठहरे। 12 भोजनकी। 13 तब एक आदमी बकरे लेने गया और एक दूसरा आदमी गेहूं, चावल और घी लेनेको भागा। 14 आप हमारे डेरे पधारें और हम आपकी महमानी किये बिना आपको कैसे जाने दें? 15 उन। 16 शक्करके लिये (?) 17 बछियें चमक रही हैं। 18 यहाँ माँडण जिस मार्ग पर टल रहा था वहाँ ब्राह्मणोंके गाडे चल रहे थे। 19 वहाँ जा करके पूछा। 20 तब ब्राह्मण बोले-यह प्रकाशमान हमारा स्वामी सीहमाल बड़ वृक्षके नीचे बैठा हुआ है। 21 माँडण अपना घोड़ा वापिस लौटाने लगा। 22 त्योंही सूरजकी किरणसे बर्छी चमकी।

ताहरां बांभण बोलियो–'म्हे मांहरो धणी मरायो ।[1] रे बाप ! तूं मांडण कूंपावत, म्हैं ओळखियो ।[2] पण होणी ।[3]

ताहरां मांडण कटक भेळो होयनै सीहै ऊपर नांखिया ।[4] इतरैमें रजपूतांणी गाडाहूं[5] उतर कहियो–'मनाया, मनाया, मनाया रे बाप !'[6] ताहरां डोकरी आपरा बेटानूं कहियो–'वाला ! सीहो घणां रजपूतांरो ठाकुर छै, भाई ! देखो ! किसड़ा हुवो छो ?'[7] ताहरां रजपूत संभिया ।[8] भली भांत लड़िया । सीहो कांम आयो । राघो बालो ताहरां सीहै कनै हुतो ।[9] पगै खोड़ो हुंतो ।[10] काठरी घोड़ी चढियो फिरतो ।[11] सु नव आदमी राघैरै हाथां रहिया ।[12] ताहरां बरछिये घायो,[13] ताहरां घोड़ी नांख दियो ।[14] कहियो–'जी, इतरा दिन दाळ-पाहोरो इण घोड़ीनूं म्हैं दियो छै, अबै थे देज्यो ।'[15]

राघै वडो पराक्रम कियो ।

सीहैनूं मार मांडण कूंपावत पाछो वळियो ।[16] उठै उदैसी देवड़ैरो डर । तितरैनूं रजपूत चोथो आयो ।[17] आयनै कहियो–'मा ! थारो कासूं गयो ?'[18] कहियो–'जी, महारो क्युंही नहीं गयो, जे बेटा ! तूं रहियो तो ?'[19] ताहरां रजपूत कहियो–'थारो साबतो ही गयो ।[20] हूं

1–2–3 तब ब्राह्मण बोला—'अरे बाप रे ! मैंने अब पहिचाना तूं मांडण कूंपावत है ! हमने हमारे स्वामीको मरवा दिया । लेकिन भवितव्यताकी बात है । 4 मांडणने अपने कटकके सामिल होकरके सीहाके ऊपर आक्रमण कर दिया । 5 गाडेसे । 6 अरे बाप ! मनाना, मनाना, मनाना रे इन्हें (रोकना, रोकना, रोकना रे इन्हें) । 7 तब बुढियाने अपने बेटोंसे कहा—रे प्रिय पुत्रो ! सीहा अनेक राजपूतोंका ठाकुर है, देखना इस बातका है भाई ! कि तुम इस समय अपना कर्त्तव्य कैसा निभा रहे हो ? 8 तब राजपूत तैयार हुए । 9 राघव बाला उस समय सीहेके पास था । 10 लंगड़ा था । 11 लकड़ेकी घोड़ी पर चढ़ा फिरता (लकड़ीकी बनी हुई टांगके सहारे चलता-फिरता था) । 12 नौ आदमी राघवके हाथसे मारे गये । 13 तब बर्छियोंके लगनेसे घायल हुआ । 15 तब उसकी घोड़ीने उसे नीचे डाल दिया । 15 इतने दिन घोड़ीको दालका पाहुरा मैंने दिया है, अब तुम देना । (पाहोरो=घोड़ेको चनेकी दाल आदि खिलाने के लिए चमड़ेका बना हुआ एक थैला, जिसमें दाल भर कर घोड़ेके मुंह पर चढ़ा दिया जाता है ।) 16 पीछा लौटा । 17 इतनेमें चौथा (चौथसिंह) राजपूत आया । 18 आकरके कहा—'माँ ! तेरे क्या गया ?' 19 (माने व्यंग्य में) कहा—'बेटा तू बच गया तो मेरा तो कुछ नहीं गया !' 20 'माँ ! अब तेरा सब कुछ गया ।'

तो कांम आईस ।[1] ताहरां ऊ रजपूत वांसै जायनै कांम आयो ।[2] हूक फूटी ।[3] मांडण कूंपावत सीहो सींधळ मारियो ।

इतरैमें उदैसी पण सुणियो । ताहरां उदैसी कहियो-'मा जाड़ूं मांडणरी ! अम्हांरी तळहटी सीहो मारियो ?'[4] ताहरां मांडणरी बेटी उदैसीरो पलो झालनै कहियो-'थां कासूं करणो ? आपरै वैर फिरै छै ? आपरै माथै दही दियो हुंतो ।[5] ताहरां उदैसीनूं पलो पकड़ ब्रैसाणियो ।[6] ताहरां कहे-'सांड मारूं मांडणरो (?) म्हांनूं कुरजपूत किया !'[7] ताहरां उदैसीरा रजपूत सारा कोटड़ी आंण भेळा हुवा छै ।[8] ऊभा वाट जोवै छै सिलह कियां ।[9] धणी आवै अर चढां ।[10]

तितरै सीहारी डीकरी निकळी, कह्यो-'रे कुरजपूतां ! उवैरा जमाई छै । मांडणरी बेटी रोकियो छै ।[11] अर थांहीमें कोई रज-पूतांणी-जायो छै, किना नहीं, इण कोटरी लाजरो रखवाळो ?'[12]

ताहरां ८२ घोड़ा पायगहरा छोडिनै एके घोड़ै बे-बे चढिया ।[13] आठ-वोसी जणा बगतरिया जाय पुहता ।[14] उतर घोड़ांहूं[15] नै[16] घोड़ा तो छोड़ दिया । आगै आय साथरै दे हथवासै ढालां नै उतर पड़िया, सारो साथ मारियो । कलो वीदावत कांम आयो । ५० रजपूतांसूं मांडणरो साथ कांम आयो । मांडण घावै पड़ियो ।[17] रजपूतां हेठै

---

1 मैं काम आ जाऊंगा । 2 फिर वह राजपूत पीछे जाकर काम आ गया । 3 साश्चर्य बात फैली । 4 'मांडणरी मा जाड़ूं' (एक गाली) हमारी तलहटीमें उसने सीहाको मार दिया ? 5 तब मांडणकी बेटी (उदयसिंहकी पत्नी)ने उदयसिंहके पल्लेको पकड़कर कहा--'तुमको क्या करना है ? अपनी दुश्मनीका बदला लेने को फिरते हैं ? आपके माथे पर तो उसने दहीका तिलक निकाला है ?' 6 बिठा दिया । 7 मांडणके साँड़को मारूंगा । इसने हमको कलंकित राजपूत बना दिया ! 8 तब उदयसिंहके सभी राजपूत आकर कोटड़ीमें इकट्ठे हुए हैं । 9 सिलह किए हुए खड़े प्रतीक्षा कर रहे हैं । 10 मालिक आ जाये और चढाई करें । 11 इतनेमें सीहेकी पुत्री निकल कर आई और उसने कहा--रे कुराजपूतो ! वे तो उसके दामाद हैं अतः मांडणकी बेटीने उन्हें रोक दिया है । 12 और तुममें कोई राजपूतानीका जाया है कि नहीं जो इस कोटकी लाजका रक्षक हो ? 13 तब घुड़शालाके ८२ घोड़ोंको खोल करके एक एक घोड़े पर दो-दो जने सवार हुए । 14 १६० कवचधारी जा पहुँचे । 15 घोड़ोंसे । 16 और । 17 मांडण घायल हुआ ।

कर लियो ।[1] इसो रजपूतांरो साथरो हुवो ।[2] उवै साबता ऊभा छै ।[3]

ताहरां राव चंद्रसेण घूघरोटरा पाहड़ां हुंतो'[4] सु रावरो साथ आयो । आयनै देवड़ांरो साथ सरब मारियो । इसड़ो[5] मांमलो हुवो । जिकण दिनसूंहीज[6] कलैरी सायबी[7] तूट गई । ताहरां सींधळांसूं वेढ करी, तद कलो पनरै वरसांरो हुतो ।[8]

मांडणरा पाटा बाधा ।[9] ऊबरियो ।[10]

सीहैनूं मारियो ।

॥ इति सीहै मांडणरी वात संपूर्ण ॥

---

1 राजपूतोंने उसको नीचे दबा दिया । 2 राजपूतोंके संहारसे ढेर लग गया । 3 वे लोग सभी सकुशल खड़े हैं । 4 घूघरोटके पहाड़ोंमें था । 5 ऐसा । 6 उसी दिन से । 7 साहिबी । 8 सींधलोंसे लड़ाई की तब कला केवल १५ वर्षका था । 9 मांडणके मरहम-पट्टी हुई । 10 बच गया ।

।। श्री गणेशाय नमः ।।

अथ वात रिणमलजीरी लिख्यते

जद राव चूंडोजी कांम आया, ताहरां टीकैरो वखत हुवो। ताहरां राव रिणमलजीनूं टीको देता हुंता। इतरै[1] रिणधीर चूंडावत दरबार आयो नै[2] सतो चूंडावत बैठो हुंतो।[3] रिणधीर सतैनूं देख, कह्यो–'सता! तनै टीको देवां, जो क्युंही[4] देवै तो।' ताहरां सतो बोलियो–'राज! टीको रिणमलजीरो छै।'[5] ताहरां रिणधीर कह्यो–'राज! दुहाई छै।'[6] तद[7] सतै रणधीरनूं कही–'धरती मां आध थांनै देवां।'[8] ताहरां रिणधीर पागड़ो छाड[9] आयनै सतैरै टीको कियो। रिणमलजीनूं कह्यो–'जो पटो लेवो तो आवो।'

ताहरां रिणमलजी पटो नाकार नीसरिया।[10] रांणै मोकल पासै गया। रांणै मोकल रिणमलजीरो ऊपर कियो।[11] कह्यो–'सतैनूं दूर कर तनै टीको दिरावस्यां।' तद रांणो मोकल, राव रिणमल चढिया।[12]

ताहरां सतो सांम्हो आयो अर रणधीर नागोरीखांननूं ले आयो। आयनै सीम माथै वेढ हुई।[13] नागोरीखांनरै मुंहडै आया रिणमलजी।[14] अर सतो नै रिणधीर रांणै सांम्हां आया।[15] रिणधीर, सते आगै रांणोजी भागा। नागोरीखांन रिणमलजी आगै भागो। तद सतैरा लोकां कह्यो–'फतै सतैरी।'[16] रिणमलजीरा लोगां कह्यो–'फतै रिणमलजीरी।' पछै दोनांई भाईयां रांम-रांम किया।[17] आपस मांहै वतळावण हुई।[18] रिणमलजी कह्यो–'नागोरीखांननूं वळै ले आवज्यो।'[19] ताहरां सतै कह्यो–'थेई रिणमलजी! रांणैजीनूं पूछज्यो।'

---

1 इतनेमें। 2 और। 3 बैठा हुआ था। 4 कुछ। 5 टीकेका अधिकार तो रणमलजीका है। 6 दुहाई देकर कहता हूं। 7 तब। 8 धरतीमें आधा भाग तुमको देता हूं। 9 घोड़ेसे उतर कर। 10 इनकार करके निकल गये। 11 सहायता की। 12 तब राना मोकल और राव रिणमल चढ़ कर आये। 13 सीमा ऊपर लड़ाई हुई। 14 नागोरीखानके सम्मुख रिणमलजी हुए। 15 और सत्ता रणधीर राणाके सम्मुख भिड़े। 16 तब सत्तेके लोगोंने कहा—'विजय सत्तेकी।' 17 फिर दोनों भाईयोंने परस्पर मिल कर एक दूसरेको राम-राम किये। 18 परस्पर बातचीत हुई। 19 रिणमलजीने कहा—'नागोरीखानको और लाना।

रिणमलजो फेर पाछा रांणै मोकलरै हीज गया। सतो मंडोवर जाय बैठो। राज कियो। कितराहेक दिनां दोनूं भायांरै कुंवर हुवा।[1] सतारै नरबद हुदो। रिणधीररै नापो हुवो। कुंवर राज करै। ताहरां हेक[2] दिन नरबद विचारियो जु–रिणधीर धरतीरो आध लेवै सो किसै वास्तै ?[3] रिणधीरनूं दूर करीस।[4]

ताहरां हेक दिन रुपिया ४००) आया। ताहरां नरबद आध दियो नहीं। नरबद दाब बैठो। ताहरां एक दिन नापो बैठो हुतो, ताहरां कमांण १ कठाई सौं पेस आई।[5] ताहरां कमांण नापै खांचनै तोड़ नांखी।[6] ताहरां नरबद कह्यो–'भाई ! भांजी क्युं ?'[7] ताहरां नापै कह्यो–'देसरो हासल आवै तैमें[8] आध मांगूं। कालि थेली आई, तैं मोनूं दीवी क्युं नहीं ?[9] ताहरां नरबद थेली काढि वांट लीवी।[10] ऊठ घरै गया।[11]

नरबद पालीरा सोनगरांरो भांणेजो।[12] नापो सोनगरांरै जुंवांई।'[13] ताहरां नरबद कह्यो–'मांमाजी ! थांनूं हूं व्हालो कै नापो ?'[14] ताहरां कह्यो–'म्हारै तो थे बिन्है बराबर।[15] पिण तूं विशेष, जु थारै वास रहां।'[16] ताहरां नरबद कह्यो–'नापैनूं विस देवो।' तद कह्यो–'म्हांसूं तो ओ कांम कोई हुवै नहीं।'[17] ताहरां एक छोकरी हुंती।[18] तिणनूं[19] नरबद लोभ दिखाय, विस दिरायो।[20] नापोजी मुंवा।[21]

---

1 कितनेक दिनोंके बाद दोनों भाइयोंके कुंवर उत्पन्न हुए। 2 एक। 3 रिणधीर धरतीकी आमदनीमें आधा भाग लेता है सो किसलिए ? 4 रिणधीरको दूर करूंगा। 5 एक कमान कहींसे भेट में आई। 6 नापाने कमानको खींच करके तोड़ डाला। 7 भाई ! इसको क्यों तोड़ा ? 8 उसमें। 9 कल थेली आई थी, उसमेंसे मुझको क्यों नहीं दिया ? 10 तब नरबदने थेली निकाल कर बाँट ली। 11 फिर वहाँसे उठ कर घरको गये। 12 नरबद पालीके सोनगरोंका भानजा। 13 नापा सोनगरोंका दामाद। 14 तुमको मैं प्रिय हूं कि नापा ? 15 मेरे तो तुम दोनों बराबर हो। 16 लेकिन तू विशेष है, क्योंकि मैं तेरे यहाँ रह रहा हूं। 17 मेरेसे यह काम नहीं होनेका। 18 तब एक दासी थी। 19 उसको। 20 विष दिलवाया। 21 नापाजी मारे गये।

ताहरां नरबद रिणधीर मारणनूं कटक भेळो कियो ।[1] ताहरां रिणधीर आपरा आदमी मेलिया ।[2] खबर करो जु 'कठैनूं कटक भेळो करैं छै ?'[3] तद आदमियां आय पूछियो कांमदार मुसद्दियांनूं जु– 'कटक कै ऊपर छै ?'[4] ताहरां वां[5] कह्यो–म्हांनूं तो खबर काई[6] नहीं ।'

तद आदमी मोदीरै आया, बैठा । दयाळ डोड तैसौं नरबदरै आलोच ।[7] दयाळनूं रिणधीर छोटै थकैनूं पाळियो हुंतो ।[8] तद दयाळ मोदीरै रिणधीररा आदमी आया । मोदी वां आदमियांनै सारी ही वसत तोल दीधी[9]; पण मोदी घी देवै नहीं । ताहरां कह्यो–'रे दयाळ मोदी ! घी दे ।' ताहरां दयाळ मोदी कह्यो–'काळैरै पीळो घणो ही छै ।'[10] इतरो[11] कहि मोदी घी दियो । पछै रिणधीररा परधांन पाछा रिणधीर कनै[12] आया । आयनै कह्यो–'राज ! कटकरी खबर काई नहीं जु किण ऊपर कटक छै ?'[13] तद रिणधीर कह्यो–'रे, क्यूं हो दयाळ मोदी ही कह्यो?' ताहरां कह्यो– राज ! बीजो तो क्युं ही कह्यो नहीं ।[14] म्हे इतरो कह्यो[15]–'मोदी घिरत देवै नहीं ?' तद मोदी कह्यो–'काळैरै पीळो घणो ही छै ।' ताहरां रिणधीर कह्यो– 'रे ! दयाळियो बीजो कासूं कहै ?[16] काळो हूं, पीळो म्हारै सोनो, तिकै ऊपर कटक ।[17] ओ कटक म्हारैं ऊपर छै ।'[18]

ताहरां रिणधीर पण कटक कियो । रोजगार सारांनूं चुकायो । रजपूतां सारांही कह्यो–'थांहरै साथ छां ।'[19]

---

1 सेना इकट्ठी की । 2 रिणधीरने अपने आदमी भेजे । 3 किधरके लिए सेना इकट्ठी कर रहा है ? 4 कटक किसके ऊपर है ? 5 उन्होंने । 6 कुछ । 7 दयाल डोड जिसरो नरबदका परामर्श (मित्रता) । 8 दयालका रणधीरने उसकी छोटी अवस्थामें पालन किया था । 9 सभी वस्तुएँ तोल कर दे दीं । 10 कालेके यहां पीला बहुत है । (सांकेतिक भाषाका संदेश) 11 इतना । 12 पास । 13 सेनाकी तैयारीके सम्बन्धमें कुछ भी पता नहीं लग सका कि किसके ऊपर चढ़ाई करनेके लिए यह सेना तैयार की गई हैं ? 14 दूसरा तो कुछ नहीं कहा । 15 हमने इतना कहा । 16 अरे ! दयालिया दूसरी क्या बात कहे ? 17 काला तो मैं हूं और पीला मेरे पासका सोना (धन-माल) है, जिसके ऊपर यह धावा है । 18 अतः यह सेनाकी तैयारी मेरे ऊपर है । 19 सभी राज-पूतोंने कहा कि हम आपके साथ हैं ।

पछै रिणधीरजी पण रांणैरै गया, रिणमलजी पासै ।[1] रिणमलजीनूं कह्यो–'हालो, थांनै मंडोवररो टीको देराऊं ।'[2] ताहरां रातरा रांणैजी पासै गया । रिणधीरजी रांणोजी मिळिया । ताहरां रांणैजी कह्यो–'मांमोजी ! क्युं आया ?' ताहरां रिणमलजी कह्यो–'म्हांनूं मंडोवर देण आया छै ।'[3] ताहरां रांणैजी कह्यो–'म्हे ई आवस्यां ।'[4] ताहरां रांणैजीनूं ले अर सतै ऊपर गया ।[5]

ताहरां नरवदनूं सतै कह्यो–'तूं पण नागोरीखांननूं ले आव ।'[6] नरवद कूच कर कोस १ गयो, ताहरां रात पड़ी । हेकलो ही फिर नै पूठो सतैजी पासै आयो ।[7] छांनै लुक, अर मा बापरी वात सुणणनूं लागो ।[8]

ताहरां सतो सोनगरानं कहण लागो–'सोनगरीजी ! नरवद जांणियो, बाप कपूत हुवो, जु रिणधीरजीनूं आध देवै ।[9] पण रिणधीर विना मंडोहर रहै नहीं ।'[10] हमैं[11] नागोरीखांननूं लेवण गयो छै । सु नागोरीखांन हमैं आवै नहीं । रिणमलजीरा हाथ देख गयो छै ।[12] भली हुई, हूं कांम आईस ।'[13]

इतरै नरवद बोलियो–'जु म्हनै नागोरीखांनरै किसै वास्तै मेल्हो ? हूं ई लड़ीस ।[14] म्हैं पण पण कियो छै, हूं ई कांम आईस ।'[15] ताहरां सतै कह्यो–'हूं आही कहतो हुतो ।'[16] ताहरां नरवद आय नगारो दरायो ।[17] अर लड़ाई कीवी । नरवद खेत पड़ियो ।[18] साथै इतरा

---

1 फिर रिणधीरजी भी रिणमलजीके पास राणाके यहाँ गये । 2 चलिये, आपको मंडोरका टीका दिलवाऊं । 3 मुझे मंडोर देनेके लिए आये हैं । 4 हम भी आयेंगे । 5 तब राणाजीको साथमें लेकर सत्ते पर आक्रमण करनेको गये । 6 तू भी नागोरीखान को ले आ । 7 अकेला ही लौट करके वापिस सत्ताजीके पास आ गया । 8 छिप करके माता-पिताकी बातें सुनने लगा । 9 सोनगरीजी ! नरवदने जाना है कि उसका बाप भी ऐसा कुपूत (कु बाप) हो गया सो रिणधीरको आधा राज्य दे रहा है । 10 परन्तु रणधीरके बिना मंडोर अधिकारमें रहनेका नहीं । 11 अब । 12 नागोरीखान अब आनेका नहीं, क्योंकि वह रिणमलजीके हाथोंका चमत्कार देख गया है । 13 अच्छा हुआ, मैं अब काम आ जाऊँगा । इतनेमें नरवद प्रगट होकर बोला—तो फिर मुझे नागोरीखानके पास किसलिए भेज रहे हो ? 14 मैं भी लड़ूंगा ।' 15 मैंने भी प्रतिज्ञा करली है कि मैं भी काम आ जाऊंगा । 16 मैं यही कहता था । 17 तब नरवदने आकर नगारा बजवाया । 18 नरवद घायल होकर धराशायी हुआ ।

रजपूत भला-भला कांम आया । चौहथ ईंदो कांम आयो[1] , पण हुता सु सारा ही निरवाह्या ।[2] जीयो ईंदो कांम आयो । बीजा[3] ही घणा रजपूत कांम आया । नरबदजीरै घाव लागा, एक आंख फूटी ।[4] नर-बदजीनूं रांणोजी उठाय ले गया ।[5] रिणमलजीनूं मंडोवर बैसांण, टीको दे, रांणाजी पधारिया ।[6]

ताहरां सतोजी पण रांणैजीरै गया । उठै जाय देवलोक हुवा ।[7]

तठा पछै रिणमलजी नित-री-नित गोठां करै ।[8] तै ऊपर सोन-गरांरा परधांन देखणनूं आया । सोनगरांरी ठकुराई नाडूल ।[9] ताहरां परधांनां पाछा जायनै कह्यो–'का तो राठोड़नूं परणाईजै, नहीं तो राठोड़ थांसूं आघो नहीं काढै ।[10] राठोड़ थांनूं मारसी ।[11] इसो दीसै छै ।'[12] तद सोनगरां राव रिणमलजीनूं परणाइया ।[13] लोलैजी सोनगरैरी बेटी परणाई ।[14]

परणायां पछै ही सोनगरां दीठो–'रिणमल भलो नहीं ।'[15] ताहरां सोनगरां रिणमलजीसूं चूक तेवड़ियो ।[16] सोणहर रिणमलजी पोढिया हुता ।[17] तद लोलैजी रिणमलजीरी सासूनूं कह्यो–'आज रांमीबाई रांड हुसी ।'[18] ताहरां रिणमलजीरी सासू कह्यो–'भली हुई । एक दीकरी मुंई लागी तो कासूं हुवै छै ?'[19] इतरै लोलैजीनूं प्यालो दारूरो दियो ।[20] ताहरां लोलोजी तो पोढ रह्या ।[21]

1–2 चोहथ ईंदा काम आया, इसने जो पन ले रखे थे सब निबाहे । 3 दूसरे । 4 नरबदजीके घाव लगे, एक आंख फूट गई । 5 नरबदजीको राणाजी उठवा कर ले गये । 6 रिणमलजीको मंडोरमें टीका देकर राणाजी वापिस गये । 7 वहां जाकर मर गये । 8 जिसके बाद रिणमलजी नित्य प्रति दावतें करते हैं । 9 सोनगरोंकी ठकु-राई नाडोलमें । 10 या तो राठौड़को व्याह दें नहीं तो राठौड़ तुमको छोड़ेंगे नहीं । 11 राठौड़ तुमको मार देंगे । 12 ऐसा ढंग दिखाई देता है । 13 तब सोनगरोंने राव रिण-मलजीको व्याहा । 14 लोलाजी सोनगरेकी बेटी ब्याह दी । 15 व्याह देनेके बाद भी सोनगरोंने देखा कि रिणमलका व्यवहार अच्छा नहीं है । 16 तब सोनगरोंने रिणमलजी को धोखेमे मारनेकी ठानी । 17 शयनघरमें रिणमलजी सोए हुए थे । 18 आज रामी-बाई विधवा हो जायेगी । 19 अच्छा हुआ, एक लड़की मृतककी स्त्री (विधवा) हो गई तो क्या बिगड़ जाता है ? 20 इतनेमें उसने लोलेजीको शराबका प्याला दिया । 21 तब लोलोजी नशेमें हो गये ।

ताहरां रांमीनूं आय कह्यो–"जु रिणमलजीसूं चूक छै तूं कहि, नीसरो।"[1] ताहरां रांमी आयनै रिणमलजीनूं कह्यो–'थे नीसरो, थां सूं चूक छै।'[2] ताहरां रिणमलजी ऊपर घावड़िया[3] आया। ताहरां रिणमलजी नीसर गया।[4] ताहरां सासू कह्यो–'म्हांरांरी ऊपर राखै।'[5]

पछै रिणमलजी घरै गया। अबै जायनै सोनगरांसूं वैर मांडियो।[6] पण[7] सोनगरा हाथ आवै नहीं। तद सोमवाररै दिन सोनगरा आसापुरीरै देहरै आय गोठ करै; सोमवारिया अमल करै।[8] अमलांसूं छकै सु मांचां घातियां सूता घोरावै।[9] ताहरां हेक दिन हेरो कर सारां ही सोनगरांनूं मांचां सूतांनूं मारिया।[10] मार अर नाडूळाईरै कोहर अखा वेरै मांहि नांख दिया।[11] नीचै और सारांहीनूं दिया।[12] ऊपर सगां साळांनूं दिया।[13] कह्यो–'जी, सासूसूं कौल छै, ऐ ऊपर देवो'[14] कह्यो हुतो–'म्हांरांरो ऊपर करै, सु ऊपर देवो।'[15] पछै धरती सारी ही लीवी।

पछै फेर रांणै मोकलसूं मिलण गया। रिणमलजी रांणा पासै रहै। उठै रहितां चाचै सीसोदियै, महिपै पमार रांणैजीसौं चूक कियो।[16] तद चूक रिणमलजी लाधो।[17] पण रांणैनूं खबर काई[18] नहीं पड़ी। हेक दिन चाचो, महिपो मलेसी डोडियेरै घरे गया।[19]

---

1 तब रामीके पास आकर उसने कहा कि आज रिणमलजीके साथ चूक है, तू उन्हें कह दे कि यहांसे निकल जाओ। 2 आप निकल जाओ, तुमारे साथ आज धोखा है। 3 घातक लोग। 4 रिणमलजी निकल गये। 5 मेरे वालोंकी सहायता करना। 6 अब सोनगरोंसे शत्रुता ठानी। 7 परन्तु। 8 प्रति सोमवारको आशापुरी देवीके मंदिर जाकर दावतें करते हैं और नियमित रूपसे प्रति सोमवार वहाँ अफीम गोष्ठी करते हैं। 9 अफीमके नशेमें चूर होकर खाटोंमें सोये हुए खुर्राटे मारते हैं। 10 मांचों पर सोते हुओंको मार डाला 11 मार करके नाडूलाई के आखा-वेरे नामक कुएँमें डाल दिये। 12–13 दूसरे सभीको तो सबके नीचे डाला और सगे-सम्बन्धियों और सालोंको सबके ऊपर डाला। 14 कहा कि सासूसे कौल किया है सो इनको ऊपर देओ। 15 सासने कहा था कि हमारे वालोंको ऊपर करना अतः इनको सबके ऊपर देओ। 16 वहां रहते थे, उस समय चाचा सिसोदिये और महिपा पँवारने राणाजीसे चूक करनेका विचार किया। 17 रिणमलजीको इस चूकका भेद मालूम हो गया। 18 कुछ भी। 19 एक दिन चाचा और महिपा मलेसी डोडियाके घर पर गये।

मलेसी रांणैजीरो खवास । ताहरां रिणमलजी पण जासूस लगायो हुतो ।[1] कह्यो–'जु देखां, ग्रै किसी वात करै छै ?'[2] ताहरां मलेसीनूं ग्रै तो घणा ही कह रहिया—[3] 'जु तूं म्हां में भिळ ।'[4] पण मलेसी भिळै नहीं ।

ताहरां जासूसां ग्राय रिणमलजीनूं कह्यो, ताहरां रांणोजी मांनै नहीं।

यूं करतां रिणमलजी तो पूठा मंडोहर पधारिया ।[5] वांसै राणैजीनूं चूक कियो ।[6] तद रांणोजी ग्रचळदास खीचीरी मदतनूं गढ-सूं उतरिया ग्रर नीचै डेरो कियो ।[7]

तद महिपै चाचैनूं कह्यो–'जु ग्राज रांणो मरै तो मरै; नहीं तो पछै मरणरो नहीं ।'[8] ताहरां चाचो, मेरो, महिपो साथ कर ग्राया । तद रांणोजी कह्यो–'ग्रै खातणवाळा ग्रावै सु भला नहीं, जो गोहुवाळ मांहै ग्रावै ?'[9] इतरी मरजाद हुंती, ग्रै गोहुवाळां मांहै ग्रावण पावता नहीं, सो ग्राया ।'[10] ताहरां मलेसी डोडियै कह्यो–'जु थांनूं ग्रागै रिणमलजी कह्यो हुंतो जु ईंयांरै थांसूं चूक छै ।'[11] ताहरां रांणोजी कह्यो–'ग्रै हरांमखोर हणां क्युं ?' ताहरां मलेसी कह्यो–'ग्रागै म्हैं न तो कह्यो हुंतो ? पण हमैं तो देखोईज छो ।'[13]

पछै वडी लड़ाई हुई । नव जणा रांणाजीरै हाथ रह्या ।[14] पांच जणा रांणीजी हाडीजीरै हाथ रह्या ।[15] पांच जणा मलेसी डोडियारै हाथां रह्या । रांणोजी कांम ग्राया । चाचा महीपैरै हळका सा घाव लागा ।

---

1 रिणमलजीने भी उनके पीछे जासूस लगा रखा था । 2 देखें, ये लोग क्या बातें करते हैं । 3–4 मलेसीको वहुत कहा कि तू हमारे शामिल हो जा । 5 इस बीच रिणमलजी तो वापिस मंडोर चले गये । 6 इनके जानेके पीछे राणाजीको चूक किया । 7 राणाजी ग्रचलदास खीचीकी मददको जानेके लिये गढ़से उतरे ग्रौर नीचे ग्राकर डेरा डाला । 8 तब महिपेने चाचासे कहा कि राणाको ग्राज मारें तो मरे, नहीं तो फिर मरनेका नहीं । 9–10 ये खातिन वाले ग्रा रहे हैं सो खैर नहीं, जौ वाले (निम्न वर्गवाले) गेहूं वालों (उच्च वर्ग वालों) के साथ ग्रा रहे हैं ? यह मर्यादा थी कि ये (निम्न वर्ग वाले) गेहूं वालों (उच्च वर्ग वालों) के साथ ग्रा नहीं सकते सो ग्रा रहे हैं । 11 मलेसी डोडियेने कहा कि ग्रापको रिणमलजीने कहा था कि इन लोगोंका ग्रापके साथ चूक है । 12 पर ये हरामखोर इस समय क्यों ? 13 मलेसीने कहा कि मैंने ग्रापको कहा नहीं था ? ग्रौर ग्रब तो ग्राप देख ही रहे हो । 14–15 नौ व्यक्ति राणाजीके हाथ रहे ग्रौर पांच जने राणी हाडीजीके हाथ कांम ग्राये ।

कुंवर कुंभो नीसरियो ।[1] वांसां वाहर हुई ।[2] कुंभो पटेलरै घरे गयो । पटेलरै घोड़ी दोय हुंती । ताहरां पटेल कह्यो–'हेके घोड़ी तूं चढि चाल, नै हेक बीजी घोड़ी वाढि जा ।[3] नहीं तर तनै ईयै घोड़ी चढियो पहुंचसी ।[4] ग्रै घोड़ी वाढो पछै कोई न पहुंचै ।[5]

ताहरां हेके घोड़ी चढियो, हेक वाढि गयो ।[6] लारांसूं वाहर ग्राई ।[7] पटेलनूं पूछियो–'कुंभो कठै ?'[8] ताहरां पटेल कह्यो–'ग्रठै घोड़ी २ हुंती, सु एकण घोड़ी चढ गयो ।'[9] ताहरां दूसरी घोड़ी जाय देखै तो वाढी पड़ी छै ।[10] ताहरां वाहर पाछी फिरी ।

रांणो चाचो हुवो ।[11] महिपो परधांन हुवो ।[12] कुंभो विखै नीसरियो ।[13]

इतरै[14] रावजी रिणमलजीनूं खबर हुई–'जू रांणोजी मारिया ।'[15] ताहरां रिणमलजी घणा सूंस लिया ।[16] ताहरां रावजी फोज कर मेवाड़ ग्राया । चाचैसूं लड़ाई हुई । चाचो भागो । रिणमलजीरी फतै हुई । चाचो मेरो भाग ग्रर पहियड़रै भाखरै चढ गया ।[17] ताहरां राव रिणमलजी रांणै कुंभैनूं टीको दियो ।[18]

ग्रै पण पहियड़रै डूंगरां चढिया ।[19] दौड़ा करै, पण जोर कोई लागो नहीं । विचाळै एक भील रहै ।[20] तैंरो बाप रिणमलजी मारियो हुंतो ।[21] तिकणरी पीठ वै राखै ।[22]

---

1 कुंवर कुंभा भाग निकला । 2 उसके पीछे वाहर गई । 3 एक घोड़ी पर तू चढ कर चला जा और दूसरी घोड़ीको काट कर चला जा । 4 नहीं तो इस दूसरी घोड़ी पर चढ़ कर वे तुझे पहुँच जायेंगे । 5 इस घोड़ीको काट दी तो फिर तुझे कोई नहीं पहुँच सकेगा । 6 तब एक घोड़ीको काट कर और दूसरी पर चढ़ कर चला गया । 7 पीछेसे वाहर चढ़ कर आई । 8 कुंभा कहाँ है ? 9 यहाँ दो घोड़ियें थीं जिनमें से एक घोड़ी पर चढ़ कर चला गया । 10 कटी हुई पड़ी है । 11–12 चाचा राणा बन गया । महिपा उसका प्रधान हो गया । 13 कुंभा संकटावस्थामें भाग निकला । 14 इतनेमें । 15 राणाजी मारे गये । 16 तब रिणमलजीने कई प्रतिज्ञाएँ कीं । 17 चाचा और मेरा भाग कर पहियड़के पहाड़ों पर चढ़ गये । 18 तब राव रिणमलजीने राणा कुंभाको टीका किया । 16 ये (राव रिणमल) भी पहियड़के पहाड़ों पर चढ़े । 20 (पहाड़ोंके) बीचमें एक भील रहता है । 21 जिसके वापको रिणमलजीने मारा था । 23 जिससे वह उनकी (चाचा मेराकी) सहायता करता है ।

यों रहतां हेक दिन रिणमलजी एकल असवार भीलरै घरै जाय नीसरिया ![1] भील घरै हुंतो नहीं ।[2] भीलरी मा बैठी हुंती । तैंनू बैहन कह जाय बैठा ।[3] भीलणी कह्यो–'वीरा ! थे बुरी कीवी, पण थे घरै आया ।[4] अबै कासूं हुवै ?'[5] ताहरां कह्यो–'वीरा ! थे घर मांहै पोढो ।'[6] ताहरां घर मांहै पोढिया ।

यूं करतां पांचे ही भाई भील आया । आयनै मा आगै जीमणनूं आया ।[7] ताहरां भीलांनूं मा पूछियो–'जु, बेटा ! हमार रिणमल राठोड़ आवै तो कासूं करो ?'[8] तद कह्यो–'कासूं करां ? मारां ।'[9] ताहरां वडो बेटो बोलियो । कह्यो–'मा ! जे घरे आवै रिणमल, तो न मारां ।'[10] ताहरां कह्यो–'साबास बेटा ! वैरीनूं ही घरां आया न मारिजै ।'[11]

इतरै तो रिणमलजीनूं साद कियो–'जु वीरा ! आव !'[12] ताहरां रिणमलजी बाहिर आया । भीलांसूं मिळिया । भीलां वडी मनुहार करी । वडी जाबता करी ।[13] भीलां पूछियो–'जु थे मरणनूं अठै किसै वास्तै आया ?'[14] तद कह्यो–'भांणेज ! म्हनै तो खण छै, जु धांन चाचै मारियै खाऊं, पण थां आगै मार सकूं नहीं ।'[15] ताहरां भीलां कह्यो–'जु थांनै म्हे हमैं क्युं ही कहां नहीं ।'[16]

ताहरां रिणमलजी पाछा आया । आपरो कटक ले अर पहियड़रै भाखरां नीचै आया ।[17] ताहरां भीलां कह्यो–'पहियड़रै भाखरां वीच

---

1 ऐसी स्थितिमें एक दिन रिणमलजी अकेले सवार होकर उस भीलके घर जा पहुंचे । 2 भील घर पर नहीं था । 3 उसको 'बहिन' संबोधन करके उसके पास जा बैठे । 4–5 भीलनीने कहा कि भाई ! तुमने बुरा किया, पर अब तुम हमारे घर पर आ गये हो, अब क्या हो ? (अब तुमारा कुछ नहीं बिगड़ सकता ।) 6 भाई ! अब तुम घरमें जाकर सो जाओ । 7 आकरके अपनी मा के पास खाना खानेको गये । 8 बेटा ! अभी रिणमल राठोड़ यदि यहां आ जाय तो क्या करो ? 9 तब कहा—'करें क्या ? मार देंगे ।' 10 मा ! यदि रिणमल अपने घर पर आ जाय तो नहीं मारेंगे । 11 शत्रु भी हो, पर यदि वह घर पर आ जाय तो नहीं मारा जाना चाहिये । 12 इतनेमें तो भीलनीने पुकारा—'वीरा ! आजाओ' । 13 वड़ी रखवाली की । 14 आप मरनेके लिये यहां किसलिये आ गये ? 15 तब कहा—भानजो ! मैंने यह बाधा ले रखी है (प्रतिज्ञा की है) कि चाचाको मार करके ही अन्न खाऊंगा, परन्तु तुमारे होते हुए मार सकता नहीं । 16 अब हम आपको कुछ नहीं कहेंगे । 17 अपना कटक लेकर पहियड़ पहाड़के नीचे आये ।

एक सीहणी छै, सो मांणस आवतां देख गाजसी, तद उवै सावधांन हुसी ।'[1]

ताहरां राव रिणमलजी हेकाहेक पगडांडी चढिया ।[2] वांसै[3] फोज चढी । ताहरां सीहणोरी थह बराबर गया ।[4] तद सीहणी बोली । तद अड़माल तरवाररी दीवी, सो दोय धड़ हुई पड़ी ।[5] सीहणी मारी ।

तितरै ऊपरलां कह्यो–'जु सावधांन ! सुणज्यो ! सीहणी गाजै छै ।'[6] पण सीहणी हेक वार हीज बोली ।[7] तैसूं ऊपरलांनै वेसास हुवो,[8] कह्यो–'जु हेक वार हीज बोली । किही जिनावरसूं बोली हुसी ।'[9] इतरै रिणमलजी घोड़ा नीचै राख, आप ऊपर चढिया ।[10] चढिनै दरवाजै गया । तद बरछी दरवाजैनूं वाही ।[11] ताहरां भीतरलां कह्यो–'ठाकुरां ! रिणमलजीरी बरछी हुवै ?'[12] ताहरां सारांही कह्यो–'ठाकुरां ! रिणमलजी छै ।'[13]

ताहरां चाचै मेरैसूं लड़ाई हुई । सीसोदियानूं मार पगां नीचै दीना ।[14] चाचो मारियो । महिपो जनानी पोसाख कर पहाड़सूं कूद गयो ।[15] रिणमलजी चाचैरी बेटी परणिया ।[16] धड़ बाजोट किया ।[17] बरछि-यांरी चँवरी कीवी ।[18] और कोई सीसोदियांरी कुंवारी बेटी हुती, रिणमलजी आपरा भायांनूं परणाई ।[19] रिणमलजी पाछा पधारिया ।

---

1 पहियड़के पहाड़ोंमें एक सिंहिनी है सो मनुष्यको आता हुआ देख कर दहाड़ेगी, तब वे लोग सावधान हो जायेंगे । 2 तब राव रिणमलजी एकाएक पगडंडीसे ही चढ़ गये । 3 पीछे । 4 तब सिंहिनीके गुफाके बराबरमें गये । 5 तब अड़माल (अड़कमल)ने तलवारसे प्रहार किया सो धड़के दो टुकड़े होकर पड़ गई । 6 तब ऊपर वालोंने (चाचा आदिने) कहा कि सावधान, सुनना, सिंहिनी दहाड़ रही है । 7 पर सिंहनी एक बार ही बोली । 8–9 जिससे ऊपर वालोंको विश्वास हुआ कि एक ही बार बोली है, सो किसी जानवरको देख कर बोली होगी । 10 स्वयं ऊपर चढ़े । 11 तब दरवाजेको बर्छी मारी । 12 तब भीतर वालोंने कहा --'ठाकुरो ! यह बर्छीका प्रहार रिणमलजीके हाथका हो ? 13 तब सब जनोंने कहा— ठाकुरो ! निश्चय रिणमलजी है । 14 सिसोदियोंको मार कर पाँवों तले दिये । 15 महिपा जनानी पोशाक पहिन कर बाहर निकल गया और पहाड़से कूद गया । 16 रिणमलजीने चाचा की बेटीसे विवाह किया । 17 धड़ोंको (लाशों को) बिछाकर विवाह-मंडपकी चौकी बनवाई गई । 18 बर्छियोंकी चौरी बनवाई । 19 और भी सिसोदियोंकी क्वारी लड़कियां थीं उन्हें अपने भाईबन्धुओं को व्याह दीं ।

महिपो अठैसूं मांडवरै पातसाह पासै गयो।[1] रांणोजीनूं अर रिणमलजीनूं खबर हुई, जु महिपो मांडव छै। ताहरां राणोजी अर रिणमलजी मांडवरै पातसाहनूं जोर घातियो जु 'म्हांरो चोर देवो।'[2] ताहरां पातसाह महिपैनूं कह्यो–'महिपा! हमै तूं म्हांसूं रहै नहीं।'[3] तद महिपै कह्यो–'म्हनै बाँध देवो मतां।'[4]

तद महिपो घोड़ै चढ नीसरियो। दरवाजै आयो तद घोड़ै सूधो गढसूं कूदियो।[5] घोड़ो तो पड़तां मुवो।[6] आप नाठो।[7] गुजरातरै पातसाहरै गयो।

रांणोजी नै[8] रिणमलजी पाछा चीत्रोड़[9] आया। रांणोजी सुखसूं राज करै छै। रिणमलजी देसरो कांम करै छै।

यूं करतां हेक[10] दिन महिपो लाकड़ियांरो भारो ले चीत्रोड़ मांहै आयो। महिपैरै एक बैर हुंती[11], अर एक बेटो हुंतो। अर वा बैर दुहागण हुंती।[12] तियैरै[13] घरै आयो महिपो। ताहरां बैर ओळखियो।[14] घर मांहै लियो। भीतर बैठो रहै। सूतरो कांम करै।[15] मोहरी नै जेवड़ा वटै।[16] सो एक मोहरी संवार अर बेटैरै हाथ दीवी, कह्यो–'रांणौजीरै नजर करै।[17] अर जो पूछै तो कहै, महिपो हाजर छै।' तद बेटो हजूर गयो।[18] ताहरां रांणोजी पूछियो। ताहरां कह्यो–'दीवांण! महिपो हाजर छै।'

पछै महिपो दीवांणसूं मिळियो[19], अर कह्यो–'दीवांण! धरती मेवाड़री राठोड़ां लीधी।[20] दीवांणनूं खबर नहीं।' ताहरां रांणैजीरै मन में डर पैठो[21]–'कदास मोनूं मार राज लेवै।'[22] ताहरां रांणैजी

---

1 महिपा यहांसे मांडवके बादशाहके पास चला गया। 2 तब राणोजी और रिणमलजीने मांडवके बादशाह पर जोर डाला कि हमारा चोर हमको देओ। 3 अब तू हमारेसे नहीं रखा जा सकता। 4 मुझे बंदी बना कर मत दो। 5 दरवाजे पर आया तब घोड़े सहित गढ़से कूद गया। 6 घोड़ा तो गिरते ही मर गया। 7 खुद भाग गया। 8 और। 9 चित्तौड़। 10 एक। 11 महिपाके एक स्त्री थी। 12 और वह स्त्री तिरस्कृत थी। 13 उसके। 14 तब स्त्रीने उसे पहचान लिया। 15 सूत्रकी वस्तुएँ बनानेका काम करता है। 16 मोहरी और जेवरी बटता है। 17 सो एक मोहरी सँवार करके बेटेके हाथ दी और कहा कि इसे लेजा कर राणाजीके नजर करदे। 18 तब उसका बेटा राणाजीकी कचहरीको गया। 19 पीछे महिपा दीवान (राणाजी) से मिला। 20 मेवाड़की धरती रोठोड़ोंने लेली। 21 राणाजीके मनमें भय घुसा। 22 कदाचित् मुझे मार कर राज्य ले ले।

साथ भेळो कियो ।[1] रिणमलजीसूं चूक तेवड़ायो ।[2] तद चूक रिणमलजीरै डूंम लाधो ।[3]

तद डूंम रावजीनूं कह्यो–'जु रांणैजीरै थांसूं चूक छै ।'[4] ताहरां रावजी मांनी नहीं । पण रावजी कुंवर तो सारा ही गढरी तळहटी राखिया ।[5]

यूं करतां हेक दिन रावजीसूं चूक कियो । पचीस गज पछेवड़ी रिणमलजीरै ढोलिये दोळी पळेटी ।[6] आप पोढिया हुंता ।[7] १७ जणा ऊपर घावड़िया आया ।[8] सोळै जणा तो मांचैरी फेटसूं मुंवा ।[9] अर महिपो भागो । रिणमलजी कांम आया । रिणधीर चूंडावत कांम आयो, रांणैजीरा मोहल जाय पड़ियो ।[10] सतो भाटी लूणकरणोत कांम आयो । रिणधीर सूरावत कांम आयो । बीजो ही घणो साथ कांम आयो ।[11] अर जोधाजी भायां समेत तळहटी हुंता, सु नीसरिया ।[12]

वांसैसूं फोजां वाहर चढी सो आडेवळै जाती पुहती ।[13] तठै[14] चरड़ो, चांदराव अरड़कमलोत, प्रथीराज, तेजसीह बीजो ही घणो साथ कांम आयो ।

रिणमलजीरा कुंवर चोवीसै कुसळै मंडोहर पुंहता[15] ।

॥ इति राव रिणमलजीरी वात सम्पूर्ण ॥

---

1 तब राणाजीने अपने साथ वालोंको इकट्ठा किया । 2 रिणमलजीसे चूक करनेकी तैयारी की । 3 तब धोखेके इस भेदका पता रिणमलजीके एक डूमको लग गया । 4 राणाजीका आपके ऊपर चूक है । 5 रावजीने इस बात पर विश्वास नहीं किया, परंतु अपने सभी कुंवरोंको गढ़की तलहटी ही में रखा । 6–7 जिस पलंग पर रिणमलजी सोये हुये थे उस पर पच्चीस गज लंबी पछेवड़ी (वस्त्र) लपेट दी । 8 १७ घातक ऊपर आये । 9 १६ जने तो पलंगकी फेटसे मर गये । 10 रिणधीर चूंडावत काम आया, पर स्वास निकल जानेके पहले राणाजीके महलों तक जाकर गिर पड़ा । 11 दूसरा भी साथ बहुत काम आया । 12 और जोधाजी अपने भाईयोंके साथ तलहटीमें थे सो निकल भागे । 13 पीछेसे फौज वाहर चढी सो आडावला (अरावली) जाकर उन्हें पहुंची । 14 वहां । 15 रिणमलजीके चौवीसों ही कुंवर सकुशल मंडोर जा पहुंचे ।

अथ नरबद सतावत री बात सुपियारदे लायो तै समैरी

नरबदजी सतावत मंडोहर राज करै। ताहरां सीहड़ सांखलो रूणरै धणी आपरी बेटी सुपियारदेरो नाळेर नरबदजीनूं मेल्हियो।[1] ताहरां नरबदजी ऊपर राव रिणमलजी, रांणो मोकळ आया।[2] तद लड़ाई हुई। नरबद घावै पड़ियो।[3] रिणमलजी मंडोहर लियो। जाय गादी बैठा। नरबदनूं रांणो मोकळ ले गयो।[4]

ताहरां नरबदरो इसो मामलो सुणियो, तद सांखलां सुपियारदेनूं नरसिंघ खींदावत जैतारणरो धणी सींधळ, तिणनूं परणाई।[5]

तठा पछै नरबदजी रांणैजी पासै रहै।[6] रांणैजीरै जीव-प्रांण।[7] रांणो बहोत प्यार करै।

ताहरां एकै दिन रांणैजीरा ओळगवां रांणैजीसूं मुजरो कियो, ताहरां खंभायची राग कियो।[8] ताहरां नरबद नीसासो नांखियो। ताहरां दीवांण पूछियो। कह्यो–'क्युं नीसासो नांखियो!'[9] ताहरां नरबद कह्यो–'यूं ही।' ताहरां दीवांण फुरमायो–'मंडोहर वदळै?[10] ताहरां नरबद कह्यो–'मंडोहर तो म्हारै हीज छै, काकै पासै छै सु।[11] पण और वात छै।'[12] ताहरां दीवांण फुरमायो–'जिकूं छै सो कहो[13] ताहरां नरबदजी कह्यो–'राज! म्हारी मांग नरसिंघ परणियो।[14] सांखलै परणाई, तैरो धोखो छै।'[15]

ताहरां रांणैजी तुरत सांखलै सीहड़नूं ओठी मेल्ह कहायो–'जु

---

1 रूणके स्वामी सांखला सीहड़नें अपनी बेटी सुपियारदेका नारियल नरबदजीको भेजा। 2 उस समय नरबदजी पर राव रिणमलजी और राणा मोकल चढकर आये। 3 नरबद आहत हुआ। 4 नरबदको राणा मोकल अपने साथ ले गया। 5 जब नरबदके संबंधमें यह बात सुनी तब सांखलोंने जैतारणके स्वामी नरसिंह खींदावतके साथ सुपियारदेका विवाह कर दिया। 6 जिसके बाद नरबदजी राणाजीके पास ही रहते हैं। 7 राणाजीके लिए जीव-प्राणकी भांति। 8 एक दिन राणाजीके गायकोंने (ढाढ़ियोंने) आकर मुजरा किया और खंभायची राग आलापी। 9 निःश्वास क्यों छोड़ा? 10 क्या मंडोरके लिए? 11-12 मंडोर तो मेरे काकाके पासमें है सो मेरे ही पास है, पर बात कुछ और है। 13 जो बात है सो कह दो। 14 मेरी मंगेतरको नरसिंह सींधल व्याह गया है। 15 सांखलोंने उसे व्याह दी, इस बातका धोखा है।

नरबदजीरी मांग देवो ।[1] ताहरां सांखलां कहायो–सुपियारदे तो परणाई, पण बीजी छोटी बेटी छै, सु लेवो ।'[2] ताहरां नरबदनूं रांणोजी कह्यो–'बीजी छोटी बेटी सीहड़जो थांनूं दोवी छै, जावो, परणोजो ।'[3] ताहरां नरबद कह्यो–'दीवांणजी ! परणीजूं, जे म्हनै सुपियारदे आरती करै तो परणीजूं ।[4] तद दीवांण फुरमायो–'करैली[5] पण नरबद कह्यो–'ना, दीवांण ! ओठी मेल्हीजै ।'[6] ताहरां दीवांण ओठी फेर मेल्हियो ।[7] ताहरां सांखलां कह्यो–'जु, आरती सुपियारदे करसी ।'[8] तद नरबदजीरी जांन[9] चढी ।

वांसै[10] दीवांणरी सभा मांहै वात हुई–'जु सुपियारदे आरतो करसो तो नरबदजी परणीजसी ।'[11] ताहरां नरसिंघ सींधळ पण उठै बैठो हुंतो ।[12] ताहरां नरसिंघ पण वात सुणी । तद नरसिंघ कह्यो–इतरो कासूं हुवो, जु नरबद जोरावरी आरती करासो ?'[13] तद रांणोजीरा लोकां कह्यो–'सु तो आरती करसी ?'[14]

ताहरां नरसिंघ पण उठैसूं चढियो ।[15] घरै आयो । सांखलांरा पण मांणस आया–'जु सुपियारदेनूं मेल्हो, वीमाह छै ।'[16] तद नरसिंघ मेल्है नहीं ।[17] अर सुपियारदे कहै–'हूं जाईस ।'[18] ताहरां नरसिंघ कह्यो–' आरती न करै तो मेल्हां ।'[19] ताहरां सुपियारदे कह्यो–

---

1 तब राणाजीने तुरंत ही सांखला सीहड़को ऊँट-सवार भेजकर कहलवाया कि नरबदजीकी मंगेतर देओ । 2 सांखलोंने उत्तर में कहलवाया कि सुपियारदे तो व्याह दी, परंतु दूसरी उसके छोटी बेटी और है सो व्याह लें । 3 दूसरी उसकी छोटी वेटी सीहड़जीने तुमको दे दी है. सो जाकर विवाह करलो । 4 दीवानजी ! व्याह लूंगा, परंतु इस शर्त पर कि यदि मेरी आरती सुपियारदे करे तो व्याहूं । 5 करेगी । 6 नहीं, दीवान ! ऊंट-सवार भेजिये । 7 तब दीवानने फिर ओठी भेजा । 8 आरती सुपियारदे करेगी । 9 वारात । 10 पीछे । 11 व्याहेंगे । 12 उस समय नरसिंघ सींधल भी वहां बैठा हुआ था । 13 ऐसी क्या बात होगई जो नरबद जबरदस्ती आरती करवायेगा । 14 सो तो आरती करेगी ? 15 तब नरसिंह भी वहांसे चढ़ा । 16 सांखलोंके आदमी भी आगये कि विवाह है, सो सुपियारदे को भेजो । 17 नरसिंह भेजता नहीं । 18 मैं जाऊंगी । 19 यदि आरती तू नहीं करे तो भेज दूं ।

'आरती न करां।'[1] ताहरां कवल वचन दे, गळै हाथ लाइ गई।[2] सुपियारदे पीहर आई।

जितरै जांन पण आई।[3] ताहरां नरबदजी तोरण आया।[4] बाजोट ऊपर आय ऊभा।[5] कह्यो–'आरतीरी तैयारी करावो।' सुपियारदेनूं कह्यो–'जु आरती करै।' ताहरां सुपियारदे कह्यो–'हूं आरती न करूं।' तद छोटी बैहन सुपियारदेरी आरती करणनूं आई।[6] नै नरबदजीनूं कह्यो–'राज ! सुपियारदे आरती करै छै।'[7] तरां नरबदजी कह्यो–'म्हैंसूं रांमत करो छो, जु, हूं आंधो ? आ सुपियारदे नहीं हुवै ?'[8]

ताहरां आपरा लोकांनूं कह्यो–'नगारो देरावो।'[9] ताहरां सांखलै कह्यो–'बाई ! हणां कुण देखै छै ? म्हांनूं ओ मारै छै।'[10]

ताहरां सुपियारदे आरती करणनूं आई।

ताहरां नरबदजीनूं कह्यो–'राज ! थे तो आरती करावो छो, पण उवै ठाकुर मनै कीवी छै, सु म्हनै दुख देसी तो ?'[11] तै ऊपर नरबदजी कह्यो–'ओ वचन छै। ऊ तोनूं दुख दै तो मोनूं तूं खबर करै, हूं आय ले जाईस।'[12]

ताहरां नरसिंघरो नाई हेरां ऊभो हुतो, तै साळूरै सहनांण

---

1 आरती नहीं करूंगी। 2 कौल वचन दे और गले हाथ लगाकर गई। ('गळै हाथ लाणो' मारवाड़ी भाषाका एक मुहावरा है, जिसका लक्ष्यार्थ होता है कि जिसके गलेके हाथ लगाया जाता है, उसकी शपथके साथ अमुक काम करने या नहीं करने की प्रतिज्ञा करना, होता है। गला काट देनेकी नृशंस हत्याके पापका भागी होना भी इसका लक्ष्यार्थ है)। 3 इतनेमें बारात भी आ गई। 4 तब नरबदजी तोरन पर आये। 5 बाजोट (पाटा) पर आकर खड़े हुए। 6 तब सुपियारदेकी छोटी बहिन आरती करनेको आई। 7 श्रीमान् ! सुपियारदे आरती कर रही है। 8 तब नरबदजीने कहा कि मेरेसे ही मज़ाक कर रहे हो ? क्या मैं अंधा हूं ? यह सुपियारदे नहीं हो सकती ? 9 तब (नरबदजीने) अपने लोगोंसे कहा कि नगाड़ा बजवाओ (युद्धकी तैयारी करो।) 10 तब सांखलेने कहा कि बाई ! अब कौन देखता है ? हमको यह मार रहा है। 11 तब (सांखलेने) नरबदजी को कहा कि श्रीमन् ! आप (सुपियारदेसे) आरती तो करवा रहे हैं, परंतु उस ठाकुरने मना किया है और वह फिर मुझे दुःख देगा तो ? (मेरी क्या गति होगी ?) 12 यदि वह तेरे को दुख दे तो मुझको खबर देना, मैं आ करके इसे ले जाऊंगा, यह मेरा वचन है।

कियो ।[1] अर नरबदजीरै खवास पासै पिचरको एक मुंहगै मोलरै अंतरसूं भरियो तैयार हुतो ।[2]

तद नरबदजी हाथ फेर कह्यो–'आ सुपियारदे हुवै ।'[3] तद खवास पिचरको छोड़ियो ।[4] सुपियारदेरै लागो । पछै आरती करी । वीमाह हुवो ।[5] नरबदजी हलांणो ले घरै गया ।[6]

सुपियारदे पिण घरे गई । तद उवै नाई नरसिंघनूं कह्यो–'राज ! आरती सुपियारदे कीधी ।'[7] ताहरां सुपियारदेनूं नरसिंघ पूछियो–'क्यां सांखली ! आरती कीवी ?'[8] ताहरां कह्यो–'मैं न कीवी ।' तद नाई कह्यो–'राज ? थां आरती कीवी । मैं साड़ीरै सहनांण कियो छै ।[9] अर अंतररा पण छांटा लागा छै ।'[10] ताहरां सुपियारदे कूड़ो हुई ।[11]

तहरां नरसिंघ ताजणा वाह्या ।[12] मुसकां बांधै मांचै नीचै नांखी ।[13] अर बीजी बैरनूं मांणस मेल्ह बुलाई ।[14] अर उवैनूं कह्यो–'आव, मांचै पण सूय ।'[15] तद सुपियारदे कह्यो–'मोनै मार, वाढ, खुसी पड़ै सु कर, पण म्हैं ऊपर बीजी बैर मांचै ऊपर मती बुलावै ।'[16] तोई नरसिंघ मांचै ऊपर सोकनूं[17] ले बैठो । ताहरां सुपियारदे मांटीरो नांम लेनै बोली ।[18] कह्यो–'नरसिंघ सींधळ ! तै करणी हुती सो कीवी,[19] पण जो ह्मैं थारै मांचै आऊं तो भाईरै मांचै आऊं ।'[20]

---

1 तब वहां नरसिंहका नाई जासूसीके लिये आया हुआ खड़ा था, उसने सुपियारदेके सालूके निशान कर दिया । (साळू=लाल रंग की एक कीमती ओढ़नी) 2 और नरबदजीके खवासके पास महंगे मूल्यके अतरसे भरी हुई पिचकारी तैयार थी । 3 तब नरबदजीने हाथ फिराकर कहा–'यह सुपियारदे हो सकती है । 4 तब खवासने पिचकारी छोड़ दी । 5 विवाह होगया । 6 नरबदजी अपनी पत्नी और दहेज लेकर घर गये । 7 तब उस नाईने नरसिंहको कहा कि आरती सुपियारदेने की । 8 क्यों सांखली ! तूने आरती की ? 9 मैंने साड़ीके निशान किया है । 10 और अतरके छींटे भी लगे हैं । 11 तब सुपियारदे झूंठी पड़ी । 12 तब नरसिंहने चाबुक मारे । 13 मुश्कें बांध कर खाटके नीचे डाल दिया । 14 दासीको भेजकर दूसरी स्त्रीको बुलाया । 15 और उसको कहा कि आव, खाट पर सो । 16 मुझे मारदो, काटदो, इच्छा हो सो कर, पर मेरे ऊपर खाट पर दूसरी स्त्रीको मत बुलाओ । 17 सौत को । 18 तब सुपियारदे अपने पतिका नाम लेकर बोली । 19/20 कहा कि नरसिंह सींधल ! तेरेको जो करना था सो कर लिया, पर अब जो तेरे खाट पर आऊं तो अपने भाईके खाट पर आऊं ।

तद छोकरी[1] हुती सु जाय सांखलीरी सासूनूं कह्यो–'जु सांखली मांहै इसी अवट हुई ।'[2] ताहरां सासू तुरत आई । नरसिंघ परहो हुवौ ।[3] सुपियारदेनूं छोड़ाय लीयाई । हमैं सुपियारदे गहणा उतार अबोलणै हुई थकी आपरै घरै रहै ।[4]

ताहरां कागद १ लिखियो नरबदजी साम्हां–'जु थांरी[5] आरती रो फळ मोनूं आो मिळियो छै ।' ताहरां कागद नरबदजी पासै गयो । नरबदजी कागद वांचनै कह्यो–'हूं आहीज[6] चाहतो हुतो । हमैं हूं तयार छूं ।'[7]

ताहरां नरबदजी वैहलिया[8] २ मोल लिया । सो वैहल जोड़नै[9] नित फेरै, भूंय चाढै ।[10] रातिब दै ।[11] यूं करतां तीस कोस जाय अर पाछा आवै, इसी भूंय चाढिया ।[12] ताहरां जांणियो–'हमैं पक्का हुवा ।'[13]

ताहरां नरबदजी चालियां । अर जैतारणरी वाड़ीरो ठीक कियो हुंतो[14] सो दिन बीसमैं[15] तो जैतारणरै गोरमैं[16] वाड़ो छै जेथ[17] आया । ताहरां जिको[18] सुपियारदे रो कागळ ल्यायो हुंतो[19], तै साथै मरदांनी पोसाख मेल्ही सुपियारदेनूं ।[20] ताहरां सुपियारदे वागो पैहर, पाघ बांध, हथियार बांध अर नीसरी ।[21] अर गांव मांहै रावळिया रांमत रमता हुंता ।[22] सींधळांरो साथ रमत देखणनूं गयो हुंतो ।[23] अर तै वेळा सुपियारदे नीसरी । जाहरां सुसरो बैठो हुंतो, सु आंखियां आंधो हुंतो, तैरै आगाकर नीसरी ।[24] ताहरां खींदै कह्यो–

---

1 दासी । 2 सांखलीकी ऐसी बुरी दशा हुई है । 3 नरसिंह दूर हो गया । 4 अब सुपियारदे सभी गहने उतार और अबोलना होकर अपने घरमें ही रहती है । 5 तुमारी । 6 यही । 7 अब मैं तैयार हूं । 8 बैल, नाटे कदके बैल । 9 वहलीमें जोड़कर । 10 अधिक दूर जानेका अभ्यास कराते हैं । 11 रातब खिलाते हैं । 12 इतनी दूरी पर जाकर वापिस आ जानेके अभ्यस्त कर दिये । 13 तब जाना कि अब पूरे तैयार हो गये । 14 जैतारनकी बाड़ीमें ठहरनेका तय किया था । 15 बीसवें दिन । 16 गांवके बाहरका वह मैदान जहां गांवका गो-समूह जंगलमें चरने जानेको इकट्ठा होता है । 17 जहां । 18 जो । 19 पत्र लाया था । 20 उसके साथमें सुपियारदेको मर्दानी पोशाक भेजी । 21 तब सुपियारदे बागा पहिन और पगड़ी और हथियार बांध कर निकल गई । 22 गांवमें रावल लोग तमाशा (खेल) कर रहे थे । 23 सभी सींघल खेल देखनेको गये हुए थे । 24 आंखोंसे अंधा उसका ससुर बैठा हुआ था, उसके आगे होकर निकली ।

कुण गयो रे ?'[1] ताहरां चरवैदार कह्यो–'राज ! अठै तो को नहीं ।'[2] ताहरां खींदै कह्यो–'नहीं क्यां ? कोई तो गयो ?'[3]

यों कहि, खींदो तो भीतर रावळा[4] मांहै गयो । आपरी बैर[5] पासै गयो । अर बैरनूं कह्यो–'ऊठि, अर बहू री खबर कर ।' ताहरां बैर कहचो–'क्युं ?' ताहरां खींदै कह्यो–'परणी आई तद सुपियारदेरै पग रो मचको सुणियो हुंतो, सु आज वळै सुणियो ।[6] ताहरां जांणां छां, नीसरी ।[7] उसड़ो[8] पग सुणियो ।' तद छोकरी मेल्ही ।[9] कहचो–'जु बहूरी खबर लै[10] ।' ताहरां सुपियारदे जावती, चोरसी मांचै ऊपर ढाळ, सीरखरो वींटो कर, तै ऊपर चोरसौ ढाळियो हुंतो ।[11] ताहरां छोकरी देख जायनै कह्यो–'वहुजी तो पोढिया छै ।'[12] ताहरां खींदै आपरो बैरनूं कह्यो–'छोकरीरो कांम नहीं, तू जायनै देख ।'[13] ताहरां सासू जायनै देखै तो सीरख पड़ी छै। पाछी आयनै कह्यो–'वहू नीसरी ।'

अर सुपियारदे नीसरी सु रावळियांरी रमत हुती तठै गई ।[14] ताहरां रावळियो थाळी फेरै हुंतो ।[15] ताहरां सुपियारदे आघी हुय थाळी मांहै मोहर घाती, अर चालती हुई ।[16] आगै नरबदजी वैहल लियां ऊभा हुंता ।[17] सुपियारदे तो जाय वैहल बैठी ।

अर अठै रावळियै आंण थाळी सिरदार आगै मेल्ही ।'[18] ताहरां सिरदार कह्यो–'आ मोहर के घाती ।'[19] ताहरां रावळियै कह्यो–'राज !

---

1 अरे ! कौन गया है ? 2 यहां तो कोई नहीं । 3 नहीं क्यों ? कोई तो गया है ? 4 अन्तःपुर । 5 अपनी स्त्री । 6 खींदेने कहा—विवाह करके जब प्रथम बार आई थी तब उसके पांवका झटका (चलनेकी ठसक) सुना था, वही आज पुनः सुनाई दिया । 7 इसलिए अनुमान होता है कि निकल गई । 8 वैसा । 9 तब दासीको भेजा । 10 बहूकी खबर कर । 11 सुपियारदेने जाते समय खाटके ऊपर रजाईका लंबा वेष्टन बनाकर और उसके ऊपर चोरसा (चद्दर) डाल दिया था । 12 बहूजी तो सोई हुई हैं । 13 दासीका काम नहीं; तू खुद जाकर देख । 14 सुपियारदे घरसे निकल कर जहां रावलिये रमत कर रहे थे, वहां गई । 15 उस समय रावलिया पैसोंके लिए थाली फिरा रहा था । 16 तब सुपियारदे, आगे बढकर रावलियेकी थालीमें एक मुहर (स्वर्ण मुद्रा) डालकर चलती बनी । 17 आगे नरबदजी वहली लिए खड़े ही थे । 18 और इधर रावलियेने पैसे इकट्ठे की हुई थाली सरदारके सामने रखी । 19 यह मुहर किसने डाली

हेकै मोटियार घाती ।'[1] ताहरां सींधळ सारा ही ऊठिया । कह्यो– 'आ तो कोई भली वात नहीं !'[2] रांमत पूरी कीवी ।[3]

इतरै[4] घरेसूं आदमी पण आयो कह्यो–'सुपियारदे नीसरी !' ताहरां गांम में ढोल हुवो ।[5] सींधळ चढिया । आगै वैहलरा चीला दीठा ।[6] ताहरां कह्यो–'नरवद लिये जावै छै ।' आगै सुपियारदे वैहल बैठी जावै । वांसै वाहर हुई ।[7]

आगै जावतां लूणी नदी आई, सो नदी पूर ।[8] ताहरां नरवदजी कह्यो–'सुपियारदे ! नदी जोर छै, उतर सगां नही ।'[9] ताहरां सुपियारदे कह्यो–'नदी में नांखो ।[10] नदीरै सिर चढो, पण वांसलांनूं आपड़ण न देवो ।'[11] ताहरां वैहल नदी में नांखी । वैहलिया सूंसाड़ा मारता पार नीसरिया ।[12] ताहरां सींधळां पण घोड़ा नदी में घातिया ।[13] ताहरां भाख धिवती नरवदजी तो घरै आया ।[14]

आसकरण चढियो हुतो–'जु नरवदजी अजूं[15] न आया ।' सु आसकरणजी सौं सींधळां सांफळो हुवो ।[16] वीच में आसकरणजी नरबदजी सौं पण मिळिया हुंता ।[17] ताहरां नरवदजी कह्यो–'आसकरण तूं सुपियारदेनूं ले जा, अर हूं काम आईस ।'[18] ताहरां आसकरण कह्यो–'आप तो पधारो, हूं काम आऊं छूं ।'[19] ताहरां आसकरणजी सींधळांसूं वेढ कर कांम आया ।[20] नरबदजी घरै आया । सींधळ पण पाछा घिरिया ।[21]

---

1 श्रीमन् ! एक युवकने डाली थी । 2 यह तो कोई अच्छी बात नहीं हुई । 3 खेल समाप्त किया । 4 इतनेमें । 5 तब गांवमें ढोल बजवाकर ढिंढ़ोरा पीटा गया। 6 आगे बहलीके चीले देखे । (चीला = रथ, गाड़ी आदिके चलनेसे जमीन पर बनी हुई पहियोंकी रेखाएं ।) 7 पीछे वाहर चढ़ी । 8 आगे जाते हुए लूनी नदीको पहुंचे, सो नदी पूर बह रही है । 9 सुपियारदे ! नदी पुर-जोर है, पार नहीं हो सकेंगे । 10 सुपियारदेने कहा— बहली नदीमें डाल दो । 11 नदीके भेंट चढ़ जायं, परंतु पीछे वालोंको पहुंचने न दे (उनके हाथ न लगें) । 12 तब बहलीको नदीमें डाल दिया, बैल सूंसाड़ा मारते हुए (पुरजोश और पुरजोरसे) पार निकल गये । 13 तब सींधलोंने भी नदीमें घोड़े डाले । 14 तब प्रभात होनेके समय नरवदजी तो घर आ गये । 15 अभी तक । 16 सो आसकरणजीसे सींधलोंकी झपट हो गई । 17 मिले थे । 18 और मैं काम आऊंगा । 19 आप तो पधार जायं, मैं काम आ रहा हूं । 20 लड़ाई कर काम आये । 21 सींधल भी वापिस लौट गये ।

ताहरां अठै आसकरणजीरी वहू सती हुवण लागी। ताहरां कह्यो–'जु जेरै वदळै म्हारो धणी कांम आयो, सु देखां तो खरी ?'[1] ताहरां आसकरणजीरी वहू सुपियारदेनूं दीठी।[2] तद आसकरणजीरी वहू कह्यो–'जु रजपूतांनै मरणों देणो छै, पण जेठजी विसावण सखरी कीवी।'[3] पछै आसकरणजीरी वहू तो आसकरणजी वांसै सती हुवा।

अर सींधळ पाछा वळता एकै गांमरै ताळाव आयनै उतरिया।[4] ताहरां एक पिणिहारी तळाव आई, अर कह्यो–'वीरा! बैर किण सिरदाररी गई ?'[5] ताहरां नरसिंघ सींधळ घोड़ो पगां मांहै घातनै वड़री साख पकड़ अर हींडियो[6], अर कह्यो–'जु बैर म्हारी गई।[7] जो बळ सौं जाहि तो न जावण देऊं, पण वैरांरो सभाव छै, रोकी किणही री नहीं रहै।'[8]

ताहरां एकै बीजी कह्यो–'ना, वीरा! बैर न जावै, पण तै माथै वाढ चाढो छै, अर घणो अवट कीवो छै। तैसूं थांहरो बैर गई, नहींतर काहिणनूं जावंत ?'[9] पछै सींधळ घरै आया।

नरबदजी कायलांणै राज कियो।[10]

इति वात नरबदजी सुपियारदे लाया तै समै री संपूर्णम्

---

1 जिस (स्त्री)के लिये मेरा पति काम आया है, उसे देख तो लूं ? 2 देखा। 3 राजपूतोंके लिये लड़कर मरना तो एक ऋण (उतारने के) समान है, परंतु जेठजी (नरवदजीने) शत्रुता भी अच्छी की है। 4 सींधल लौटते हुए एक गांवके तालाब पर आकर ठहरे। 5 वीरा (भाई)! किस सरदारकी स्त्री घरसे भाग गई है ? 6–7 तब नरसिंह सींधलने, जिस घोड़े पर सवार था उसको अपने दोनों पांवोंमें डालकर और बड़की शाखाको पकड़ कर घोड़े सहित झूला (पेंग लिया) और कहा कि मेरी स्त्री भाग गई है। 8 यदि बल करके जाना चाहे तो नहीं जाने दूं, पर स्त्री जातिका स्वभाव ही ऐसा होता है, जो किसी की रोकी रुकी नहीं रहती। 9 तब एक दूसरी स्त्रीने कहा—नहीं वीरा! स्त्री कभी घरसे नहीं जाती, पर तूने उसका घातक अपमान और दुर्दशा की है, जिससे तेरी स्त्री गई है, नहीं तो किसलिये जाती ? 10 नरवदजीने कायलानामें राज्य किया। (कायलाना मेवाड़का एक ठिकाना है)

अथ वात नरवद् रांणैजीनूं आंख दीवी तियै समै री लिख्यते

जद[1] राव रिणमलजी नै[2] रांणो मंडोहर ऊपर आया, ताहरां नरबद सांम्है[3] जाय लड़ाई कीवी। तद नरबदजी खेत पड़िया।[4] तद पड़तांरै तरवार डावी[5] आंख ऊपर पड़ी, तैसूं[6] डावी आंख फूटी। इतरै[7] रांणो मोकल आयो। ताहरां नरबदनूं घावां पड़ियो देख उठायो।[8] रणमलजी मंडोहर टीकै बैठो।

अर नरबदजीनूं रांणोजी चीतरोड़[9] ले गया। पाटा बाधा। घाव सारा किया।[10] अर नरबदजीनूं लाख रुपियांरो पटो दियो कायलांणो।[11] ताहरां नरबदजी कायलांणै रहै।

वांसै रांणा मोकलनूं पण चाचै मेरे मारियो, ताहरां रांणो कुंभो टीकै बैठो।[12] पछै कुंभै राव रिणमलजीसूं चूक कर, राव रिणमलजी-नूं मारिया।[13] तद राठवड़ांसूं वैर पड़ियो।[14]

तद नरबदजी तो कुंभै पासै हीज रहिया।[15] कुंभो नरबद सौं वडो प्यार करै।

एक दिन दीवांण दरबार कर बैंठा छै। ताहरां दरबार मांहै नरबदजीरी लोकां सुपारस कीधी।[16] कहियो–'आज धरती मांहै नरबदजी सारीखो रजपूत कोई नहीं।[17] नरबद वडो रजपूत छै।' ताहरां राणैजी कहियो–'इतरो कासूं छै सो वखांणो छो?[18] ताहरां

---

1 जब। 2 और। 3 सम्मुख। 4 तब नरबदजी घायल होकर धराशायी हुए। 5 बांई। 6 जिससे। 7 इतनेमें। 8 तब नरबदको घायल पड़ा हुआ देखकर उठा लिया। 9 चित्तौड़। 10 घाव अच्छे किये। 11 और नरबदजीको एक लाख रुपयेकी कायलाणाकी जागीरीका पट्टा कर दिया। 12 पीछे राणा मोकलको भी चाचा और मेरेने मार दिया, तब राणा कुंभा गद्दी पर बैठा। 13 पीछे कुंभेने राव रिणमलजीसे चूक करके उन्हें मार दिया। 14 तब राठौड़ोंसे शत्रुता हो गई। 15 तब नरबदजी तो कुंभेके पास ही रह गये। 16 तब दरबारमें लोगोंने नरबदजीकी सिफारिश (प्रशंसा) की। 17 आज देशमें नरबदजीके समान कोई राजपूत नहीं है। 18 ऐसी क्या बात है सो इतनी प्रशंसा कर रहे हो?

लोकां कहियो–'दीवांण ! नरबद मांगियां क्युं ही राखै नहीं ।'[1]

ताहरां रांणै कुंभै कहियो–'म्हे मांगां सो नरबद देसी ?'[2] ताहरां फेर लोकां कहियो–'जोवै दीवांण ! देसी ।'[3] तिके दिन नरबदजी रांणोजीरै मुजरै ना आया ।[4] डेरै हुंता ।[5]

तद रांणौजी आपरो खवास नरबदजीरै डेरै मेल्हियो नै खवासनूं कहियो–तूं यूं कहीजै–'दीवांण थां पासा आंख मांगी छै ।'[6] खवास नरबदजीनूं कहियो–'दीवांण थां पासा आंख मांगी छै ।' ताहरां नरबदजी कहियो–'भलां, देस्यां ।'[7] ताहरां खवासरी निजर टाळ पसवाड़ै भळको पड़ियो हुंतो, तैसूं उकासनै डोळो रुमाल में घाल दीन्हो ।[8] ताहरां खवासरो मुंह भूंडो हुवो ।[9] दीवांण कहियो हुंतो खवासनूं–'नरबद आंख काढै तो मतां काढण देई ।[10] सु नरबदजी तो आंख काढि हाथ दीधी ।[11] खवास ले जाय आंख दोवांणनूं दीधी ।

ताहरां दीवांण आंख देखनै वडो सोच कियो ।[12] घणा पिछताया ।[13] पछै दीवांण नरबदजीरै डेरै पधारिया, वडो सिसटाचार पड़वज कियो ।[14] पछै नरबदजोनूं रांणैजी दोढो पटो दियो ।[15]

ईयै विध रांणैजीनूं नरबदजो आंख दीधी ।[16]

इति नरबदजी रांणै कुंभैनूं आंख दीधी तिणरी वात संपूर्ण

---

1 तब लोगोंने कहा कि दीवान ! नरबद मांगने पर कुछ भी अपने पास नहीं रखता । 2 हम मांगें सो नरबद दे देगा ? 3 तब लोगोंने कहा चिरंजीवी रहो दीवान ! देगा । 4 उस दिन नरबदजी राणाजीको मुजरा करनेके लिये नहीं आये थे । 5 अपने डेरे (मकान) पर ही थे । 6 तब राणाजीने अपने खवासको नरबदजीके डेरे भेजा और खवासको कहा कि तू यों कहना कि दीवानने तुम्हारे पाससे आंख मंगवाई है । 7 अच्छी बात है, देंगे । 8 तब खवासकी नजर बचाकर एक ओर जो भळका पड़ा था, जिससे आंखका कोया निकाल करके रूमालमें डालकर दे दिया (भळको=एक शस्त्र) । 9 खवासका मुंह उतर गया । 10 दीवान (राणाजीने) तो उसे कहा था कि यदि नरबद आंख निकाले तो मत निकालने देना । 11 सो नरबदजीने तो आंख निकाल कर हाथमें देदी । 12 दीवानने आंख देखकर बड़ा फिक्र किया । 13 बहुत पश्चाताप किया । 14 फिर दीवान नरबदजीके डेरे पर गये, बड़े शिष्टाचार और सहानुभूतिके साथ उनके वीरतापूर्ण त्यागकी प्रशंसा एवं दुख प्रगट किया । 15 पीछे राणाजीने नरबदजीका पट्टा ड्योढा कर दिया । 16 इस प्रकार नरबदजीने राणाजीको आंख निकाल कर देदी ।

अथ वात राव लूणकर्णजीरी

लूणकर्णजी जेसळमेररी फतै कर पाछा पधारिया ।[1] ताहरां लोकां कह्यो–'हिवै एक वार वोकानेररै कोट मांहै पधारो ।[2] भला सवणां पधारिया छो ।'[3] तद रावजी कह्यो–'न जावां ।'[4] रावजी वात मांनी नहीं ।[5] दिलीनूं चढि चलाया । तद द्रूणपुर आय डेरा किया । पछै आ जायगा देख अर कह्यो–'आ तो जायगा इसी छै जु अठै कोई कुंवर राखीजै ।'[6] ताहरां कल्यांणमल उदैकरणोत वीदावत हुतो, तियै सुणियो ।[7] ताहरां जांणियो–'जु आ वात तो बुरी हुई ।'[8] यूं करतां राव लूणकर्णजी तो दिलीनूं आघा हालिया ।[9] कल्यांणमल वीदावत हरोळ कियो ।[10] अर पठांणांरी फोजां सांम्ही आई, तियै मांहै रायमल कछवाहो हरोळ हुंतो, सु रायमल कल्यांणमलरो नांनो हुंतो ।[11] अर दिली पातसाही पठांणांरी हुती ।[12] ताहरां सींवाड़ो घातता हुता सु राव लूणकर्णजी मांनी नहीं । कह्यो–'नारनोळ सींव घातो, नारनोळ लेस्यां ।'[14] सु ईयां आपस मांहै वात कर फोज में भगी घाती ।[15] कल्यांणमल उदैकरणोत रायमल कछवाहैनूं कह्यो–'जु थे घोड़ा घातो ।[16] म्हे पालसां । पासो दे जास्यां ।'[17] ताहरां उवां घोड़ा

---

1 राव लूणकर्ण जैसलमेरकी फतह कर वापिस आये । 2–3 तब लोगोंने कहा कि 'अच्छे शकुनोंसे पधारे हैं तो अब एक बार बीकानेरके गढमें पधारें ।' 4 तब रावजीने कहा—'नहीं जायेंगे । 5 रावजीने लोगोंकी बात मानी नहीं । 6 फिर इस जगहको देख कर कहा—'यह तो जगह ऐसी है सो यहां कोई अपने कुंवरको रख देना चाहिये ।' 7 इस बातको वीदावत कल्याणमल उदयकरणोतने सुन लिया । 8 उसने विचारा 'यह बात तो बुरी हुई । 9 राव लूणकर्णजी तो दिल्लीके लिये आगे चले । 10 कल्याणमल वीदावतको अपनी सेनाके हरोलमें किया । 11 और उधर पठानोंकी सेना सामने आई जिसमें रायमल कछवाहा हरोलमें था । रायमल कल्याणमलका नाना था । 12 दिल्लीमें बादशाहत पठानोंकी थी । 13 उस समय सीमांकन हो रहा था पर राव लूणकर्णजीने इस सीमाबंधीको स्वीकार नहीं किया । 14 और कहा कि 'नारनोल हम लेंगे नारनोल तक सीमा निश्चित करो ।' 15 सो इन्होंने (रायमल और कल्याणमलने) परस्पर परामर्श कर सेनामें फूट डाल दी । 16 कल्याणमल उदयकरणोतने रायमल कछवाहेको कहा—तुम घोड़े (सीमा चिन्ह) गाड़ दो (तुम घोड़े डाल दो) । 17 हम तुमको रोकेंगे और तुम को मौकाभी देते जायेंगे ।

नांखिया।[1] कल्यांणमल टळ गयो, लड़ाई हुई।[2] राव लूणकर्णजी कांम आया। कुंवर प्रतापसिंघजी कांम आया।

पछै राव जैतसिंघजी टीकै बैठा, कछवाहां पवाड़ो गमायो।[3] ताहरां जैतसिंघजी फोजां कीवी। रायमल कछवाहै ऊपर गया। कछवाहा तो आगासूं लड़ाई कर सगै नहीं।[4] पछै कछवाहा राव जैत-सिंघजीनूं वीमाह[5] ५ (पांच) दिया। राजा प्रथीराजरी बेटी कुंवर ठाकुरसीनूं दीनी। रायमलजी कछवाहै री बेटी रायमल मालदेवोतनूं परणाई[6]। वीमाह एक वैरसी लूणकरणोतनूं दियो। वीमाह एक महेस प्रतापसिंघोतनूं दियो।

॥ इति रावजी लूणकर्णजीरी वात संपूर्ण ॥

---

1 तब उन्होंने घोड़े गाड़ दिये (घोड़े झोंक दिये) 2 लड़ाई हुई तब कल्याणमल (हरोलसे) खिसक गया। 3 पीछे जब राव जैतसिंह टीके बैठा, तब कछवाहोंने प्रवाड़ा गंवा दिया (युद्धसे डर कर अपनी कीर्त्ति खो दी)। 4 रायमल कछवाहे पर चढ़ करके गये सो उसे ऐसी स्थितिमें डाल दिया कि वह फिर आगे लड़ाई कर ही नहीं सके। (कछवाहे हरोलमें लड़ नहीं सकते।) 5 विवाह। ७ व्याही।

अथ वात मोहिलां री

मोहिल सुरजनोत चहुवांण छापुर-द्रोणपुर धणी हुवो तिणरी हकीकत ।[1]

चहुवांण नै मोहिलां विचै इतरी पीढी[2]—

१ चहुवांण ।

२ चाह, चहुवांण रो बेटो ।

३ घणसूर* रांणै चाह रो बेटो । गंग पिण कहांणो ।[3]

४ रांणो इंद्रवीर ।

५ रांणो अरजन ।

६ रांणो सुरजन ।

७ रांणो मोहिल । रांणा सुरजनरो बेटो । मोहिलरै पेट रा मोहिल कहांणा ।[4] मोहिल छापर-द्रोणपुररो धणी हुवो । मोहिलसूं आ धरती मोहिलावाटी कहांणी ।[5] सदा छापररो परगनो कहीजतो ।[6]

पांडवां कैरवांरी वार मांहै, तद छापररै परगने द्रोणाचारज आयो ।[7] आपरै नांवै सहर छापर ता कोसै २ वसायो ।[8] काळो-डूंगर कहीजै छै तिणरी जड़ां सहर वसायनै द्रोणपुर नांम दिरायो ।[9] द्रोणपुररी बे हाटां° सूधी आ ठोड़ लियै रहै द्रोण ।[10] द्रोणपुर काळै

---

* चार अन्य प्रतियोंमें से दो प्रतियों में, 'घणर' एक में 'घणसूर' और एक में 'वणसूर' नाम भी लिखे मिलते हैं ।

° 'वेहटां' और 'वैहांटां' पाठ भी कई प्रतियोंमें मिलता है ।

---

1 सुरजनका बेटा मोहिल चौहान छापुर-द्रोणपुरका स्वामी हुआ उसके सम्बन्धकी हकीक़त । 2 चौहान और मोहिलों के वीच (मोहिल और उसके वंशजोंमें) इतनी पीढियें हैं । 3 घणसूर राणा चाहका बेटा । इसका नाम गंग भी कहलवाया । 4 मोहिल राणासे उत्पन्न उसके वंशजोंकी अल्ल मोहिल कहलाई । 5 मोहिलके नामसे इस धरतीका नाम 'मोहिलावाटी' प्रसिद्ध हुआ । 6 पहले इस धरतीको 'छापरका परगना' ही कहा जाता था । 7 पांडवों कौरवोंके समयमें महर्षि द्रोणाचार्य छापरके परगनेमें आये थे । 8 छापर से दो कोस पर अपने नामसे शहर बसाया । 9 'काळो डूंगर' (काला पहाड़)के नामसे प्रसिद्ध पहाड़ है, उसकी तलहटीमें शहर बसा कर द्रोणपुर नाम रखा । 10 द्रोणने द्रोणपुरके दो बाजारों (दो उप-बस्तियों) जितनी इस जगहको घेर रखा है ।

डूंगरियां नव काळै-डूंगर वसियो छै।[1] सु काळै-डूंगर लागती डूंगरी ८ तथा ९ छै।[2] डूंगरियां ९ नव काळै-डूंगर लागती द्रोणपुर वसायो।[3]

१ काळो-डूंगर	५ देवीजीरी डूंगरी
२ विनायकरो डूंगरी[4]	६ कोढणोरी डूंगरी
३ सालेररी डूंगरी	७ चरलारी डूंगरी
४ भैंसे-सिरारी डूंगरी	८ चिमररी डूंगरी

छापररै परगनै गांव १४०० लागै। छापररै परगनै मांहै इतरी ठोड़—'छापर, लाडणूं, करणावटी।[5] करणावटी रिणीरी पैली तरफ छै।[6] किरतावटी—किरता आहेड़ोतरी ठोड़।[7]

द्रोणपुर, भारद्वाजरो बेटो द्रोणाचारजनूं थो, पांडवां कैरवांरी वार[8] मांहै। पछै पमार डाहळियानूं हुंतो द्रोणपुर।[9] डाहळिया सिस-पाळरांनूं छापर-द्रोणपुर घणा दिन रह्यो।[10] डाहळियांरो छापर वडी साहिबी थी। नै वागड़ी रजपूतांरी भोम नागोर थी।[11] सु नागोररी धरती मांहै वागड़ियांरो वडो मेवासो।[12] वागड़ी वडा रजपूत नै वडा राहवेधी था।[13] सु डाहळियां नै वागड़ियां मांहो मांहि खिसण थी।[14] सु वागड़ियां डाहळियांसूं चूक विचारियो।[15] वागड़ी कटक करनै डाहळियां ऊपर आया।[16] डाहळिया चलाय सांम्हां

---

1 काले डूंगरीकी नौ काली डूंगरियों (पहाड़ियों) में द्रोणपुर बसाया गया है। 2 उस काले डूंगरसे लगती हुई डूंगरी (छोटी पहाड़ियें) ८ तथा ९ हैं। 3 काले डुंगरसे लगती हुईं उन नौ डूंगरियोंके पास द्रोणपुर बसाया गया। 4 गणेशजीकी पहाड़ी। 5–6–7 छापरके परगनेमें इतने स्थान प्रसिद्ध हैं—छापर, लाडनूं, करणावटी और किरतावटी। करणावटी रिणी गांवके उस ओर आई हुई है और किरतावटी, आहेड़के पुत्र किरताकी जागीरीकी ठोड़को कहा जाता है। 8 पांडवों-कौरवों के समयमें द्रोणपुर भारद्वाज ऋषिके पुत्र महर्षि द्रोणाचार्यके अधिकारमें था। 9 फिर द्रोणपुर परमार डाहलियेके अधिकारमें हो गया था। 10 शिशुपालके वंशज डाहलियेके अधिकारमें छापर और द्रोणपुर बहुत दिन तक रहे। 11 और नागोर वागड़ी राजपूतोंकी भूमि थी। 12 नागोरकी धरतीमें वागड़ियोंका बड़ा मेवासा। (मेवासो = धाड़ा डालने वालों व लूट-पाट करने वालोंके लिये रहनेका सुरक्षित स्थान।) 13 वागड़ी राजपूतोंका बड़ा समूह और सभी राहवेधी। (राहवेधी = १ दूर-दर्शी। २ युद्धाग्रणी। ३ युद्ध विशेषज्ञ।) 14 डाहलियों और वागड़ियोंमें परस्पर शत्रुता चल रही थी। 15 वागड़ियोंने डाहलियोंको मारनेका विचार किया। 16 वागड़ी सेना लेकरके डाहलियोंके ऊपर चढ़ आये।

आया ।[1] वडी वेढ कीवी ।[2] डाहळियांरा मांणस ६०० कांम आया । बाकीरा नास गया ।[3] धरती वागड़ियां लीवी ।[4] डाहळियां थी छूटी ।[5] वागड़ियां धरती सारी वसाई ।[6] वडी जमीयत कीवी । वागड़ी जोर थका वहै ।[7]

हमैं वागडियां तीरा धरती मोहिल सुरजनोत लीवी छै, तिणरी हकीकत[8]—

चहुवांणांरी चौवीस साख कहीजै । रांणो सुरजन पूरब दक्षिण वीच श्रीमोररो परगनो कहीजै छै, तठै रांणै सुरजनरो राजस्थान ।[9] सुरजनरी वडी साहिबी छै । तद धरती मांहै चहुवांण घणी धरती भोगवै ।

सु रांणा सुरजनरो वडो बेटो मोहिल, तिणसूं सुरजन मया न करै ।[10] मांहो मांहि रस काइ नहीं ।[11] नै मोहिल वडो रजपूत, सु बाप सौं वणै नहीं ।[12]

ताहरां मोहिल दीठो–'काइक और नवी धरती खाटूं ।[13] तिण ऊपर मांणस दोय रूड़ा आपरा मेल्हिया ।[14] कह्यो–'इण तरफरी गिरवा जोइ आवो ।[15] काय धरती आंपणै लेणरी कावू होय तो देख आवो ।'[16] सो उवै[17] रजपूत धरती जोवता-जोवता[18] इण तरफ आया । सु विचली ठोड़ देखी । क्युं ही एक[19] धरती भायां-बंधां

---

1 डाहलिये भी सम्मुख चले आये । 2 बड़ी लड़ाई हुई । 3 डाहलियोंके ६०० आदमी काम आये । शेष भाग गये । 4 धरती पर वागड़ियोंने अधिकार कर लिया । 5 डाहलियोंके अधिकारसे धरती जाती रही । 6 वागड़ियोंने सब धरतीको बसाया । 7 वागड़ियोंकी स्थिति सबल हो गई है । 8 अब वागड़ियोंसे मोहिल सुरजनोतने धरती ले ली है, उसकी हकीकत इस प्रकार है । 9 पूर्व और दक्षिणके बीच जो श्रीमोरका परगना कहा जाता है, वहाँ राणा सुरजनकी राजधानी । 10 राणा सुरजनका बड़ा बेटा मोहिल जिसके साथ सुरजन कृपा भाव नहीं रखता है । 11 परस्पर प्रेम नहीं । 12 मोहिल बड़ा वीर राजपूत परंतु बापसे बनता नहीं । 13 तब मोहिलने देखा कि कोई और नई धरती प्राप्त करें । 14 जिसके लिए अपने दो अच्छे आदमियोंको भेजा । 15 इस तरफ के इर्द-गिर्दका प्रदेश देख कर आओ । 16 कोई धरती लेकर कब्जा करने जैसी हो तो देख आओ । 17 वे । 18 देखते-देखते । 19 कुछ, कुछेक ।

हेठै ।[1] क्युं हेक जोरावरां हेठै ।[2] नै छापर द्रोणपुर ग्रै[3] रजपूत आया । ग्रा ठोड़ सखरी दीठी ।[4] ग्रर सहल हीज दीठो ।[5] कोट मांहै घणा सा ग्रादमी को नहीं । ताहरां रजपूतां ग्रा ठोड़ हेरी ।[6] हेरनै पाछा गया ।[7] जायनै मोहिलनूं हकीकत मालम कीवी ।[8]

तिण ऊपर मोहिल धरतीरो साथ भेळो कियो ।[9] वागड़ी हजार पांच मांणसांरा धणी था ।[10] नै मोहिल मांणस हजार पनरै[11] तथा सतरै[12] भेळा किया । सु मोहिल तीरै[13] खजांनो नहीं, नै धरती अळगी ।[14] तिणरो वडो सोच हुवो ।[15] तिण ऊपर रांणा सुरजनरै दरबार मांहै वोहरो संतन वडो मांणस हुतो, तिणनूं तेड़नै मोहिल कह्यो[16]–'म्हैं एक ठोड़ लेणी तेवड़ी छै[17], तिण सारू कटक भेळो कियो छै, पिण खावणनूं क्युं ही नहीं छै, थे म्हांरी गरज सारो, करज द्यो ।'[18] ताहरां संतन वोहरै कह्यो–'थांनै पईसा कहसो सो देईस ।[19] थे तयारी कर चढो ।' संतन वोहरै खत कियो । खरच दियो । हमैं संतननूं साथ लेनै चालिया ।[20] उठारा चालिया अजांणजकरा मोहिल छापर-द्रोणपुर ऊपर आया ।[21] वागड़ी पण सारो साथ लेनै बारे आया ।[22] वडी वेढ[23] हुई । मांणस हजार १००० दोनूं तरफांरा कांम आया । तिण मांहै[24] वागड़ी घणा सिरदार कांम आया । वागड़ियां रा पग छूटा ।[25] वागडी नाठा ।[26] धरती मोहिलरै आई ।[27]

---

1 भाई-बंधुओंके अधिकार में । 2 कुछेक बलवानोंकी दबाई हुई । 3 ये । 4 यह जगह अच्छी देखी । 5 और अधिकार करनेमें सरल दिखाई दी । 6 तब राजपूतोंने इस जगहको लेना निश्चय किया । 7 निश्चय कर वापिस लौटे । 8 मोहिल के पास जा करके उसे सब हकीकतसे वाकिफ किया । 9 जिस पर मोहिलने अपनी धरतीके मनुष्योंको इकट्ठा किया । 10 वागड़ी पांच हजार मनुष्योंके स्वामी थे । 11 पन्द्रह । 12 सत्रह । 13 के पास । 14 दूर । 15 इसकी बडी चिन्ता हुई । 16 जिसको बुला कर मोहिलने कहा । 17 मैंने एक जगहको लेनेका इरादा किया है । 18 तुम हमारी जरूरत पूरी करो और कर्जा देओ । 19 जितना कहोगे उतना पैसा तुमको दूंगा । 20 संतन बोहरेने खत लिखवाया । अब संतनको साथमें लेकर चले । (वोहरो = ऋण दाता । खत = ऋण पत्र) 21 वहांसे चल कर अचानक छापर द्रोणपुर ऊपर मोहिल चढ आये । 22 वागड़ी भी अपना सब साथ लेकर बाहर आये । 23 लड़ाई । 24 जिसमें । 25 वागड़ियोंके पांव छूट गये । 26 वागड़ी भाग गये । 27 धरती मोहिलके अधिकारमें आ गई ।

मोहिलरी फतै हुई । मोहिल सारी धरती मार मनाई ।[1] मोहिल छापर टीकै बैठो । रांणारी पदवी दीवी । मोहिल आपरी वडी जमीयत[2] कीवी । गांम १४०० वसाया । वडी धरती खाटी ।[3] वोहरै संतननूं रांणै मोहिल सुरजनोत लाडणूं परगना मांहै छापरथी[4] कोस ७ गांम कसूंबी छै, तिका गांम ५ सूं दीधी ।[5] नै कह्यो-'थे कसूंबी जायनै आपरी वसी करावो ।'[6] वोहरो संतन कसूंबी वसियो ।[7] वडी वसती कीवी । वोहरै संतन १ देहुरो शिखरबंध श्री ठाकुरांरो करायो ।[8] नै वावड़ी[9] १ बंधाई छै । तिका वावड़ी अजेस तांही संतन-री कहीजै छै ।[10]

वागड़ियां तीरा मोहिल धरती लीवी छै । मोहिल नै देवरांम वोदावत मांहोमांहि वेढ कीवी छै, तिणरी साखरा वे-अखरी छंद चारण चांपै सामोररा कह्या छै, तिणमें साख आंणी छै ।[11]

मोहिलरै पेटथो मोहिलांरी साख चहुवांणां मांयसूं नीसरी ।[12]

---

1 मोहिलने सारी धरतीको बलपूर्वक अपने वशमें किया । 2 सुरक्षा और राज्य कारोबारके लिये घोड़ों और ऊंटों सहित सवारोंका मुकम्मल थाना । 3 बड़ी धरतीको प्राप्त किया । 4 छापरसे । 5 जिसको ५ गांवोंके साथ प्रदान किया । 6 तुम कसूंबी गांवमें जाकर अपनी बसी (वस्ती) कायम करो । 7 बोहरा संतन कसूंबीमें जाकर बसा । 8 बोहरे संतनने एक शिखरबंध मंदिर श्री ठाकुरजी (श्रीकृष्ण)का वहां बनवाया । 9 वापिका । 10 वह बावली अभी तक 'संतनकी बावड़ी' कही जाती है । 11 मोहिल और देवराम वीदावतने आपसमें लड़ाईकी जिसकी साखके 'वे-अखरी' छंद चारण चांपेके रचे हुए हैं, जिनमें इस लड़ाईका प्रामाणिक वर्णन किया गया है । 12 मोहिलके वंशसे चौहानोंमें से मोहिलोंकी शाखा निकली ।

मोहिलांरै पीढियांरी हकीकत[1]

१ मोहिल रांणा सुरजनरो बेटो
२ रांणो हरदत्त
३ रांणो वैरसी
४ रांणो वालहर
५ रांणो ग्रासल
६ रांणो ग्राहड़
७ रांणो रैणसी
८ रांणो साहणपाळ
९ रांणो लोहट
१० रांणो बोबौ
११ रांणो वेग
१२ रांणो मांणकराव
१३ रांणो सांवतसी, ग्रर १३ रांणो सांगो
दोनूं भाई मांणकरावरा बेटा।[2]
सांगो रांणो राव लखणसेनरो दोहीतरो।[3]

१४ मोहिल ग्रजीत सांवतसीग्रोत।[4] सांवतसी मांणकरावरो।[5] सु ग्रजीत वडो रजपूत हुवो ।

मोहिल ग्रजीतनूं राव जोधैजी ग्रापरी बेटी परणाई हुतो, नांम राजांबाई।[6] सु ग्रजीत सासरै मंडोहर गयो हुतो।[7] सु राव जोधो तिणां दिनां जोरावर वहै । सु मोहिल वडा सगा; नै यां तीरे धरती घणी ।[8] सु राव जोधोजी मोहिलांसूं सदा खोट करणरो विचार करै[9]; पण मोहिलांमें ग्रजीत वडो रजपूत जोरावर। ईयै थकां धरती ग्रावै नहीं।[10] ताहरां दीठो–'ग्रजीत मारीजै तो धरती ग्रावै।'[11] 'ताहरां ग्रजीतनूं जोधैजी मारणरो विचार कियो । सु राव जोधैजीरी रांणो भटियांणी,

---

1 मोहिलोंके वंशक्रमका वृत्तान्त। 2 राणा सांवतसी ग्रौर राणा सांगा (क्रम सं० १३) दोनों भाई माणकरावके बेटे। 3 राणा सांगा राव लखणसेनका दोहिता। 4 मोहिल ग्रजीत सांवतसीका पुत्र। 5 ग्रौर सांवतसी माणकरावका बेटा। 6 राव जोधाजीने ग्रपनी राजांबाई नामकी कन्या मोहिल ग्रजीतको व्याही थी। 7 ग्रजीत ग्रपनी ससुराल मंडोर गया हुग्रा था। 8 राव जोधा उन दिनों बड़ा जोरावर राजा ग्रौर इधर मोहिल भी बड़े संवंधी ग्रौर इनके पास धरती भी बहुत। 9 ग्रत: राव जोधा मोहिलोंसे नित्य दगा करनेका विचार करता है। 10 इसके रहते हुए धरती ग्रपने ग्रधिकारमें नहीं ग्रा सकती। 11 तब विचार किया कि ग्रजीत मारा जाय तो उसकी धरती ग्रपने ग्रधिकारमें ग्रा जाये।

अजीतरी सासू, तिणनूं खबर हुई[1], 'अजीतनूं राव मारसी ।'[2] ताहरां रांणी अजीतरा खवास परधांन, त्यांनूं कहाड़ियो[3]–'रावजी थांसूं चूक कियो छै, थे रह्या तो दुख पावस्यो ।'[4]

तिण ऊपरा अमरावां परधांनां विचार कियो–'अजीत तो भाजण री परत* वहै छै, आ वात कहस्यो तो जांणसी नहीं ।[5] इण सौंको तोत करनै चाढां ।'[6] ताहरां ईंयां सारां ही भेळा होयनै कह्यो–'छापर थी आदमी आयो छै । जाटवांरो कटक रांणा वछराज सांगावत ऊपर आयो छै नै रांणो घेरा मांहै छै । कहाड़ियो छै; म्हां मुवां ऊपर आय सको तो वेगा आवज्यो ।'[7] आ वात कही तिण ऊपरा चढणरी तयारी कीधी । नगारो हुवो, नै चढि खड़िया ।[8] ताहरां राव जोधै कह्यो–'रे ! नगारो कठै ह्वै छै ?'[9] ताहरां कह्यो–'अजीत चढि खड़ियो ।'[10]

ताहरां राव जोधैजी दीठो–'चूकरो जणाव हुवो; नै ओ जीवतो गयो तो म्हांनूं दुख देसी, तिण ऊपर रावजी वांसै चढि खड़िया ।'[11] आगै अजीत जाय छै, वांसै राव जोधोजी जाय छै ।[12] सु द्रोणपुरसौं कोसां ३ छापरसौं कोस ५ आया; तठै फोजां दोऊवां देठाळा हुवा[13]

---

* एक प्रतिमें 'परग' पाठ है । 'परग वहै' का तात्पर्य होगा— 'रिश्ते के लिहाज से' वा 'रिश्ते का लिहाज करता है ।' 'परत न वहै छै, पाठ होना चाहिये ।

1–2 राव जोधाजीकी राणी भटियाणी जो अजीतकी सास थी उसे इस बातका पता लग गया कि अजीतको राव मारेंगे । 3 तब राणीने अजीतके जो खवास और प्रधान थे जिनको कहलवाया । 4 रावजीने तुमारे साथमें धोखा विचारा है सो अब यदि तुम यहां रहे तो दुख पाओगे । 5 इस पर उमरावों और प्रधानोंने विचार किया कि अजीत तो भागनेकी बातके विरुद्ध रहता है यह बात उसे कहेंगे तो इसे सत्य जानेगा ही नहीं । 6 इससे कोई अन्य बखेड़ेकी बात करके यहांसे ले चलें । 7 तब इन सबने इकट्ठे होकर कहा कि बछराज सांगावत पर जाटवोंका कटक आया है और राणा घेरेमें फंस गया है सो उसने कहलवाया है कि मैं मारे जानेकी स्थितिमें हूं, यदि सहायता कर सको तो तुरंत आओ । 8 यह बात कही तब चढ़नेकी तैयारी की । नगारा बजवाया और चढ़कर रवाना हुए । 9 अरे ! नगारा कहां बज रहा है ? 10 अजीत रवाना हुआ है । 11 तब जोधाजीने देखा कि धोखेकी जानकारी हो गई और यदि अब यह जीता निकल गया तो हमको दुःख देगा । इस पर रावजीने उसके पीछे चढ़ाई कर दी । 12 आगे अजीत जा रहा है और उसके पीछे राव जोधाजी जा रहे हैं । 13 सो द्रोणपुरसे तीन कोस और छापरसे पांच कोस उरे पहुंचे तब दोनों फौजोंको एक दूसरेकी फौज दिखाई दी ।

तरै अजीत पूछियो–'आंपां वांसै घणो सो साथ दीसै तिको किणरो ?'[1] तरै यां कह्यो–'थांसूं राव जोधै चूक कियो थो, सु रांणोजी जांणियो।[2] ताहरां म्हांनूं कहाड़ियो[3]–'थे जमाईनूं लेनै परहा चढो।[4] ताहरां म्हे थांसूं तोत करनै थांनै इतरी भुंय आंणियां।[5] आ[6] वात कही, ताहरां अजीत घणो बुरो मांनियो। कह्यो–'थे म्हारो सबळो पण* घटायो।'[7]

ताहरां अजीत आपरा[8] साथ सारैसूं वांनूं[9] वांसै[10] आया देख ऊभो रह्यो।[11] रावजी पण चलाय गया। दोनूं तरफां लोह मिळियो।[12] मांमलो हुवो।[13] अजीत मांणस ४५ सूं कांम आयो। गांम गणोड़ै वेढ हुई।[14] राव जोधोजी अजीतनूं मार पाछा वळिया।[15] मंडोवर पधारिया। बाई राजां अजीत वांसै सती हुई।[16] हमैं राठोड़ां नै मोहिलां मांहोमांहि सबळो वैर पड़ियो।[17] राठोड़ सबळा, मोहिलांरी ठकुराई सबळी, पण भाईबंधे मेळ घणो काई नहीं।[18]

युं करतां वरस १ आघो नीसरियो।[19] नै मोहिलांरी धरती ऊपर राव जोधै डांण घातियो।[20] सारा भाईबंध भेळा करनै राव जोधोजी चढ मोहिलां ऊपर आया। रांणो बछराज सांगावत मांणस २६५ सूं मारियो। मोहिल हारिया। पग छूटा।[21] राव जोधैजीरी फतै हुई।

---

* एक प्रतिमें 'सबळापण' पाठ है। 'म्हारो सबळापण घटायो' = १ मेरी वीरतामें कलक लगवा दिया। २ मेरी सबलता घटा दी।

---

1 अपने पीछे बड़ीसी सेना आती दिख रही है वह किसकी है ? 2 तब इन्होंने कहा कि तुम्हारे साथ राव जोधेने चूक करनेका विचारा था, जिसका राणीजीको पता लग गया। 3 तब उन्होंने हमको कहलवाया। 4 तुम मेरे दामादको लेकर रवाना हो जाओ। 5 तब हम बनावटी बात करके आपको इतनी दूर ले आये। 6 यह। 7 तुम लोगोंने मेरी जो सबल प्रतिज्ञा थी, उसको घटा दिया (उसमें बट्टा लगवा दिया।) 8 अपने। 9 उनको। 10 पीछे। 11 खड़ा रह गया। 12 दोनों ओरके शस्त्र मिले। 13 लड़ाई हुई। 14 गणोड़ै गांवमें यह लड़ाई हुई। 15 पीछे लौटे। 16 राजा-बाई अजीतके पीछे सती हुई। 17 परस्पर बहुत जबरदस्त शत्रुता बंधी। 18 परन्तु उनके भाई-बंधुओंमें परस्पर अधिक मेल नहीं। 19 इस प्रकार एक वर्ष निकल गया। 20 मौकेकी ताकमें रहा। 21 मोहिलोंके पग छूट गये।

कुंवर मेघो वछू रावरो बेटो नीसरियो ।[1] राव जोधैजी जाय छापर मारियो ।[2] राव जोधैजी धरती मांहै अमल कियो ।[3] सु मेघो जोरावर सु मेघै आगा धरती वस सगै नहीं ।[4] नै कटकनूं रातीवाहा दै ।[5] ताहरां रावजी विचारियो—'मेघा जीवतां धरती आवणरी नहीं ।' तिण ऊपर मास दोय अठै रहिनै[6], धरती मारनै[7] पाछा मंडोवर पधारिया ।

मेघो कुंवर पाछो द्रोणपुर छापर आयो । मेघो टीकै बैठो । रांणो मेघो हुवो । वडो रजपूत, वडो तरवारियो, वडो राहवेधी, वडो जोरावर ।[8] सु राव जोधोजी रांणै मेघेनूं मारणरो तलास घणी ही करै, पण हाथ आवणरो नहीं । मेघो वडो भोमियो हुवो ।[9] पछै कितरेहेक वरसै मेघो काळ प्राप्त हुवो ।[10] ताहरां भायां धरती मांहै धूंकळ मांडियो ।[11] ताहरां धरती भायां वंट हुई । ठकुराई निबळी पड़ी ।[12] १६ भाग हुआ ।[13] रांणा मेघारै पाट रांणौ वैरसल हुवो,[14] सु रांणा कुंभै सीसोदियैरो दोहितरो । बीजो बेटो नरबद, तिको रावत कांधळ रिणमलोतरो दोहितरो ।[15] वैरसल टीकै बैठो । रांणो वैरसल हुवो, सु निबळो सो ठाकुर हुवो । भाई बंध सगळा मांणस हुता सु धरती वंटाय लीवी नै माहोमांही भाइयां खसण लागी ।[16] रोजीना आपसमें वेढां हुवै, सु सारा डीलां कट निवड़िया ।[17] मोहिलांरी ठकुराई निबळी पड़ी ।

अर राव जोधोजी मंडोहर भोगवै, सु पाखती[18] जोरावर साहिबी । सु रावजी विचारियो जु, आज मोहिल निबळा पड़िया छै

---

1 राव वछूका बेटा कुंवर मेघा बच करके निकल गया। 2 छापरको लूटा। 3 अपना अमल जमाया। 4 मेघेके आगे धरती बस नहीं सकती। 5 और कटकके ऊपर रातको हमला करे। 6 यहां रह करके। 7 धरतीको लूट करके। 8 मेघा राणा हुआ। मेघा बड़ा वीर राजपूत, बड़ा तलवार चलाने वाला, बड़ा दूरदर्शी और बड़ा जोरावर। 9 मेघा बड़ा भोमिया हुआ। 10 पीछे कितनेक वर्षों बाद मेघा मर गया। 11 तब भाईयोंने देशमें बड़ा उपद्रव मचाया। 12-13 देशके १६ भाग हो गये और ठकुराई निर्बल पड़ गई। 14 राणा मेघाकी गद्दी पर वैरसल राणा हुआ। 15 दूसरा बेटा नरबद जो रावत कांधल रिणमलोतका दोहिता था। 16 जितने भी भाई-बन्धुओंके मनुष्य थे उन्होंने धरतीका बंट करवा लिया और भाइयोंमें परस्पर खींचातानी होने लग गई। 17 रोज युद्ध होते रहते हैं इसलिए सब (मोहिल) परिवार आपसमें ही कटकर खतम हो गये। 18 पासमें।

वडो वात छै[1] । तिण ऊपर राव जोधोजी आपरा भाई बंध भेळा करनै रांणा वैरसल, नरबद ऊपर आया ।[2] वैरसल नरवद रावजी जोधैजीनूं आवता सुणनै आपरी वसी लेनै नीसर गया ।[3] धको झालियो नहीं ।[4] राव जोधाजी द्रोणपुर छापर मारियो ।[5] सारी धरती पजाई ।[6] वडो अमल कियो ।

मोहिल रांणै वैरसल नरबद धरती छाड कांनो लियो ।[7] कितरा-हेक दिन तो फतैपुर, जूंझणू, भटनेर रहिया ।[8] तठा पछै मेवाड़ रांणा कुंभारी तीरै गया ।[9] उठै पण कितराइक दिन रह्या । पछै यां विचारियो–'म्हांसूं धरती छूटी । सबळी ठोड़ आंणी । नै म्हांरै प्रांण तो धरती वळणरी नहीं ।'[10] तरै मोहिल नरबद मेघावत नै राठोड़ वाघो कांधळोत मांमा भांणेज व्है ।[11] यां भेळा होय आलोच कियो ।[12] आंपांसूं धरती छूटी । काहेक धरतीरी वाहर कीजै ।[13]

तिण ऊपरां यां दोनूं जणा पातसाह कनै दिली जावणरो विचार कियो ।[14] अै मांमा भांणेज दिलीनूं हालिया ।[15] ताहरां दिली मांहै लोदिया-पठांणांरी साहिबी थी ।[16] सु अै जाय मिळिया । पातसाहजीसूं फरियाद कर अरज कीवी । ताहरां वांनूं पातसाहजी घणी दिलासा दीनी ।[17] यां मास दस इगियारह चाकरी कीवी ।[18] पातसाह यां सूं महरबान हुआ । यांरी कुमुखनूं घोड़ा हजार पांच दिया ।[19] यांरै

---

1 बड़े अवसरकी बात है । 2 अपने भाई-बंधुओंको इकट्ठा करके रांणा वैरसल नरबद पर चढ़ कर आये । 3 वैरसल और नरबद, राव जोधाजीको आया सुन करके अपनी बसी (बस्ती) लेकरके निकल गये । 4 आक्रमणका सामना नहीं किया । 5 राव जोधाजीने द्रोणपुर छापर लूटा । 6 सारी धरतीको हैरान किया । 7 मोहिल राणा वैरसल और नरबदने धरतीको छोड़ कर किनारा लिया । 8 कितनेक दिन तो फतहपुर, झुंझनूं और भटनेर रहे । 9 जिसके बाद मेवाड़में राणा कुंभाके पास गये । 10 हमारे अधिकारसे धरती गई, सबल जगह थी सो राव जोधाने अपने अधिकारमें ले ली और अब हमारे बल पर तो यह धरती वापिस हाथ आनेकी नहीं । 11–12 तब मोहिल नरबद मेघावत और वाघा कांधलोत, जो परस्पर मामा भानजे हैं, इन्होंने मिल कर विचार किया । 13 किसी और धरतीकी तलाश की जाय । 14 इस पर इन दोनों जनोंने बादशाहके पास दिल्ली जानेका विचार किया । 15 ये मामा-भानजे दिल्लीको चले । 16 उन दिनों दिल्लीमें लोदी पठानोंकी बादशाहत थी । 17 तब बादशाहने उनको बहुत आश्वासन दिया । 18 इन्होंने दस-ग्यारह मास तक बादशाहकी चाकरी की । 19 इनकी सैनिक सहायताके लिए पांच हजार घोड़े दिये ।

साथै सारंगखांन पठांणनूं मेलियो ।[1] पछै सारंगखांन पठांण, नरबद मोहिल, वाघो कांधळोत राठोड़ अै सारा ही चलायनै फतैपुर जूंझणू-री पाखती आया ।[2] रांणो वैरसल पण आय भेळो हुओ ।

राव जोधाजी पण आपरा मांणस हजार ६००० लेनै सांमां आया ।[3] अै पण फतैपुर नै छापररी कांकड़ माथै आया ।[4] दोनूं फोजां दोनूं तरफ आई । आयनै उतरिया ।[5] दोनूं तरफां वेढरी तैयारी हुवै छै ।[6]

ताहरां राव जोधैजो राठोड़ वाघा कांधळोतनूं छांनै तेड़ायो ।[7] तेड़नै जोधैजी कह्यो–'साबास ! भतीजा तोनूं ! म्हां ऊपरां मोहिलां-रै वासतै तरवार बांधी । भोजायां बैरांनूं बंध कराईस ?[8] ताहरां ईयै वाघै विचार दीठो–'यां मोहिलांरै वासतै आ करूं छूं भायांसूं, पण भली नहीं ।'[9]

ताहरां वाघै रावजोनूं कह्यो–'हूं थां मांहै छूं । कहो सु तरदोज करूं । थांहरै फायदो होय सो करूं ।'[10] ताहरां वाघै रावजीनूं कह्यो–'मोहिलांरै घोड़ा दूबळा[11] छै । घोड़ांरा पग ऊपड़ै न छै ।[12] सो यां तीरां हूं पाळांरी वेढरो मतो कराड़ीस ।[13] नै पठांण कहसी–'म्है चढिया वेढ करस्यां ।[14] यां कनां हूं मतो कराऊं छूं ।[15] मोहिल

---

1 इनके साथ सारंगखान पठानको भेजा । 2 फिर सारंगखां पठान, नरबद मोहिल और राठोड़ वाघा कांधलोत–ये सभी चला करके फतहपुर झुंझुनूंके पास आये । 3 राव जोधाजी भी अपने ६००० आदमियोंको लेकर सामने आये । 4 ये भी फतहपुर और छापरकी सीमा पर आये । 5–6 आकरके ठहरे हैं और दोनों ओर लड़ाईकी तैयारियां हो रही हैं । 7 तब राव जोधाजीने राठोड़ वाघा कांधलोतको गुप्त रीतिसे अपने पास बुल-वाया । 8 बुला करके जोधाजीने कहा––'भतीज ! तेरेको शाबास है. मोहिलोके लिए मेरे ऊपर तूने तलवार बांधी है, अपने कुल की भोजाईयां आदि स्त्रियोंको कैद करवायेगा ? 9 इस पर वाघाने विचार कर देखा––'इन मोहिलोंके लिए भाईयोंके साथ ऐसी बात करूं यह तो वास्तवमें अच्छी बात नहीं । 10 मैं तुम्हारे साथ हूं, जो तुम कहो सो तजवीज करूं, तुमको जिस प्रकार लाभ हो वही करूं । 11 दुर्बल । 12 घोड़ोंके पग नहीं उठते हैं । 13 इसलिए मैं इनसे पैदल लड़ाई करनेका निश्चय करवा दूंगा । 14 और पठान तो कहेंगे ही कि हम तो सवार होकर ही लड़ाई करेंगे 15 सो इनसे मैं इस प्रकार निश्चय करवाता हूं ।

पाळा लड़सी[1] , तिको तमाचो डावै हुसी नै पठांणांरो तमाचो जीमणो हुसी ।[2] सु थे लोह मिळतै सारा मोहिलांरो साथ पाळो हुसी, तिणां ऊपर घोड़ा नांखज्यो ।[3] पाळो साथ हुसी सु नीसर जासी ।[4] तुरक चढिया छै, त्यां ऊपर तरवारियां खेरज्यो ।[5] मरणहारा छै सु मरसी[6] बीजा तुरक भागजासी ।'[7] यूं मचकूर करनै वाघो उठै गयो ।[8]

यां मोहिलांसूं मसलत वेढरी कीवी ।[9] मोहिल लोह मिळिया ।[10] सु मोहिलां ऊपर राठोड़ांरो साथ तूट पड़ियो ।[11] सु अै पाळा धको झाल सगिया ही नहीं, नीसरता हुवा ।[12]

राव जोधैजोरै साथ नै[13] सारंगखांन वडी वेढ[14] हुई । पठांण सारंगखांन मांणस ५५५ सूं खेत पड़ियो ।[15] बाकीरा के घावै पड़िया, के नीसर गया ।[16] खेत राव जोधैजीरै हाथ आयो ।[17] राव जोधैजी-री वडी फतै हुई । राव जोधोजी द्रोणपुर पाछा आया । राव धरती मांहै वडो जमाव कियो ।

रांणो वैरसल पाछो मेवाड़ नांनांणै[18] गयो, नै नरबद फतैपुर कांठै पड़ियो रह्यो ।[19] मोहिलांथां धरती छूटी ।[20]

राठोड़ांरी सायवी वडी जमीयत हुई ।[21] राव जोधोजी कुंवर जोगैनूं आ ठोड़ देखनै दीधी ।[22] पछै आप मंडोहर पधारिया ।

1–2 मोहिल पैदल लड़ेंगे सो उनकी टुकड़ी बांई ओरको होगी और पठानोंकी टुकड़ी दाहिनी ओर होगी । 3 सो भिड़ंत शरू होनेके समय मोहिलोंका साथ, जो पैदल होगा, उन पर अपने घाड़े डाल देना । 4 जो सैनिक पैदल होंगे सो भाग निकलेंगे । 5 तुर्क चढ़े हुए होंगे जिनके ऊपर तलवारोंसे प्रहार कर देना । 6–7 मरने वाले हैं सो तो मर ही जायेंगे और दूसरे तुर्क भाग जायेंगे । 8 इस प्रकार मजकूर (उक्त निश्चय) करके वाघा उधर चला गया । 9 मोहिलोंके पास जाकर यही मसलहत (गूढ और हितकारक परामर्श) लड़ाईके सम्बन्धमें की । 10 मोहिल शस्त्र लेकर भिड़े । 11 सो मोहिलोंके ऊपर राठौड़ों-का साथ टूट पड़ा । 12 सो ये लोग पैदल थे, आक्रमणका धक्का नहीं सम्हाल सके, भाग खड़े हुए । 13 और । 14 लड़ाई । 15–16 पांचसौ पचपन आदमियोंके साथ पठान सारंगखांन खेत रहा, शेष कई आहत हुए और कई भाग निकले । 17 राव जोधाजी-के हाथ खेत आया । 18 ननिहाल । 19 और नरवद फतहपुरके पास पड़ा रहा । 20 मोहिलोंसे धरती छूट गई । 21 राठौड़ोंकी वहां बड़ी प्रभुता और जमीयत हुई । 22 यह ठौड़ देख कर राव जोधाजीने इसे कुंवर जोगेको दे दी ।

सु कुंवर जोगो भोळो सो ठाकुर हुतो ।[1] सु जोगासूं धरती रस नह आई, नै धरती मांहै मोहिलांरो दखल हुवण लागो ।[2] धरतीरो मोहिल विगाड़[3] करण लागा । ठोड़-ठोड़थी फरियाद आवरण लागी । ताहरां कुंवर जोगैरै वहू भाली हुती, तिरण आपरा सुसरा रावजीसूं कहायो[4]–'जु, थांहरा बेटा मांहै लखण क्युं नहीं छै ।[5] नै धरती लीवी छै सु जाय छै ।[6] जांणों सु इलाज कीज्यो ।'[7] तिरण ऊपरां कुंवर वीदो वीकेजीरो छोटो भाई सांखली नवरंगदेरो वेटो, तिणनूं द्रोणपुर छापर दीधी अर जोगानूं बोलाय लियो ।[8]

रावजी वीदानूं कह्यो–'देखां, किसड़ो बंधेज करै छै, नै किसड़ो सिरदार व्है छै ?'[9] ताहरां वीदोजी रावजीरै पाय लागनै[10] चढिया सु द्रोणपुर-छापर आया । वडो बंधेज कियो ।[11] वडो अमल धरती मांहै । मोहिल मांहो मांही वडी खसण वहै ।[12] सु मोहिलांनूं राठोड़ वीदे पटो दे नै चाकर किया ।[13] मोहिल चाकरी करै ।

जबो सींगटोत, सींगट जगरामरो, जगरांम जवरणसीओत ।[14]

तिण जबै वीदेजीनूं नारेळ मेलियो, बेटी परणाई ।[15] सु जबो मायाधारी ठाकुर हुतो नै भायांसूं वडो वैर ।[16] ताहरां राव वीदेनूं परणायो ।[17] वीदो पेहलो वीमाह मोहिलै परणियो ।[18] जबै वीदेजीनूं दायजो[19] घणो दियो । घोड़ा १००, ऊँठ २०० नै रुपिया लाख १ रो

---

1 कुंवर जोगा सीधा-सादा ठाकुर था । 2 सो जोगासे धरती सम्हल नहीं सकी और धरतीमें मोहिलोंका दखल होने लगा । 3 नुकसान । 4 तब कुंवर जोगेकी पत्नी झालीने अपने ससुर रावजीसे कहलवाया । 5 तुम्हारे पुत्रमें योग्यता कुछ भी नहीं है । 6 और जो धरती ली है वह वापिस जा रही है । 7 उचित उपाय करें । 8 इस पर, वीकाजीका छोटा भाई कुंवर वीदा सांखली नवरंगदेका बेटा, उसे द्रोणपुर छापर दी और जोगाको वापिस बुला लिया । 9 रावजीने वीदाको कहा कि देखें कैसी व्यवस्था करता है और कैसा सरदार बनता है ? 10 चरण स्पर्श करके । 11 बडी अच्छी व्यवस्था की । 12 मोहिलोंके परस्पर वडी खटपट चलती है । 13 इसलिए राठौड वीदेने पट्टे देकरके मोहिलोंको अपना चाकर बना लिया । 14 सींगटका बेटा जबा, सींगट जगरामका बेटा और जगराम जवरणसीका बेटा । 15 उस जबेने वीदेजीको नारियल भेजा और अपनी बेटी व्याही । 16 जबा बड़ा धनवान परन्तु भाइयोंसे उसकी शत्रुता थी । 17 इसलिए उसने राव वीदेको व्याहा । 18 वीदेने अपना पहिला विवाह मोहिलोंके यहाँ किया । 19 दहेज ।

माल दियो। वडो व्याह कियो। वीदैरै ठकुराई पगथी मंडी।[1] मोहिलांणी-सूं वीदो घणी मया करै।[2] पछै जबै वीदासूं कहिनै कितराहेक मोहिलांसूं जबैरै वणतो नहीं, तिके सारा धरती मांहेसूं कढाया।[3] वीदैं वडो अमल कियो। वीदै द्रोणपुर फेर वसायो।[4] द्रोणपुर वडी वसती कीवी।[5]

संमत ६३१ वागड़ियां तीरा मोहिले धरती लीवी थी, सु ६०० वरस तांई मोहिले धरती भोगवी। संमत १५३१ सूधी मोहिलांरै धरती रही।[6]

संमत १५२३ राव जोधैजी धरती लीवी थी, मास ४ तथा ५ रही।[7]

पछै कुंवर मेघो वछराजोत तिके फेर धरती अपूठी लीवी।[8] मेघो टीकै बैठो। धरती वसाई। पछै मेघो मुंवो[9] ताहरां वैरसल नै नरबद पाट बैठा।

ताहरां राव जोधोजी मंडोवरसूं कटक करनै छापर द्रोणपुर ऊपर आया, ताहरां वैरसल नरबद नीसर गया।[10] ताहरां राव धरती लीवी, तिणरी हकीकत ऊपर छै। राव जोधै धरती लेनै कुंवर वीदेनूं दीधी हुती।[11] सु आज सूधी धरती वीदेजीरा पोत्रां वीदावतां हेठै छै।[12]

राठोड़ रांमदेरा वे-अखरी छंद, तिणां मांहै सारी हकीकत छै[13]–

---

1 वीदेकी ठकुराईकी नींव जमी। 2 वीदा मोहिलाणीसे खूब प्रेम करता है। 3 फिर जबेने वीदाको कह करके, कितनेक मोहिलोंको, जिनका जबेसे बनता नहीं था, उन सबको धरतीमेंसे निकलवा दिया। 4 वीदेने द्रोणपुर पुनः बसाया। 5 द्रोणपुरको बड़ी वस्ती बना दिया। 6 सम्वत् ६३१में वागड़ियोंसे मोहिलों ने धरती ली थी, उस धरतीको ९०० वर्षों तक मोहिलोंने भोगी। सम्वत् १५३१ तक यह धरती मोहिलोंके अधिकारमें रही। 7 यद्यपि सम्वत् १५२३में राव जोधाजीने उस पर अधिकार कर लिया था, किन्तु केवल ४ या ५ महीनों तक ही उनके अधिकारमें रह सकी। 8 बादमें कुंवर मेघा वछराजोतने वापिस छीन ली थी। 9 मर गया। 10 तब वैरसल और नरवद भाग कर निकल गये। 11 राव जोधाने इस धरतीको लेकर कुंवर वीदेको देदी थी। 12 सो आज तक यह धरती वीदाजीके पौत्र वीदावतोंके अधिकारमें है। 13 राठौड़ रामदेव द्वारा रचित निम्नांकित बे-अखरी छंद, जिसमें सारा वृत्तान्त कहा गया है।

।। छंद बे-अखरी ।।

(राठोड़ रामदेवरा कहिया)

वागड़ियै[1] भोगवी वसाई,
नमियर उवही[2] कळ[3] नह आई।
चोळी[4] वळै[5] मोहिलै वरवा[6],
धर रस चूंप[7] इधक[8] मन धरवा ।। १
धजवड़[9] पांण[10] लियां खत्र[11] घोड़ै,
रेहिलिया[12] मोहिल राठोड़ै।
मेवासी राव जोधै मिळिया,
दोमज[13] भांज मिरी[14] सिर दळिया[15] ।। २
वहै अजीत जिसा[16] वैराई[17],
वसुधा जोधै राव वसाई।
रूकै[18] बरछ्यां सिंघारै[19] रांणो,
थापै[20] जोधै छापर थांणो ।। ३
वीदै वांको[21] दु[22] वसायो,
जैत हथो[23] राव जोधै-जायो।[24]।
सीरै फेर घांस[25] सत्रां[26] सिर,
गढ वीदो तपियो द्रोणागिर ।। ४
केवी वीद घरोघर कीधा[27],
लीया देस ग्रास डंड लीधा।[28]
................................,
.... ।। ५

---

1 वागड़ियोंने। 2 पृथ्वी (पाठान्तर–'उरही', 'उरवी')। 3 युद्ध। 4 लौटाई (पाठान्तर–'बोली')। 5 फिर। 6 वरनेके लिये, वरण करनेके लिये। 7 अनुराग, उत्कट इच्छा। 8 अधिक। 9 तलवार। 10 के द्वारा, से। 11 क्षत्रिय। 12 मार लिया, नाश कर दिया। 13 शत्रु (पाठान्तर–'दोयण')। 14 मीर, मुसलमान (पाठान्तर–'मीर')। 15 नाश किया। 16 जैसे। 17 शत्रु। 18 तलवारोंसे। 19 संहार कर दिया। 20 स्थापित किया, स्थापित करके। 21 वंका, दुर्जेय। 22 दुर्ग। 23 विजयी, जिसके हाथोंसे विजय प्राप्त हो। 24 जोधाका पुत्र। 25 १. युद्ध, २. सेना, ३. आक्रमण। 26 शत्रुओंके। 27–28 वीदेने शत्रुओंको घर घरका बना दिया (उनको विसंगठित कर दिया।), उनका देश ले लिया और उनसे डंड और ग्रास भी लिया।

दूहा

।। चारण चांपै साम्रोररा कहिया ।।

सेलहथां देवडांण सह, गोराहां गीलांह ।
वाघोड़ां वंगाह वरण, एको गोत इतांह ।। १
सोनगरा हाडा सकळ, राखसिया निरवांण ।
चाहिल मोहिल खीचियां, एता सोह चहुवांण ।। २[1]

---

1 (१) सेलहथा=सेलोत, (२) देवडांण = देवड़े, (३) गोराहां = गोरा या गोराहा, (४) गीलांह = गीला, (५) वाघोड़ां = वाघोड़े, (६) वंगाह = वंगा, (७) सोनगरा, (८) हाडा, (९) राखसिया, (१०) निरवाण, (११) चाहिल, (१२) मोहिल और (१३) खीची—ये सभी चौहान हैं। इनमेंसे सेलोत, देवड़े, गोराहे, गीले, वागोड़े और वंगा—ये एक गोत्रके हैं।

चौहानोंकी चोवीस शाखायें कही जाती हैं। यहां इन दो दोहोंमें केवल १३ नाम आये हैं। इन दो दोहोंमें दोहा प्रथमके बाद कदाचित एक दो दोहे और हों, जिनमें शेष शाखाओंका उल्लेख हो; परन्तु सभी प्रतियोंमें ये दो दोहे ही प्राप्त हैं। ख्यात, भाग १, पृ० ८७में चौहानोंकी २४ शाखाओंकी जो सूची दी है, उसमें इन दोहोंके गोराहा, वाघोड़ा, मोहिल और वंगा—ये चार नाम नहीं हैं। ये नाम नैणसीकी निम्न सूचीके किन्हीं नामोंके पर्याय नहीं हों तो चौहानोंकी शाखाओंकी संख्या २८ हो जाती है। इन नामोंके अतिरिक्त वागड़िया (भाग १, पृ० ११७), पूरेचा (पृ० २२८), कांपलिया (पृ० २४८) इत्यादि शाखाओंके नाम और पीढ़ियोंका विवरण ख्यातमें मिलता है। कायमखानी भी चौहानोंमेंसे ही निकले हैं। इस प्रकार शाखा-सूचीके नामोंके अतिरिक्त कई शाखाओंके नाम और हैं अथवा शाखा-सूचीके अतिरिक्त जो नाम प्राप्त हैं वे या तो सूचीके नामोंके पर्याय हैं या अंतर शाखायें हैं। कर्नल टॉडने जो नाम दिये हैं, उनमें और इनमें भी बहुत अंतर है। तुलनाके लिये दोनों सूचियां दे रहे हैं—

नैणसी की सूची

१ चहुवांण
२ सोनगरा
३ खीची
४ देवड़ा
५ राखसिया (साखसिया)
६ गीला
७ डेडरिया
८ वगसरिया
९ हाडा
१० चीवा
११ चाहेल (चाहिल)
१२ सेलोत
१३ वेहळ
१४ बोड़ा
१५ वालोत
१६ गोलासण (गोळासण)
१७ नहरवण
१८ वेस (वैस)
१९ निरवांण
२० सेपटा
२१ ढीमड़िया
२२ हुरड़ा
२३ माल्हण (म्हालण)
२४ चंकट

दूहा पीढियांरी विगतरा

चाह हुवो चहुवांणरो[1], प्रथमी गढ जस-पूर ।[2]
चक्रवत[3] उदियो[4] चाहरै, समवड़ मघवन सूर[5] ॥ १
महि-पुड़[6] भीच[7] प्रवाड़मल[8], भूबळ आपण भाव ।
सिंघ हुवो घणसूररै, रूपक वँस इंदराव[9] ॥ २
पात वडा सारी प्रथी, जपै सदा जस जीह[10] ।
रढवांवण[11] इंद्ररावरै, उदियो अजण अबीह[12] ॥ ३
पूरबली पळ पाळवा, तुड़ तांणग गहवंत ।[13]
अजण तणो वँस ओपियो, सुजन हुवो सामंत[14] ॥ ४

[पिछले पृष्ठ का शेष]

कर्नल टॉडने जो नाम दिये हैं, उनमें ६–७ नामोंको छोड़ करके सब दूसरे हैं। टॉडकी सूची इस प्रकार है—

१ चौहान	१३ पूरबिया
२ सोनगरा	१४ मादड़ेचा
३ खीची	१५ वालेचा
४ देवड़ा	१६ गोहिलवाल
५ रोसिया	१७ भूरेचा
६ सांचोरा	१८ तसेरा
७ पविया	१९ निरवाण
८ भेदोरिया	२० संकरेचा
९ हाडा	२१ निकुंभ
१० चांदू	२२ भावर
११ चाचेरा	२३ मालण
१२ सूरा	२४ वंकट

1 चहुवान का पुत्र चाह हुआ। 2 पृथ्वीके गढपतियोंमें पूर्ण कीर्त्तिमान हुआ। 3 चक्रवर्ती। 4 उत्पन्न हुआ। 5 इन्द्रके समान शूरवीर, (मघवन+सूर=घन+सूर>घणसूर) 6 पृथ्वीतल। 7 वीर। 8 यशप्राप्त वीरोंमें वीराग्रणी। 9 घणसूरके वंशमें सिंहके समान ओज गुणों वाला इंद्रराव (इंद्रवीर) उत्पन्न हुआ। 10 सारी पृथ्वीके बड़े-बड़े चारण-कवि उसका यश वर्णन करते हैं। 11–12 महाहठी इन्द्ररावके निर्भय पुत्र अर्जुन उत्पन्न हुआ। (रढरांवण = रावणके समान बली और हठीला।) 13 वह पूर्ण बलवान शूराभिमानी और उपकार और युद्धके अवसरोंको तुरंत साधनेवाला था। 14 अर्जुनका पुत्र सुजन (सुजंन) भी सामंत और वंशको सुशोभित करने वाला हुआ।

सुवस किया[1] खेड़ा[2] सकल, चक्रवत चवदै-चाल[3] * ।
मोहिल तपियो[4] महपती[5], सुजन तणो सींगाळ[6] ।। ७
रेणा[7] कीधी आपरी, सह अचखाळे[8] सत्त ।
मोहिल तण[9] उदियो[10] मछर[11], दीपक वँस हरदत्त ।। ८
रांण वडम[12] छळ[13] रक्खवा, आपण पांण अबीह[14]।
दळनायक हरदत्तरै, सोहै वँस वरसीह[15]।। ९
कुळ दीपक चढती कला, सुत वरसीह सुचाव ।
हाथाळौ[16] जुग-पुड़[17] हुवौ, रांणौ बालहराव[18]।। १०
राज वंसरा रेहलौ, चूको जाव सुवल्ल ।
वाहळरौ[19] टीकौ वडम, ले दीनौ आसल्ल[20] ।। ११
अतुळीबळ[21] राखण अचड़[22], भुज निरवाहण भार ।
आसलरै उदियो अभंग, आहड़ वंस-उदार[23]।। १२
सोह मेवासी संकिया[24], भूप लियेवा भीह[25]।
आहड़ तण तपियौ इळा[26], सादूळो रणसीह[27]।। १३
सुरहै[28] चवदै-चाळ सै, दीन्हैं कळप दुबाह[29] ।
साहणमल रणसीहरौ, पतगरियो पतसाह[30] ।। १४
बळहट दव····· वडम, हुवा मुकत्ता हट्ट ।
पाट जु साहणपाळरै, लाज भुजै लोहट्ट[31] ।। १५

---

* 'चवदै-चाळ' (चौदहसौ चालीस गांवोंका क्षेत्र) । गांवोंकी संख्याके उदाहरणके लिये देखिये ख्यात भाग १, पृ० २८७

---

1 भली प्रकार बसाया (भली प्रकार वशमें किया)। 2 गांव। 3 चौदहसौ चालीस गांवोंका प्रदेश। 4 शासन किया। 5 राजा। 6 सुर्जनका निर्भीक पुत्र। 7 पृथ्वी। 8 उद्दंड वीर। 9 पुत्र। 10 उत्पन्न हुआ। 11 चौहान। 12 वड़ा, श्रेष्ठ। 13 (१) युद्ध, (२) लिये, कारण। 14 निर्भय और शक्तिमान। 15 सेना-नायक हरदत्तके वरसिंह (वैरसीह) नामका पुत्र शोभायुक्त है। 16 बलशाली हाथों वाला। 17 पृथ्वीतल। 18 बालहराव (वालहर) राणा। १९ बालहराव (वालहर) की ऊन संज्ञा। 20 बालहरावका उत्तराधिकारी राणा आसल। 21 अतुलित बलशाली। 22 कीर्त्ति। 23 आसलका पुत्र आहड़ बड़ा अभंग और वंशमें उदार उत्पन्न हुआ। 24 समस्त मेवासियोंने भय खाया। 25 डर। 26–27 फिर आहड़के पुत्र सिंहके समान बलशाली रणसिंह (रैणसी)ने पृथ्वी पर शासन किया। 28 गायें। 29 घोड़े। 30 बादशाहकों जिसने वशमें किया। 31 अपनी सुदृढ़ भुजाओंके बल राज्यकी लाजको रखने वाला लोहट साहणपालके पाट पर आसीन हुआ।

थरकै[1] खळ दूरै थका[2], अद्दल वरतै आंण[3] ।
लोहट पाट विराजियो, राजन बोवौ रांण[4] ॥ १६

सिद्धां गृह साधक हवै[5], जग-मालम[6] खग-जैत[7] ।
बैसै[8] गादी बोव-उत, वेगो वंस वांनेत[9] ॥ १७

छापर धणी जु छत्रपति, सामंत वेग-सुजाव[10] ।
धर खागां बल् धूपटै, रांणो मांणकराव[11] ॥ १८

साख चोवीसां सोहियो, नरां चढावै नीर[12] ।
रांणा मांणकरावरै, सांगो पाट सधीर[13] ॥ १६

सोहै चवदै-चाळसै, लेखीजै भुज लाज[14] ।
सांगारी गादी सुगह, रांण तपै वछराज[15] ॥ २०

साह सिकंदर संकियो[16], दे पिसुणां सिर दौड़[17] ।
रुप गादी बछराजरी, मेघो वंस सु मौड़[18] ॥ २१

मोहिल दाता-मोहरी[19], जस गाहक गुण जांण ।
सुकवि पाल्ग वैरसल, मेघावत महरांण[20] ॥ २२

मोहिल दीधा मांगणां, हित दाखै वरहास[21] ।
वैरावत कुळ वाचिजै, दीपक जाळपदास[22] ॥ २३

---

1 कंपित होते हैं । 2 दूरसे ही । 3 जिसकी अदल आज्ञा प्रवर्त होती है । 4 लोहटके पाट बोवा राणा बैठा । 5 सिद्धोंके घरमें साधक ही उत्पन्न होते हैं । 6 जग-प्रसिद्ध । 7 खड्गके द्वारा विजय प्राप्त करने वाले । 8 बैठा, बैठता है । 9 वंशमें ध्वजा-रूप बोवेका पुत्र वेगा । 10 वेगाका पुत्र । 11 राणा माणकराव खड्ग-बलसे शत्रुओंको जीत कर उनकी धरतीको अपने अधिकारमें कर उसका उपभोग करता है । 12 मनुष्योंमें प्रतिष्ठा बढ़ानेवाला चोहानोंकी चोबीस शाखाओंमें शोभित हुआ । 13 राणा माणकरावकी गद्दीपर धैर्यवान सांगा आसीन हुआ । 14 वीरोंकी भुजाओंका लाजरूप माना जानेवाला चौदह-चालकी भूमिमें शोभित है । 15 सांगाकी गद्दी पर उसका पुत्र बछराज राज्य करता है । 16 भय माना, डर गया । 17 शत्रुओं पर आक्रमण करता है । 18 बछराजकी गद्दी पर वंशका मुकुट मेघा स्थापित हुआ । 19 मोहिल दानदाताओंमें प्रथम । 20 दानियोंमें महार्णवके समान विशाल हृदय वाला दानी मेघा जिसका पुत्र कवियोंका पालन करने वाला वैरसल हुआ । 21 मोहिल (वैरसल)ने हितपूर्वक याचकोंको घोड़े दानमें दिये । 22 उस वैरसलके वंशका कुल-दीपक जालपदास हुआ ।

परविड़यां जागै प्रथी, कळह सँवारै कांम[1] ।
जाळपरै हद जोमरै, वीणो वँस वरियांम[2] ॥ २४

सींगाळौ कुळमें सदा, जुध वेळा खग-जैत[3] ।
चाव न चूकै रामचंद, वेणावत वांनेत[4] ॥ २५

॥ इति मोहिलां री वात संपूर्ण ॥

॥ कल्याणमस्तु ॥

---

1 पृथ्वीके लिये जब युद्ध प्रारंभ होता है तो उसमें प्रवाड़े गाये जाने जैसी वीरतासे युद्ध करके विजय प्राप्त करता है । 2 असीम शक्ति वाले जालपके कुलश्रेष्ठ वीणा उत्पन्न हुआ । 3 कुलमें वीर पुरुष और सदा युद्धमें विजय प्राप्त करने वाला (सींगाळो = १. उच्चाशय २. वीर) 4 विरुदधारी वीणाका पुत्र रामचंद्र कभी अवसरको नहीं चूकता । (वांनेत = १. विरुदधारी २ ध्वजाधारी, ३ भालाधारी ।)

छत्तीस राजकुळी इतरै गढेराज करै

१. कनवजगढे[2] राठोड़ ।

२. धार नगर मालव देसै पमार ।[3]

३. नाडूलगढे[4] चहुवांण ।

४. आहाड़ नगरे[5] मोहिल ।

५. साहिलगढे दहिया ।

६. थोहरगढे काबा ।[6]

७. दुरंगगढे सिणवार पांणेचा बोर ।

८. रोहिरगढे* सोळंकी ।

९. मांडहड़गढे खैर ।[7]

१०. चीत्रोड़गढे मोरी ।[8]

११. मांडलगढे निकुंभ ।[9]

१२. आसेरगढे टाक ।

१३. खेड़-पाटण गोहिल ।[10]

१४. मंडोहर पड़िहार ।

१५. अणहलपुर-पाटण चावोड़ा ।[11]

---

1 छत्तीस राज्यवंश इतने (निम्नांकित) गढ़ (तथा देशों पर) राज्य करते हैं। 2 कन्नौजगढ़ पर। 3 पँवार, परमार। 4 नाडोलगढ़ पर। (नाडोल मारवाड़के गोड़वाड़ प्रान्तका एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर है।) 5 आहाड़ नगर पर। (आहाड़का प्राचीन नाम आघाट या आघाटपुर है। महाराणा उदयसिंहने इसके समीप ही अपने नाम पर उदयपुर नगर बसाया था। पुरातत्त्व विभाग, राजस्थानकी ओरसे आहाड़में इस समय खुदाई करवाई जा रही है। इस खनन-कार्यसे राजस्थान और भारतकी प्रस्तर और ताम्रयुगकी सभ्यतापर महत्व-पूर्ण प्रकाश पड़ा है। शोध और खनन अभी चालू है।) 6 कावा परमारोंकी एक शाखा है। 7 खैर, परमारोंकी एक शाखा है। 8 चित्तौड़गढ़ पर मौर्य राज्य। 9 मांडलगढ़ पर निकुंभ। (निकुंभ, दहियोंके बडेरे हैं। निकुंभ ऋषिसे निकुंभ शाखा चली और उनके पौत्र दधीचि ऋषिसे दहिया वंश चला। किणसरिया गांवके केवायदेवीके मन्दिरके वि० सं० १०५६के शिलालेखमें दहियोंको दधीचि ऋषिका वंशज होना बतलाया है।) 10 खेड़पाटण (मार-वाड़)में गोहिलोंका शासन। (राठौड़ सीहोजी और उनके पुत्र आसथानने गोहिलोंको मार-भगा कर पहले-पहल खेड़पाटणमें अपनी राजधानी स्थापित की जिससे राठौड़ोंकी पहली शाखा 'खेड़चा' प्रसिद्ध हुई। इस समय खेड़पाटणमें कोई घर नहीं है। भग्नावशेषोंके बीच केवल २–३ टूटे-फूटे मंदिर स्थित हैं। बड़े मंदिरकी श्री रणछोड़रायकी प्रतिमा डॉ० तैस्सितोरी द्वारा पल्लू (राजस्थान)में प्राप्त की हुई सरस्वतीकी समान आकृतिकी दो प्रसिद्ध प्रतिमाओंके समान आकार व समान कलापूर्ण है।) 11 अणहिलपुर-पाटनमें चावड़े। (चावड़ोंको वाट्सन, फार्बस आदिने परमारोंकी एक शाखा माना है। नैणसीने परमा-रोंकी ३६ शाखाओंके जो नाम दिये हैं उनमें यह नाम नहीं है।)

पाठान्तर—*रोहितगढ, रोहिलगढ।

१६. पाटड़ी झाला ।
१७. करनेचगढे बूर ।
१८. कळहटगढे कागवा ।[1]
१९, भूंभळियागढे* जेठवा ।[2]
२०. नारंगगढे रहवर ।[3]
२१. लोहवैगढ बूया ।
२२. ब्राह्मणवाड़ै वारड़ ।[4]
२३. जायलवाड़ै खीची ।[5]
२४. वंसहीगढे खरावड़° ।[6]
२५. रोहितासगढे डोड° ।[7]
२६. हिरमजगढे हरियड़
२७. दिलीगढे तुंवर ।
२८. कपडविणज डाभी ।[8]
२९. हथणापुर कौरव ।
३०. मगरोपगढे मकवांणा ।[9]
३१. जूनैगढ जादम ।[10]
३२. थोहरगढे कछवाहा ।
३३. लुद्रवै भाटी ।
३४. कच्छ देसे स्यांमा ।[11]
३५. सिंध देसे जांम ।[12]
३६. अजमेरगढे गोड ।
३७. धाट देसे सोढा ।[13]
३८. देरावर दहिया ।

---

1 कागवा, परमारोंकी एक शाखा । 2 जेठवा, प्रतिहारोंकी शाखा है । 3 रहवर, सोलंकियोंकी एक शाखा । 4 वारड, परमारोंकी एक शाखा । 5 खीची चौहानोंकी एक शाखा । 6 प्रतिहारोंकी एक शाखा । 7 परमारोंकी एक शाखा । 8 डाभी, प्रतिहारोंकी एक शाखा या प्रतिहारोंका दूसरा नाम । (नैणसीने एक स्थान पर आबूके अनलकुंडसे उत्पन्न चार क्षत्रियोंके नामोंमें चौथा नाम पड़िहारके स्थान पर 'डाभी' नाम लिखा है । (देखिये नैणसीरी ख्यात, भाग १, पृ० १३४) कपड़विणज, गुजरात के नड़ियाद जिलेका एक नगर है । नड़ियाद जंकशनसे कपड़विणजको एक रेलकी शाखा जाती है । आजकल इसे कपड़वंज कहते हैं ।) 9 मकवाणा, झालाओंकी एक शाखा है । 10 यादव । 11स्यामा, श्रीकृष्णके पुत्र साम्बके नाम पर उसके वंशज स्यामा (सम्मा) कहलाये । 12 जाम, यादवोंकी एक शाखा । (जादम, स्यामा, जाम और भाटी–ये सब यादव हैं ।) 13 सोढा परमारों की एक शाखा ।

पाठान्तर--*भूमळियागढ । °खरवड, खरवड़, खरावड़, खारावड़ । °डोडा, डोडकाग । °हरमल, हिरमल, हरिमड़ । °शुद्ध नाम 'तोमर' है । °होरघ, होरड़, होरव । °थोहरगढ, ऊपर सं० ६ में आ चुका है । एक प्रतिमें नरवरगढ पाठ है; अतः नरवरगढ पाठ ही उचित है ।

।। श्री गणेशाय नमः ।।

अथ परमारांरी वंसावळी

आबू स्थांन, अनळ कुंड निकासाय, पंच प्रवराय।
वच्छस गोत्राय, मादधुनो साखाय, सचियाय कुळ देव्याय ।।[1]

प्रथम, आद[2]	१
जुगाद[3]	२
कमळ	३
ब्रह्मा	४
मरीच[4]	५
कश्यप	६
धूमरिख[5]	७
राजा उपळ[6]	८
राजा परूराई[7]	९
राजा धर्मांगद	१०
राजा धरणीवराह	११
राजा धारगिर	१२
राजा धाहड़	१३
राजा धीरसेन	१४
राजा पोहपसेन[8]	१५
राजा लखसेन[9]	१६
राजा बुद्धसेन	१७
राजा काळसेन	१८
राजा इंद्र	१९
राजा चित्रांगद	२०
राजा गंद्रपसेन[10]	२१
राजा वीरविक्रमादित्य	२२
राजा विक्रमचरित	२३
रांणो अजै भूपाळ[11]	२४
रांणो महपाळ[12]	२५
रांणो मधुर	२६
रांणो चंद	२७
रांणो गोसील[13]	२८
राजा सिंघलसेन[14]	२९
राजा भोज	३०
राजा उदैकरण	३१
राजा देवकरण	३२
राजा सत[15]	३३
राजा सिवर[16]	३४
राजा सालवांहण[17]	३५

---

1 परमारोंका गोत्रोच्चार इस प्रकार है–आबू स्थान, अग्निकुंडसे निकास, पंच प्रवर, वच्छस (वत्स व वशिष्ठ) गोत्र, माध्यंदिनी शाखा और सचियाय कुलदेवी। 2 आदि पुरुष (परब्रह्म)। 3 युगादि (विष्णु) 4 मरीचि। 5 धूम्रऋषि। 6 उत्पल। 7 पुरुरवा। 8 पुष्पसेन। 9 लक्षसेन। 10 गंधर्वसेन। 11 अजय भूपाल। 12 महिपाल। 13 गोशील। 14 सिंहलसेन। 15 सत्य। 16 शिविर। 17 शक सम्वत् प्रवर्तक राजा शालिवाहन।

राजा हंस	३६
राजा हरिवंस	३७
राजा सिंध[1]	३८
राजा मधु	३९
राजा धुंझाळक[2]*	४०
राजा बुध ईच°	४१
राजा माघ°°	४२
राजा उदयादीत[3]	४३
राजा जगदेव°°°	४४
राजा पातळसिंघ•	४५
रांणो गुणराज	४६
रांणो लाखण	४७
रांणो जसपाळ[4]	४८
रांणो लखमसी[5]	४९
रावत कोदो	५०
रावत सांघण	५१
रावत हमीर	५२
रावत हापो	५३
रावत महपो	५४
रावत राघवदास	५५
रावत करमचंद	५६
रावत पंचायण	५७
राजा मालदेव	५८
राजा सादूळ	५९
राजा रायसल	६०
राजा जूंझारसिंघजीरा	
भाई वखतसिंघजी	६१
ठाकुर जगरूपसिंघजी	६२
ठाकुर सुरतांणसिंघजी	६३
ठाकुर जैतसिंघजी	६४
ठाकुर केसरीसिंघजी	६५
ठाकुर माधोसिंघजी	६६

1 सिंधु। 2 धूम्रज्वालक। 3 उदयादित्य। 4 यशपाल। 5 लक्ष्मणसिंह।

[आदि पुरुषसे ठाकुर माधोसिंह तक केवल ६६ पीढियें एक विचित्र-सी बात ज्ञात होती है। ख्यातके प्रथम भाग, पृ० ३३६ और पृ० ३३८ में दो छोटी वंशावलियें सोढों और सांखलोंसे संबंध जोड़ने वाली और दी गई है, जो कोई किसीसे मेल खाती हुई प्रतीत नहीं होती। पिछली वंशावलियें तथ्योंसे निकट जान पडती हैं।]

पाठान्तर-- *अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेर की प्रतिमें 'राजा झालक' नाम लिखा है। °बुधईस। °°वाघ। °°°जयदेव। •पताळसिंघ, पीथळसिंघ।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अथ राठोड़ांरी वंसावळी लिख्यते

सूर्यवंस प्रसूत-राठोड़ान्वयावतंस-महाराजाधिराज-महाराजा श्री अनोपसिंघजी कस्य वंसावळी ।

महाराजाधिराज महाराजा श्री सूरतसिंघजी परत लिखाई[1]—

श्री आदनारायण[2]	१	शावस्त*	१३
ब्रह्मा	२	बृहदश्व	१४
मरीच	३	कुवलयाश्व (अस्यैव नामधुंधुमार इति)	१५
कश्यप	४	दृढाश्व	१६
सूर्य	५	हरियश*	१७
श्राद्धदेव	६	निकुंभ	१८
इक्ष्वाकु	७	बर्हणाश्व	१९
विकुक्षि	८	कृशाश्व	२०
अनेना	९	सेनजित	२१
विश्वगंध	१०	युवनाश्व (द्वितीय)	२२
इंद्र	११		
युवनाश्व	१२		

1 सूर्यवंशमें उत्पन्न राठोड़ान्वयावतंश महाराजाधिराज महाराजा श्री अनूपसिंहजीकी वंशावली, जिसे महाराजाधिराज श्री सूरतसिंहजीकी प्रतिसे लिखवाई। [अन्वय=वंश। अवतंश=(१) भूषण, (२) सबसे श्रेष्ठ। परत = (१) स्वयं, (२) प्रति, नकल, (३) परतः, दूसरेसे। (४) पीछेसे। (५) पुनः, फिर। (६) किन्तु, इत्यादि।]

[महाराजा सूरतसिंहका राज्यकाल वि० सं० १८४४से प्रारंभ होता है और ख्यात-लेखक नैणसीकी मृत्यु वि० सं० १७२७में हो जाती है। अतः नैणसी महाराजा अनूपसिंह (राज्यकाल वि० सं० १७२६–१७५५) के आगे उल्लेख ही नहीं कर सकते। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि वंशावली बादमें लिखी गई है। परन्तु यह मिलती सभी प्रतियों में है। इससे मालूम होता है (और जैसा कि 'परत' शब्दके विभिन्न अर्थों पर विचार करते हैं तो यह अनुमान होता है) कि महाराजा सूरतसिंहके समय या बादमें वंशावलीका मिलान किया गया है और तत्पश्चात् शीर्ष-वाक्यमें 'महाराजाधिराज महाराजा श्री सूरतसिंहजी परत लिखाई' जोड़ कर वंशावलीमें आगे नाम लिख दिये और लिखते गये। सभी प्रतियोंकी मूल बीकानेरकी अनूप संस्कृत लाइब्रेरीकी प्रतिमें तो ऐसा परिवर्धन (आगेके नामोंका भी) स्पष्ट नजर आता है। अतः यह स्पष्ट है कि नैणसीने यह वंशावली महाराजा अनूपसिंह तक ही लिखी है।] 2 श्री आदिनारायण।

पाठान्तर—*(१) श्रावस्त, (२) श्रीवत्स। *(१) हरिअश्व, (२) हरिताश्व।

मांधाता चकवै[1]	२३	नाभ	४७
पुरुकुत्स	२४	सिंधुद्वीप	४८
त्रिदस[2]	२५	अयुतायु	४९
अनरण्य	२६	ऋतपर्ण[4]	५०
हर्यश्व	२७	सर्वकाम	५१
प्रणव	२८	सुदास	५२
त्रिबंधन	२९	अरुमक	५३
सत्यव्रत	३०	मूलक	५४
हरिश्चंद्र[3]	३१	दशरथ (प्रथम)	५५
रोहिताश्व	३२	एलविल	५६
हरित	३३	विश्वसह	५७
चंप*	३४	खटवांग[5]	५८
सुदेव	३५	दीर्घबाहु	५९
विजय	३६	रघु	६०
भरुक•	३७	अज	६१
वृक	३८	दशरथ (द्वितीय)	६२
बाहुक	३९	श्री रामचन्द्रजी	६३
सगर	४०	कुश	६४
महायश	४१	अतिथि※	६५
असमंजस	४२	निषध	६६
अंशुमान	४३	नल	६७
दिलीप	४४	पुंडरीक	६८
भागीरथ	४५	खेमधुनी[6]	६९
श्रुत	४६	देवनीक	७०

1 मान्धाता चक्रवर्ती । 2 त्रिदस्यु । 3 कई प्रतियोंमें सं० ३० और ३१के दोनों नामोंको 'सत्यव्रत हरिश्चन्द्र' एक करके लिखा है । 4 ऋतुपर्ण 5 खट्वांग (षट्वांग) नामक एक राजर्षि । 6 क्षेमध्वनि ।

पाठान्तर— *(१) चंपक (२) पंच । •(१) रुरुक,(२) रुरु । ※अतिथ ।

अहीन	७१
पारियात्र°	७२
वृहस्थल	७३
अर्क	७४
वज्रनाभ	७५
सगण	७६
वृहत्	७७
हिरण्यनाभ	७८
पुष्य	७६
ध्रुवसंधि*	८०
भव	८१
सुदर्शन	८२
अग्निवर्ण	८३
शीघ्र	८४
मरु	८५
प्रसयतु	८६
सिंधु	८७
अमर्षण	८८
सहस्वान	८६
विश्वसक्त	६०
प्रसेनजित	६१
तक्षक	६२
वृहब्दल	६३
वृहद्रण	६४
गुरुक्रिय	६५
वत्सवृद्ध	६६
प्रतिव्योम	६७
भानु	६८
विश्वक°	६६
वाहनीपति	१००
सहदेव	१०१
वीर	१०२
वृहदश्व	१०३
भानुमान	१०४
प्रतीक*	१०५
सुप्रतिकाश	१०६
मरुदेव	१०७
क्षत्र	१०८
....	१०६
पुष्कर°	११०
अंतरिख[1]	१११
वृहद्भानु	११२
वह	११३
कृतंजय	११४
रणंजय	११५
संजय	११६
श्राव°	११७
शुद्धोद*	११८

1 अंतरिक्ष ।

पाठान्तर—°पारिजात्र । *ध्रुवसिन्धु, ध्रुवसंध । प्रशस्तनु । •विश्वस्त, विश्वस्तक, विश्वसिक्त । वृहद्रण । गुरुप्रिय । °विशक, विथक । *प्रतीक्ष । सुप्रति-काम । °पुष्य । वर्ही । कृतुंजय । °श्रीय । *शुद्धोदन ।

लांगल	११९	१०	राव छाडोजी	१४४
प्रसेनजित	१२०	११	राव तीडोजी	१४५
क्षुद्रक	१२१	१२	राव सलखोजी	१४६
रुणक	१२२	१३	राव वीरमदेजो	१४७
सुरथ	१२३	१४	राव चूंडोजी	१४८
सुमित्र	१२४	१५	राव रिणमलजी*	१४९
महिमंडल पालक	१२५	१६	राव जोधोजी	१५०
पदारथ	१२६	१७	राव वीकोजी	१५१
ज्ञानपति	१२७	१८	राव लूणकरणजी	१५२
तुंगनाथ	१२८	१९	राव जैतसीहजी	१५३
भरत	१२९	२०	राव कल्यांणमलजी	१५४
पुंजराज	१३०	२१	महा० श्री रायसिंघजी	१५५
बंभ	१३१	२२	महा० श्री सूरसिंघजी	१५६
अजैचंद	१३२	२३	महा० श्री करणसिंघजी	१५७
अभैंचंद	१३३	२४	महा० श्री अनोपसिंघजी	१५८
विजैचंद	१३४	२५	महा० श्रीसुजांणसिंघजी	१५९
१ जयचंद	१३५	२६	महा० श्रीजोरावरसिंघजी	१६०
२ वरदायीसेनजो	१३६	२७	महा० श्री गजसिंघजी	१६१
३ सेतरामजी	१३७	२८	महाराजाधिराज महा० श्री सूरतसिंघजी	१६२
४ राव सीहोजी	१३८	२९	महाराजाधिराज महा० श्री १०८ रतनसिंघजी	१६३
५ राव आसथानजी	१३९	३०	महाराज कुंवर श्री १०८ श्री सरदारसिंघजी	१६४
६ राव धूहड़जी	१४०			
७ राव रायपालजी	१४१			
८ राव कान्ह	१४२			
९ राव जालणसीजी	१४३			

[आदि सं० १७ और पश्चात् सं० १५१ राव बीकासे बीकानेरके राठौड़-शासकों-की वंशावली प्रारम्भ होती है। राव बीकाने सं० १५४५में बीकानेर नगर अपने नामसे वसा कर वहां अपनी राजधानी स्थापित की। इसके पूर्व राव जोधाने (सं० १६ और १५०) सं० १५१५में अपने नामसे जोधपुर नगर बसा कर मंडोरसे अपनी राजधानी उठा कर जोध-पुरमें स्थापित की।]

पाठान्तर--*रिड़मलजी।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

टीकै बेठांरी विगत

संमत १५०० राव श्री जोधोजी टीकै बैठा गांम चूंडासरमें वीकानेररै देस ।[1]

संमत १५२६ रावजी श्री वीकोजी टीकै वैठा गांम कोड़मदेसरमें[2]।

संमत १५५४ रावजो श्री लूणकरणजी टीकै बैठा ।

संमत १५८१ रावजी श्री जैतसिंघजी टीकै वैठा ।

संमत १५६६ रावजी श्री कल्याणमलजी टीकै वैठा ।

संमत १६३० महाराजा श्री रायसिंघजी टीकै वैठा ।

संमत १६७० महाराजा श्री सूरसिंघजी टीकै बैठा ।

संमत १६६८ दलपतसिंघजी टीकै बैठा । वरस २ राज कियो । पछै महाराजा श्री सूरसिंघजी टीकै बैठा ।

संमत १६८८ महाराजा श्री करणसिंघजी टीकै बैठा ।

संमत १७२६ महाराजाधिराज श्री ग्रनोपसिंघजी टीकै बैठा ।

संमत १७५७ महाराजा श्री सुजांणसिंघजी टीकै वैठा सतारेमें वैसाख सुदि ३ ।[3]

संमत १७६३ महाराजाधिराज श्री जोरावरसिंघजी टीकै बैठा गढ वीकानेर । मिती ग्रासोज सुदि१०, दिन घड़ी ११ चढियां बैठा ।[4]

संमत १८०३ मिती ग्रासोज वदि१२ महाराजाधिराज महाराजाजी श्री गजसिंघजी राजतिलक विराजिया गढ वीकानेर ।[5]

संमत १८४४ वैसाख सुदि६ राजसिंघजी टीकै बैठा । दिन१२ ।[6]

संमत १८४४ ग्रासोज सुदि१० महाराजाधिराज महाराजा श्री सूरतसिंघजी राजतिलक विराजिया ।

---

1 बीकानेर राज्य (ग्रब राजस्थान राज्यका एक जिला)के चूड़ासर गांवमें सम्वत् १५००में राव जोधाजी सिंहासनासीन हुए । 2 बीकानेरके कोड़मदेसर गांवमें राव वीकोजी सम्वत् १५२६में गद्दी बैठे । 3 सम्वत् १७५७की वैशाख शु० ३को महाराजा सुजानसिंहजी सतारेमें टीके बैठे । 4 महाराजाधिराज जोरावरसिंह सम्वत् १७६३के ग्राश्विन शु० १० को ११ घड़ी दिन चढे बीकानेरके गढ़में टीके बैठे । 5 महाराजाधिराज महाराजा श्री गजसिंहका सम्वत् १८०३ मिती ग्रासोज वदि १२को बीकानेरके गढ़में राज्यतिलक हुग्रा । 6 सम्वत् १८४४ वैशाख सुदि ६को राजसिंहजीका राज्यतिलक हुग्रा । केवल १२ दिन राज्य किया ।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

जोधपुररो पीढियां

(टीकै बैठांरी विगत[1])

संमत १५२६ राव सातल टीकै बैठो मंडोहरमें ।[2]

संमत १५४६ राव सूजो टीकै बैठो ।

संमत १५७२ राव गांगोजी टीकै बैठा ।

संमत १५८२ राव मालदेवजी टीकै बैठा ।

संमत १६१६ राव चंद्रसेणजी टीकै बैठा ।

संमत १६४० राव उदैसिंघजी टीकै बैठा । पछै राजाईरो टीको दियो ।[3]

संमत १६५२ राजा सूरसिंघजी टीकै बैठा ।

संमत १६७६ राजा गजसिंघजी टीकै बैठा ।

संमत १६९५ राव अमरसिंघनूं टीको देनै नागोर दियो ।[4]

संमत १६९५ महाराजाधिराज श्री जसवंतसिंघजी टीकै बैठा ।

। इति श्री पीढियांरी टीकै बैठांरी विगत संपूर्ण ॥

॥ शुभं भवतु ॥

---

1 जोधपुरकी पीढियां और राज्यासीन हुए जिसका विवरण । 2 सम्वत् १५२६-में राव सातल मंडोरमें टीके बैठा । (राव सातलके राज्यतिलकका समय संवत् १५४५ जेठ सुदि ३ का है । सं० १५४५में राव जोधाके देहान्तके बाद जोधपुरमें सातल उनके पट्टाधिकारी हुए ।) 3 सम्वत् १६४० राव उदयसिंहजी टीके बैठे । पीछे राजाकी उपाधिका टीका दिया गया । 4 सम्वत् १६९५में राव अमरसिंहको टीका देकरके नागोर दिया ।

।। श्री रांमजी ।।

भिन्न भिन्न वाकांरा संमत[1]

गढ लियांरी विगत[2]

संमत १११७ दिली तुरकांणो हुवो । चहुवांण रतनसी जुंहर कर कांम आयो । गजनीसूं पातसाह साहिवदी लीधी ।[3]

संमत १६२४ मिगसर वदि२ पातसाह अकबर आय चीतोड़ घेरियो । चैत वदि११ गढ तूटो । राठोड़ जैमल कांम आयो । पतो सीसोदियो, मालदे पमार, बीजो घणो ही साथ कांम आयो ।[4]

संमत १५९२ श्रावण सुदि११ चांपानेर पातसाह हमाउ आयो । राव प्रतापसी चहुवांण जुंहर कर कांम आयो ।[5]

संमत १३६१ पातसाह अलावदीनरी फोजां जेसळमेर आई । वरस १२सूं गढ तूटो । रावळ मूळराज रतनसिंघ कांम आया ।[6]

संमत १३५२ पातसाह अलावदीनरी फोजां आई । गढ दोलता-वाद तूटो । जादव रांम कांम आयो ।[7]

संमत १३५० गढ ग्वाळेर तूटो । राजा मांन तुंवर पासा पातसाह अलावदीन गढ लियो । पछै पातसाह गढ चढियो ।[8]

---

1 अलग अलग युद्धोंके सम्वत् । 2 गढ विजय किये उनका वर्णन । 3 सम्वत् १११७में दिल्लीमें तुर्कोंका राज्य हुआ । चौहान रतनसी जौहर कर काम आया । गजनीसे बादशाह शाहबुद्दीनने आकर दिल्ली पर अधिकार किया । 4 सम्वत् १६२४ मृगशीर्ष कृष्ण २को बादशाह अकबरने चित्तौड़को घेरा । चैत्र कृष्ण ११को गढ़ टूटा । राठौड़ जयमल काम आया । पत्ता शिशोदिया, मालदे, पँवार और दूसरा बहुत साथ काम आया । 5 सम्वत् १५९२ श्रावण शुक्ल ११ बादशाह हुमायु चांपानेर पर चढ कर आया । राव प्रतापसी चौहान जौहर कर काम आया । 6 सम्वत् १३६१में बादशाह अलाउद्दीन की फौजें जैसलमेर पर चढ आई । बारह वर्षोंमें गढ़ टूटा । रावल मूलराज और रतनसिंह काम आये । 7 सम्वत् १३५२में बादशाह अलाउद्दीनकी फौजें दौलताबाद पर चढ़ कर आईं । दौलताबादका गढ़ टूटा । यादव राम काम आया । 8 सम्वत् १३५०में ग्वालियरका गढ़ टूटा । राजा मान तोमरसे बादशाह अलाउद्दीनने गढ़ लिया, फिर बादशाह गढ़ पर चढ़ा ।

संमत १३५३ अलावदीन पातसाह गुजरात लीधी करण गैहलड़ा पासा। नागर बांभण माधव आगै हुय दिराई।[1]

संमत १३५५ रांणा रतनसेन ऊपरा पातसाह अलावदीन आयो। भड़ लखमणसी बेटां १२सूं कांम आयो। गढ राखियो। रांणानूं छड़ायो।[2]

संमत १३५८ गढ रिणथंभोर तूटो। राव हमोरदे चहुवांण कांम आयो। पातसाह अलावदीन आप आयो।[3]

संमत १३६८ जाळोर तूटो। पातसाह अलावदीन आयो। चहुवांण कान्हड़दे वीरमदे सोनगरा कांम आया।[4]

संमत १३६४ गढ सिवांणो तूटो। पातसाह अलावदीन आयो। चहुवांण सातल सोम कांम आया।[5]

संमत १३६५ अजमेर लियो। पातसाह अलावदीन आप आयो।

संमत १३६५ मंडोहर लियो। पातसाह अलावदीन आयो।

संमत १३... रावळ दूदै तिलोकसीह जुंहर कियो। पातसाह पीरोजसाहरी फोजां आई। जेसळमेर पालटियो।[6]

---

1 सम्वत् १३५३में अलाउद्दीन बादशाहने कर्ण गहलड़ेसे गुजरात ली। नागर ब्राह्मण माधवने आगे होकर अधिकार करवाया। 2 सम्वत् १३५५में राणा रत्नसेन पर बादशाह अलाउद्दीन चढ़ कर आया। भड़ लखमणसी अपने १२ पुत्रों सहित काम आया। गढ़को रख लिया और राणाको छुड़ाया। 3 बादशाह अलाउद्दीन स्वयं चढ कर रणथंभोर पर आया। राव हमीरदे चौहान काम आया। सम्वत् १३५८में रणथंभोरका गढ़ टूटा। (नैणसीरी ख्यात भाग १ पृ. २२०में 'संवत् १३५२ श्रावण वदि ५ हमीरदेजी काम आया' लिखा है।) 4 सम्वत् १३६८ में जालोरका गढ टूटा। बादशाह अलाउद्दीन चढ कर आया। चौहान कान्हड़दे और वीरमदे सोनगरे काम आये। 5 सम्वत् १३६४में सिवानेका गढ टूटा। बादशाह अलाउद्दीन चढ़ कर आया। चौहान सातल और सोम काम आये। 6 सम्वत् १३६... रावल दूदा और तिलोकसीने जौहर किया। बादशाह फिरोजशाहकी फौजें चढ़ कर आई। जैसलमेरका राज्य पलटा।

दि्ली राजा बैठा तियांरी विगत[1]

राज कियो तिका विगत[2]

१.	राजा जुधिष्ठिर	वरस ६३ राज कियो।		
	द्वापरमें वरस ६०, कळूमें वरस ३[3]			
२.	राजा परीक्षित	वरस ६०		
३.	राजा जनमेजय	वरस ८५	मास	५॥
४.	राजा अश्वमेघ	वरस ८२	मास	२॥
५.	राजा अर्धसोम	वरस ८०	मास	४॥
६.	राजा वर्ततेजस	वरस ८१	मास	११[4]
७.	राजा आदिसथ	वरस ७८	मास	७
८.	राजा चित्ररथ	वरस ७२	मास	११
९.	राजा धृतस्यंद	वरस ७५	मास	११
१०.	राजा सुविधि	वरस ६९	मास	११
११.	राजा सेन	वरस ६८	मास	५
१२.	राजा रिष	वरस ६५	मास	०
१३.	राजा मरु	वरस ६४	मास	७
१४.	राजा सिंहवल	वरस ६३	मास	०
१५.	राजा परपाल*	वरस ६१	मास	१०
१६.	राजा कीर्त	वरस ५०	मास	२
१७.	राजा सन्न	वरस ५६	मास	८
१८.	राजा मेढारि	वरस ५२	मास	८
१९.	राजा बीज	वरस ५१	मास	१

1 दिल्लीमें राजा सिंहासनासीन हुए उन (हिन्दू) राजाओंका वर्णन। 2 किसने कितने वर्ष राज्य किया उसका ब्यौरा। 3 राजा युधिष्ठिरने ६३ वर्ष राज्य किया। ६० वर्ष द्वापरमें और ३ वर्ष कलियुगमें। 4 दो तीन प्रतियोंमें राजा वर्ततेजस्के राज्यकालके वर्ष शब्दके आगे केवल दो वर्णोंकी शीर्ष-रेखा है, आगे ११ मास लिखा हुआ है।

पठान्तर— *परिपाल।

२०.	राजा अंबुदेव	वरस ४८	मास	१०
२१.	राजा निगम	वरस ४७	मास	६
२२.	राजा जोधरथ	वरस ४५	मास	११
२३.	राजा वसुदान	वरस ४४	मास	४
२४.	राजा संडोव*	वरस ५१	राज्यम्	
२५.	राजा आदित्य	वरस ५४	मास	१०
२६.	राजा हयनर	वरस ५१	मास	--
२७.	राजा डंडपान*	वरस ४८	मास	०
२८.	राजा नीत	वरस ५८	मास	५
२९.	राजा देसावर	वरस १७	मास	३
	नीतकूं मारकै राज लिया ।[1]			
३०.	राजा सूरसेन	वरस ४२	मास	८
३१.	राजा वीरसेन	वरस ५२	मास	१०
३२.	राजा अनेकसिंघ	वरस ४७	मास	१०
३३.	राजा प्राछित*	वरस ३५	मास	६
३४.	राजा विद्रुथ*	वरस ४४	मास	२
३५.	राजा विजय	वरस ३२	मास	८
३६.	राजा आसाबुद्धि	वरस २७	मास	३
३७.	राजा अनेकसाह	वरस २२	मास	११
३८.	राजा शत्रुंजय	वरस ४७	मास	०
३९.	राजा सुधन	वरस ३०	मास	०
४०.	राजा परमपथ	वरस ४४	मास	६
४१.	राजा जोधरथ	वरस २५	मास	४
४२.	राजा वीरबलसेन	वरस २१	मास	७
४३.	राजा बहुवै	राजा वीरबलसेनको मारकै राज लियो ।[2]		

1 राजा देसावरने राजा नीतको मार करके राज्य लिया। १७ वर्ष ३ मास राज्य किया। 2 राजा बहुवैने वीरबलसेनको मार करके राज्य लिया। एक प्रतिमें १७ और एक दूसरीमें २७ वर्ष इसका राज्यकाल लिखा है।

पाठान्तर— *संडीव । *डंडपाल, दंडपाल । *पराछित । *विदूरथ । बडुवै ।

४४.	राजा जेसावर*	वरस	२७	मास	७
४५.	राजा शत्रुघ्न	वरस	२७	मास	२
४६.	राजा अहिपथ	वरस	१५	मास	४
४७.	राजा महाबल	वरस	४०	मास	१
४८.	राजा कीर्त्तिमंत	वरस	१७	मास	४
४९.	राजा चित्रसेन	वरस	२४	मास	५
५०.	राजा अनंगपाल	वरस	१७	मास	१०
५१.	राजा अनंतपाल	वरस	२८	मास	११
५२.	राजा बलाहक	वरस	१९	मास	७
५३.	राजा कलंकी	वरस	४२	मास	१०
५४.	राजा सेरमर्दन	वरस	८	मास	११
५५.	राजा जोवनजीत	वरस	२६	मास	९
५६.	राजा हरिवंश	वरस	१३	मास	११
५७.	राजा वीरधन°	वरस	३५	मास	४
५८.	राजा ओसत	वरस	२८	मास	११
५९.	राजा डंडध°	वरस	४२	मास	७

राजा ओसतकूं मारकै राज लिया ।[1]

६०.	राजा रसखंडबीज	वरस	५५	मास	१०
६१.	राजा महाजोध	वरस	३०	मास	२
६२.	राजा वीरनाथ	वरस	२८	मास	५
६३.	राजा जोवराज	वरस	४५	मास	२
६४.	राजा उदयसेन	वरस	३७	मास	९
६५.	राजा आणंदचंद	वरस	५२	मास	१०
६६.	राजा जैपाल	वरस	२६	मास	०

६७. राजा सुकायत वरस १४ राज कियो ।
जैपालकूं मार राज लियो ।[2]

1 राजा डंडधने ४२ वर्ष ७ मास राज्य किया । राजा ओसतको मार करके राज्य लिया ।
2 राजा सुकायतने जैपालको मार करके राज्य लिया । १४ वर्ष राज्य किया ।

पाठान्तर— *जैसा । °वीरघन। °डंडधर ।

६८. राजा विक्रमादित्य   वरस ३५   राज कियो ।
सुकायतकूं मार राज लियो ।[1]

६९. राजा समुद्रपाल   वरस २४   राज कियो ।
विक्रमादित्यकूं मार राज लियो ।[2]

७०.	राजा चंद्रपाल	वरस	२६	मास	५
७१.	राजा नयपाल	वरस	२१	मास	४
७२.	राजा देसपाल	वरस	१९	मास	१
७३.	राजा शिंभूपाल	वरस	४	मास	११
७४.	राजा लछपाल	वरस	२३	मास	३
७५.	राजा गोविंदपाल	वरस	२८	मास	१
७६.	राजा अमृतपाल	वरस	१६	मास	१०
७७.	राजा लद्धपाल*	वरस	२२	मास	५
७८.	राजा महिपाल	वरस	३१	मास	९
७९.	राजा हरीपाल	वरस	१३	मास	९
८०.	राजा भोमपाल	वरस	११	मास	१०
८१.	राजा मदनपाल	वरस	१७	मास	६
८२.	राजा वीरमपाल°	वरस	१९	मास	३
८३.	राजा विक्रमपाल	वरस	१९	मास	११

८४. राजा मलूकचंद ।   राजा विक्रमपालकूं मार
राज लियो । वरस २ राज्यम् ।[3]

८५.	राजा विक्रमचंद	वरस	१२	मास	७
८६.	राजा कामकाचंद	वरस	१	राज्यम् ।	
८७.	राजा रांमचंद्र	वरस	१३	मास	११
८८.	राजा सुंदरचंद	वरस	१४	मास	१०
८९.	राजा कल्यांणचंद	वरस	१०	मास	५
९०.	राजा भीमचंद	वरस	१६	मास	२

1 सुकायतको मार करके विक्रमादित्य ने राज्य लिया । ३५ वर्ष राज्य किया ।
2 समुद्रपालने २४ वर्ष राज्य किया । विक्रमादित्यको मार कर राज्य पर अधिकार किया ।
3 राजा मलूकचंदने राजा विक्रमपालको मार करके राज्य पर अधिकार किया । दो वर्ष राज्य किया ।

पाठान्तर— *वृद्धपाल । °वीर्यपाल ।

९१	राजा लोहचंद*	वरस	२६	मास	३
९२	राजा गोविंदचंद	वरस	२१	मास	७
९३	राणी परमावती*	वरस	१	राज्यम् ।	
९४	राजा हरभीम	वरस	४	मास	५

रांणी परमावतीकूं मार राज लियो ।[1]

९५	राजा गोविंद	वरस	२०	मास	२
९६	राजा गोपीचंद	वरस	१५	मास	७
९७	राजा किसनचंद	वरस	६	मास	७
९८	राजा विजैसेन	वरस	१८	मास	५

वंगाळासूं आयो । किसनचंदकूं मार राज लियो ।[2]

९९	राजा धनालसेन*	वरस	१२	मास	४
१००	राजा केसोसेन	वरस	१५	मास	७
१०१	राजा लछमणसेन	वरस	३६	मास	१०
१०२	राजा महादेवसेन*	वरस	११	मास	७
१०३	राजा सुखसेन	वरस	२०	मास	१
१०४	राजा सिवसेन	वरस	५	मास	१०
१०५	राजा कांतिसेन*	वरस	४	मास	८
१०६	राजा हरिसेन	वरस	१२	मास	--
१०७	राजा दससेन	वरस	८	मास	११
१०८	राजा नारायणसेन	वरस	२	मास	२
१०९	राजा दामोदरसेन	वरस	२१	मास	५
११०	राजा माधोसेन	वरस	१२	मास	२

दामोदरसेनकूं मार राज लियो ।[3]

---

1 राणी पदमावती (पद्मावती)को मार करके राज्य पर अधिकार किया । 2 राजा विजयसेन बंगालसे आया । किशनचंदको मार करके राज्य किया । 3 राजा माधोसेनने दामोदरसेनको मार करके राज्य प्राप्त किया । वर्ष १२ मास २ राज्य किया ।

पाठान्तर--*लोढचंद, लोदचंद । *पदमावती । *धनपालसेन । *माधवसेन । *कीर्तिसेन ।

१११	राजा लीला माधो	वरस	११	मास	५
११२	राजा माधव माधो	वरस	९	मास	१
११३	राजा सुचंद माधो'	वरस	१०	मास	१०
११४	संक्र माधो*	वरस	३	मास	५
११५	राजा देसावल माधो	वरस	३	मास	५
११६	राजा दससंक्र माधो	वरस	२	मास	७
११७	राजा हरिसिंघ	वरस	१७	मास	२
	दससंक्र माधोकूं मार राज कियो ।[1]				
११८	राजा रणसिंघ	वरस	१४	मास	--
११९	राजा राज्यसिंघ	वरस	७	मास	१०
१२०	राजा वीरसिंघ	वरस	४५	मास	०
१२१	राजा नरसिंघ	वरस	१८	मास	--
१२२	राजा कलोलसिंघ	वरस	८	मास	४
१२३	राजा पिथोरा	वरस	१०	मास	२
१२४	राजा अभैमल पिथोरा	वरस	१४	मास	५
१२५	राजा दुर्जनमल ,,	वरस	१५	मास	६
१२६	राजा उदैमल	वरस	१३	मास	७
१२७	राजा विजयमल ,,	वरस	३६	मास	७

मुसलमान

१२८	राजा सुलतांण सांगो	वरस	३२	मास	३
१२९	सुलतांण कुतबदीन[2]	वरस	४	मास	०
१३०	सुलतांण अलावदीन[3]	वरस	१	मास	०
१३१	बेटो कुतबदीन ।				
१३२	समसदीन[4] सुलतांण	वरस	२६	मास	०
१३३	सुलतांण रुकनदीन[5]	वरस	३	दिन	१८

1 . दशसंक्र माधोको मार करके राज्य प्राप्त किया । 2 कुतबुद्दीन । 3 अलाउद्दीन 4 शम्सुद्दीन । 5 रुकनुद्दीन ।

पाठान्तर— सुरचंद माधो, सुवचंद, सुखचंद माधो । *संकर माधो ।

१३४ साहिजादी आछी, जोरू रुकनदीन को[1], वरस ६
१३५ सुलतांण मोजदीन, बेटो विरामसाहको[2] वरस २ मास १
१३६ सुलतांण अलावदीन वि० वरस ४ मास १
१३७ सुलतांण नासरदीन[3] वरस १९ मास ३
१३८ सुलतांण गयासुदीन बलबंड[4] वरस २१ मास ५
१३९ सुलतांण कुदाद वरस ३ मास १०
१४० सुलताण जलालदी[5] वरस ७
१४१ सुलतांण अलावदीन वरस २० मास ४
१४२ सुलतांण कुतबदीन ममारख[6] वरस ३
१४३ सुलतांण खुसरू[7] वरस ० मास ६
१४४ सुलतांण गयासुदीन तुगलकसाह
१४५ सुलतांण महमदी आदल[8] वरस २७
१४६ सुलतांण पीरोसाह[9] वरस ६ मास ८
१४७ सुलतांण तुगलसाह बेटा खिलचखां[10] मास ६ दिन १९
१४८ सुलतांण अबाबकर[11] वरस १ मास ६
१४९ सुलतांण महमदसाह वरस १९ मास ६
१५० सुलतांण अलावदीन वरस १ मास १ दिन ६
१५१ सुलतांण अहमदसाह* वरस १९ मास ६
१५२ खिजरखां लोदी वरस ७ मास २
१५३ सुलतांण ममारखसाह[12] वरस १३ मास ० दिन २६
१५४ सुलतांण अहमदसाह* वरस १० मास ४
१५५ सुलतांण अलावदीन वरस ७ मास ३
१५६ सुलतांण बहलोल वरस ३८ मास ५

---

1 रुकनुद्दीनकी जोरू शाहजादी आछी। 2 सुलतान मौजुद्दीन विरामशाहका बेटा। 3 नासिरुद्दीन। 4 गयासुद्दीन बलबंड (बलबन)। 5 जलालुद्दीन। 6 सुलतान कुतबुद्दीन मुबारक। 7 खुशरो। 8 मुहमुद्दीन आदिल। 9 सुलतान पिरोजशाहका एक प्रतिमें वर्षके आगे दो वर्णोंकी शिरो-रेखा और आगे केवल ८ मास लिखे हैं। 10 खिलचखांका बेटा तुगलकशाह। 11 अबूबकर। 12 मुबारकशाह।

पाठान्तर— * महमदसाह (मुहम्मदशाह)। * [illegible]साह।

१५७ सुलतांण सिकंदर लोदी वरस २८ मास ५

१५८ सुलतांण बहिरांम वरस ७ मास २

१५९ सुलतांण बाबर पातसाह वरस ३८

वरस २९ विलायत में पातसाही करी। वरस ३ हिंदुस्तान बीच पातसाही कीधी। सर्व वरस ७० राज्यं।[1]

१६० पातसाह हमाऊंनूं दिलीसूं काढियो। पठांण सेरसाह पातसाही लींधी। हमाऊ विलायत गयो। वरस ५ मास ८ पातसाही कीधी।[2]

१६१ पातसाह सेरसाह वरस ५ मास ८ राज्यम्।

१६२ पातसाह सलेमसाह[3] वरस ९ राज्यम्।

१६३ सुलतांण महमदअली[4] वरस २ मास २

१६४ पातस्याह हमाऊ[5] मास ६

१६५ पातस्याह अकबर जलालदीन[6] वरस ५१ मास ३ दिन १३

१६६ पातसाह जहाँगीर[7] नूरदीन[*] वरस २२ मास ६ दिन २५

१६७ पातसाह साहयार[8] मास २ दिन २५

१६८ पातसाह साहजहाँ सायबदीन[9] वरस ३२

तठा पछै औरंगसाह साहजहाँ जीवतै दक्षिणसौं आय दारासुकरसौं श्रावण वद ९ राजास खेड़ै समोगढ[*] कनै लड़ाई कीवी। दारासाहकौं नसायकै, साहजहाँकूं आगराके कोटमें निजर कैद करकै औरंग दिलो जाय, संमत १७१५ श्रावण सुदी १३ शुक्रवार, तारीख १ जुलकादि सन् १०६८ दोय पोहर दिन घड़ी १ चढियो तब दिलीका मैहलां जाय तखत बैठो। तब औरंगसाह आलमगीर कहांणो।[10]

पाठान्तर—[*]नूरदी। [*]समोगर।

---

1 बादशाह बाबरने ३८ वर्ष और फिर २९ वर्ष विलायतमें बादशाही की और हिंदुस्तानमें ३ वर्ष बादशाही की। कुल ७० वर्ष तक राज्य किया। 2 बादशाह हुमायूको पठान शेरशाहने दिल्लीसे निकाल कर बादशाही ले ली। हुमायू विलायत चला गया। उसने पाँच वर्ष आठ मास बादशाही की। 3 सलीमशाह। 4 मुहम्मद अदली। 5 बादशाह हुमायू। 6 जलालुद्दीन अकबर। 7 नूरुद्दीन जहांगीर बादशाह। 8 शहरयार। 9 शाहजहाँ शहाबुद्दीन। 10 जिसके बाद औरंगशाहने शाहजहाँके जीते जी दक्षिणसे आकर दाराशिकोहसे सावन वदी ९को राजास खेड़ेके समोगढके पास लड़ाई की। दाराशाहको भगा कर शाहजहाँको आगरेके किलेमें नजर कैद करके सम्वत् १७१५ श्रावण सुदी १३ शुक्रवार, तदनुसार तारीख १ जिलकाद, सन् १०६८को दो पहर और एक घड़ी दिन चढा तब दिल्लीके महलोंमें जाकर तख्त पर बैठा। औरंगशाह आलमगीरके नामसे प्रसिद्ध हुआ।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अथ वात सेतरांम वरदाईसेनोत राठोड़री लिख्यते

राजा वरदाईसेन कनवज मांहै राज करै। सो वरदाईसेनजीरै सेतरांम कुंवर सो वडो सिरदार। पण नित्य-प्रत ३ पईसां भर अमल खावै तीनै वखते।[1] पण डील बहोत चाक रहै।[2] ताहरां किहिकै राजानूं कह्यो–'जु महाराज कुमार तो तीन पईसां भर अमल रोज खावै छै।'[3] ताहरां राजा वरदाईसेनजो कही–'दीसै तो चाक छै, पण अमल खावै छै तो उरहो बोलावो ज्युं पूछां।'[4] ताहरां सेतरांम वरदाईसेनजीरी हजूर आयो। ताहरां राजा पूछियो। कह्यो–'कुमार! तूं अमल कितरोक खावै छै?'[5] ताहरां कुंवर कही–'महाराज! हूं तो अमल कोई खाऊं नहीं।'[6] ताहरां वरदाईसेनजी कह्यो–'तोनूं म्हारी आंण छै, साच बोल।'[7] ताहरां कुंवर सेतरांम कह्यो–'राज! तीनै वखतै तीन पईसां भर अमल खाऊं छूं।'[8] ताहरां राजा अमल मंगाय खवायनै देखियो।[9] ताहरां राजा कह्यो–'बेटा! जके तीन पईसां भर अमल रोजीना खाय, तिणसूं काई भली होणहार नहीं। बेटा! थे बेहवाल हुआ।'[10] तद कुंवर कही–'राज! अमल खाधो तो कासूं हुओ? पण कठै मेल जोवो, काय चाकरी भळाइ जोवो?[11] देखां, किसोइक कांम करूं छूं।[12]

---

1 परंतु नित्य प्रति तीन पैसे भर (लगभग सवा पांच तोले) अफीम दिनमें तीन बार करके खा जाता है। 2 परंतु शरीर बहुत तंदुरुस्त रहता है। 3 तब किसीने राजाको कहा कि 'महाराज-कुमार तो तीन पैसे भर नित्य अफीम खाता है।' 4 दिखता तो निरोग है, परन्तु जो अफीम खाता ही हो तो यहां बुला लो सो पूछ कर देख लें। 5 कुमार! तू कितना अफीम खाता है? 6 मैं तो अफीम नहीं खाता। 7 तुझे मेरी शपथ है, सच कह दे। 8 महाराज! दिनमें तीन समय तीन पैसों भर अफीम खाता हूं। 9 तब राजाने अफीम मंगवा कर और खिला कर जांच की। 10 पुत्र! जो तीन पैसों भर अफीम नित्य खाता है, उससे कोई भला (पुरुषार्थ) होने वाला नहीं। पुत्र! तुम बेहाल हो गये। 11 अफीम खाने लग गया तो क्या हुआ? कहीं भेज कर देख लीजिये, कोई चाकरी जिम्मे देकर देख लीजिये? 12 देख लें, कैसा काम बजा लाता हूं।

अर जो आपरै दाय न आऊं छूं तो क्यां गळै पड़िया छां नहीं।'[1] अर बेटो थांहरो छूं सो तो धोयो ही उतरां नहीं।[2] और कमाय खावस्यां।'[3] ताहरां रावजी कही—'जु, अजू तो कमायो नहीं छै। कमावसो तद देखस्यां ?'[4] ताहरां कुंवर तो अठासौं ऊठ अर आपरै रहवास आयो; पण उदास बहोत हुअो।[5] ताहरां रात पड़ी।

ताहरां सेतरांमजी घोड़ै जीण कराय आपरा हथियार बांध चढ चालतो हुअो।[6] ताहरां सेतरांम चालतो-चालतो एक राजारै आयो। सेतरांम राजासूं मिळियो।[7] ताहरां राजा सेतरांमनूं जात पूछ अर आपरै गोढै राखियो।[8] अबै सेतरांम अठै रहै।[9]

सु एक दिन राजा सिकार चढियो हुतो।[10] साथै सरब साथ छै। अर सेतरांम पण साथ छै। तठै अै सिकार आय कठै छाया बैठा छै।[11]

अठै एक राकस रहै।[12] सु तिको राकस म्रगरो रूप कर राजारै वीच कर नीसरियो।[13] तद राजा कह्यो—'हाँ, जावण न पावै।'[14] तद और तो सरव बैठा रह्या, अर सेतरांम घोड़ै चढ अर लारै हुवो।[15] आगै म्रग और वांसै सेतरांम।[16] ताहरां आगै रोही में जावतां राकस म्रगरो भैंसो हुवो।[17] ताहरां भैंसो सेतरांमरै साम्हां आयो।[18] ताहरां

---

1 और जो आपके पसंद नहीं आता हूं तो आपके कहीं गले तो नहीं पड़ा हूं। 2 और आपका पुत्र हूं सो तो धोनेसे भी नहीं मिट सकता। ('धोयां ही नहीं उतरणो=१ असंभव वात कभी सम्भव नहीं हो सकती। २ सम्बन्ध असम्बन्ध नहीं हो सकता)। 3 और कहीं कमा खायेंगे। 4 अभी तक तो कुछ कमाया (उपार्जन किया) नहीं है। कमाओगे तव देख लेंगे ? 5 तब कुमार यहाँसे उठ कर अपने निवासस्थान पर आ गया, परंतु उदास बहुत हो गया। 6 तब सेतरामजी घोड़े पर जीन कसवा, शस्त्र बाँध और चढ़ कर चलता बना। 7 सेतरामजी राजासे मिला। 8 तब राजाने सेतरामको उसकी जाति आदि पूछ कर अपने पास रख लिया। 9 अब सेतराम यहाँ रह रहा है। 10 सो एक दिन राजा शिकारको चढ़ा था। 11 वहाँ ये शिकारके लिये आकर कहीं छायामें बैठे हुए हैं। 12 यहां एक राक्षस रहता है। 13 सो वह राक्षस मृगका रूप बना कर राजाके (पड़ावके) बीचमें होकर निकला। 14 हां, सरदारो ! यह जाने नहीं पाये। 15 और सेतराम घोड़े पर चढ़ कर पीछे हुआ। 16 आगे मृग और पीछे सेतराम। 17 तब आगे जंगलमें जाते-जाते राक्षस मृगसे भैंसा बन गया। 18 भैंसा सेतरामके सम्मुख आया।

सेतरांम पण ऊभो रह्यो ।[1] ताहरां भैंसो राकस रूप कर बोल्यो ।[2] कहियो–'वडा रजपूत ! ओ राजा तो केहो कांमरो न छै, अर तूं वरदाईसेनरो बेटो छै; सो तूं म्हनै सौ बाकरा, सौ भैंसा अर सौ मण दारूरी म्हनै बळ दै तो तोनै हूं वर देऊं ।[3] ताहरां सेतरांम कह्यो–'तो किसै दिन दियां ?'[4] ताहरां राकस कह्यो–'जु परभात देज्यो ।'[5] ताहरां सेतरांम कह्यो–'आ म्हारी बांह छै । परभातै वळ ले आवां छां ।'[6]

ताहरां सेतरांम पाछो आयो । ताहरां राजा पूछियो । कह्यो–सेतरांम ! कासूं हुतो ?'[7] ताहरां सेतरांम कह्यो–'महाराज ! हिरण थो सु नीसर गयो ।'[8] ताहरां अै अठै गोठ जीम घरै आया छै ।[9]

तद सेतरांम सौ भैंसा, सौ बाकरा अर सौ मण दारू मंगायो । ताहरां रात आधीक गई, ताहरां सेतरांम वळ सरव ले अर अठै राकसरै ठिकांणै आयो ।[10] ताहरां बकरा, भैंसा मार, दारू नांख अर राकसनूं वळ दियो ।[11] राकस त्रिपत हुओ ।[12] ताहरां राकस कही–'जु, सेतरांम ! तूं कहै तो तोनै द्रव्य वताऊं ?' ताहरां सेतरांम कही–'द्रव्य तो म्हारै घणो ही छै, पण कोई इसो वर दै तैसूं नांम रहै ।'[13] ताहरां राकस कही–'जा, तैमें पांच हाथियांरो बळ हुसी ।'[14] सेतरांम में पांच हाथियांरो बळ हुओ । ताहरां सेतराम विचारियो–'जु ईयै राजारै तो न रहां, और कठै हो जायगा जावस्यां ।'[15]

ताहरां सेतरांम उठैसूं आपरो हक चुकाय अर चालियो सु केही

---

1 तब सेतराम भी खड़ा रह गया । 2 तब भैंसेने राक्षसका रूप बना कर कहा । 3 यह राजा तो किसी कामका नहीं है और तू है वरदाईसेनका पुत्र, अतः तू मुझे १०० बकरे, सौ भैंसे और सौ मन मदिराकी बलि दे तो मैं तुझे वरदान दूं । 4 कौनसे दिन दूं ? 5 कल प्रभातको देना । 6 यह मेरी बांह है (मेरी प्रतिज्ञा है), प्रभातको बलि ले आता हूँ । 7 क्या था वह ? 8 हरिण था सो निकल गया । 9 तब ये गोठ जीम करके घर पर आ गये हैं । (गोठ=प्रीतिभोज) । 10 जब आधी रातके लगभग हो गई तब सेतराम बलिका सब सामान लेकर राक्षसके ठिकाने पर आया । 11 तब बकरे और भैंसोंको मार कर और शराब डाल कर राक्षसको बलि दी । 12 राक्षस तृप्त हुआ । 13 द्रव्य तो मेरे पास बहुत है, परन्तु ऐसा वर दे जिससे मेरा नाम प्रसिद्ध हो । 14 जाओ, तेरेमें पांच हाथियोंका बल होगा । 15 अब इस राजाके यहाँ तो नहीं रहें, और कहीं दूसरी जगह जायेंगे ।

बीजै राजारै सहर आयो ।[1] तद सेतरांम दरबार मांहै आय बैठो । ताहरां दरबारी ईयारी पोसाख अर बळ देख अर भीतर जाय राजा-सूं अरज गुदराई ।[2] कह्यो–'महाराज ! एक इसो सिपाही आयो छै सु देख्यो चाहीजै । वडो सिरदार छै ।'[3] ताहरां राजा कही–'तो भीतर बुलावो ।' ताहरां दरबारी सेतरांमनूं भीतर ले गयो । और जाय राजासूं मिळियो । राजा सेतरांमरी पोसाख देखनै बहोत ही राजी हुओ । विचारी–'ओ कोई सिरदार दीसै छै ।'[4] ताहरां राजा वडो आदर करनै बैठायो । अर राजा पूछियो–'जु कि–जातिया सिर-दार छो ?'[5] ताहरां सेतरांमजी कह्यो–'राठोड़ छां[6], चाकर राखो तो अठै रहां ।'[7] ताहरां राजा रुपिया चार रोजीना कर दिया अर चाकर राखियो ।

हमैं सेतरांम अठै रहै चाकर-वासै अर साथ भेळो करै, घोड़ा भेळा करै, वडै सैमांनसूं रहै ।[8] तठै सेतरांम राजारी हजूर आवै सु वरछी लियां आवै, तद मुजरो करै ।[9] राजा कहै–'बैठो ।' ताहरां बरछी लेअर खड़ी कर दावै सु बिछायत मांहै कर गढरो आंगणों तैमें हाथ एक बरछी गरक हुवै ।[10] सु राजा तो काहिणनूं मन हंकरै,* पण लोक देखै अर राजारी रांणी पण कही भांत देखै[11], सु अै हैरांन रहै अर विचारै–'जु आज ईयै बराबर सामंत कोई नहीं ।[12]

---

1 तब सेतराम वहाँसे अपना हक अदा करके रवाना हुआ सो किसी दूसरे राजाके शहरमें आया। 2 तब दरबारीने इसकी पोशाक और बलका अनुमान कर और भीतर जाकर राजासे अर्ज पेश की। 3 महाराज ! एक ऐसा सिपाही आया है सो देखना चाहिए (देखने योग्य है।) बड़ा सरदार है। 4 यह कोई सरदार दिखता है। 5 किस जातिके सरदार हो ? 6 राठौड़ हैं। 7 चाकर रखो तो यहाँ रहें। 8 अब सेतरांम यहाँ चाकर वासमें रह रहा है, आदमी और घोड़े इकट्ठे करता है और बड़े ठाठसे रहता है। 9 वहाँ सेतरांम मुजरेको आता है तब अपने साथ बर्छी लेकर आता है और बर्छी के साथ मुजरा करता है। 10 तब बर्छी खड़ी करके दबाता है सो बिछायतमें होकर गढ़ के आंगनमें एक हाथ ऊंडी बर्छी प्रवेश हो जाती है। 11 सो राजा तो इधर ध्यान ही क्यों देने लगा, परन्तु दूसरे सभी लोग देखते ही हैं और राजाकी राणी भी किसी प्रकार देख लेती है। 12 आज इसके समान सामंत कोई नहीं है।

---

* 'कांहिणनूं मनह करै' पाठान्तर है।

सु ओ रोज नवी-नवी जायगा बरछी खोहै सु आंगणा में वेडा-वेडा हुय रह्या ।[1] ताहरां रांणी एक दिन सात तवा लोहरा, सवा-सवा मणरो एक-एक तवो, कराय अर जठै सेतरांम आय बैसतो तठै गच-में तवा गडाया । ऊपर बिछावणा बिछाया ।[2] ताहरां प्रभातरा सेत-रांमजी राजाजीरी हजूर मुजरै आया ताहरां बैसतां बरछी दाबी ज्युं भूंय करड़ी लखाई, ताहरां जोर कर दाबी, सु बरछी हाथ दोय गडी ।[3] ताहरां सेतरांमजी मनमें जांणियो–'आज तो बरछी बळ करायो ।'[4] पछै सेतरांमजी बैठा । ताहरां रांणी जांणियो–'जु तवा तो फोड़िया पण बरछी काडसी किसी भांत ?'[5] पछै सेतरांमजी कितरीहिक जेजसूं बोहड़ण लागा; बरछीनूं हाथ घातनै ज्युं खांची सु तवा साते ही साथै आया बरछीरै ।[6] आंगणो पण खुल गयो अर बिछायत पण ऊपड़ी ।[7] ताहरां राजा कह्यो–'ओ कासूं ?'[8] ताहरां सेतरांम कही–'महाराज ! हूं बैठतो तठै बरछी गडती, सु दीसै छै आज कोई म्हारी मसकरी कीवी छै ।'[9] तद राजा बिछावणा परहा कराय देखै तो कासूं ? सारे ही वेडा-वेडा छै ।[10] ताहरां राजा बहोत महरवांन हुओ । वडो कारण कियो अर रिजक पण वडो कर दियो ।[11]

अठै सेतरांमजीरो पण एक जुदो ही राज हुओ ।[12] ताहरां युं करतां राजा एक दिन सिकार चढियो सरब साथ लेअर ।[13] साथै

---

1 यह नित्य नई-नई जगहोंमें बर्छी घुसेड़ता है सो आंगनमें खड्डे ही खड्डे हो रहे हैं । 2 तब रानीने सवा-सवा मनके लोहेके सात तवे करवाये और जहां सेतराम आ करके बैठा करता था वहां गच के अंदर तवे गड़वा दिये और ऊपर बिछौने बिछवा दिये । 3 प्रभातके समय जब सेतरामजी राजाजीकी हजूरमें मुजरा करनेको आये तब बैठते हुए बर्छीको दबाया सो भूमि कठिन मालूम हुई, तो जोर करके दबाया सो बर्छी दो हाथ गहरी गड़ गई । 4 आज तो बर्छीने जोर मांगा है । 5 तवे तो फोड़ दिए परन्तु बर्छी निकालेगा कैसे ? 6 कितनीक देरके बाद जब सेतरामजी लौटने लगे तो बर्छीको हाथ डाल कर ज्यों खींचने लगे त्योंही बर्छीके साथ सातों तवे उखड़ि आये । 7 आंगन खुल गया और बिछायत भी साथ की साथ उठ आई । 8 यह क्या ? 9 महाराज ! जहाँ मैं बैठता था वहाँ बर्छी गड़ जाया करती थी. सो आज ऐसा मालूम होता है कि किसीने मेरी मजाक कर दी है । 10 तब राजा बिछायतको दूर करके क्या देखता है कि सभी जगह खड्डे ही खड्डे बने हुए हैं । 11 बड़ा सम्मान किया और जीविका भी बढ़ा दी । 12 यहां सेतरामजीका भी एक अलग राज्य कायम हो गया । 13 [illegible] सभीको साथमें लेकर शिकारको चढ़ा ।

सेतरांमजी पण हुआ ।[1] सु कठैक जावतां सूअररो सिकार हाथ आयो ।[2] सु केई केहि पासै सूअरां वांसै दिया[3], केई केहि पासै हुआ ।[4] सेतरांमजी एकै सूअर वांसै घोड़ो दियो ।[5] सो सूअर कठै ही जाय नीसरियो ।[6] जठै[7] हाथियांरो वन हुतो अर रात पड़ण लागी । ताहरां सेतरांमजी एकै रूंख[8] चढि बैठ रह्या छै अर घोड़ो रूंख हेठै[9] बांधियो हुतो[10], सु सीह खाय गयो ।[11] ताहरां प्रभात हुओ । ताहरां सेतरांमजो विचारियो–'जु घोड़ो तो नहीं अर डील में भारी सु पाळा चालियो न जाय ।'[12] ताहरां मन में विचारियो–'जु एकै हाथी चढ अर जावां ।'

ताहरां सेतरांमजी एकै नाळेररै रूंख चढि अर बैठा छै ।[13] तितरै एक वडो हाथी आय नाळेररै रूंख नीचै नीसरियो । ताहरां सेतरांमजी उठैसूं धमक अर आय हाथी चढिया ।[14] ताहरां हाथी क्युं जोर करण लागो । ताहरां सेतरांमजी दोय कटारी वाही तैसूं सूधो हुओ ।[15] सु हाथी लियां-लियां सहर आया ।[16] ताहरां सेतरांमजी राजारी हजूर आया । ताहरां हाथी लोहीसूं बंबाळियो राजा दीठो ।[17] तद राजा पूछियो । कहियो–'ओ कासूं ?' ताहरां सेतरांमजी कह्यो–'जु सूअर तो नीसर गयो अर इण भांत रात वनमें रह्या । सु घोड़ो तो सिंघ मार गयो । ताहरां म्हे पाडो पकड़ अर चढ आया ।'[18] 'ताहरां राजा वळै[19] बहोत महरवांन हुओ ।

---

1 सेतरामजी भी साथ हो गये । 2 सो कहीं एक दूर जाते सूअरका शिकार हाथ आया । 3–4 सो कईयोंने किसी (एक) ओरसे और कईयोंने किसी (दूसरी) ओरसे सूअरों के पीछे अपने-अपने घोड़े दिये । 5 सेतरामजीने भी अपना घोड़ा एक सूअरके पीछे दिया । 6 सो सूअर तो कहीं जा निकला । 7 जहाँ । 8 वृक्ष । 9 नीचे । 10 था । 11 सो सिंह खा गया । 12 घोड़ा तो है नहीं और खुद शरीरमें भारी इसलिए पैदल तो चला नहीं जा सकता । 13 तब सेतरामजी एक नारियलके वृक्ष पर चढ़ कर बैठ गए हैं । 14 तब सेतरामजी उस परसे कूद कर हाथी पर सवार हो गए । 15 सेतरामजीने कटारीसे दो प्रहार किए जिससे सीधा हो गया । 16 सो हाथीको लिये लिये शहरमें आये । 17 तब राजाने खूनसे लथ-पथ हाथीको देखा । 18 तब हम इस पाड़ेको पकड़ कर चढ़ आये । 19 पुनः ।

ताहरां ग्रै तो ग्रठै रहै छै :[1] ग्रर ईयै[2] राजारो भाई सो दूसरै सहररो धणी । सु तैरो बेटो परणीजणनूं कठैक गयो हुतो सु हलांणो लियां ग्रावतो ।[3] सु वीच ग्रावतां महळरो डील वेचाक हुग्रो ।[4] ताहरां एकै सहर ग्राय मुकांम कियो । ताहरां कुंवर सहररै राजानूं कह्यो–'जु थांहरै कोई वैद हुवै तो मेलो ।[5] ताहरां राजारै नाई वैद हुतो, तियेनूं राजा कुंवररै डेरै मेलियो ।[6] ताहरां कुंवर नाईनूं[7] भीतर ले गयो । ग्रागै तम्बूरो कोटड़ी मांहै महळ सूतो हुतो ।[8] ताहरां पड़दैसूं हाथ बाहिर काढि ग्रर नाड़ दिखाई । ताहरां नाई हाथ देख ग्रर थकित हुग्रो ।[9] विचारी–'जु जैरो ग्रो हाथ छै तो रूपरी निधांन हुसी ।[10]' ताहरां नाई तो नाड़ देख, ग्रोखद वताय ग्रर घरै ग्रायो ।[11] ताहरां मास एक कुंवर ग्रठै रह्यो । महळ चाक हुग्रो ।[12] ताहरां नाईनूं घोड़ो सिरोपाव दे विदा कियो ।[13]

ताहरां नाई राजारी हजूर गयो । ताहरां राजा पूछियो । कह्यो–'रे ! ग्रायो ?'[14] ताहरां नाई कह्यो–'महाराज ! ग्रायो तो सही, पण कुंवररै महळ छै तैसो ग्राज कहीरै नहीं ।[15] वडा वखांण किया ।[16]' तद राजा कही–'तो कही भांत ग्रांपणै ही हाथ ग्रावै ?[17] ताहरां नाई कह्यो–'राज ! कुंवरनूं मारनै[18] लेवो तो हाथ ग्रावै ।'

तद राजा ग्रठैसूं[19] चढ ग्रर कुंवररै डेरै ग्रायो । ताहरां राजा कहियो–'जु कुंवरजी ! राज प्रभातै मांहरी महमांनी जीम ग्रर चढो ।[20]'

---

1 यह तो यहाँ रह रहे हैं। 2 इस। 3 सो उसका बेटा कहीं शादी करनेको गया था सो वधूको ले करके ग्रा रहा था। 4 सो ग्राते रास्तेमें वधू बीमार हो गई। 5 तुमारे यहाँ कोई वैद्य हो तो भेजिए। 6 राजाके पास एक नाई वैद्य था उसे राजाने कुंवरके डेरे पर भेजा। 7 नाईको। 8 तंबूकी एक कोटरीमें स्त्री सोई हुई थी। 9 नाई हाथ देख कर चकित हो गया। 10 जिसका यह हाथ है वह रूपकी तो निधान होगी। 11 तब नाई नाड़ी देख ग्रौर ग्रौषधि बता कर ग्रपने घर पर ग्रा गया। 12 स्त्री स्वस्थ हो गई। 13 तब नाईको घोड़ा ग्रौर सिरोपा देकर विदा किया। 14 ग्ररे ! ग्रा गया। 15 महाराज ! ग्रा तो गया ही हूं; परंतु उस कुंवरकी जो स्त्री है ऐसी रूपावान स्त्री ग्राज किसीके नहीं। 16 उसके बहुत बखान किए। 17 किसी प्रकार ग्रपने हाथ वह लग सके ? 18 मार कर। 19 यहांसे। 20 कुंवरजी ! ग्राप कल प्रभातमें हमारा ग्रातिथ्य स्वीकार कर ग्रौर भोजन करके रवाना होए।

ताहरां इहां वडो हठ कियो आपस में।[1] पण आखर कुंवर आरै हुओ।[2] कह्यो–'भलां राज ! जीम अर चढस्यां।[3]' ताहरां राजा महमांनीरो तयारी कीवी।[4] अर दारू आसो मंगायो तैं पियांसूं तुरत घूंट हुवै।[5] अर राजा आपरा चाकरांनूं कह्यो–'आज सारत छै, जद हूं कहूं–कुंवरजीनूं एक प्यालो वळै फेरो; ताहरां थे लोह कर मार लिया।[6]

ताहरां गोठ तयार हुई।[7] अर कुंवरनूं, सारै साथनूं कोटमें तेड़ि ले आया।[8] अर वांसै आदमी ५--१० राख अर कुंवर राजा पासै आयो।[9] अर अठै कुंवरनूं अर रजपूतांनूं इसा छकाया तैसूं पग टेक सगै नहीं।[10] ताहरां कुंवर राजानूं कही–'राज ! आप पण आवो जीमां।'[11] तद राजा कही–'हूं थांहरी चाकरी में ऊभो छूं।'[12] ताहरां सारै साथनूं परीसारो करण लागा।[13] ताहरां राजा सारत बोलियो।[14] कह्यो–'एक प्यालो वळै फेरो।'[15] ताहरां राजारो लोक ऊभो थो तिकै भच-भचाय अर कुंवरनूं अर रजपूतांनूं मार लिया।[16]

राजा चढ डेरै आयो। अर राजा महळनूं लेअर घर घातियो।[17] अर लोक नाठो सु ईयै राजा पासै आयो अर कही–'आ हकीकत हुई। कुंवरजीनूं मारिया अर महळ ले गया।'[18]

---

1 तो इन्होंने परस्पर बड़ा हठ किया। 2 परन्तु अन्तमें कुंवर विवश हुआ (स्वीकार किया।) 3 अच्छा श्रीमान् ! भोजन करके रवाना होंगे। 4 तब राजाने भोजनकी तैयारी की। 5 और ऐसा आसा मद्य मंगवाया जिसके पीनेसे तुरन्त बेभान हो जाय। 6 राजाने अपने चाकरोंसे कहा कि आज यह संकेत है कि जब मैं कहूं कि कुंवरजीके लिए एक प्याला और फिराया जाय, तब तुम शस्त्रोंके प्रहार कर मार देना। 7 अब गोठ (भोजन) तैयार हुई। 8 कुंवरको और उसके समस्त साथको कोटमें बुला कर ले आये। 9 पीछे सिर्फ ५–१० आदमियोंको रख कर कुंवर राजाके पास आया। 10 यहाँ कुंवर और उसके राजपूतोंको शराब पिलाकर ऐसा छकाया कि खड़े हो तो पाँव भी नहीं टिक सकें। 11 तब कुंवरने राजासे कहा कि राज ! आप भी आईये और भोजन करिये। 12 मैं तुमारी चाकरीमें खड़ा हूं। 13 तब सबको परोसगारी की जाने लगी। 14 तब राजाने संकेतमें कहा। 15 एक प्याला और फिराओ। 16 तब राजाके आदमी खड़े थे उन्होंने भचा-भच शस्त्र चला कर कुंवर और उसके राजपूतोंको मार दिया। 17 राजाने उसकी स्त्रीको ले जाकर अपने घरमें डाल दी। 18 शेष लोग जो रह गए थे वे वहाँसे भागे सो इस राजा (कुंवरके बाप) के पास आये और कहा कि कुंवरजीको मार दिया है और वधूको वह राजा ले गया। यह हकीकत बीती है।

ताहरां ईयै राजा साथ भेळो कियो अर भाईनूं कहायो–'जु भाभोजी ! एक हजार असवार म्हांरी मदत मेलज्यो ।[1] कुंवररै वैरनूं चढां छां ।'[2] ताहरां ईयैं राजा कहाई–'जु भावै हजार असवार लियो अर भावै एकलो सेतरांम ल्यो ।'[3] तद आदमियां जाय कहियो–'जु महाराज ! भावै हजार असवार ल्यो, भावै एक सेतरांम ल्यो ।' ताहरां राजा कहियो–'सेतरांमनूं ले आवो ।' ताहरां आदमी लेअर सेतरांमनूं राजारी हजूर आया । ताहरां राजा अठैसूं चढियो सु ईयै राजारै सहर आयो ।[4] ताहरां ईयै राजा सहर तो उजड़ कियो अर कोट सभियो ।[5] ताहरां ओ राजा अठै लड़ियो सु वरस २ अथवा ३ लड़ियो पण कोट भिळै नहीं ।[6] ताहरां राजा सेतरांमजीनूं कही–'कोट तो भिळै नहीं अर सांम्हो लोकरी ज्यांन ह्वै छै ।'[7] ताहरां सेतरांमजी कही–'जु जो म्हारी पूठ राखो तो दरवाजैरा किंवाड़ छै सु हूं तोडूं ।[8] अर पछै भीतर थे वड़ज्यो ।'[9] ताहरां राजा कही–'बहोत भलां ।' ताहरां अै चढ हल्लो कर, अर दरवाजै आय लागा ।[10] ताहरां सेतरांमजी घोड़ैसूं उतर अर किंवाड़ांनूं टिल्लो दियो ।[11] ताहरां किंवाड़ हुंता सु तूट गया अर अठै राजा भीतर वड़ियो ।[12] अर सेतरांमजीरै पण घाव लागा । आगलै राजारो लोक सरब मार लियो । गढ लियो ।[13]

---

1 तब इस राजाने साथ जोड़ा और अपने भाईको कहलवाया कि भाभाजी ! एक हजार सवार हमारी मददके लिए भेजिये । 2 कुंवरको मार देनेके वैरका बदला लेनेके लिए चढ़ाई कर रहे हैं । 3 चाहे तो एक हजार सवार लेओ चाहे अकेले सेतरामको लो । 4 तब राजा यहांसे चढ़ा सो इस राजाके शहरको आया । 5 तब इस राजाने शहर तो खाली कर दिया और कोटमें युद्धकी तैयारी की (कोटको युद्ध सामग्रीसे सज्जित किया) । 6 यह राजा २ या ३ साल तक लड़ा परन्तु गढ़ कब्जे नहीं होता । 7 और उलटी लोगोंकी बरबादी हो रही है । 8–9 जो मेरी मदद करो तो दरवाजेके किंवाड़ तो मैं तोड़ दूं । और बादमें भीतर तुम लोग घुस जाना । 10 तब ये लोग एक साथ हल्ला करके दरवाजे तक आ लगे । 11 तब उस समय सेतरामजीने घोड़ेसे उतर कर किंवाड़ोंको धक्का मारा । 12 तब किंवाड़ थे सो टूट गये अ राजा अंदर घुस गया । 13 अगले राजाके सभी मनुष्योंको मार दिया और गढ़ पर अधिकार कर लिया ।

ताहरां राजा सेतरांमजीनूं कही–'जु वडा राठोड़ ! तै कीवी जिसी तूं हीज करै ।[1] पण हमैं बीजो तोनूं कासूं देऊं ? म्हैं तनैं म्हारी बेटी दीवी ।'[2] ताहरां सेतरांमजी ऊठ सलांम कोवी ।[3] अठै[4] सेतरांमजीरा घाव साजा[5] कर अर ग्रै अठै आपरा[6] किलेदार बैठाय, अर राजा नै सेतरांम आपरै घरे सहर आया । ताहरां राजा सेतरांमजीनूं भलीभांत परणायो ।[7] आधो राज दियो । वडो दायजो दियो ।[8] घोड़ा, हाथी दिया । ताहरां सेतरांमजी मास १ अठै रह्या । ताहरां वै राजा सेतरांमजीनूं तेड़ायो ।[9]

ताहरां सेतरांमजी सुसरैनूं कही–'महाराज ! हमैं मोनूं विदा दीजै । म्हनै राजा बोलायो छै ।[10] चाकर हूं उवांरो छूं ।'[11] ताहरां राजा जंवाईनूं-बेटीनूं विदा दीवी ।[12] सेतरांमजी हलांणो लेअर उवै राजा पासै आया ।[13] ताहरां राजा सांम्हां जाय ले आयो, अर वडी मनुहार कीवी ।[14] ताहरां राजा कह्यो–'थां कोवी जिसी थांसूं ही ह्वै।'[15]

ताहरां सेतरांमजी अठै रहै छै । अर एक भोमियो धाड़ै दोड़ियो[16] सु अठै ईयं[17] सहर आयो । आयनै सहररो वित घेरियो ।[18] ताहरां खबर हुई–'जु भोमियो सातवीसी असवारांसूं आयो नै सहररो वित लियो ।'[19] ताहरां सेतरांमजी एकल असवार वांसै चढ दोड़ियो ।[20] नै वांसै राजा पण वाहर चढियो । ताहरां पहली कटकनूं सेतरांमजी

---

1 तब राजाने सेतरामजीको कहा—बडे राठौड़ ! तूने आज जो किया है वैसा तो तू ही कर सकता है । 2 परन्तु इसके बदलेमें मैं तुझे और क्या वस्तु दूं ? मैंने तुझे अपनी पुत्री दी । 3 तब सेतरामजीने उठ कर सलाम की । 4 यहां । 5 ठीक, अच्छे, स्वस्थ । 6 अपने । 7 विवाह किया । 8 बहुत दहेज दिया । 9 तब उस राजाने सेतरामजीको बुला लिया । 10 महाराज ! अब मुझे जानेकी आज्ञा दीजिये, मुझे राजाने बुलवाया है । 11 मैं उनका चाकर हूं । 12 तब राजाने अपने दामाद और बेटीको रवाना किया । 13 सेतरामजी अपनी वधूको लेकर उस राजाके पास आये । 14 तब राजा सामने जाकर ले आया और बड़ा सत्कार किया । 15 तुमने जो विलक्षण शूर-वीरताका काम किया है, वह तुमसे ही हो सकता है । 16 एक भोमिया लूट-खसोटके लिए दौड़ा । 17 इस । 18 आकरके शहरका गोधन घेर ले गया । 19 कि भोमिया सात-वीसी (१४०) सवारोंके साथ आया और शहरका गोधन ले लिया है । 20 तब सेतरामजी अकेला सवार होकर पीछे दौड़ा ।

पुहता ।[1] ताहरां सारा ही असवार पूठा फिरिया ।[2] कहियो–'एक असवार छै ।' 'ताहरां भोमियै कह्यो–'रजपूत ! हथियार दे अर जीवतो जा ।'[3] ताहरां सेतरांमजी कह्यो–'थे म्हांरो वित, हथियार दे अर जीवता जावो ।'[4] पछै सेतरांमजी भोमियांनूं कही–'थे पहली लोह करो, ज्युं पछै हूं करूं ।'[5] ताहरां पहली सातवीसी तीर छूटा सु सरब सेतरांमजीरै लागा ।[6] ताहरां सेतरांमजी घोड़ो उपाड़ नांखियो; सु सिरदार थो जिणनूं सेतरांमजी मार लियो वरछीसूं ।[7] ताहरां भोमियारा असवार भागा । ताहरां सेतरांमजी यांरै तीररी दै सु ठोड़ रहै ।[8] ताहरां असवार ५०क तो मार लिया । ताहरां बीजां दीठो–'जु मारै सिगळानूं ।'[9] तद हथियार छोड़-छोड़ सेतरांमजी आगै आया नै कहियो–'म्हांनूं मारो मती ।'[10] ताहरां सेतरांमजी सारांनूं मुसकां बांधिया अर घोड़ा, हथियार, वित सरब लेअर पाछा आया ।[11] ताहरां राजा दीठो–'जु सेतरांम कांम आयो अर भोमियो पाछो आयो !'[12] ताहरां साहणी दोड़ आया, देखै तो सेतरांमजी आवै छै । ताहरां पाछा आया खबर दी कहियो–'जु सेतरांमजी आवै छै । भोमियो मारियो अर रजपूतांनूं बांधै लियां आवै छै ।'[13] ताहरां राजा सांम्हां जाय अर सेतरांमजीरी निछरावळ कर अर घरे ले आयो छै ।[14] घोड़ा, हाथी दिया ।

ताहरां सेतरांमजी केइक दिन अठै रहिनै राजासूं विदा कीवी छै ।[15] राजा वळै दत-दायजो घणो रिजक देअर विदा दीवी ।[16] सेतरांमजी वडी जलूसाईसूं कनवज पधारिया ।[17]

---

1 पहुँचे । 2 तब दूसरे सभी सवार पीछे लौट गये । 3 राजपूत ! अपने शस्त्र हमें दे दे और जिंदा चला जा । 4 तुम हमारा गोधन और शस्त्र देकर जीवित चले जाओ । 5 तुम पहले प्रहार करो और पीछे मैं करूं । 6 तब पहले १४० तीर छूटे सो सभी सेतरामजीके लगे । 7 फिर सेतरामजीने अपना घोड़ा उठाया और जो धाड़ेतियोंका सरदार था उसे बर्छीका प्रहार कर मार गिराया । 8 फिर सेतरामजी इन पर तीर चलाने लगे सो जिसके लगे सो उसी ठिकाने रहे । 9 तब दूसरोंने देखा कि यह तो सबको मार देगा । 10 हमें मत मारो । 11 तब सेतरामजीने सबकी मुश्कें बाँध दी और उन्हें, उनके घोड़े, शस्त्र और गोधन आदि सर्व लेकर पीछे लौटे । 12 तब राजाने देखा कि सेतराम तो काम आ गया और भोमिया वापिस लौट कर आ रहा है ! 13 कहा कि यह तो सेतरामजी आ रहे हैं । भोमिएको मार दिया है और उसके दूसरे राजपूतोंको बांध कर लिए आ रहे हैं । 14 तब राजा सामने जाकर सेतरामजी पर निछरावल करता हुआ अपने घर ले आया है । 15 कई दिन यहाँ रह करके सेतरामजीने राजासे विदाई ली । 16 राजाने और बहुत सा धन माल और दहेज देकर विदाई दी । 17 सेतरामजी बड़े ठाटसे कन्नौज गये ।

ताहरां राजा वरदाईसेनजी सांम्हां जाय कुंवरनूं वंदाय घरे ले आया छै।[1] राजा वरदाईसेनजी बेटैनूँ देख बहोत राजी हुआ। विचारी–'जु बेटो सपूत, धरती भलीभांत राखसी।[2]

ताहरां कितरैहेक वरसे पछै वरदाईसेनजी देवलोक हुआ।[3] ताहरां सेतरांमजी टीकै बैठा। सेतरांमजी वडो प्रतापीक राजा हुओ।[4]

॥ इति सेतरांमजी वरदाईसेनोत री वात संपूर्ण ॥

---

1 तब राजा वरदाईसेनजी सामने जाकर बड़े आदरके साथ कुंवर (सेतरामजी) को घर पर लेकर आए हैं। 2 विचारा कि बेटा है तो सपूत, देशकी रक्षा भलीभाँति करेगा। 3 कितनेक वर्षोंके बाद वरदाईसेनजी देवलोक हो गए। 4 सेतरामजी बड़ा प्रतापी राजा हुआ।

वीकानेर री हकीकत

रावजी श्री वीकैंजीरै कंवरां रा नांम—

१. रावजी श्री लूणकरणजी।
२. नरोजी।
३. घड़सीजी।
४. केल्हणजी।
५. मेघवीसो।[1]
६. राजो।
७. देवराज।

रावजी श्री लूंणकरणजीरै कंवरां रा नाम—

१. रावजी श्री जैतसीहजी
२. परतापसी (परतापसिंघ)
३. रतनसी।
४. वैरसी (वैरीसिंघ)
५. तेजसी
६. करमसी।
७. रूपसी।
८. रांम (रांमसी, रांमसिंघ)
९. सूरजमल।
१०. किसनसिंघ।

रावजी श्री जैतसिंघजीरै कंवरांरा नांम—

१. रावजी श्री कल्यांणमलजी
२. भीमरावजी (भीमराजजी, भींवराजजी)
३. मालदेजी (मालदेवजी)
४. ठाकुरसी।
५. मांनसिंघ।
६. अचळदास।
७. पूरणमल।
८. सिरंगजी (श्रीरंगजी, सिरंगसीजी)
९. सुरजनजी।
१०. कांन्ह।
११. भोजराज।
१२. करमचंद।
१३. तिलोकसी।

---

1 कई प्रतियोंमे मेघवीसो और मेघसी नाम लिख करके बीकाजीके कुंवरोंकी संख्या ७ बताई है. परन्तु कई प्रतियोंमें मेघो और वीसो अलग अलग लिखे हैं इस प्रकार उनके कुंवरों-की संख्या उनमें आठ बताई गई हैं। मेघो और बीसो अलग-अलग दो नाम होना ही ठीक प्रतीत होता है।

रावजी श्री कल्यांणमलजीरै कंवरां रा नाम°—

१. महाराजा श्री रायसिंघजी
२. रांमसिंघजी ।
३. प्रिथीराजजी* ।
४. सुरतांणजी ।
५. भांण ।
६. अमरो ।
७. गोपाळदास ।
८. राघवदास ।
९. डूंगरसी (डूंगरसिंघ)

° राव कल्याणमलके दसवां भाखरसी और ग्यारहवां भगवानदास ये दो कुंवर और कहे जाते हैं ।

* राठोड़ पृथ्वीराज कल्याणमलोत डिंगलके प्रसिद्ध रसिक और भक्त कवि हो गये हैं । ये काव्यमें 'पीथळ' उपनामसे भी प्रसिद्ध हैं । डिंगलके अतिरिक्त पिंगल छन्द शास्त्रके भी ये अच्छे ज्ञाता थे और दर्शन, ज्योतिष, संगीत, वाद्य और नृत्यकला इत्यादि शास्त्रों और संस्कृत तथा व्रज भाषाके बड़े विद्वान थे । विद्वान और रसिक होनेके साथ यह वीर भी थे । अकबर बादशाहकी ओरसे इन्होंने कई युद्ध भी लड़े थे । एक क्षत्रियमें ये तीनों गुण एक साथ इन्हींमें पाए जाते हैं । साहित्य संसारमें इनकी रची हुई 'वेलि क्रिसन रुकमणीरी राठोड़ राज प्रिथीराजरी कही' साहित्य और काव्यकी अद्वितीय कृति जगत्-प्रसिद्ध है ।

इसके अतिरिक्त—

श्री गुरु प्रार्थना (गुरु विट्ठलनाथजीरा दूहा १२)
श्री कृष्ण स्तुति (वसदेवरावउतरा दूहा १८५)
श्री राम स्तुति (दशरथ रावउतरा दूहा ५४) और
श्री गंगा स्तुति (भागीरथी, जाह्नवी और मंदाकिनी रा दूहा ८८)

आदि अनेक गीत-छन्द, पद और प्रस्ताविक दूहे लोक-कंठ पर खूब प्रसिद्ध हैं । 'प्रेम दीपिका' और 'श्याम लता' ग्रंथ भी इनके रचे कहे जाते हैं, पर अभी प्राप्त नहीं हो सके हैं । पृथ्वीराजकी प्रथम पत्नी लालांदेके मरनेके बाद उसकी बहन चांपादेके साथ उन्होंने दूसरा विवाह किया था । जैसलमेरके रावल हरराज (नैणसीरी ख्यात, भाग २, पृ० ९२, ९७, ९८, १०२ इत्यादि) की ये दोनों कन्याएँ विदुषी थीं । पृथ्वीराजका जन्म वि० सं० १६०६ मार्गशीर्ष कृष्ण १ को बीकानेरमें और मृत्यु वि० सं० १६५७में मथुरामें हुई थी ।

दयाळदास सिंढायचने अपने लिखित 'दयाळदासरी ख्यात' ग्रंथ में इनका परिचय विस्तारसे लिखा है । 'नैणसीरी ख्यात' प्रथम भाग, पृ० २५६ में बादशाह अकबर द्वारा पृथ्वीराजको गागरोनगढ़ दिए जानेका उल्लेख किया गया है ।

विद्वानोंका अनुमान है कि 'वेलि'की रचना गागरोनगढ़में हुई है ।

महाराजा श्री रायसिंघजीरै कंवरांरा नांम—

१. महाराजा श्री सूरसिंघजी। ३. भोपतजी (भूपतजी)।
२. दळपतजी*। ४. किसनसिंघजी।

---

* बीकानेरके महाराजा रायसिंहके द्वितीय पुत्र दलपतसिंहका जन्म वि० सं० १६२१की फाल्गुन बदी ८को महाराणा उदयसिंहकी पुत्री जसमादेकी कोखसे हुआ था। यह बड़ी वीर प्रकृतिके थे। बचपनमें ही बड़ी वीरताके काम कर दिखाए थे। जावदीखांकी ८० हजार सेनाको सरसेमें इन्होंने मार भगाया था। इनके चाचा राठौड़ पृथ्वीराजने इनकी इस युद्ध वीरता पर बड़ा सुन्दर निम्न गीत-काव्य कहा है—

दला दियंतां ओलभा जैतमालां दिसा,
निस अरध जागवी थाट नमियो।
साहिजादी तणै महल नवसाँहसो,
रायउत हुइ पहोर तेण रमियो॥ १

रौद घड़ राव रावल् रमै आध रत,
भाग सोभागणी कमध भीनो।
मुगलणि आंगणै प्रेम रस मांणवा,
दलै दीहां भलो मुहुत दीनो॥ २

हार सिणगार गजमीर खंडत हुआ,
उर अरध चूरिया लोह आडै।
सेत संभ्रम तणै तखत रायसिंघ सुव,
लोद्र घड़ भोगवी भांजि लाडै॥ ३

जोर जोवण चढी अणी नख जोड़ली,
पिलंग पाधर पड़ी दलै पाली।
जावदी तणी घड़ पूंगड़ी जीव ले,
होड ग्रहणा हसक छोड हाली॥ ४

दलपतसिंहके पकड़े जाने पर, जो भाई बंधु और सरदार आदि उनके साथमें थे, कुछ भी साहस न दिखा कर छोड़ कर भाग गए। इस पर एक कविने इन सरदारोंको कितना अच्छा धिक्कारा है।

फिट वीकां फिट कांधलां, जंगलधर लेडांह।
दलपत हुड़ ज्युं पकड़ियो, भाज गई भेड्डांह॥°

° किसी अज्ञात लेखकने दलपतसिंहके वीर कृत्यों पर राजस्थानी गद्य में 'दलपत विलास' नामक एक पुस्तक लिखी है। अनूप संस्कृत लाइब्रेरीकी यह एक मात्र त्रुटित प्रति शार्दूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट बीकानेरकी ओरसे हिन्दी अनुवाद सहित अभी प्रकाशित हो चुकी है। ज्ञात होता है कि लेखक उसे पूर्ण नहीं कर सका है। भाषा-शैलीकी दृष्टिसे वह तत्कालीन (१७वीं शतीकी) लिखी हुई प्रतीत होती है।

राजस्थानी साहित्यकी सर्वोपरि व्यापक मारवाड़ी भाषाके गद्य-लेखनकी परम्परा और प्रांजलता पर यह छोटी ऐतिहासिक पुस्तक भी अच्छा प्रकाश डालती है।

महाराजा श्री सूरसिंघजीरै कंवरां रा नांम—

१. महाराजा श्री करणसिंघजी
२. अरजुणजी।
३. सत्रसाल।

महाराजा श्री करणसिंघजीरै कंवरांरा नांम—

१. महाराजा श्री अनोपसिंघजी*।
२. केसरीसिंघजी।
३. पदमसिंघजी।
४. माहेणसिंघजी।
५. अजबसिंघजी।
६. उदैसिंघजी।
७. मदनसिंघजी।
८. अमरसिंघजी।
९. देवीसिंघजी।
१० माळीदासजी।

महाराजा श्री अनोपसिंघजीरै कंवरांरा नांम—

१. सुजांणसिंघजी।
२. अणंदसिंघजी।
३. सरूपसिंघजी।
४. रुद्रसिंघजी।
५. रूपसिंघजी।
६. गजसिंघजी।

अणंदसिंघजीरै कंवरां रा नांम—

१. महाराजा श्री १०८ श्री गजसिंघजी।
२. अमरसिंघजी।
३. तारासिंघजी।
४. गूदड़सिंघजी (गोदड़सिंघजी)।

---

* महाराजा अनूपसिंघजी बड़े विद्या-रसिक हुए हैं। इन्होंने संस्कृत, राजस्थानी और व्रज-भाषाके सभी विषयोंके सहस्रों हस्तलिखित ग्रंथोंका संग्रह किया था, जो आज अनूप संस्कृत लाइब्रेरीके नामसे प्रसिद्ध है। 'नैणसीरी ख्यात'की भी सुलेख्य विश्वस्त हस्त-लिखित प्रति इस पुस्तक भंडारमें मौजूद है। असली प्रतिकी यही पहली प्रति होनेका अनुमान किया जाता है।

महाराजा अनूपसिंघजीके बादके राजाओंके नाम पीछेसे लिखे गये हैं जो अनूप संस्कृत लाइब्रेरीकी इस प्रतिमें बीच-बीचके भिन्न-भिन्न अक्षरोंसे स्पष्ट मालूम होता है।

सतियां हुई

महाराजा श्री अनोपसिंघजी री सतियां, संमत १७५५ जेठ सुदी ९ नै हुई[1]—

२. रांणियां दोय—
   १. जेसळमेरी रतनकंवरजी।
   २. तुंवरजी अंतरंगदेजी[*]।
३. खवासां तीन—
   १. सुघड़राय।
   २. रंगराय।
   ३. गुलाबराय।
४. पातरियां च्यार ४—
   १. जैमाळा।
   २. नारंगी।
   ३. सरकसळी (सरसकळी)
   ४. अनारकळी।
२. खालसा दोय २—
   १. रूपकळी।
   २. कपूरकळी।
७. सहेलियां सात सतियां हुई—
   ४. तैमें चार सहेलियां जेसळमेरीजी साहिबां री—
      १. रूपरेखा।
      २. हररेखा (हरखरेखा)
      ३. गुणजोत।
      ४. मोतीराय।
   १. तुंवरजी साहिबां री सहेली—
      १. हरमाळा।
   २. खवासां री सहेलियां—
      १. कमोदी।
      २. डगलो।

रावजी श्री कल्यांणमलजीरै सतियां, संमत १६३० में हुई[2]—

४. राणियां चार ४—
   १. रांणी हांसांजी गहलोत।
३. भटियांणियां तीन—
   १. रांमकंवरजी।

---

[*] एक प्रतिमें 'पंवारजी अंतरंगदेजी' लिखा है।

---

1 वि० सं० १७५५ ज्येष्ठ शुक्ल ९को महाराजा श्री अनूपसिंहजी देवलोक हुए, तब उनके पीछे इस प्रकार (रानियां, खवासिनें आदि १८ स्त्रियां जीवित जल कर) सतियें हुईं।

[पड़दायत, पासवान, खवास, वडारण, डावड़ी, ओळगण, गायणी, पातर, खालसा और सहेली आदि दासियोंके कई प्रकार और श्रेणियां हैं। इनमें पड़दायत और पासवानका दर्जा ऊंचा होता है। वे रानीकी तरह पर्देमें रखी जाती हैं।]

2 वि० सं० १६३० रावजी कल्याणमलजी देवलोक हुए तब उनके साथ इस प्रकार सतियें हुईं।

२. प्रेमकंवरजी ।
३. लूंग कंवरजी (लवंग कंवरजी)

३. खवासां तीन ३—
१..................।
२.........।
३..................।

१. ओळगण[1] एक—
१. पोहपराय ।

१०. पातरियां १०—
१. जीऊ (जीवी, जीवू)
२. जैमाळा (अजेमाळा)
३. बुधराय ।
४. कांमसेना ।
५. रंगराय ।
६. पदमावती ।
७. सुघड़राय ।
८. मांणवती (भांणवती, भांनुमती)
९. रूपमंजरी ।
१०. रंगमाळा ।

महाराजा श्री रायसिंघजीरै सतियां, संमत १६६८ में हुई[2]—

३. रांणियां तीन ३—
१. तुंवरजी द्रोपदा ।
२. सोढी मांणवदे (भांणवदे, भांनुदेवी)
३. भटियांणी अमोलकदे ।

३. पातरियां तीन ३—
१. रंगराय ।
२. नैणजवा (नैणजीवा)
३. कांमरेखा ।

महाराजा श्री सूरसिंघजीरै सतियां, संमत १६८८ में हुई[3]—

२. रांणियां दोय २—
१. भटियांणी मनरंगदेजी ।
२. रांणी रतनावतीजी ।

२. पातरियां दोय—
१. रंगरेखा ।
२. गुणकळी ।

महाराजा श्री करणसिंघजीरै सतियां, संमत १७२६ में हुई[4]—

८. रांणियां ८ आठ—
१. भटियांणी धनराजोत अजबदेजी ।
२. जेसळमेरी सिणगारदेजी

---

1 (१) ढोली या ढाढ़ी जातिकी गाने वाली स्त्री । ढोलिन, ढाढ़िन । (२) गायिका ।
2 वि० सं० १६६८ में महाराजा श्री रायसिंहजीका देहान्त हुआ तब इतनी सतियें हुईं ।
3 महाराजा श्री सूरसिंहजीकी मृत्यु वि० सं० १६८८ में हुई तब उनके पीछे इतनी सतियें हुईं ।
4 वि० सं० १७२६में महाराजा श्री करणसिंहजीकी मृत्यु हुई तब उनके साथ इतनी स्त्रियां जल कर सती हुईं ।

३. वीकूंपुरी कोडमदेजी ।
४. वीकूंपुरी मनसुखदेजी ।
५. सेखावत सोभागदेजी ।
६. सेखावत प्रतापदेजी ।
७. सोढी सुगणांदेजी ।
८. तुंवर साहिबदेजी ।

१०. खवास-पातरियां १० दस–
१. कमोदकळा ।
२. रांमोती ।
३. मेघमाळा ।
४. किसनाई (किसनराय)
५. गुणमाळा ।
६. चंपावती (चंपाकळी)
७. रूपकळी ।
८. पेमावती (प्रेमकळी)
९. कुंजकळी ।
१०. मृदंगराय ।

महाराजा श्री सुजांणसिंघजीरै सतियां, संमत १७९२ हुई[1]—

१. रांणी १ एक–
१. देरावरी सुरतांणदे

४. पातरियां ४ चार–
१. गरुड़राय ।
२. रंगराय ।
३. नैणसुखराय ।
४. गुमांनराय ।

१. वडारण १ एक—
१. हरजोतराय ।

२. खालसां २ दोय–
१. हसती (हसणी, हंसणी)
२. चैनसुख (चैनसुखी, चैनसुखराय)

महाराजा श्री जोरावरसिंघजीरै सतियां, संमत १८०३ में हुई[2]–

२. रांणियां २ दोय—
१. देरावरी अखैकुंवरजी (अभैकुंवरजी) ।
२. तुंवरजी उमेदकुंवरजी ।

१. खवास १ एक—
१. सदांजी ।

१२. पातरियां १२ बारैह—
१. गोरां (गवरां) ।
२. सरूपां ।
३. गुलाबां ।
४. तनतरंग ।
५. रंगनिरत (रंगनृत)
६. फत्तू ।
७. वनां ।
८. सुखविलास (सुभविलास)

---

1 महाराजा सुजानसिंहजीकी मृत्यु वि० सं० १७९२ में हुई, उस समय ये स्त्रियां सती हुईं । 2 वि० सं० १८०३में महाराजा जोरावरसिंहजीके साथ ये स्त्रियां सती हुईं ।

९. राजां ।
१०. गुमांनी ।
११. विजी (विजनां)
१२. महताब ।

२. खालसा २ दोय—
१. रांमजोत ।
२. कपूरकळी ।

१. वडारण १ एक—
१. गुणजोत ।

३. सहेलियां ३ तीन—
१. तुंवरजी री सहेली एक (कुंवरांणीजीरी सहेली) राही ।

२. पातरियांरी सहेली २ दोय—
१. फत्तू ।
२. सकांमी (सदांमी)

१. पातरियांरो रसोईदार १ एक—
१. ब्रांह्मणी राही १ एक ।

जोधपुररा राजाग्रांरी ख्यात

महाराजा श्री भीमसिंघजी रावळोतांरा दोहीतरा। भोमसिंघ, किसनसिंघ सादूळसिंघोतरा दोहीता।[1]

महाराजा श्री विजयसिंघजी भाटियांरा दोहीतरा। दौलतसिंघ गर्जसिंघोतरा दोहीतरा।[2]

महाराजा श्री वखतसिंघजी चहुवांणांरा दोहीतरा। चत्रभुज दयाळदासोतरा दोहीतरा।[3]

महाराजा श्री ग्रजीतसिंघजी जादवांरा दोहीतरा। जादव भीमपाळ छत्रमणोतरा दोहीतरा। मांजोरो नांम पोहपकंवर।[4]

---

1 महाराजा भीमसिंहजी रावलोत भोमसिंह किशनसिंह सादूलसिंहोतके दोहिते थे।

महाराजा भीमसिंह महाराजा विजयसिंहके पौत्र ग्रौर उनके उत्तराधिकारी भी। इनकी मृत्यु वि० सं० १८६० कार्तिक सुदि ४ को हुई।

2 महाराजा विजयसिंह भाटी दौलतसिंह गर्जसिंहोतके दोहिते।

ये महाराजा परम वैष्णव थे। जोधपुरका विशाल गंगश्यामजीका मन्दिर ग्रौर गिरदीकोट इन्होंने बनवाये थे। इनकी पासवान गुलावरायने बहुत ही भव्य श्री कुंजविहारीजीका प्रसिद्ध मन्दिर ग्रौर उसका कटला बाजार, गुलाब सागर, महिला बाग ग्रौर उसका झालरा (चारों ग्रोर सीढ़ियों वाली वापिका) ग्रादिका निर्माण कराया था। विजयशाही मुद्रा इन्हीं महाराजाने चलाई थी। इनका जन्म वि० सं० १७८६ मार्गशीर्ष कृष्णा ११, राज्यगद्दी वि० सं० १८०९ ग्रौर मृत्यु सं० १८५० ग्राषाढ़ वदि १४ को हुई।

3 महाराजा वखतसिंह चौहान चतुर्भुज दयालदासोतके दोहिते।

इनका जन्म सम्वत् १७६६ की भादौं वदि ८ को ग्रौर मृत्यु सम्वत् १८०९ भादौं सुदि ११ को हुई थी। जोधपुर ग्रौर नागौरमें इन्होंने ग्रपने नामसे 'बखतसागर' नामके तालाब बनवाये थे।

4 महाराजा ग्रजीतसिंह यादव भीमपाल छत्रमणोतके दोहिते। इनकी माजीका नाम पोहप कंवर (पुष्प कुंवरि) था।

जन्मसे मृत्यु पर्यन्त इनका जीवन ग्रौर राज्यकाल बड़ा ग्रशान्त रहा। युवा होने तक वीर दुर्गादास जैसे स्वामी-भक्त सरदारोंकी देख-रेखमें इन्हें गुप्त रहना पड़ा। ये महाराजा बड़े ही वीर-विद्वान ग्रौर कवि थे। गुणसागर, गजउद्धार ग्रौर गुण दोहे ग्रादि इनके रचे हुए ग्रंथ हैं। इनके सम्बन्धमें बने 'ग्रजितोदय' ग्रौर 'ग्रजित ग्रंथ' भी हैं। मरुनायकजीका मंदिर पंच देवलियां, मंडोरमें इकथंभिया महल. बड़ी-बड़ी मूर्तियों वाले देवताग्रोंकी शाला ग्रादि कई दर्शनीय स्थान इन्होंने बनवाये। इनकी मृत्युके समय इनके साथ रानियां, दासियां ग्रौर ५७ स्त्रियां सती हुई थीं। इनके दाह स्थान पर मंडोरमें बना विशाल बड़ा (देवल) वास्तु-विद्याका एक नमूना है।

महाराजा श्री जसवंतसिंघजीरी मा गायड़देवी सीसोदणी । भांण सगतावतरी बेटी ।[1]

महाराजा श्री गजसिंघजीरो मा केसरदे कछवाही । रूमीखां करमसीओतरी बेटी ।[2]

महाराजा श्री सूरसिंघजीरी मा साहमती कछवाही । आसकरण भीमावतरी बेटी ।[3]

महाराजा श्री उदैसिंघजीरी मा सरूपदे झाली । सझै राजावत-री बेटी ।[4]

---

1 महाराजा जसवन्तसिंहजी (प्रथम)की माता भाण शक्तावतकी पुत्री गाहड़देवी शिशोदनी ।

इनका जन्म वि० सं० १६८३ माघ वदि ४ को हुआ था और वि० सं० १७३५ की पौष वदि १० को जमरूदमें मृत्यु हुई थी । ये महाराजा बड़े वीर थे । औरंगजेब भी इनसे सशंकित रहता था । ये महाराजा बड़े विद्वान और वेदान्ती थे । इन्होंने वेदान्तके अनेक ग्रंथ लिखे हैं । आनन्दविलास, अनुभवप्रकाश, सिद्धान्तसार, अपरोक्ष सिद्धान्त और सिद्धान्तबोध मुख्य है। भाषा-भूषण आदि अन्य ग्रंथ भी इनकी विद्वताके उच्चकोटिके ग्रंथ हैं । हमारे ख्यात लेखक मुंहता नैणसी वि० सं० १७१४में इनके दीवान बने थे । आगे जाकर महाराजासे इनकी कुछ खटपट हो गई थी । जिस पर महाराजाने नैणसी और इनके भाई सुंदरसीको जेलमें डाल दिया और एक लाख रुपये डंड कर दिया । इस अपमानसे दोनों भाइयोंने सं० १७२७में आपघात कर दिया । नागोरके राव अमरसिंह राठौड़ इनके बड़े भाई थे ।

2 महाराजा गजसिंहकी माता रूमीखां करमसीओतकी पुत्री केशरदेवी कछवाही ।

इनका जन्म वि० सं० १६५२ कार्तिक सुदि ८ को हुआ था । इनकी वीरता पर बादशाह जहांगीरने इन्हें 'दलथंभन' का विरुद दिया था । इन्होंने कुमारावस्थामें ही जालोरसे विहारी-पठानोंको भगा कर उस पर अपना अधिकार कर लिया था ।

3 महाराजा सूरसिंहकी माता आसकरण भीमावतकी पुत्री शाहमती कछवाही ।

इनका राज्यतिलक सम्वत् १६५२ सावन वदि १२ को लाहौरमें और इसी वर्ष माघ शु० ५ को फिर जोधपुरमें हुआ । जोधपुरके सूरसागर तालावको इन्होंने बनवाया था । मारवाड़में बादशाही ढंगसे राज्य-प्रबंध इन्होंने चालू किया । महकरमें सम्वत् १६७६की भादों शु० ९ को इनकी मृत्यु हुई ।

4 महाराजा उदयसिंहकी माता सझै राजावतकी पुत्री स्वरूपदे झाली ।

मोटा राजा उदयसिंहका जन्म सम्वत् १५९४ माघ सुदि १२ को हुआ था । सं० १६४०-की भादों वदि १२ गद्दी बैठे । सं० १६५२की आषाढी पूनमको लाहोरमें मृत्यु हुई । सिवानेका प्रसिद्ध वीर राठौड़ कल्ला रायमलोत जिसने बादशाही मनसबदारको मार डाला था; बादशाहकी ओरसे आक्रमण करदेने और हार जाने पर इन महाराजाने पोलिया नामक नाईसे किलेका भेद और गुप्त मार्ग मालूम कर किलेमें प्रवेश कर लिया । कल्ला रायमलोत बड़ी वीरतासे लड़ कर काम आया ।

राव मालदेवजीरी मा पदमां देवड़ी । जगमाल लाखावतरी बेटी ।[1]

राव गांगोजीरी मा उदैकंवर चहुवांण । रांम कँवरावतरी बेटी ।[2]

राव वाघोजोरी मा लिखमांदे भटियांणी । जेसै कलिकरणोतरी वहन ।[3]

(पिछले पृष्ठकी टिप्पणीका शेषांश)

इन महाराजाके द्वारा चारणोंके गांव जब्त करने पर संवत् १६४३ का प्रसिद्ध धरणा आऊवामें हुआ था ।

---

1 राव मालदेवकी माता (सिरोहीके राव) जगमाल लाखावतकी पुत्री पद्मां देवड़ी ।

इनका जन्म वि० सं० १५६८ पौष वदि १ को हुआ था । संवत् १५८८ (विगतमें १५८२) आषाढ़ वदि ५ को सोजतमें गद्दी बैठे और संवत् १६१९की काती सुदि १२को देहान्त हुआ ।

मालदेवजी बड़े ही प्रतापी राजा हुए । इन्होंने अपने समीपवर्ती सभी राजाओंको जीत करके अपने राज्यकी सीमाका खूब विस्तार कर लिया था । ५२ परगनोंके ८४ गढ़ और ६००० गांव इनके अधिकारमें थे । इसीलिए इनका विरुद 'नवसहँसा' हुआ और पश्चिमके बादशाह प्रसिद्ध हुए । जैसलमेरके रावल लूणकर्णकी कन्या उमादेवी भटियानी उपनाम रूठी-रानी इन्हींकी रानी थी ।

मेड़तेका मालकोट और अजमेरका अपूर्ण बीटली किला और अन्य कई किले कोट इन्होंने बनवाये थे । इनके २२ पुत्र थे ।

2 राव गांगेकी माता राम कँवरावतकी पुत्री उदयकुंवरि चौहान ।

इनका जन्म वि० सं० १५४० वैसाख सुदि ११, बड़े भाई वीरमजीके उत्तराधिकारी होते हुए सरदारोंने इन्हें सम्वत १५७२ मिगसर सुदि १२को गद्दी पर बिठाया । संवत १५८८ जेठ सुदि ५को अफीमके नशेमें झरोखेसे गिर कर मर गये ।

जोधपुरके प्रसिद्ध गंगश्यामजीके मन्दिरकी विष्णु भगवानकी मूर्ति राव गांगाजी सिरोही-से लाये थे । गाँगाजीने अपने नाम पर 'गंग स्वामी' नाम रखा जो बादमें गंगश्याम हो गया । उस समय यह मूर्ति किलेमें रखी गई थी । महाराजा विजयसिंहजीने तलहटीके महलोंके पास भव्य मन्दिर बनवा कर सं० १८१८में उसमें स्थापित की । गांगारी बावड़ी और गांगेलाव तालाब इन्हीं महाराजाने बनवाये । इनकी रानी (राणा सांगाकी कन्या) पदमावतीने मेवाड़के पदमा सेठ द्वारा बनवाये हुए पदमसर तालावको अधिक बडा बनवाया ।

3 राव बाघाजीकी माता भाटी जैसे कलिकर्णोतकी बहिन लखमादे (लक्ष्मीदेवी) भटियानी ।

कुंवर बाघा अपने पिता राव सूजाकी विद्यमानतामें ५७ वर्षकी आयु प्राप्त कर संवत १५७१की भादों सुदि १४को काल-कवलित हो गये । इनका जन्म वि० सं० १५१४की वैशाख वदि ३०को हुआ था ।

राव सूजोजीरी मा हाडी जसमादे । अजीत मालदेवोतरी बेटी ।[1]

---

१ राव सूजाकी माता अजीत मालदेवोतकी पुत्री हाडी जसमादे ।

राव सूजाका जन्म वि० सं० १४९६ भादों वदि ८को हुआ था । वि० सं० १५४८ (विगतमें १५४९) की वैशाख सुदि ३को गद्दी बैठे और संवत १५७२की काती वदि ९को देहान्त हुआ ।

जोधपुर पर आक्रमण करके राव बीकाजी इन्हींसे जोधपुरके राज्य-चिन्ह ले गये थे ।

उपरोक्त नामोंका क्रम उलटा लिखा हुआ है और कई नाम छूटे हुए हैं एवं महाराजा जसवन्तसिंहजीके पीछेके नाम नैणसीके बादमें लिखे हुए हैं ।

किसनगढरी विगत

राजा प्रतापसिंघ । उदोतसिंघ उमेदसिंघोतरो दोहीतो । साहपुरारै राजावतांरो ।[1]

राजा विरदसिंघ । सुखसिंघ सूरजमलोतरो दोहीतो । फतहगढ गौड ।[2]

राजा बहादुरसिंघ । उदैसिंघ कीरतसिंघोतरो दोहीतरो । कांबा राजावत ।[3]

राजा राजसिंघ । हरीसिंघ जसवंतसिंघोतरो दोहीतरो । देवळियै सीसोदियांरो ।[4]

राजा मांनसिंघ । बलू सांवतसिंघोतरो दोहीतो । साचोरा चहुवांणांरो ।[5]

राजा रूपसिंघ । हरीरांम रायसलोतरो दोहीतो । सेखावत खंडेलारा ।[6]

राजा भारमल । दयाळदास खेतसीओतरो दोहीतरो । जेसळमेर भाटियांरो ।[7]

राजा किसनसिंघ । आसकरण भीमावतरो दोहीतो । नरवरगढ कछवाहा ।[8]

---

1 राजा प्रतापसिंह—शाहपुराके राजावत उद्योतसिंह उम्मेदसिंहोतका दोहिता ।

2 राजा विरुदसिंह—फतहगढ़के गौड़ सुखसिंह सूरजमलोतका दोहिता ।

3 राजा बहादुरसिंह—कांबाके राजावत उदयसिंह कीरतसिंहोतका दोहिता ।

4 राजा राजसिंह—देवलियाके सिसोदिया हरिसिंह जसवंतसिंहोतका दोहिता ।

5 राजा मानसिंह—साचोरा-चौहान बलू सामंतसिंहोतका दोहिता ।

6 राजा रूपसिंह—खंडेलाके शेखावत हरीराम रायसलोतका दोहिता ।

7 राजा भारमल—जैसलमेरके भाटी दयालदास खेतसीओतका दोहिता ।

8 राजा किशनसिंह—नरवरगढके कछवाहा आसकरण भीमावतका दोहिता ।

राजा किशनसिंहका जन्म वि० सं० १६३९की जेठ वदि २को हुआ था । इन्होंने अपने नामसे वि० सं० १६६६में किसनगढ़ नामका नगर बसाया और बादशाह जहांगीरसे जागीरी प्राप्त कर अलग राज्य स्थापित किया । राजा किशनसिंह जोधपुरके मोटा राजाके १७ पुत्रोंमें से एक थे ।

इस विगतमें लिखे नामोंका क्रम उलटा लिया हुआ है ।

राठोड़ांरी तेहरै साखाआंरी विगत

राजा धुंधमाररै १३ पुत्र हुआ। तिणांसूं जुदी-जुदी तेहरै साखाआं हुई[1]—

१ वडो पुत्र अभैराज, तिण अभैपुर वसायो, तिणसूं अभैंपुरा कहांणा।[2]

२. बीजो जयवंत हुओ। तिणसूं जयवंत कहांणा।[3]

३. तीजो बागुळ हुओ। बुगळांण देस वसायो, तिणसूं बुगळांणा कहांणा।[4]

४. चोथो अहिराव, तिण आहोरगढ वसायो, तिणसूं अहिराव कहांणा।[5]

५. पांचमो, करहो* हुओ। जिण करहेड़ोगढ करायो, तिणसूं करहा कहांणा।[6]

६. छठो जसचंद हुओ। तिण जळखेड़पाटण वसायो, तिणसूं जळखेड़िया कहांणा।[7]

७. सातमों कमधज हुओ। तेरह साखांरो राव कहांणो।[8]

८. आठमों चंदेल हुओ। तिण चंदेरी वसाई, तिणसूं चंदेल कहांणा।[9]

---

1 राजा धुंधमारके १३ पुत्र हुए जिनके नामोंसे अलग-अलग तेरह शाखाएँ चलीं।

2 बड़ा पुत्र अभयराज हुआ जिसने अपने नामसे अभयपुर बसाया और उसके वंशज अभयपुरा कहलाये।

3 दूसरा जयवंत हुआ जिसके वंशज जयवंत कहलाये।

4 तीसरा बागुल हुआ जिसने बुगलाना देश बसाया और उसके वंशज बुगलाना कहलाये।

5 चौथा पुत्र अहिराव हुआ जिसने आहोरगढ बसाया। उसके वंशज अहिराव कहलाये।

6 पांचवां पुत्र करहा हुआ जिसने करहेड़ोगढ़ बनवाया। उसके वंशज करहा कहलाये।

7 छठा पुत्र जसचंद हुआ जिसने जलखेड़पाटन (जसखेड़पाटण) बसाया। उसके वंशज जलखेड़िया (जसखेड़िया) कहलाये।

8 सातवां पुत्र कमधज हुआ। यह तेरह शाखाओंका राव कहलाया।

9 आठवां पुत्र चंदेल हुआ जिसने चंदेरी बसाई और उससे चंदेल प्रसिद्ध हुए।

---

*पाठान्तर- कुरहो।

९. नवमों अजवाराह^ हुओ । तिण पूरबमें अजैपुर वसायो, तिणसूं अजवेरिया कहांणा ।[1]

१०. दसमों सूरदेव हुओ । तिण सूरपुर वसायो, तिणसूं सूरा कहांणा ।[2]

११. इग्यारवों धीर हुओ । तिण धीरावादगढ करायो, तिणसूं धीरा कहांणा ।[3]

१२. बारवों कृपाळदेव हुओ । तिण कँवळपुर" वसायो, तिणसूं कपाळिया* कहांणा ।[4]

१३. तेहरवों खीमपाळ हुओ । तै खैरावाद नगर वसायो, तिणसूं खैरूंदा कहांणा ।[5]

---

1 नौवाँ पुत्र अजवाराह (अजयवार) हुआ जिसने पूर्वमें अजयपुर वसाया । उसके वंशज अजवेरिया कहाये ।

2 दशवां सूरदेव हुआ जिसने सूरपुर वसाया । उसके वंशज सूरा कहलाये ।

3 ग्यारहवाँ पुत्र धीर उत्पन्न हुआ जिसने धीरावदगढका निर्माण कराया । इसके वंशज धीरा कहलाये ।

4 बारहवाँ पुत्र कृपालदेव हुआ जिसने कमलपुर बसाया । इसके वंशज कपालिया कहलाये ।

5 तेरहवाँ पुत्र खीमपाळ उत्पन्न हुआ । इसने खैरावाद नगर बसाया । इसके वंशज खैरूंदा कहलाये ।

पाठान्तर– ^अजवार, अजयवार । "कमळपुर । *कपलिया ।

अथ जेसलमेररी ख्यात

१. रावळ मूळराजजी सोढांरा दोहीतरा। रिणछोड़ गंगादासोतरा।[1]

२. अखैंसिंघजी १, बुधसिंघजी २, जोरावरसिंघजी ३, दोहीता खाबडियांरा।[2]

३. जगतसिंघजी १, ईसरीसिंघजी २, दोहीता सोढांरा।

४. जसवंतसिंघजी १, पदमसिंघजी २, जैसिंघजी ३, विजैसिंघजी ४, दोहीता सोढांरा।

५. जूंझारसिंघजी दोहीता हळोदरा झालांरा।[3]

६. अमरसिंघजी १, रतनसिंघजी २, बांकीदासजी, ३ महासिंघजी ४, दोहीता रूपनगररा।[4]

७. सबळसिंघजी १, विहारीदासजी २, दोहीता कलै रायमलोतरा समियांणैरा।[5]

८. दयाळदास १, पंचायण २, ईसरीसिंघ ३, सगतसिंघ ४, वाघ ५, दोहीता सातळमेररा।[6]

९. खेतसी १, हरराज २, भांनीदास ३, डूंगर ४, सहसो ५, नारायण ६, ...७।

१०. मालदेजी १, ...।

११. लूणकरणरै दूजा भाई मरोट। सरब भाई ११[7]

मूळराजसूं पीढी तीन जगतसिंघ रावळरा भाई हुआ[8]—

सरदारसिंघजी ३, तेजसिंघजी ४, दोहीतरा जसोलरै रावळरा।[9]

---

1 रावल मूलराज सोढ़ा रणछोड़ गंगादासोतका दोहिता। 2 अखैंसिंह बुधसिंह और जोरावरसिंह तीनों खाबड़ियोंके दोहिते। 3 जूझारसिंह हलवद (सौराष्ट्र)के झालोंका दोहिता। 4 अमरसिंह, रतनसिंह. बांकीदास और महासिंह रूपनगर वालोंके दोहिते। 5 सबलसिंह और बिहारीदास सिवानाके कल्ला रायमलोतके दोहिते। 6 दयालदास, पंचायन ईश्वरीसिंह, सगतसिंह और बाघ ये सातलमेर वालोंके दोहिते। 7 लूणकरणके दूसरे भाई मरोठ रहते हैं। सभी ११ भाई हैं। 8 मूलराजसे जगतसिंह तक तीन पीढ़ी तक जो रावल हुए वे मूलराजके भाई ही हुए थे। 9 सरदारसिंह और तेजसिंह जसोल रावलके दोहिते।

सूरतसिंघजी ५, दोहीतो सोढांरो ।

गजसिंघ ६, हरीसिंघ ७, इन्द्रसिंघ ८, दोहीता महेचांरा जसोलरा ।[1]

१२. जैतसीजी दोहीता सोढांरा ।

१३. देवीदास ।

१४ चाचगदे ।

१५. वैरसो १, रूपसी २, राजधर ३,..............४ ।

१६. लखमण, संमत १४६४ श्री लक्ष्मीनाथरो देहरो करायो ।[2] सोम २, केलण ३ ।

१७. केहर १, कळिकरण° २, विजो ३, तणुराव ४ रा भटनेर ।

.... १, राजपाळ २, कीरतसिंघ ३ रा भटनेर तुरक हुआ ।[3]

१८. देवराज १, हमीर २, सत्तो ३,..................४ ।

१९. मूळराज १, रतनसी २, रांणो ३, तैरो बेटो घड़सी १, कान्हड़ २ ।

२०. वडो जैतसी १, करण २, जसहड़रा बेटा । दूदो रावळ वरस १० ।

२१. रावळ तेजरावजी १, तिलोकसी २, भीमदे ३, आसकरण ४, भोजनूं चूक कियो ।[4]

२२. रावळ चाचगदे १, जैचंद २, आसराव ३, पाल्हण* ४, सागण° ५, बागण° ६, गांम कोहर ।

२३. कालण १, सालवाहण २, राव वीजळ ३, वांदर ४ । समत ११३४ राज लायो हांसू ३ सु रंतरा... स लूंणो १, उछरंग २, मोकल ३, सुथार हुओ । संमत १२४६ कांम आयो, बलोचांसूं वेढ हुई ।[5]

---

1 गजसिंह, हरीसिंह और इन्द्रसिंह—ये जसोल महेवांके दोहिते । 2 लखमणने वि० सं० १४६४में (जैसलमेरके किलेमें) श्री लक्ष्मीनाथजीका मंदिर बनवाया । 3 ....,राजपाल और कीरतसिंघके लड़के भटनेरमें तुर्क हो गये । 4 भोजको धोखेसे मारा । 5 मोकल सुथार हो गया । संवत् १२४६में बलोचोंसे लड़ाई हुई जिसमें काम आया ।

°बळकरण । *पाहुण । °सांगण । °बांगण ।

२४. जेसळ १, विजैराव लंजो २, विजैराव लांजै लुद्रवै राज कियो वरस २५ ।[1]

विजैरावरा बेटा—

भोज १

राजसीरो बेटो [रा]हुड़ । तैरी साख हुई ।[2]

विजैरावरी बेटी—

लांग १, लाछ २, तिकै सगतियां हुई ।[3]

२५. रावळ दुसाझ १, सिंघराव २, मूळपसाव ३, उणंग ४, बापै रावरा पाहु-भाटी कहीजै ।[4]

उणंग रावरा भाटी ही ज वाजै । गांम गुड़ै ।[5]

सिंघरावरा सिंघराव वाजै । गांम खूहड़ी । फूलियो उतन सदा-मदसूं ।[6]*

---

1 विजयराव लंजेने लोद्रवेमें २५ वर्ष राज किया । 2 राजसीका बेटा राहुड़ जिससे राहड़िया शाखा निकली । 3 विजयरावके दो पुत्रियां हुईं जो दोनों शक्ति रूप हुई । 4 बापा रावके वंशज पाहु-भाटी कहलाते हैं । 5 उणंगरावके वंशज गुड़ा गांवमें हैं और वे भाटी ही कहलाते हैं । 6 सिंहरावके वंशज सिंहराव कहलाते हैं और गांव खूहड़ीमें रहते हैं, परन्तु फूलिया गांव इनका सदामदसे वतन रहा है ।

*यह वंशावली अशुद्ध, आगे पीछे और अस्पष्ट है । पहलेकी वंशावलियोंसे मेल नहीं खाती ।

॥ श्री गणेशाय नम ॥

अथ सिरंगोतांरो पीढी

ठिकांणो भूकरी[ᶿ]

१. मदनसिंघजी
२. सवाईसिंघजी
३. कुसळसिंघजी
४. प्रथीराजजी
५. खडगसेनजी
६. करमसेनजी
७. मनोहरदासजी
८. भगवांनदासजी
९. सिरंगजी

वाय*रा सरदारांरी पीढियां

१: पेमसिंघजी
२. वहादुरसिंघजी
३. दौलतसिंघजी
४. प्रथीराजजी

जासांणार[ξ] सिरदारांरी पीढियां

१. लालसिंघजी
२. अनोपसिंघजी
३. सगरांमसिंघजी
४. भांनीसिंघजी
५. सायबसिंघजी
६. अमरसिंघजी
७. खडगसेनजी

अजीतपुरैरी पीढियां

१. दलसिंघजी
२. सिवदांनसिंघजी
३. दीपसिंघजी
४. कीरतसिंघजी
५. फतैसिंघजी
६. रांमसिंघजी
७. किसनसिंघजी
८. मनरुदासजी (मनहरदासजी, मनोहरदासजी)

सिधमुखरी पीढियां

१. रुघनाथसिंघजी
२. भवानीसिंघजी

पाठान्तर– [ᶿ]भूकर; भूकरको। *वाप। [ξ]जांणां। [⊕]अजीतपुर।

३. जालमसिंघजी
४. सुरतांणसिंघजी
५. उत्तमसिंघजी
६. प्रतापसिंघजी
७. किसनसिंघजी

गांम सिरंगसररी पीढियां

१. धीरतसिंघजी
२. हीमतसिंघजी
३. फतैसिंघजी

गांव भनाईरी पीढियां

१. देवीसिंघजी
२. जगमालसिंघजी
३. रूपसिंघजी
४. फतैसिंघजी

किसनसिंघोतांरी पीढियां ठिकांणो सांखू

१. नवलसिंघजी, डूंगरसीजी
२. जगरूपसिंघजी
३. सुजांणसिंघजी
४. दुरजणसिंघजी
५. जगतसिंघजी
६. किसनसिंघजी
७. महाराजा रायसिंघजी

गांव बंधारी पीढियां

१. फतैसिंघजी
२. सवाईसिंघजो
३. अजबसिंघजी
४. अमरसिंघजी
५. रुघनाथसिंघजी
६. जगजीवणदासजी
७. किसनसिंघजी

गांव करणीसररी पीढियां

१. सुखसिंघजी
२. जैतसिंघजी
३. इंद्रसिंघजी
४. रुघनाथसिंघजी
५. ....
६. ....

....

१. जालमसिंघजी
२. सूरतसिंघजी
३. इंद्रसिंघजी
४. लालसिंघजो
५. पहाड़सिंघजी
६. रुघनाथसिंघजो

गांव नींबांरी* पीढियां

१. भोमसिंघजी
२. पेमसिंघजी
३. बाघसिंघजी
४. रांमसिंघजी
५. भीमसिंघजी
६. जगतसिंघजी
७. किसनसिंघजी

रूपावतांरी पीढियां
गांव भादलो

१. सतीदांनजी।
२. भगवतसिंघजी।
३. पदमसिंघजी।
४. रांमचंदजी।
५. कल्यांणदासजी।
६. दुरगदासजी।
७. भीमराजजी।
८. दयाळदासजी।
९. भोजराजजी।
१०. सादुळसिंघजी।

गांव ढींगसरीरो पीढियां

१. सवाईसिंघजी।
२. वखतसिंघजी।
३. फतैसिंघजी।
४. करमसिंघजी। (करणसिंघजी)
५. दयाळसिंघजी (दयाळदासजी)

( )

१. ऊमसिंघजी। (ऊमरसिंघजी)
२. गजसिंघजी।
३. रुघनाथसिंघजी।
४. हररांमसिंघजी।
५. जैतसिंघजी।
६. दयाळदासजी।

गांव भेलूरी पीढियां

१. दळसिंघजी।
२. चैनसिंघजी।
३. भीमसिंघजी।
४. नरसिंघदासजी।
५. स्यांमदत्तजो (स्यांमदासजी)
६. सुंदरदासजी।
७. नारायणदासजी।

पाठान्तर– *नींबांवरी। नींबोवरी।

८. जैमलजी ।
९. भांण ।
१०. भोजराज ।
११. सादूळसिंघजी ।

गांव केलणसररी पीढियां

१. भगवंतदासजी ।
२. सांमंतसिंघजी ।
(सांवतसिंघजी)
३. उदैसिंघजी ।
४. जयसिंघजी ।
५. सुंदरदासजी ।

गांव कूदसूरी पीढियां

१. हठीसिंघ ।
२. सूरतसिंघ ।
३. केसरीसिंघ ।
४. उदैसिंघ ।
५. जयसिंघ ।

गांव रोहीणैरी* पीढियां

१. तेजमाल (जैतमाल)
२. अणंदसिंघ ।
३. भायसिंघ (भावसिंघ)

गांव रोणवैरी पीढियां

१. संग्रामसिंघ ।
२. गजसिंघ ।
३. देवीसिंघ ।
४. नरसिंघदास ।

गांव ऊडसररा सिरदारांरी पीढियां

१. सेरसिंघजी ।
२. देवीसिंघजी ।
३. भगवंतसिंघजी ।
४. भोजराजजी ।
५. दुरजणसालजी ।
६. बळभद्रदासजी ।

गांव कांणांणैरा सिरदारांरी[1] पीढियां

१. भारतसिंघजी ।
२. सवाईसिंघजी ।
३. रुघनाथसिंघजी ।
४. भोजराजजी ।
५. दुरजणसालजी ।
६. बळभद्रदासजी ।

पाठान्तर—*रोहीणी ।

[1] वीर दुर्गादास राठौड़के करणोतों के वंशका कणाणा गांव मारवाड़में बालोतराके पास एक अन्य ठिकाना है। राठोड़ोंकी करणोत [illegible] राव [illegible]के पुत्र करणसे चली।

गांव करेझड़ोरा* सिरदारांरी पीढियां

१. सुरतांणसिंघजी ।
२. आईदांनजी ।
३. हठीसिंघजी ।
४. केसरीसिंघजी
५. हररांमदासजी ।
६. सुंदरदासजी ।
७. भोपतसिंघजी ।
८. नारायणदासजो ।
९. वैरसीजी ।

गांव कल्यांणसररी पीढियां

१. जसराजजी ।
२. गजसिंघजी ।
३. हठीसिंघजी ।

नारणोतांरी पीढियां

गांव तिहांणदेसर

१. सूरजमल ।
२. मोबतसिंघ ।
३. दौलतसिंघ ।
४. आईदांन ।
५. रांमसिंघ ।
६. उदैसिंघ ।
७. सांवळदास ।
८. जैमलदास ।
९. नारायणदास ।
१०. वरसिंघ ।
११. लूणकरण ।

गांव कतररा सिरदारांरी पीढियां

१. छत्रसिंघ (छतरसिंघ)
२. लाडखांन (लाडखां)
३. गोरखदांन
४. रांमसिंघ ।

गांव गैड़ापरै सिरदारांरी पीढियां

१. बहादुरसिंघ ।
२. जोरावरसिंघ ।
३. गुमानसिंघ ।
४. गोरखदांन ।
५. रांमसिंघ ।

गांव मेदसररै सिरदारांरी पीढियां

१. बहादुरसिंघजी ।
२. उदैसिंघजी ।

पाठांतर—*केरझड़ो, केरझड़ ।

३. जोरावरसिंघजी ।
४. रुघनाथसिंघजी ।
५. भागचंदजी ।
६. वीरमदेजी ।
७. बळभद्रजी ।
८. नारायणदासजी ।
९. वैरसीजी ।

रतनदासोतांरी पीढियां
ठिकांणो महाजन

१. ठाकुर अमरसिंघजी ।
२. ,, वैरीसालजी ।
३. ,, सेरसिंघजी ।
४. ,, सिवदांनसिंघजी ।
५. ,, भीमसिंघजी ।
६. ,, अभैरांम ।
७. ,, प्रतापसिंघ ।
८. ,, उदैभांण ।
९. ,, जसवंतसिंघ ।
१०. ,, अर्जुनसिंघजी ।
११. ,, रतनसिंघ ।
१२. राव लूणकरणजी ।

गांव नाथवांणैरी पीढियां

१. माधोसिंघ ।
२. वखतसिंघ ।
३. भायसिंघ (भावसिंघ)
४. अभैरांम ।

गांव कुंभांणैरी पीढियां

१. किसनसिंघ ।
२. चैनसिंघ ।
३. जोरावरसिंघ ।
४. केसरीसिंघ ।
५. अभैरांम ।

गांव कालवासरी पीढियां

१. भांनीसिंघ (भवांनीसिंघ)
२. सायबसिंघ (साहेबसिंघ)
३. खड़गसेन ।
४. लक्ष्मीदास (लखमदास, लखमीदास)
५. उदैभांण

(गांव)

१. नारसिंघ । (नाहरसिंघ)
२. सरूपसिंघ ।

मैं सिवो पातसाहजीरी चाकरी करै। पातसाहजी सिवै ऊपर घणी महरवांनगी करै।

एक दिन पातसाहजी सिवैनूं फुरमायो–'तूं मांग। तोनूं मांगै सो ठोड़ द्यां।'[1] ताहरां सिवै अरज कीवी–'पातसाह सलांमत! महरवांन छो तो हूं म्हारो उतन पाऊं।'[2] तिण ऊपर पातसाह सिवैनूं उतनरी तसलीम कराई नैं पातसाह कह्यो–'थारो उतन कासूं छै?'[3] ताहरां पातसाहजीसूं सिवै अरज कीवी–'आमंद देसमें आंतरीरो परगनो छै सु माहरो उतन छै।' तिण ऊपर सिवानूं उतनरो पटो कराय दियो। घोड़ो सिरपाव दियो। घणी दिलासा देनै देसनूं विदा कियो।[4]

साहजादी पण इणनूं विदा हुतैनूं घोड़ो सिरपाव देय, रुपिया हजार तीस-चाळीसरो माल देनै विदा कियो। फुरमायो–'हूं थारी बहन छूं। तूं म्हारो भाई छै। तूं खातर जमै राखै। हूं तोनूं म्होटो करीस।' सिवानूं रावरो खिताब देरायो।[5]

ताहरां सिवै उठासूं देसनैं चढ खड़ियो। वीच में आवतै दस मांणस रूड़ा चाकर राखिया। पटा लिख-लिख दिया। असवार ४००-सूं घरे आयो।[6]

पछै सारा परगना मांहै जायनै वडो अमल कियो। धरती मांहै राखण जोगो हुतो सु राखियो। काढण जोगो हुतो सु काढियो।[7] धरतीरो वडो सलूक कियो।[8] आपरो जमीयत खरी कीधी।[9] सिसो-

---

1 तू मांगे सो ही जगह तेरेको दे दें। 2 बादशाह सलामत! आप यदि महरबान हैं तो मुझे मेरा वतन (देश) मिले। 3 इस पर बादशाहने शिवा के वतन (देश) की तसलीमकी और बादशाहने कहा कि तुमारा वतन कौनसा है? 4 घोड़ा सिरोपाव दिया और खूब सान्त्वना देकर देशको विदा किया। 5 तू खातिरजमा रखना, मैं तुझे बड़ा बनाऊंगी और शिवाको रावका खिताब दिलवाया। 6 तब शिवा वहांसे देशको रवाना हुआ। बीचमें आते हुए दस अच्छे आदमियोंको चाकर रखा। गांवोंके पट्टे लिख-लिख कर दिए। इस प्रकार ४०० सवारोंको साथ लेकर अपने घर आया। 7 फिर सारे परगनेमें जाकर बड़ा अमल जमाया। देशमें जो रखने योग्य था उसे रखा और निकालने योग्य था उसे निकाल दिया। 8 देशका बड़ा अच्छा प्रबन्ध किया। 9 अपने समुदाय को T किया।

दियै सिवै छाजुग्रोत बहोत साहिबी पाई। सिवैथी चंद्रावतांरी साख ठकुराई हुई।[1] सिवै गांव १४००सूँ ग्रांतरीरो परगनो पायो। सिवो राव कहाणो।

१. राव सिवो।
२. राव रायमल।
३. राव ग्रचळो।

इतरी पीढी तो ग्रांतरी राज हुतो।[2] पछै ग्रचळैरो बेटो दुरगो टीकै बैठो। तिण राव दुरगै कसबो नवो वसायो नै श्री रांमचंद्रजीरैं नांमसूँ रांमपुरो ठाकुरांरै हेत नांम दियो।[3] राव वडो देसोत[4] हुग्रो। राव दुरगो वडो दातार हुग्रो। चंद्रावतांरै घर मांहै वडो कारणीक ठाकुर हुग्रो।[5] हिवै चंद्रावतांरै पाटवीरो राजथांन रामपुरै छै।[6] रामपुरो वडो ठोड़। सारी धरती दुफसळी छै। वडी जरायत धरती।[7]

---

1 शिवासे चन्द्रावत शाखाकी ठकुराई हुई। 2 इतनी (शिवा, रायमल और अचला—ये तीन) पीढी तक तो आंतरीमें राज्य रहा। 3 राव दुर्गाने नया कस्बा बसाया और श्रीरामचन्द्रजीके नाम पर श्रीठाकुरजी श्रीरामचन्द्रजीके हेतु (अर्पण करके) उसका नाम रामपुरा दिया। 4 देशपति। 5 चन्द्रावतोंके घरमें राव दुर्गा बड़ा प्रतिष्ठित (प्रामाणिक) ठाकुर हुआ। 6 अब चन्द्रावतोंके पाटवी अधिपतियोंकी राजधानी रामपुरा है। 7 खेतीके लिए बहुत बढिया धरती। (जिराअत=१ खेती। २ खेतीकी भूमि। ३ कृषिकी बहुत बढिया भूमि। ४ पुष्कल वर्षा द्वारा सिंचित होने वाली कृषि योग्य भूमि। जरायत का विपरीत बागायत है। बागकी सींचाई कुंएसे होती है।)

पीढियांरी हकीकत

१. पाट बैठा त्यांरा[1] नांम

१. रांणो भीमसी–

भीमसी दस सहँस मेवाड़रो धणी ।[2] तिणरो बेटो चाँदरो । तिणरै पेटरा चंद्रावत कहीजै ।[3] उतन रामपुरो ।[4] रांणो भीमसी मेवाड़रो धणी । रांणाजीरी पीढियांमें रांणो भीमसी पीढी ११८ मांहै छै ।[5]

२ चांदरो सिसोदियो

चांदरो रांणा भीमसीहरो बेटो । चांदरारा पोतरा ठाकुर गढ-पति हुआ ।[6] तिणरा चंद्रावत कहीजै ।[7]

३. सिसोदियो साजन चांदरारो बेटो

चांदरा पछै पाट बैठो । साजनरै बेटा २ हुआ । जांझण टीका-यत ।[8] छाजू छोटो बेटो ।

४. सिसोदियो छाजू साजनरो बेटो

छाजू भोमियो थको धरती मांहै रहतो हुतो पठाररै गांवां ।[9]

५ राव सिवो

छाजूरो बेटो ठाकुर हुओ । मांडवरै पातसाह हुसंग गोरीरो चाकर हुओ । आंतरीरो परगनो पायो । गांम १४०० पाया । रावाईरो किताब पायो ।[10] राव सिवैसूं राव कहांणा ।[11] कुंवर पृथ्वीराज रांणा रायमलरा बेटासूं वडी वेढ कीधी ।[12]

---

1 उनके । 2 भीमसी दस सहस्र मेवाड़(के गांवों)का स्वामी । 3 जिसके वंशज चंद्रावत कहे जाते हैं । 4 वतन (निवास) रामपुरा । 5 राणाजीकी पीढियोंमें राणा भीमसी ११८वीं पीढीमें है । (वात चन्द्रावतांरी पृ० २३९में ११८ पीढीके बाद राणा भवणसी [भीमसी]का होना बताया है ।) 6 चांदराके पौत्र-ठाकुर गढपति हुए । 7 जिसके वंशज चन्द्रावत कहे जाते हैं । 8 जांझण टीकायत हुआ । 9 छाजू देशके पठारके गांवोंमें भोमियाकी स्थितिमें रहता था । 10 रावाई (राव)का खिताब पाया । 11 राव शिवासे राव कहलाने लगे । 12 कुंवर पृथ्वीराजने राणा रायमलके बेटेसे बड़ी लड़ाई लड़ी ।

६. राव रायमल

सिवारै पाट बैठो। मांडवरी पातसाही निबळी पड़ी नै रांणैरी वडी साहिबी।[1] तरै रांणै कूंभै रायमलनूं दबायो। चाकर कियो।[2] राव रायमल जाय रांणैसूं मिळियो।

७. राव अचलो रायमलोत

पछै अचळो पाट बैठो। अचळै रांणै सांगैरी चाकरी कीधी। रांणारा थको हुओ।[3] रांणो सांगो वडो प्रतापीक हुओ। मांडव दिलोरी धरती दबायनै लीधी।[4]

८. राव दुरगो

अचळारै पाट दुरगो बैठो। वडो देसोत[5] हुओ। वडो ठाकुर हुओ। राव दुरगो जोरावर थको रहै। रांणासूं मिळै नहीं। रांणा नै राव दुरगै आपसमें वांणक को नहीं।[6] नै रांणैरी वडी साहिबी। ताहरां दुरगो दिलोरा पातसाह अकबरसूं जाय मिळियो। चाकर हुओ। राव दुरगो पातसाह अकबररी वार मांहै कारणीक ठाकुर हुओ।[7] रांमपुरा ऊपर च्यार ठोड़ पातसाह बीजी दीधी।[8] राव दुरगै आंतरीरो कसबो छाड नै नवो कसबो वसायो, रांमपुरो नांव दियो।[9]

९. राव चंदो

राव दुरगैरै पाट बैठो।

१०. नगजी

नगजी राव चंदैरो टीकायत बेटो थो, सु कुंवरपदै राव चंदै जीवतां हीज मुंवो।[10]

---

1 मांडवकी बादशाही निर्बल हुई उस समय राणाकी बड़ी साहिबी हुई। 2 तब राणा कुंभेने रायमलको दबा कर अपना चाकर बनाया। 3 अचलाने राणा सांगाकी चाकरी की। राणाके आधीन हुआ। 4 मांडव और दिल्लीकी धरती दबा कर ले ली। 5 बड़ा देशपति हुआ। 6 राणा और राव दुर्गाके परस्पर मेल-जोल नहीं। 7 राव दुर्गा बादशाह अकबरके समयमें बड़ा प्रतिष्ठित (प्रामाणिक) ठाकुर हुआ। 8 रामपुराके अतिरिक्त चार ठौर (परगने) और बादशाहने दीं। 9 राव दुर्गाने आंतरीका कस्बा छोड़ कर नया कस्बा बसाया, उसका नाम रामपुरा दिया। 10 नगजी राव चंदेका टीकायत बेटा था सो राव चंदाके जीतेजी कुंवरपदे ही मर गया।

११. राव दूदो

तिण नगजीरै बेटो दूदो हुतो, तिणनूं टीकायत कियो। टीकै बैठो। राव दूदो वडो देसोत हुग्रो। पातसाह साहजहां दौलताबाद ऊपर मोहबतखांननूं मेलियो, ताहरां दौलताबाद लेतां राव दूदो कांम ग्रायो।[1] राव दूदैरो काको गिरधर चांदावत पण दौलताबाद दूदा भेळो कांम ग्रायो।[2]

१२. राव हठीसिंघ

पछै दूदैरे पाट राव हठीसिंघ बैठो। सु राव हठीसिंघरै छोरू नहीं हुग्रो। मोटियार थको मुंवो।[3]

१३. रूपसिंघ रुखमांगदोत

राव हठीसिंघरै पाट रूपसिंघ रुखमांगदोत। रुखमांगद चांदावत। सु रूपसिंघ पाट बैठो।

१४. राव ग्रमरसिंघ हरिसिंघोत

राव रूपसिंघरै पाट राव ग्रमरसिंघ हरिसिंघोत। हरिसिंघ चांदावत। सु ग्रमरसिंघ पाट बैठो। राव रूपसिंघरै छोरू को नहीं हुग्रो।[4] पछै बेटो जायो।[5] पातसाह साहजहां राव ग्रमरसिंघनूं टीको दियो।[6]

---

1 बादशाह शाहजहांने महोबतखानको दौलताबादके ऊपर भेजा, तब दौलताबाद पर अधिकार करते समय दूदा काम ग्राया। 2 राव दूदेका चाचा गिरधर चांदावत भी दौलताबादमें दूदाके साथ काम ग्राया। 3 राव हठीसिंहके कोई पुत्र नहीं हुग्रा। युवावस्थामें ही मर गया। 4 राव रूपसिंहके कोई पुत्र नहीं हुग्रा। 5 बादमें पुत्र उत्पन्न हुग्रा। 6 बादशाह शाहजहांने राव ग्रमरसिंहको टीका दिया।

अथ वात सिखरो बहलवै रहै तेरी

जेसळमेर सोढांरै विचमें कोटेचा रजपूत रहै ।[1] कोटेचांरै वड-कुंवार दीकरी सु पड़िहारैरो मोहिल परणीजणनूं आयो ।[2] भली-भांतरो व्याव हुवो ।

व्याव कर तठासूं चालिया ।[3] बीच मारगमें आवतां भगत हुई, तेथ सोळै बाकरा किया था ।[4] सु बाकरांरा माथा, खुरा चरू मांहै राखिया हुता ।[5] पछै उठासूं कूच हुवो । आगै मारगमें तळाव आयो । ताहरां वडेरा[6] ठाकुर हुता[7] सु बोलिया–'जु सिनांन करो, सेवा-पूजा कर अमल करो । सेजवाळो एकै आंतरै छोड़ावो ।'[8] ताहरां कोटेची छोकरीसूं कह्यो–'दातण लाव ।' ताहरां छोकरी दातण लाई । दातण कर कांगसी वाही ।[9] सिनांन कियो । श्री ठाकुरांरा नांम लिया ।[10] पछै सिरांवण मांगियो ।[11] ताहरां छोकरी कह्यो–'बाईजी ! एथ सिरांवण बीजो तो क्युंही नहीं । बाकरांरा पूंचणा तो चरू मांहै छै ।'[12] ताहरां कह्यो–'चरू हेठो उतार ।'[13] पछै छोकरी पुरसती गई । ठकुरांणी जीमती गई ।[14] वे पूंचणा सैह ही आचमन किया ।[15]

पछै ठाकुरां दातण सिनांन कर नांम ले[16] सीस खुरा मंगाया । आयनै छोकरीनूं कह्यो–'प्रांचणांरो चरू दै ।' ताहरां छोकरी कह्यो–'चरूसौं कासूं करसो ?'[17] कह्यो–'चरू मांहै प्रांचणा छै ।' ताहरां छोकरी कह्यो–'प्रांचणा सिगळांहीरो सिरांवण कियो ।'[18] ताहरां

---

1 जैसलमेर (भाटियों) और (उमरकोट) सोढोंके बीचमें कोटेचा राजपूत रहते हैं। 2 कोटेचोंके एक बड़ कुमारी पुत्री जिसको पड़िहारेका मोहिल ब्याहनेको आया। 3 विवाह कर वहांसे चले। 4 लौटते हुए मध्य मार्गमें खानेकी तैयारी हुई जहां सोलह बकरे मारे गये थे। 5 सो बकरोंके सिर और खुर चरुआमें डाल रखे थे। 6 बड़े-बुड्ढे। 7 थे। 8 स्नान करलो और सेवा-पूजा कर के अफीम लेलो। पालकीको एक ओर थोड़ी दूर छुड़वा दो। 9 दांतुन कर कंघी की। 10 श्री भगवानका नाम-स्मरण किया। 11 फिर नाश्ता मांगा। 12 बाईजी ! यहां कलेवाके लिए और तो कुछ नहीं है, बकरोंके सिर-खुर तो चरू में रखे हैं। 13 चरूको नीचे उतार दे। 14 फिर दासी परोसती गई और ठकुरानी खाती गई। 15 उन सभी पूंचनोंका आचमन कर गई। 16 भगवानके नामका सुमिरण कर। 17 चरूका क्या करेंगे ? 18 सभी प्रांचणोंका नाश्ता कर लिया।

सारा ही ठाकुर अबोला रह्या ।[1] मनमें सोच हुवो । पछै हालिया । पड़िहारै आय पहुता ।[2]

पड़िहारै जायनै ठाकुर प्रधाननूं कह्यो । ठाकुर प्रधान आलोच करनै कह्यो–'जु ईयै ठाकुरांणीरा मोजड़ा म्हांसूं ऊपड़ै नहीं ।'[3] तिवारै रात कागळ लिख गांव वंधायो नै कह्यो–'ईयै रजपूतांणीरा गरज म्हे नहीं ।'[4] प्रभात हुवै रजपूतांणी कागळ वांचियो । कोटेची रजपूतांसूं कहायो–'अठै इसी वात छै ।'[5] पछै कोटेचां सिरदारां आदमी मेल्ह आपरी दीकरी बुलाय लोधी ।[6]

पछै आ वात रावळ मालैजीरै हजूर हुई–'जु खावरै वई एक रजपूत रजपूतांणी छोडी ।'[7] महेवैरै दरबार मांहै इसी वात हुई ।[8] ताहरां रावळ मालोजी कहै छै–'ओ रजपूत चूको ।[9] उवै रजपूतांणीरै पेटरा इसा बळवंत, औनाड़ जोधा हुवंत, जु कोटांरा किमाड़ भांजै । भूतां दईतांसूं लड़ै । जीवता सीह पाकड़ै ।'[10]

ताहरां रांणो ऊगमड़ो ईंदो बहेलवैरो धणी, रावळ मलीनाथरो चाकर ! सु वै ठाकुर दरबार मांहै वात सुणी । अर पछै ऊगमसी आदमी कोटेचां आगै मेल्हियो । वीनती कराई–'थांहरी बेटी मोनूं दो ।'[11] ताहरां कोटेचां आपरी बेटी ऊगमसो ईंदैनूं दीधी । ऊगमसी कोटेचीनूं घरे घाली ।[12]* घणो हरख हुवो ।

---

1 तब सभी ठाकुर चुप रह गये (चकित हो गये ।) 2 फिकर हुआ । फिर रवाना हो गये और पड़िहाराको आ पहुंचे । 3 ठाकुर और प्रधानने परामर्श करके कहा कि इस ठकुरानीकी जूतियें हमसे नहीं उठे (इतना खाने वालीको हम बरदाश्त नहीं कर सकते ।) 4 उस दिन रातको पत्र लिख कर आदमीके साथ गांवको वँधवाया और कहा कि इस राजपूतानीकी हमें आवश्यकता नहीं । 5 प्रभात होने पर (उस आदमीसे लेकर) राजपूतानीने भी उस पत्रको पढ़ा, तब कोटेचीने भी राजपूतों (पीहर वालों)को कहलवाया कि यहां ऐसी बात हो गई है । 6 फिर कोटेचा सरदारोंने आदमी भेज कर अपनी पुत्रीको बुला लिया । 7 फिर यह बात रावल मल्लीनाथजीके पास पहुंची (दरबारमें फैली) कि खानेकी बातके लिए एक राजपूतने, राजपूतानी (अपनी पत्नी)को छोड़ दिया है । 8 महेवेके दरबारमें ऐसी चर्चा चली । 9 इस राजपूतने भूल की । 10 उस राजपूतानीकी कोखसे ऐसे बलवान, अनम्र जोधा उत्पन्न होते जो कोटोंके किवाड़ तोड़े, भूतों और दैत्योंसे लड़े और जीवित सिंहोंको पकड़े । 11 और पीछे ऊगमसीने कोटेचोंके पास आदमी भेजा और विनयपूर्वक कहलवाया कि तुमारी बेटीको मुझे दे दो । 12 ऊगमसीने कोटेचीको अपने घरमें डाली ।

पाठान्तर—*१ घरे वाळी । २ घरे वासी ।

कोटीचीरै सात बेटा हुवा । तिकांरा नाम–

१. सिखरो ।
२. रोय धवळ ।
३. ऊदो ।
४. राजो ।
५. लाखो ।
६. ....।
७. ....।

एक दिन राय धवळ नै ऊदो नीसरिया हुता, रांमत करता ।[1] जंगळ मांहै रमता-रमता गया । ताहरां एक वघेरो दीठो ।[2] ताहरां लारै छोकरा हुंता, तियां कह्यो–'ओ किसो जिनावर छै ?'[3] तद उवां देखता सीह ऊठण पायो नहीं । ईंयां जाय कांनांहूं पकड़ियो ।[4] पछै खांचियां-खांचियां गवाड़[5] मांहै ले आया । खूंटो रो१नै बांधियो । छोडियो ताहरां लोकै दीठो[6]–'जु ओ तो नाहर छै ।'[7] ताहरां मांणसै कहियो[8]–जु रावळजीरो वचन साचो हुवो, जु ईयै रजपूतांणीरै पेटरा इसा हुसी, सु साच हुई ।[9]

हिवै[10] बहेलवै[11] नै[12] महेवै[13] बीच झोटेळाव[14] तळाव छै । तिण मांहै[15] एक झोटिंग[16] रहै । दिन अस्त हुआं पछै जिको[17] तळाव ऊपर कर नीसरै, तिणनूं[18] मारै । यूं करतां एक दिन जगमालजीनूं[19] रावळ मलीनाथजीरो बोल[20] याद आयो–'जु ईयै रजपूतांणीरै पेटरो हुसी सु दैतां-भूतांसूं लड़सी ।'[21] सु सिखरैरी परीक्षा कीजै ।

चांदणी चवदसरो दिन छै ।[22] सनि आदित्यवाररी संध छै ।[23] ऊपर झड़ मँडियो छै ।[24] सिणफिण मेह वरसै छै ।[25] जगमालजी

---

1 एक दिन रायधवल और ऊदा खेलते-खेलते बाहर निकल गये । 2 तब एक वघेरा देखा । 3 उनके पीछे जो छोकरे थे, उन्होंने कहा कि यह कौनसा जानवर है ? 4 इन्होंने जाकर उसे कानोंसे पकड़ लिया । 5 गवाड़=(१) बाड़ा (२) मोहल्ला, गली । 6–7 छोड़ा तब लोगोंने देखा कि यह तो नाहर है । 8 तब मनुष्योंने कहा । 9 इस राजपूतानीके पेटके ऐसे (बली) होंगे, सो सच हुई । 10 अब । 11 एक गांवका नाम । 12 और । 13 एक गांवका नाम । 14 एक तालावका नाम । 15 उसमें । 16 घने बालों वाला एक काला और दृढ भूत । 17 जो । 18 उसको । 19 जगमालजी-को । 20 वचन । 21 इस राजपूतानीकी कोखसे जो उत्पन्न होगा वह दैत्यों और भूतों-से लड़ेगा (लड़ने वाला होगा ।) 22 शुक्ल पक्षकी चौदसका दिन है । 23 शनि और रविवारकी संधि (मध्य) है । 24–25 ऊपर वर्षाकी झड़ी लगी हुई और थोड़ा-थोड़ा मेह बरस रहा है ।

झरोखै बैठा छै । ताहरां दोय बळाहियां[1] नूं हुकम कियो–'भारा २ लकड़ियांरा वहेलवैरै तळाव झोटेळाव ऊपर वड़ छै, तेथ जाय नांखो ।'[2] ताहरां बळाहियां ले जाय लकड़ियां नांखी ।

जगमालजी खुसी थका बैठा छै । रात घड़ी ४ गई छै । खवास, प्रधांन, उमराव मुंहडै आगै ऊभा छै ।[3] ताहरां सिखरैजीनूं जगमालजी कहियो–'आज राज घरे पधारो ।'[4]

एकै भांभी[5]नूं कहियो–'सिखरैजीनूं एक बाकरो आंण देजो ।'[6] सिखरैजीनूं कहियो–'सिखरोजी ! आज झोटेळाव ऊपर सूळा करै घरे जाईजो ।'[7]

ताहरां सिखरैजी बाकरैरो कांन चीरनै साथै बांध लियो नै जाय तळाव पुहुता ।[8] चढियै ही वड़री साखसौं डोर बांधी नै घोड़ैसूं नीचे उतरिया ।[9] पासै दोवड़[10] थी तिका नीचे विछाई । घोड़ैरै दुबकी दीधी ।[11] ऊपर ढाल मेल्ही ।[12] ढाल ऊपर आपरा हथियार मेल्हिया ।[13] चकमक झाड़ अगन कीवी ।[14] अंगीठो जगायो ।[15] सिनाननूं पोत काढी ।[16] आप तळाव मांहै पैठा ।[17]

ताहरां झोटिंग भैंसेरो रूप कर अर आयो । ओ[18] ठाकुर बोलियो-हीज नहीं । सिखरो पाछो आयनै तरवार ले बाकरो मारियो । बाकरो मारियां पछै झोटिंग एक विपरीत रूप भूत करनै आयो । अकास सीस, पग धरती, इसो भूत आवतो दीठो ।[19] चवदसरी चांदणी रात हुती ।[20]

---

1 बळाही = निम्न श्रेणीकी एक जाति का पुरुष। 2 झोटेलाव तालाबके ऊपर जहां बड़ वृक्ष है वहाँ जाकर लकड़ियोंके दो भारे (गट्ठड़) डाल दो। 3 खवास (चाकर) प्रधान और उमराव मुंहके सम्मुख खड़े हैं। 4 आज आप घर पर पधारें। 5 भांभी (भांबी, बांभी) = निम्न श्रेणीकी एक जाति का पुरुष। 6 सिखराजीको एक बकरा लाकर दे देना। 7 आज झोटेलाव तालाव पर शूले (कबाब) बना कर घर पर जाना। 8 पहुंचे। 9 घोड़े पर चढे-चढे ही बड़की शाखा (जटा)से डोरको बांध कर घोड़ेसे नीचे उतरे। 10 दोवड़ = दो परतों वाली चादर। 11 घोड़ोंको दुमची दे दी। 12 रखी। 13 रख दिये। 14–15 चकमकको झाड़ कर अग्नि बनाई और अंगीठी जगाई। 16–17 स्नान करनेके लिये धोती निकाली और तालावमें प्रवेश किया। 18 यह। 19 ऐसा भूत आता हुआ देखा। 20 उस दिन शुक्ल पक्ष चौदसकी चांदनी रात थी।

पछै असवार ४ वांसै जगमालजी सेसू मेल्हिया—'देखां सिखरो कासूं करै छै ? सु थे जोय आवो ।'[1] ताहरां सेसू ऊभा जोवै छै ।[2] ताहरां सिखरै भूतनूं कह्यो—'जु तैं इतरो सरीर वधारियो सु हूं डरूं नहीं ।[3] हूं आदमी इतरै सरीरनूं पोहचूं ।'[4] ताहरां भूत मांणस जेवड़ो हुवो ।[5] सिखरो बोलियो—'जु तूं ही आव । सूळा खाह ।[6] आंपां पछै लड़स्यां ।' ताहरां भूत आय गोढै[7] बैठो ।

सिखरै काढि छुरी अर बाकरारी खाल काढी ।[8] बाकरो टांकणै कियो ।[9] पींडी तां[10] मांस उतारियो । भीनी पोत ऊपर मांस सूड़-सूड़ अर राखियो ।[11] तरगस मांहै सूळो काढियो । बोटी लूंण लाय अर सूळो उण झोटिंगरै हाथ दियो ।[12] जितरै भींटोळिया भूत बीजा ही आंण बैठा ।[13] सिखरोजी बोलिया—'जु यांनूं[14] कहो जु लकड़ियां लावै ।' ताहरां भींटोळिया भूत लकड़ियां आंणण लागा ।[15] सिखरोजी सूळैरो बोटी आप ही खावै अर भूतनूं ही हेक-हेक[16] दै । इसी भांत बाकरो खाधो ।[17] वांसै बाकरारो सिरो रह्यो ।[18] ताहरां एक लकड़ीरो चाहोलो कर बाकरारै नाक मांहै देअर झोटिंगरै हाथ दियो ।[19] कह्यो—'जु तूं दुवि ।' ताहरां झोटिंग दुवण लागो ।[20] आप ऊठ अर वागो पहरियो । हथियार बाधा ।[21] ताहरां झोटिंगनूं कह्यो—'जु बाकरैरा दांत ढाक, मुंहड़ै तीव दै ।'[22] तीव लगाई । ताहरां दांत

---

1 पीछे चार जासूस सवारोंको जगमालजीने भेजा कि देखें, सिखरा क्या करता है सो तुम देख कर आओ। 2 शेपू (जासूस) खड़े-खड़े देख रहे हैं। 3-4 तूने इतना शरीर बढ़ा लिया है इससे मैं डरता नहीं; लेकिन मैं आदमी जितने (लंबे) शरीरको पहुंच सकता हूं। 5 तब भूत मनुष्यके जितने शरीर वाला हो गया। 6 शूले खा। 7 पास। 8 बकरेकी खाल निकाली। 9 बकरेको काटा। 10 से। 11 गीली धोती पर मांसको उतार-उतार कर रखा। 12 तरकशमेंसे शूल (तार) निकाल करके और उस पर बोटियोंके नमक लगा कर शूले झोटिंगके हाथ दिये। 13 इतनेमें दूसरे छोटे भूत भी वहां आकर बैठ गये। 14 इनको। 15 तब भींटोलिये भूत लकड़ियां लाने लगे। 16 एक-एक। 17 इस प्रकार बकरेको खाया। 18 पीछे बकरेका सिर रहा। 19-20 तब एक लकड़ीका चाहोला बना कर बकरेके नाकमें फँसा कर झोटिंगके हाथमें दिया और उसे कहा कि तू इसको इसमें खसोल दे। तब झोटिंग खसोलने लगा। 21 खुदने उठ कर वागा पहिना और हथियार बांधे। 22 बकरेके दांतोंको ढक कर मुंह पर तीब लगादे (सी दे)।

उघड़ै । ताहरां सिखरो तमकि अर घोड़ै असवार हुवो ।[1] ताहरां झोटिंग हाथी हुय आडो आय फिरियो । सबळा रोड़ा-झोड़ा हुआ[2] । ताहरां सिखरै झटको वाह्यो सु हाथीरी सूंड खिर पड़ी ।[3] बांठ-बांठ रूंख-रूंख चीस हुई ।[4] असवार २ तो, वांसै मेल्हिया हुंता त्यां मांहिला मर गया ।[5] असवार २ मुरछागत हुवा ।[6]

ताहरां रावळजी असवार ४ प्रभाति वळै मेल्हिया ।[7] आगै आइ देखै तो घोड़ा कायजै कियां फिरै छै अर असवार नहीं ।[8] जणा २ ससकता लाधा ।[9] उणांनूं आंणिया ।[10] रावळ मालैजी परमेश्वररो नाम लेअर हाथ फेरियो । दिने दसै-बारैह बोलिया ।[11] ताहरां बात सारी ही जिसी दीठी तिसी कही ।[12]

रावळजी सिखरैजीनूं पूछियो–'जु उण झोटिंगसूं धको हुवो ?[13] ताहरां सिखरै कह्यो–'मिळियो तो खरो पण धको काई हुवो नहीं ।'[14]

युं सिखरो बहेलवो गयो रहै ।[15]

इति सिखरैरी बात सम्पूर्ण ।

---

1 तब सिखरा लपक कर घोड़े पर सवार हो गया । 2 जबरदस्त लड़ाई हुई । 3 तब सिखराने तलवारका प्रहार किया सो हाथीकी सूंड कट कर गिर पड़ी । 4 (हाथीकी चिंघाड़ इतनी जोरसे हुई कि) जंगलका प्रत्येक बांठका (क्षुप) और वृक्ष चीस उठे (हिल गये ।) 5–6 पीछे जो सवार भेजे थे उनमेंसे दो तो मर गये और दो मूर्च्छित हो गये । 7 फिर भेजे । 8 आगे आकर देखते हैं तो घोड़े तो कायजा किये हुए फिर रहे हैं परन्तु सवारोंका पता नहीं । 9 दो जने सिसकते हुए मिले । 10 उनको घर ले आया । 11 रावल मल्लीनाथजीने परमेश्वरका नाम लेकर उनके ऊपर हाथ फेरा तब कहीं दस बारह दिनोंमें बोले । 12 तब सभी बात जैसी उन्होंने देखी वैसी कह सुनाई । 13 उस झोटिंगसे झपट हुई क्या ? 14 मिला तो सही, परन्तु ऐसी कोई झपट नहीं हुई । 15 इस प्रकार सिखरा बहलवे गया हुआ रह रहा है ।

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अथ वात ऊदै ऊगमणावतरी

ऊदो ऊगमणावत ईंदो[1] महेवै रावळ मलीनाथजीरी चाकरी करै। तद वाघ १ गोयांणारै भाखरां रहै सो देस मांहै विगाड़ करै।[2] ताहरां रावळजी रजपूतांनूं हुकम दियो–'चौकी द्यो।' ताहरां रजपूत चौकी दै, गोयांणारै डूंगर दोळी[3]।

ताहरां एक दिन ऊदैजीरी चौकीरी वारी आई। ताहरां ऊदैजीनूं कहाड़ियो।[4] ताहरां ऊदैजी कह्यो–'भलां राज!'[5] ताहरां ऊदो गयो। भाखर रोकियो। घेरनै वाघनूं पकड़ियो।[6] आंणनै रावळजीनूं सांपियो।[7] ताहरां रावळजी कह्यो–'सैबास! ऊदा सैबास!!' ताहरां वाघ रावळजी ऊदैनूं बगसियो। ताहरां ऊदै लियो। लेयनै गळटो कर बांधिनै छोडियो। कह्यो–जी, वाघ मांहरो छै। जिको ईयैनूं मारै तो तीयैसूं मांहरो वैर छै।[8] ताहरां वाघ फिरै, विगाड़ करै। कोई वाघ मारै नहीं। ताहरां वाघ फिरतां-फिरतां भाद्राजण जाय निकळियो।[9]

ताहरां भाद्राजण सींधळां वाघ मारियों। तठै वैर हुवो। ईंदां नै सींधळां माहोमांह वैर हुवो।[10] सींधळां ईंदां लड़ाई हुई। सींधळ २५ कांम आया। हिवै वैर पड़ियो।[11] भाद्राजण अर चौरासीरो मारग भागो। कोई मारग वहै नहीं। इसो वैर पड़ियो।[12]

---

1 ईंदा शाखाका ऊगमड़ेका बेटा ऊदा। 2 तब वाघ १ गोयणाके पहाड़में रहता है सो देशमें विगाड़ करता है। ('गोयणा' मालानीके मेहवे और राड़धरेका एक पहाड़ है जो भीतरसे खोखला बताया जाता है।) 3 तब राजपूत गोयामणाके पहाड़के चारों ओर चौकी देते हैं। 4 कहलवाया। 5 अच्छी बात है श्रीमान्। 6 पहाड़को घेरा लगा करके रोक दिया और बाघको पकड़ लिया। 7 ला करके रावलजीके सुपुर्द कर दिया। 8 लेकरके गलेमें कपड़ा लपेट और बांध करके छोड़ दिया और कहा कि यह बाघ मेरा है जो इसको मारेगा उससे मेरी दुश्मनी है। 9 तब बाघ फिरता-फिरता भाद्राजुन जा निकला। 10 तब भाद्राजुनमें सींधलोंने बाघको मार दिया। ईंदों और सींधलोंके आपस में शत्रुता हो गई। 11 अब शत्रुता और चेत गई। 12 भाद्राजुन और चौरासी (भाद्राजुनके ८४ गांवोंका समूह)का मार्ग बन्द हो गया। कोई मार्ग चलता नहीं। ऐसी शत्रुता बंध गई।

ईहड़ सोळंकी सींधळांरो चाकर। सु ईहड़रै ऊदोजी परणिया हुंता। सु कोई आवै नहीं। मारग न वहै। युं करतां वरस सात हुवा।[1]

एक दिनरो समाजोग छै।[2] बाळसीसर तळाव ऊपर सिखरै ऊगमणावत गोठ कीवी छै।[3] सारा ईंदा एकठा छै। अमल-पांणियां चाक हुवा छै।[4] बाकरा मारिया छै। सोहिता हुवै छै। तिसै समईयै एक रजपूत बोलियो-'ऊदाजी! कदै भाद्राजण ही जासो?'[5] ताहरां ऊदैजी कह्यो-'आज जासां। जावणरी तो मन न हुतो, पण थां कह्यो तो आज ही जावस्यां।'[6] तद ऊदैरै चढणनूं काछण घोड़ी हुती तीयैंनूं रातव अणायो।[7] जवांरो आटो अर गुळ घोड़ीनूं दियो। ताहरां सिखरैंजी उड़दावो देतां घोड़ीनूं दीठो। ताहरां कह्यो-'घोड़ीनूं उड़दावो क्युं?'[8] ताहरां कहियो-'जी, ऊदाजी भाद्राजण जावसी।' ताहरां सिखरैंजी कह्यो-'जेथ इवडो वैर पड़ियो, गाडां-गाडां मांटी मरै, तेथ क्युं जाईजै?'[9] ताहरां कह्यो-'जी, बोलिया तो दुगापचारी* आंण छै।[10]

आथवणरी विरिया, बीजै साथ तो घरांनूं खड़िया, ऊदैजी भाद्राजणनूं खड़िया।[11] आधी रात आगै, आधी रात पाछै, भाद्राजण जाय पुहुता।[12] ताहरां उघाड़ फळसो मांहि हालिया।[13] आगै सरगरै

---

1 सोलंकी ईहड़ सींधलोंका चाकर और इधर ईहड़के यहां ऊदोजी ब्याहे थे। सो कोई आता जाता नहीं। मार्ग पर किसीका चलना भी बंद हो गया। इस प्रकार सात वर्ष हो गये। 2 एक दिनका प्रसंग है। 3 बालसीसर तालावके ऊपर सिखरै ऊगमणावत (ऊदाका भाई)ने गोठ की है। 4 अफीम, शराब आदि लेकरके नशेमें चूर हो गये हैं। 5 ऊदाजी! कभी भाद्राजुन भी जाओगे? 6 आज जायेंगे। जानेकी तो मनमें नहीं थी, परन्तु तुमने कह दिया है तो आज ही जायेंगे। 7 ऊदाके चढ़नेके लिए कच्छी घोड़ी थी उसके लिए रातिब मंगवाई। 8 तब सिखरोजीने घोड़ीको अरदावा देते हुए देखा, तब कहा कि घोड़ीको अरदावा क्यों दिया जा रहा है? 9 जहां इतनी अधिक शत्रुता बनी हुई, गाड़े-गाड़े (अनेक गाड़ोंमें भरे जायें जितने, अर्थात् बहुत अधिक) मनुष्य मरते हैं, वहां क्यों जाना चाहिये? 10 बोले तो (मना किया तो) आपको दुगापचाकी(?) शपथ है। 11 संध्याके समय दूसरे सभी तो घरोंको चले परन्तु ऊदाजी भाद्राजुनको रवाना हुए। 12 मध्य रात्रिको भाद्राजुन जा पहुंचे। 13 फलसा खोल करके अंदर चले।

पाठान्तर-*दुगाय चा, दुर्गापंचा।

जायनै ईहड़दे जागविया । कह्यो–'जी ! ऊदोजी आया ।' ताहरां बारणो खोल मांहै लिया । ढोलियो बिछाय दियो । ऊदोजी जाय पोढिया ।[1]

घोड़ी हुती सु कायजै कीवो ऊभी हीज रही । कायजो उखेलियो नहीं । [वीसर गया ।[2] ताहरां ऊदोजीरो साळो जागियो । देखै तो घोड़ी छै । ओळखी तो घोड़ी ऊदोजीरी ।[3] ताहरां ऊठनै घोड़ी पकड़ी दीठो–'जायनै पायगा मांहै बांधूं ।' ताहरां घोड़ी लेअर हालियो ।[4] जिसड़ै घोड़ी तांणियां जाय छै, तिसड़ै ऊदोजी जागिया ।[5] दीठो–'घोड़ी चोर लियां जाय छै ।' जांणियो–'भाद्राजण मांहै चोर घणा छै ।' वांसांसूं ऊदैजी तरवार काढ अर वाही सु बिधड़ हुआ ।[6] तितरै ओळगांणी जागी । कह्यो–'जी ! कासूं कियो ? म्हारो भाई मारियो ?'[7] ताहरां ऊदैजी कह्यो–'जो हुई सो हुई ।' ताहरां सासू जागवी[8] । कह्यो–'जी, थे जायनै पोढो । हुवणहार हुई ।' आगै सींधळांसूँ वैर हुतो, हिवै साळो मारियो, हिवै वैर वधियो ।[9] ताहरां ऊदैजी तो पाछली रातरा चढ परताळिया सो घरे गया ।[10]

ताहरां मेळो सेपटो भाद्राजणरै कांठै रहै ।[11] सु मेळैरी नायण एक दिन ईहड़ सोळंकीरै घरे गई हुती । सु उठै ऊदैरी बैर सोळंकणी दीठी ।[12] नायण सिनांन करायो । ताहरां नायण जायनै मेळेनूं वात कही–'जु ईहड़री बेटी पदमणी छै । मेळाजी ! आप लायक छै । इसी नारी फूटरी कठै ही नहीं दीठी ।'[13] ताहरां मेळै भाद्राजणमें आयनै

---

1 सरगरेने आगे जा कर ईहड़देको जगाया और कहा कि ऊदाजी आये हैं । तब द्वार खोल करके ऊदाजीको अंदर लिया और पलंग बिछा दिया । ऊदोजी जाकर सो गये । 2 घोड़ी कायजा की हुई ही खड़ी रही । कायजा खोलना भूल गये । 3 पहिचान की तो घोड़ी ऊदोजीकी मालूम हुई । 4 तब घोड़ी लेकर चला । 5 ज्यों ही घोड़ी खेंचे हुए जा रहा है त्यों ही ऊदोजी जग गये । 6 पीछे जाकर ऊदाजीने तलवार निकाल कर प्रहार किया सो धड़के दो टुकड़े हो गए । 7 इतनेमें वियोगिनी जगी तो कहा कि यह क्या किया ? मेरे भाईको मार दिया ? 8 जग गई, (जगाई गई) । 9 आगे सींधलोंसे शत्रुता थी ही, अब सालेको मार दिया, अब तो बैर और बढ़ गया । 10 तब ऊदोजीने तो पिछली रातको (घोड़ी पर) चढ़ कर फटकारा सो घरको चले गये । 11 भाद्राजुनके पास मेला सेपटा रहता है । 12 सो वहां ऊदेकी स्त्री सोलंकिनीको उसने देखा । 13 ऐसी सुन्दर स्त्री कहीं नहीं देखी ।

सोळंकियांनूं कह्यो–'थांहरो वैर ऊदै कना लूं, थांहरी बहन मोनूं द्यो तो ।'[1] ताहरां आ वात सोळंकणी सुणी, ताहरां सोळंकणी कहाड़ियो–'मेळा ! म्हारो भरतार, जेठ इसड़ा नहीं सु तियांरी वैर तूं ले जावै अर उवांनूं पाल अर आवै ।'[2]

ताहरां सोळंकणी सासरै बांभण मेल्है कहाड़ियो–'ओ मेळो सेपटो ईयै विध आवै छै । थे जेठजी ! ईयैरा भली विध हीडा करजो ।'[3] ताहरां बांभण जाय वालसीसर अै समंचार कह्या, ताहरां उवां ही रै साजत हुवै छै ।[4]

एक दिनरो समाजोग छै । सेपटो मेळो खानाजाद काछी चढिनै खड़िया ।[5] एकल असवार चढ खड़िया । वालसीसररै तळाव जायनै उतरियो । आगै एवाळिया आयनै ऊभा छै ।[6] तिकां एवाळियां हिमायचा भांगरा(?) नांखिया छै । तीर-धणियां मूंकिया छै ।[7] ताहरां मेळै पूछियो–'कठारा एवड़ ?[8] 'अै म्होटा बाकरा ?[9] अठै कोई रजपूत वसै छै किना नहीं ?'[10] एवाळियां कह्यो–'ऊगमड़ैरै बारह विरद ।[11] काय खेड़ां बाकरा मरै छै, काय प्राहुणो आवै ताहरां मरै छै । बीजूं नहीं मरै छै । विकै नहीं छै ।'[12] ताहरां मेळै कह्यो–'ठाकुर ! वाकरो एक मोनूं द्यो तो म्हे ही आज थांसूं वातां करां, बैसां ।'[13] ताहरां एवाळां[14] कह्यो–'लीजै राज !'

---

1 तुमारी बहिन मुझको दो तो तुमारा बैर मैं ऊदेसे लूं । 2 तब सोलंकिनीने कहलवाया कि मेला ! मेरा पति और जेठ ऐसे नहीं हैं सो तू उनकी स्त्रीको ले जाये और उनके तेरे पीछे चढने पर तू उनको रोककर (मारकर) सकुशल चला जाये । 3 तब सोलंकिनीने ब्राह्मणको ससुराल भेज कर कहलवाया कि मेला सेपटा इस इरादेसे आ रहा है सो जेठजी ! आप इसकी खातिर भली प्रकार करें । 4 ब्राह्मणने वालसीसर जाकर जब यह समाचार कहे तब उधर भी तैयारी होने लग रही है । 5 मेला सेपटा खानाजाद कच्छी घोड़ी पर चढ़ कर चला । 6 आगे गड़रिये भी आकर खड़े हैं । 7 तीर कमान (जमीन पर) रखे हैं । 8 रेवड़ कहां के ? 9 ये इतने बड़े बकरे ? 10 यहां कोई राजपूत भी बसता है किम्वा नहीं ? 11 ऊगमड़ेको बारह विरुद हैं । 12 या तो वाहर पर (चढ़ाई करने पर) बकरे मारे जाते हैं या कोई पाहुना आये तो मारे जाते हैं, नहीं तो नहीं मारे जाते हैं और बेचे भी नहीं जाते हैं । 13 एक बकरा मुझको भी दो तो हम भी तुमसे यहां बैठ कर आज बातें करें । (तुमारे साथ बैठ कर उसे बनाएँ और खाएँ ।) 14 गड़रियेने ।

मेळै कह्यो–'यूं ही नहीं ल्यूं । जो थे मोल ल्यो तो ल्यूं ।'[1] ताहरां एवाळां कह्यो–'दीजै राज !' ताहरां मेळै सेपटै नव फदिया पड़दी मांहैसूं काढिनै दिया ।[2] ताहरां उवां कह्यो–'बाकरो लीजै राज !' ताहरां वडो जूह बाकरो जोयनै लियो ।[3] लेयनै मारियो । ताहरां हाड काढि-काढि जुदा किया ।[4] सुणियो हुतो सिखरैरैं कूतरा दोय छै सु चोर ढूकण नहीं पावतो ।[5] तै त्रासतै हाडांसूं लेयनै कूरबांण भरियो ।[6] ऊपर कसो बाधो ।[7]

पछै बाजरी घातनै बाजरियो कियो ।[8] ताहरां खीलोहरियां कह्यो–'राज ! जीमण तयार छै । आप हालो । जीमण विराजो ।' ताहरां आपही जीमिया, खीलहरी पण जीमिया ।[9]

पछै ऊठ हथियार बांध, घोड़ैरा तंग खांच, खीलहरियांसूं विदा कीवी ।[10] मेळै कह्यो–'मांहरै तो वीकूंपुर जावणो छै ।[11] ताहरां खीलहरियां कह्यो–'राज ! बोहुड़ता आवो तो ईयै तळाव आवजो ।[12]

पछै मेळै उठासूं खड़िया सु गांम आय लागो ।[13] ताहरां कुत्ता सांम्हां दोड़िया । ताहरां कुत्तांनूं हाड नांखिया ।[14] कुत्ता तो हाडै विलूंबिया ।[15] आप आघो[16] गांम मांहै चालियो । भाथै अफीमरो पोतो हुतो सु खिर पड़ियो ।[17] पछै कूतरांनूं मारनै गांम मांहै

---

1 यदि तुम मूल्य लो तो लूं, योंही (मुफ्तमें) नहीं लूं । 2 तब मेले सेपटेने पर्दी-मेंसे नौ फदिये निकाल करके दिये । (फदिया = रुपयेके आठवें भागका (दुअन्नी बराबर) एक छोटा सिक्का ।) 3 तब एक बहुत पुष्ट बकरा देख कर लिया । 4 तब हड्डियोंको निकाल निकाल कर अलग किया । 5 सुन रखा था कि सिखरेके दो कुत्ते ऐसे हैं जिनके कारण कोई चोर लग नहीं सकता । 6 इसलिए हड्डियोंको लेकर कूरबान भर दिया । (कूरबांण = एक पात्र ।) 7 ऊपर (वस्त्रसे ढक कर) कसना बांध दिया । 8 फिर (मांसमें) बाजरी डाल करके बाजरिया बनाया । 9 तब गड़रियोंने कहा कि राजन् ! भोजन तैयार है । आईये ! जीमनेको बैठिये । तब खुद ही जीमे और गड़रिये भी जीमे । 10 पीछे उठ कर शस्त्र बांधे, घोड़ेके तंग खींचे और गड़रियोंसे विदा ली । 11 हमारे तो वीकूंपुर जाना है । 12 तब खिलहरियोंने कहा–राजन् ! लौटते आओ तब इस तालाब पर फिर आईये । 13 फिर मेला वहांसे रवाना हुआ सो गांवके पास आ गया । 14 तब कुत्ते सामने दौड़े तो उनको हड्डियें डाल दीं । 15 कुत्ते तो हड्डियोंको चाटने लग गये । 16 आगे । 17 भाथेमें अफीमका पोता था सो गिर गया ।

गांव रंगाईसररी पीढियां

१. सुखरांमदास ।
२. चर्तुभुज ।
३. सांवतसिंघ ।
४. उदैभांण ।

रावतोतांरी पीढियां

ठिकांणो रावतसर

१. नाहरसिंघ ।
२. विजैसिंघ ।
३. हिमतसिंघ ।
४. ग्रणतसिंघ ।
(ग्रणंदसिंघ)
५. चतुरसिंघ ।
६. लखधीरसिंघ ।
७. राजसिंघ ।
८. जगतसिंघ ।
९. राघोदास ।
१०. उदैसिंघ ।
११. किसनदास ।
१२. राजो ।
१३. कांधळजी ।
१४. राव रिणमलजी ।

गांव घांधूसररी पीढियां

१. सेरसिंघ ।
२. बहादुरसिंघ ।
३. जोरावरसिंघ ।
४. लखधीरसिंघ ।

गांव रांणासररी पीढियां

१. ग्रर्जुनसिंघ ।
२. इंद्रसिंघ ।
३. सवाईसिंघ ।
४. रुघनाथसिंघ ।
५. लखधीरसिंघ ।

गांव पलूरी* पीढियां

१. जसवंतसिंघ ।
२. सूरतसिंघ ।
३. मालदे (मालदेव)
४. केसरीसिंघ ।
५. जगतसिंघ ।

पाठान्तर– पळू । पल्लू ।

गांव मलकासररी पीढियां

१. रूपसिंघ ।
२. आणंदसिंघ ।
३. मांनसिंघ ।
४. साहिबसिंघ ।
५. किसनसिंघ ।
६. जगतसिंघ ।

गांव कलासररी पीढियां

१. भोपतसिंघ ।
२. हिमतसिंघ ।
३. मोहकमसिंघ ।
४. सबळसिंघ ।
५. सुद्रसेन (सुदरसणसेन)
६. दौलतखांन ।
७. जसवंतसिंघ ।
८. उदैभांण ।

गांव दुणियासररी पीढियां

१. भायसिंघ (भावसिंघ)
२. जोरावरसिंघ ।
३. केसरीसिंघ ।
४. अखैसिंघ ।
५. सुद्रसेन (सुदरसणसेन)

गांव जैतपुररी पीढियां

१. पदमसिंघ ।
२. सपरूसिंघ ।
३. सूरसिंघ।
४. अर्जुनसिंघ।
५. देवीसिंघ
६. चंद्रसेण
७. मनहरदास (मनोहरदास)
८. गोपाळदास
९. उदैभांण

गांव लाहोररी पीढियां

१. रांमसिंघ
२. अर्जुनसिंघ
३. दुर्गादास (दुरंगदास)
४. देवीसिंघ

वीदावतांरी पीढियां

ठिकांणो वीदासर

१. रांमसिंघ
२. उमेदसिंघ (उमेदसिंघ)

३. जालमसिंघ
४. केसरीसिंघ
५. कुसळसिंघ
६. धनराज
७. मांनसिंघ
८. गोविंददास
९. केसवदास
१०. गोपाळदास
११. सांगो
१२. संसारचंद
१३. वीदोजी
१४. राव जोधोजी

गांव बैणारीतै पीढियां

१. उदैसिंघ
२. दुर्गादास (दुरगदास)
३. वीरभांण
४. लखमीदास
५. गोविंददास (गोयंददास)

गांव दुसारणैरी पीढियां

१. हणूंतसिंघ
२. जैतसिंघ
३. सरदारसिंघ
४. दीपसिंघ
५. किसनसिंघ
६. अचळदास
७. गोविंददास (गोयंददास)

गांव खूहड़ीरी पीढियां

१. दलजी (दल्लूजी । दल्लोजी)
२. नवलसिंघ
३. गुमांनसिंघ
४. जोरावरसिंघ
५. फतैसिंघ
६. कुंभकर्ण
७. किसनदास (किसनसिंघ)
८. खंगारजी
९. जाळपदास
१०. सूरसेन
११. संसारचंद

गांव गोरीसररी पीढियां

१. नवलसिंघ
२. वाघ (वाघो)
३. प्रतापसिंघ
४. मांनसिंघ
५. किसनदास

गांव कणवारीरी° पीढियां

१. दलपतसिंघ
२. हरनाथसिंघ
३. दीपसिंघ
४. त्रखतसिंघ
५. फतैसिंघ
६. देवीदास
७. लाखणसी
८. खंगारसीजी

गांव जासासररी पीढियां

१. बुधसिंघ
२. खड़गसिंघ
३. मांनसिंघ
४. किसनसिंघ (किसनदास)

गांव सेलैरी पीढियां

१. जूंझारसिंघ
२. सांवतसिंघ
३. स्यांमसिंघ
४. मांनसिंघ

गांव लोवैरी पीढियां

१. कीरतसिंघ
२. पृथ्वीसिंघ (पिरथीसिंघ)
३. भवांनीसिंघ (भांनीसिंघ)
४. वैरीसाल
५. बखतसिंघ

गांव हरदेसररी पीढियां

१. परसरांम
२. धीरतसिंघ
३. मोहकमसिंघ
४. मनरूप
५. सगतसिंघ
६. खंगारसिंघ

गांव सांडवैरी पीढियां

१. रणजीतसिंघ
२. जैतसिंघ
३. भोमसिंघ
४. धीरतसिंघ
५. दांनसिंघ
६. महोकमसिंघ
७. जगमालसिंघ
८. मनहरदास
९. जसवंतसिंघ
१०. गोपाळदास

°कणवारा ।

गांव पड़िहारांरी पीढियां

१. जालमसिंघ (जांमळसिंघ)
२. ईसरीसिंघ
३. दांनसिंघ

गांव पातळासररी° पीढियां

१. जयसिंघ
२. माधोसिंघ
३. दांनसिंघ

गांव जाकरोरी* पीढियां

१. नाहरसिंघ
२. कनीरांम (कांन्हीरांम)
३. प्रागदांन (प्रागदास)
४. मोहकमसिंघ

गांव चीमणवैरी पीढियां

१. अभैसिंघ
२. रायसिंघ
३. प्रागदास

गांव ककुरी पीढियां

१. ऊमजी
२. हिमतसिंघ
३. इंद्रभांण
४. मोहकमसिंघ

गांव जीळोरी पीढियां

१. पदमसिंघ
२. जोधसिंघ
३. अमरसिंघ
४. मालदे (मालदेव)
५. मनहरदास

गांव बमूरी पीढियां

१. रायसिंघ
२. भगवंतसिंघ
३. अमरसिंघ
४. मालदे (मालदेव)

गांव लखमणसररी पीढियां

१. जयसिंघ
२. फतैसिंघ
३. आईदांन
४. डूंगरसी
५. मनहरदास

पाठान्तर—°पातळसर। *जाकरी।

गांव कल्यांणसररी पीढियां

१. गोविंददास (गोयंददास)
२. दौलतसिंघ
३. फतैसिंघ
४. अखैराज
५. देईदास (देवीदास)
६. मनहरदास

गांव चंडावैरी पीढियां

१. पहाड़ो
२. कुंभो
३. प्रताप
४. जगमाल

अथ जोधपुररा सिरदारांरी पीढियां

ठिकांणो नींबाज[1]

१. सांवतसिंघ
२. सुरतांणसिंघ
३. संभूसिंघ
४. दौलतसिंघ
५. कल्यांणसिंघ
६. अमरसिंघ
७. कुसळसिंघ
८. जगरांम
९. विजैरांम
१०. मुकंददास
११. कल्यांणदास
१२. रतनसिंघ
१३. खीमो (खींवो)
१४. ऊदो
१५. राव सूजोजी
१६. राव जोधोजी

ठिकांणो रासरी[2] पीढियां

१. जवानसिंघ
२. वखैसिंघ
३. केसरीसिंघ
४. वखतसिंघ
५. संभुसिंघ
६. जगरांम

ठिकांणो लांबियारी[3] पीढियां

१. चांदसिंघ
२. भारतसिंघ
३. पेमसिंघ
४. सुभरांम

गैमल्यावासरी पीढियां

१. इंद्रसिंघ
२. फतैसिंघ
३. चैनसिंघ
४. सुभरांम

---

1 नीमाज जोधपुर राज्यके जैतारण परगनेमें राठौड़ोंकी ऊदावत शाखाका ताजीमी ठिकाना था। राव सूजाके पुत्र ऊदासे ऊदावत शाखा चली। 2 रास ठिकाना भी ऊदावत राठौड़ोंका जैतारण परगनेमें था। 3 लांबियाके दो ठिकाने थे। एक पाली परगनेमें चांपावतोंका और दूसरा जैतारण परगनेमें ऊदावतोंका। प्रस्तुत उल्लेख ऊदावतोंका ही अधिक सम्भव है।

ठिकांणो रायपुररी[1] पीढियां

१. केसरीसिंघ
२. भाखरसिंघ
३. हृदैनारायण
४. राजसी (राजसिंघ)
५. वल्लभरांम (बळरांम)
६. दयाळदास
७. कल्यांणदास

गांव नींबोल़री[2] पीढियां

१. नरसिंघदास
२. जगतसिंघ
३. उदैरांम
४. जगरांम

गांव जुणलो

१. रायसिंघ
२. अनोपसिंघ
३. उदैरांम
४. जगरांम

गांव खारियारी पीढियां

१. महासिंघ
२. वैरीसाल
३. मनरांम
४. विजैरांम

गांव खनावड़ीरी पीढियां

१. दौलतसिंघ
२. राजसिंघ
३. मनरांम
४. विजैरांम
५. मुकनदास

गांव बैरोलरी पीढियां

१. संभुसिंघ
२. वनैसिंघ
३. हीरसिंघ (हीरासिंघ, हरीसिंघ)
४. मनरांम
५. विजैरांम
६. मुकुनदास

गांव छिपियैरा सिरदारांरी पीढियां

१. अमरसिंघ
२. जैतसिंघ

---

1 रायपुर ठिकाना भी ऊदावत राठौड़ोंका जैतारण परगनेमें था।　2 नींबोल भी जैतारण परगनेमें ऊदावतोंका ठिकाना था।

३. भांनीसिंघ (भवांनीसिंघ)
४. जसकरण
५. सांवतसिंघ
६. प्रतापसिंघ
७. राजसिंघ
८. वळरांम
९. दयाळदास

गांव नींबाड़ारी पीढियां

१. वनैसिंघ
२. उदैसिंघ
३. प्रतापसिंघ
४. राजसिंघ

गांव बांसोरी पीढियां

१. संभुसिंघ
२. भावसिंघ
३. जसकरण

गांव देवलीरी[1] पीढियां

१. सिवसिंघ
२. उदैसिंघ
३. प्रतापसिंघ
४. राजसिंघ
५. वळरांम

---

1 देवली भी ऊदावतोंका ठिकाना था जो ऊदावतोंकी देवली कहलाता है। जोधपुर राज्यके ऊपर लिखे सभी ठिकाने ऊदावतोंके ही हैं। मारवाड़के अन्य ठिकानोंकी पीढियोंका और ऊदावतोंकी भी सभी ठिकानोंकी पीढियोंका वर्णन नहीं दिया गया है।

इन सभी पीढियोंके नामोंका क्रम उलटा लिखा हुआ है।

विगत

संमत ८०९ वैसाख सुदि १३ दिली वसी[*] ।

संमत १५९८ पातसाह अकबर रो जनम* ।

संमत १६१३ फागुण सुदि १२ टीकै बैठो ।

संमत १६६६ फोत हुवौ ।

संमत १६६२ पातसाह जहांगीर टीकै बैठो । वर्ष २२ राज कियो । पातसाह जहांगीररी ऊमर वरस ६३ री हुई ।

संमत १६८४ पातसाह साहजांह टीकै बेठो । वरस ३१ पातसाही कीवी ।

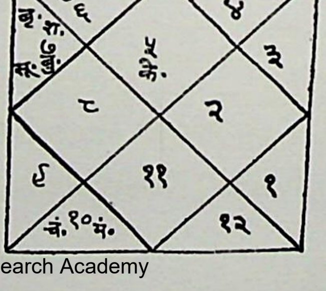
संमत १७१५ औरंगजेब टीकै बैठो । वरस ४८ पातसाही कीवी ।

संमत १७६३ फोत हुवौ ।

---

[*]एक विगतकी प्रतिमें—'सं० ८२९ दिली खूंटी गाडी । दिली वसाई अनंगपाळ ।' एक दूसरी प्रतिमें भी 'संमत ८२९ वैसाख सुद १३ सुकरवार नखत उतरा फालगणी तुवर अणगपाल राज दिली मंडी' लिखा है ।

*वर्ष प्रारंभके मासान्तरोंके कारण विगतोंमें प्रायः अकबरका जन्म संमत १५९९ लिखा मिलता है। एक विगतमें 'सं० १५९९ काती सुद ९' का जन्म होना लिखा है । एक दूसरी प्रतिमें 'सं० १५९९ काती सुदी ६ शनिवार घटी २/७ पूर्वाषाढा नक्षत्रे २९/० दिन गत समस्त राति गत घटी २१/९ सुंनि ९४९ मास रजब तुल संक्रांति दिनगत १४/० भोग्य दिन १६ गंमोतड़ी । अकबर पातिसाह जलालदीन मोहमंद गाजीरी (जन्मकुंडली)



अथ वात चंद्रावतांरी

रांमपुरैरा धणी, रांणा मेवाड़रा धणी, तिणां रांणां मांहै मिळै।[1] रांणै भवणसीरै बेटो चांदरो। तियैरा चंद्रावत कहीजै।[2]

पीढी ११८ हुई, पाछै रांणो भवणसी हुवो। तैरै पेटरा चंद्रावत कहीजै।[3]

संमत १६८१ रांणो मैहपो रावळ श्रीकरणरो बेटो।[4] आगै ईंयांरै घरे रावळाई हुती, मैहपै रांणाई पाई।[5] नै सीसोदै गांवरै नांव सीसोदिया कहांणा।[6] अठासूं दोय साखां हुई—एक रांणा सीसोदै धणी तिका साख, नै एक रावळ बीजो भाई कहांणो, तिणरै रावळरी पदवी हुई।[7]

चांदरारै पेट टीकायत पाट हुवा। तिण पाटवियांरा नांम चंद्रावतांरी पीढी चाली[8]—

१. रांणो भवणसी (भींवसी)
२. चांदरो।
३. सजन।
४. झांझणसी।
५. भाखरसी।

पैहली चांदरारै पोत्रां मांहै भाखरसी पाटवी थो। भाखरसी माथै मुदार थी। ईंयांरै भोम परगनो आंतरी थी।[9]

---

1 रामपुराके स्वामी, मेवाड़के अधिपति-राणाओंमें जाकर मिलते हैं। 2 उनमें राणा भवणसी हुआ जिसका बेटा चांदरा हुआ और चांदराके वंशज चंद्रावत कहे जाते हैं। 3 ११८ पीढियोंके बाद राणा भवणसी हुआ। उसके पेटके चंद्रावत कहे जाते हैं। 4 सम्वत् १६८१ में रावल श्रीकर्णका बेटा राणा महपा हुआ। 5 पहले इनको रावलकी पदवी थी, किन्तु महपैने राणाकी पदवी प्राप्त की। 6 और शिशोदा गांवके नामसे शिशोदिया कहलाए। 7 यहांसे दो शाखायें प्रसिद्ध हुईं—एक राणा शिशोदाके स्वामी जिनकी शाखा शिशोदिया और एक दूसरा भाई जो रावल कहलवाया जिसको रावलकी पदवी प्राप्त हुई। 8 चांदराके वंशज टीकायत और पट्टाधिकारी हुए। उन पट्टाधिकारियों के नामसे चंद्रावतोंकी पीढियां चलीं। 9 इनकी भूमि आंतरीका परगना थी।

आंतरीरो परगनो आमंद देस मांहै छै। तिण आंतरीरा परगना मांहै पठाररा गांम छै। त्यां पठाररा गांवां ईयांरै उतनरी ठोड़ छै।[1]

भाखरसी नै भाखरसीरो काको छाजू दोनूं ही वडा भूमिया, वडा रजपूत।

मांडवरो पातसाह तिणरी हद मांहै आमंद देस मांहै आंतरीरो परगनो गांव १४० लागै।[2] वडो मुलक, वडी धरती छै। सारा गांम दुफसला छै।

आगै आंतरीरो कसबो कहीजतो। राजथांन आंतरी हुतो।[3] नै पातसाह अकबररी वार मांहै राव दुरगो हुवो। तिण रांमपुरो वसायो। हिवै रांमपुरै चंद्रावतांरो राजथांन छै।[4] चांद रावरै पेटरा चंद्रावत आंतरीरा परगना मांहै वडा भोमिया।[5] मांडवरै पातसाहरै आंतरोरो परगनो खालसै हुतो, सु परगनारै हासल मांहै चोथाई परापरीसौं भोमियांरै दाळरी लाग, सु अै परगना मांहै लेता, वखत-गुदारी करता।[6]

चंद्रावत वडा रजपूत था, नै तिकां दिनां पातसाही पण हळकी हुंती; नै हिंदुवांरो दिन भलेरो हुंतो। सु चंद्रावतां मांहै भाखरसी झांझ-णोत ऊपर मुदार हुती। सह कोई चंद्रावत भाखरसीरै हुकम मांहै हुता।[7]

भाखरसीरो काको छाजू वडो रजपूत। छाजूरै घरै वडो विभौ।[8] घोड़ियां, सांढियां, गायां, भैंसियां। गायांरा वडा धण हुता। चौपदो

---

1 आंतरीका परगना आमंद देशमें आया हुआ है। उस आंतरीके परगनेमें जो पठारके गांव हैं, उन पठारके गांवोमें इनके निवासकी ठौर है। 2 मांडवके बादशाहकी हदमें आमंद देश और उसमें आंतरीका परगना जिसमें १४० गांव (लगते) हैं। 3 राजधानी आंतरी में थी। 4 बादशाह अकबरके समय राव दुर्गा हुआ जिसने रामपुरा बसाया। अब (ख्यात-लेखनके समय) रामपुरा चंद्रावतोंकी राजधानी है। 5 राव चांदके वंशज चन्द्रावत आंतरीके परगनेमें बड़े भोमिये हैं। 6 मांडवके बादशाहके आंतरीका परगना खालसे था, सो इस परगनेमें हासलका चौथा हिस्सा परम्परा से 'दाल क़ी लाग' के नामसे भोमियोंका लगता था, सो ये वसूल कर के अपना गुजरान करते थे। 7 चन्द्रावत अच्छे राजपूत थे, उन दिनों (मांडव की) बादशाही निर्बल पड़ी हुई थी और हिन्दुओंका समय अच्छा था। चन्द्रावतोंमें दारोमदार भाखरसी झांझणोतके ऊपर थी। सभी चन्द्रावत भाखरीकी आज्ञामें थे। 8 भाखरसीका चाचा छाजू अच्छा राजपूत था, छाजूके घरमें बड़ा वैभव था।

धण । सो ईंयांरो धण लोकांरा खेत खावै ।[1] वसीरा लोकांरा खेत ऊभा खाईजै ।[2] सु लोक वसीरो भाखरसी आगै नित-प्रत पुकार घालै ।[3] ताहरां भाखरसीनूं छाजू ओळभा तो घणा ही दरावै, पण रुळियार धण हुवो सु रहै नहीं ।[4] लोक सारा पच थाका ।[5] तिण ऊपर छाजूसौं भाखरसी घणो बुरो मांनियो, नै छाजूनूं कहाड़ियो— मैं थांहरा घणा ही ओळभा टाळिया, थे मांनो नहीं । थे म्हांसूं कोस १० आघेरा जायनै रहो ।[6] अठै रहितां थां नै म्हां विगावो हुसी ।[7] थे वेगा छोडणरी तयारी करज्यो ।

तिण ऊपर छाजू नै छाजूरो बेटो सिनो ईंयां दीठो—'भाखरसी सबळ मांणस, नै काढण ऊपर आयो । रहियां थकां विगोवो हुसी ।'[8] तिण ऊपरा छाजू छाडणरी तयारी कीवी नै ठोड़ जोवाड़ी[9] सो अै बूंदी चीत्रोड़, आंतरी विचै पठाररा गांव यांरी वसती; तठाथी छाड़नै कोसे १२ आंतरीरो परगनो थो तिणरो कसबो थो, तिण कसबाथी कोस १ नदी वेत वहै छै ।[10] तिण वेत नदी ऊपर वडो जंगळ छै । तिण में द्रोब, करड़री वडी ऊगम छै । तिका ठोड़ जोय आया ।[11] जांणियो—मांहरो हसम थाट अठै चरसी ।[12] सु नदीथा कोस १

---

1 घोड़ियां, सांढियां, (ऊंटनियां) गायें और भैंसे इत्यादि बड़ा चौपद समूह इसके पास था और गायोंके तो बड़े (बहुत) समूह थे । सो इनका यह चौपद-धन लोगोंके खेतोंको खा जाता है । 2 बसीके लोगोंके खड़े खेत खा लिये जाते हैं । 3 बसीकी प्रजा नित्य प्रति भाखरसीके आगे जाकर पुकार करती है । (वसी=१ निजकी बसाई हुई बस्ती या प्रजा । २ रिआयतसे बसाये हुए लोग ।) 4 तब छाजु भाखरसीको उपालंभ तो बहुत दिलवाता है, परन्तु छाजू क्या करे, धन (चौपद) ही ऐसा निषिद्ध हो गया कि रोकने पर भी रुकता नहीं । 5 सब लोग कोशिश करके थक गये । 6 जिस पर भाखरसीने छाजूसे बहुत बुरा माना और फिर छाजूको कहलवाया कि मैंने तुम्हारे अनेक ओलंभे टाले, परन्तु तुम मानते नहीं । सो अब तुम हमारेसे १० कोस दूर जाकर रहो । 7 यहां रहने से तुमारे और हमारे बीचमें टंटा-फसाद होगा । 8 जिस पर छाजू और उसके बेटे शिवाने देखा कि भाखरसी जबरदस्त आदमी है और अपनेको यहांसे निकालने पर तुल गया है, ऐसी दशामें यहां रहने पर फसाद होगा । 9 इस पर छाजूने छोड़नेकी तैयारी की और जगहकी तलाश करवाई । 10 उस कस्बेसे एक कोस दूर वेत नामकी नदी बहती है । 11 उसमें दूब और करड़ घासकी खूब उपज होती है । उस जगहको देख आये । 12 विचारा कि हमारा चौपद-समूह यहां चर सकेगा ।

तथा २ गांम मिळसियाखेड़ी छै; तठै छाजू आपरा हसम थाट लेनै आयो ।[1] मिळसियाखेड़ी आसरा बांधिया ।[2] हसम थाट जंगळ मांहै ढवै । वडो ठोड़ ।[3] छाजू, सिवो वडा रजपूत, नै कनै वडो वित[4], तिण घर २० तथा २५ रजपूतांरा वसाया । वडी वसती हुई ।

कसबो आंतरी वडो सहर छै, नै सहर मांहै वडो महाजन हुंतो ।[5] सो कसबा मांहै चोर घणा लागै ।[6] पातसाही किरोड़ीरो परगना मांहै भोमियां बीच अमल को नहीं ।[7] महाजन चोरी कर वडा दिलगीर ।[8] तिण ऊपर महाजनां विचारियो–'किरोड़ीमें घणी बरकत काई नहीं ।[9] नै सीसोदियो छाजू, सिवो चंद्रावत, अै वडा रजपूत छै, नै वडा भोमियां छै, यांनूं गांवरो सांसर सूंपां तो अै जतन करै ।[10]

ताहरां महाजनां विचारनै छाजूसूं वात कराई । वात छाजू कबूल कीवी । महाजनां रुपियो १) रोजीनो सांसररो कर दियो ।[11] क्युंही जायै-परणिये कर दियो ।[12] छाजूनै सिवो बाप बेटो कसबारी टहल करै । पाखती भाईबंध छाजूरा भोमिया था, तिणांरा चोर कसबानूं लागता सु छाजू मनह कराया ।[13] वार वार चोरी कीवी थी, तिणांनूं आपड़नै मारिया ।[14] सु उठासूं ही हद पड़ गई ।[15] कसबै महाजनांनूं वडो चैन हुवो । छाजू सिवैरो मांमलो भारी पड़ियो ।

---

1 सो नदीसे एक या दो कोस पर जहां मिलसियाखेड़ी नामका गांव है, वहां छाजू अपने चौपद-समूहको लेकर आया । 2 मिलसियाखेड़ीमें झोंपड़े बनाये । 3 संपूर्ण ठट्ठ (थाट) जंगलमें निभ सके ऐसी बड़ी ठौर । 4 और पासमें बड़ा गो-धन (चौपद-समूह)। 5 और शहरमें महाजनोंकी बड़ी बस्ती थी । 6 कस्बेमें चोर बहुत लगते थे । 7 बादशाही करोड़ीके परगनेमें भोमियोंके ऊपर उसका कोई अमल नहीं । 8 महाजन लोग चोरियों के कारण बड़े दुखी । 9 करोड़ीमें कोई योग्यता नहीं । 10 इनको गांवकी रक्षाका भार सौंप दें तो ये प्रबन्ध कर देंगे । 11 महाजनोंने प्रतिदिनका एक रुपया चोरोंसे रक्षाकी जिम्मेवारीका कर दिया । 12 जन्म और विवाह पर भी कुछ लगान बांध दिया । 13 पास-पड़ोसमें छाजूके भाई-बन्धु भोमिये थे, उनके यहांके जो चोर कस्बेको लगते थे, उन्हें छाजूने मना करके रोक दिया । 14 और जो कई बार चोरियां कर चुके थे उन्हें पकड़ करके मारा । 15 सो फिर तो वहींसे चोरी करनेकी हद पड़ गई अर्थात् इसके बाद कोई चोरी नहीं हुई ।

वडो कायदो हुवो ।[1] घोड़ा, रजपूतांरी पण कनारै वडी जोड़ हुई ।[2]

छाजूरो बेटो सिवो वडो रजपूत, वडो जवांन सु आठ पोहर नदी-री पाखती सिकार खेलतो रहै । ओधूळा करै ।[3]

तद मांडवरी पातसाही पातसाह गौरी हुसंग भोगवै ।[4] नै दिली तद लोदी पठांणांरी साहिबी, सु लोदी दिलीरी पातसाही भोगवै ।[5] सु मांडवरो पातसाह हुसंग दिलीरै पातसाहरी बेटी परणियो थो ।[6] सु साहिजादी दिली हुती, नै मांडवरै पातसाहरो लोक साहिजादीनूं लेण दिली गयो हुंतो । सु साहिजादी दिलीसूं चाली थी सु आंतरीरै कसबैरी नदी आई । पैंडे चाली सु दिन भाद्रवा आसोजरा हुंता ।[7] नदियांरो जोर हुंतो, सु उतरणरो को घाट नहीं ।[8] ताहरां साहिजादी नदी मांहै डूंडो नखायनै उतरती हुंती[9], सु वीच जावतां डूंडो फूटो, सु तखता जुदा-जुदा हुय गया । ताहरां साहिजादी डूबती थकीरै हाथ पाटियो १ डूंडारो आयो ।[10] तिको झालनै बैठी सु नदीरी धार मांहै वूही जावती हुंती ।[11] सु नदी ऊपर पातसाही लोक हुंतो सु कूक ऊठियो[12]–'साहिजादी डूबी जाती है ।'

ताहरां सिवो छाजूरो बेटो नदी थी निजीक सिकार खेलतो हुतो, सु कूकवो सुणनै दोड़ आयो ।[13] साहिजादी नदी मांहै वूही जावती दीठी । सु सिवो आप वडो तेरू हुंतो ।[14] सु आडवाहो होयनै नदी मांहै कूद पड़ियो ।[15] ताहरां तिरतो-तिरतो साहिजादीसौं निजीक

---

1 छाजू और शिवाकी साख जम गई और मान-रुतबा बहुत बढ़ गया । 2 घोड़े और राजपूतोंका भी बड़ा समूह पासमें हो गया । 3 मौज करता है । 4 उस समय मांडवकी बादशाही का उपभोग बादशाह हुशंग गौरी करता है । 5 और दिल्लीमें लोदी-पठानोंका राज्य सो लोदी वहांकी बादशाही भोगते हैं । 6 सो मांडवके बादशाह हुशंगने दिल्लीके बादशाहकी लड़कीसे विवाह किया था । 7 पैदल रवाना हुई थी और भादों आसोजके (वर्षाके) दिन थे । 8 नदियोंमें पानीके पूरका जोर था सो पार उतरनेका कोई साधन नहीं था । 9 इसलिए नदीमें डोंगी डाल करके पार उतर रही थी । 10 सो डूबती हुई शाहजादीके डोंगीका एक पाटा हाथ आ गया । 11 उसे पकड़ करके उस पर बैठी हुई नदीकी धारामें बही जा रही थी । 12 नदी पर बादशाही लोग थे उन्होंने शोर मचाया । 13 सो शोर सुन करके दौड़ आया । 14 शिवा स्वयं बडा तैराक था । 15 सो आड़ी नदीको पार करता हुआ उसमें कूद पड़ा । (आड बहाव तैरनेके लिए नदीमें कूद पड़ा ।)

गयो। उठै जायनै साहिजादीनूं सलांम कही। कह्यो–'कुण हुकम छै ?'[1] तरै साहिजादी कह्यो–'तूं माहरो भाई छै नै हूं थारी बहन छूं। मोनूं तूं लेयनै नीसर गयो तो, तो सारीखो कोई नहीं।[2]

ताहरां सिवो साहिजादीरै निजीक गयो। जायनै कह्यो–'बाईजी सलांमत ! म्हारै खवै हाथ द्यो ज्यां हूं राजनूं लेयनै नीसरूं।'[3] ताहरां साहजादी खवो झालियो।[4] सिवो नदी तिरनै साहजादीनूं ले नीसरियो। सारै वधाई वांटी।[5] साहजादी सिवैसूं बहोत राजी हुई। बहोत वधाई दीवी।[6] घोड़ो सिरोपाव दियो।

सिवानूं साहजादी कह्यो–'तूं म्हारो भाई छै। तूं म्हां साथै मांडव आवै तो तोनूं पातसाहजीसूं अरज करनै मुनसब दिराऊं।'[7] तिण ऊपर सिवै ही दीठो[8]–'मोसूं साहजादी मया करै छै। म्हैं खिजमत रूड़ी करी छै। जाऊं तो पाऊं।'[9] तिण ऊपर सिवै ही साथै आवणो कबूल कियो।

घरे जायनै दस मांणस आपरा लेयनै आयकर भेळो हुओ। साहिजादो साथै हुओ जाय।[10] खावण-पीवणनूं रोजीनो कर दियो।[11] बीजो ही मांहैसूं इनांमरो पण क्युंहेक मेल्है। सु साहिजादी चाली मांडव गई। उठै जायनै साहिजादी सिसोदिया सिवारो सैंमांन कराय दियो। नै पातसाहजीसूं मालम कियो–'पातसाह सलांमत ! मोनूं नदी मांहैसूं बूडतीनूं एकै सिसोदियै रांणारै भाई काढी छै।[12] तिणनूं म्हैं भाई कहि बोलायो छै, सु हजरत उसकूं पांवां लगावो नै चाकर करो।'[13] तिण ऊपर पातसाहजी फुरमायो–'आय पांवां लागो।'[14] ताहरां सिवानूं पांवां लगायो।

---

1 मेरे लिए क्या आज्ञा है ? 2 मुझको लेकरके बाहर निकल गया तो तेरे समान कोई (उपकारी) नहीं। 3 मेरे कंधे पर हाथ दे दो (मेरा कंधा पकड़लो) सो मैं आपको लेकर बाहर निकल जाऊं। 4 तब शाहजादीने कंधा पकड़ लिया। 5 सबने बधाइयां बांटी। 6 बहुत उपहार दिया। 7 तू मेरे साथ मांडवको आये तो बादशाहसे अर्ज करके तेरेको मनसब दिलवाऊं। 8 इस पर शिवाने ही देखा (सोचा); 9 मेरे पर शाहजादी कृपा कर रही है, मैंने भी अच्छी सेवा की है। साथमें जाऊं तो प्राप्त करूं। 10 शाहजादीके साथ होकर जा रहा है। 11 खाने-पीनेके लिए रोजाना निश्चित कर दिया। 12 बादशाह सलामत ! मुझको नदीमें डूबती हुईको राणाके भाई एक शिशोदियाने बाहर निकाला। 13 उसको मैंने अपना भाई कहा है सो हजरत उसे अपने पांवों लगायें और अपना चाकर बनाएं। 14 आकरके पांवां लगे।

धसियो ।[1] आगै जायनै देखै तो ऊदाजी पोढिया छै । ताहरां मेळै जायनै हथियारांरी वाधरचां वाढी । सेजबंध वाढिया । अस्त्रीरी चोटी वाढी । तरगसांरा पंखारा वाढिया । वाढनै मेळो पाछो वळियो ।[2]

इतरै रजपूतांणी जागी । जागी अर कह्यो–चोरासिया ठाकुर ! सेपटो ठाकुर आयो हुतो । माथै हाथ लावै तो चोटी नहीं । इतरै सिखरो जागियो ।[3] ऊठनै बरछी हाथ लेयनै घोड़ै आयो । अपलांणै घोड़ै चढियो, हाथ एकै बरछी लियां ।[4] सिखरैरो घोड़ो नै ऊदैरी घोड़ी, बेऊ एकी छान में बझै ।[5] सु घोड़ीरी वा बछेरी मास ११री सु घोड़ै ही आगै चरै नै घोड़ी ही आगै चरै ।[6] सिखरो चढि अर नीसरियो, ताहरां वा बछेरी घोड़ैरै लारै हुई ।[7] हिवै सिखरो बाहिर आयो । देखै तो घोड़ैरा खुर, मेह वूठो हुंतो सु दीखण लागा[8] आगै देखै तो कूतरा वढिया पड़िया छै ।[9] कूतरांरै कनारै धवळो सो क्युं पड़ियो छै ।[10] जोयो, देखै तो अमलरो पोतो छै ।[11] ताहरां सिखरैजी उठाय लियो, घात घोड़ैरै.................पगै लगाय फिटा किया ।[12]

पछै मेळो कोढणैरै तळाव गयो ।[13] प्रभात हुवो । ताहरां मेळै पोतो संभाळियो । देखै तो पोतो नहीं । ताहरां उतर घोड़ैसूं, बिछा-

---

1 पीछे कुत्तोंको मार करके गांवमें घुसा । 2 आगे जाकर देखा तो ऊदाजी सोये हुए हैं । तब मेलेने जाकरके शस्त्रोंकी डोरियें काट दीं, सेजबंध काट दिये, स्त्रीकी चोटी काट ली और तरकशोंके पंख काट लिये । ये सब काट करके मेला वापिस लौटा । 3 इतनेमें सिखरा जगा । 4 उठ करके बर्छीको हाथमें लेकरके घोड़ोंके पास आया । हाथमें एक बर्छी लेकर बिना जीन कसे हुए घोड़े पर चढ़ गया । 5 सिखरेका घोड़ा और ऊदेकी घोड़ी दोनों ही एक छप्परमें बँधते हैं । 6 सो घोड़ीकी ११ महीनोंकी बछेरी घोड़े और घोड़ी दोनों के साथ चरती है । 7 तब वह बछेरी घोड़ेके पीछे हो गई । 8 अब जब सिखरा बाहर आया तो देखता है कि वर्षा हुई थी जिसमें घोड़ेके खुर मँडे हुए दिखाई देने लगे । 9 आगे देखता है तो कुत्ते कटे हुए पड़े हैं । 10 कुत्तोंके पास सफेद-सा कुछ और पड़ा है । 11 देखा तो अफीमका पोता है । 12 सिखरोजीने उसे उठा लिया और घोड़ेके (हानेमें डाल और घोड़ेको एड़ी मार ?) चल दिया । 13 फिर मेला कोढणे गांवके तालाब पर गया ।

वणा कर सूतो ।[1] सिखरो वांसै लागो थको ही आयो ।[2] आय अर जोयो ।[3] देखै तो, कोई सूतो छै। जोयो, भाई ! असवार तो ऊ हीज ।[4] पण सूतो क्युं ?'[5] ताहरां सिखरो घोड़ैसूं उतरियो । उतरनै नैड़ो आयो ।[6] आयनै कपड़ो तांणियो ।[7] ताहरां मेळो जागियो। कहियो–'ठाकुरांरो नांम ?' कह्यो–'मेळो सेपटो ।' ताहरां सिखरो बोलियो–'मेळाजो ! चवरासी छेड़ी छै, ठांम-ठांम ढोल हुआ छै, ऊदै सारीखा रजपूत छेड़िया छै, अर थे पोढिया छो ? कासूं जांणो छो ?'[8] ताहरां मेळो बोलियो–'ठाकुरांरो नांम ?' कह्यो–'जी, म्हारो नांम सिखरो ।' ताहरां मेळै कह्यो–'सिखराजी ! हूं तो बायड़ियो छूं ।'[9] ताहरां कह्यो–'ऊठो ठाकुरां ! अमल करो ।'[10] ताहरां कह्यो–'जी, अमल तो हूं म्हारै पोतैरो खाऊं छूं, सु म्हारो पोतो खिरियो ।'[11] ताहरां सिखरै पोतो काढि अर हाजर कियो । कह्यो–'जी, ओ ठाकुरांरो पोतो छै, आरोगो ।'[12] ताहरां सिखरैजी मेळैरै घोड़ै छागळ हुती, तिका आणनै मेळैनूं अमल करायो ।[13] ताहरां सिखरै कह्यो–'मेळाजी! आप पोढो, ज्युं हूं ठाकुरांनूं दावूं ।'[14] ताहरां मेळोजी पोढिया । सिखरोजी दुड़बड़ियां देण लागा, ज्युं मेळोजीनूं अमल आयो, घोरांणो ।[15] ताहरां सिखरै मेळैजीनूं जगाया । कह्यो–'जी, ठाकुरां ! उठो ।' ताहरां मेळोजी जागिया । सिखरैजी आंख्यां छंटाई, हथियार

---

1 तब घोड़ेसे उतर कर और बिछौना बिछा कर सो गया । 2 सिखरा भी पीछे लगा हुआ आ पहुंचा । 3 आ करके देखा । 4–5 सवार तो वही है, परंतु सोया क्यों है ? 6 उतर करके निकट आया । 7 आ करके कपड़ा खींचा । 8 मेलाजी ! चौरासी प्रदेशको छेड़ा है, जगह-जगह (बाहरके) ढोल बज रहे हैं, ऊदा जैसे राजपूतको छेड़ा है और तुम यहां आ कर सोये हुए हो ? क्या जान रखा है तुमने । 9 सिखराजी ! मैं तो अफीमका व्यसनी हूं । 10 अफीम लेओ । 11 अफीम तो मैं अपने ही पोतेका खाता हूं और मेरा पोता कहीं गिर गया । 12 तब सिखरेने पोता निकाल कर हाजिर किया और कहा कि यह आपका पोता रहा, अफीम ले लीजिये (खाइये ।) 13 मेलेके घोड़े पर छागल टंगी हुई थी जिसको लाकर सिखरेजीने मेलेको अमल-पानी कराया (अफीम खिलवाया) । (छागल=बकरीके बच्चेकी खालकी बनी हुई छोटी मशक) । 14 मेलाजी ! आप सो जाइये, सो मैं आपको चंपी कर दूं । 15 तब मेलाजी सो गये, सिखरोजी मुक्की देने (चंपी करने) लगे जैसे ही मेलोजीको अफीमका नशा आ गया और नींदमें घुराने लगा ।

बंधाया ।[1] कह्यो–'ऊठो मेळोजी ! किसी भांत जुध करस्यां ?'[2] ताहरां मेंळोजी बोलिया–'घोड़ै असवार हुयनै जुध करस्यां ।' ताहरां सिखरोजी बोलिया–'मांहरै घोड़ो अपलांणो छै ।[3] पण थे कह्यो तो भलां, असवार हुवो ।'[4] ताहरां मेळोजी घोड़ै असवार हुवा । घोड़ो तातो कर ताजणो लगायो नै मेळैजी तो आघा खड़िया ।[5] सिखरोजी देखता ही रह्या । 'ऊ जाहि ! ऊ जाहि !'[6] ताहरां मेळैरै वांसै सिखरै खड़िया ।[7] लारै घोड़ो लगाय फिटो कियो । घोड़ो सिखरैरो पहुंचै नहीं, मेळैरै घोड़ैनूं ।[8] सिखरैरै घोड़ै लार वछेरी आई हुती, तिका वछेरी दोड़ती-दोडती मेळैरै घोड़ैसूं आगै हुयनै वळै वछेरी पूठी आई ।[9] आय अर वळै वछेरी आघी जावै, अर वळै अपूठी आवै ।[10] वार दोय वछेरी ईयै जिनस आई ।[11] ताहरां सिखरै दीठो–घोड़ो पहुंचै नहीं । ताहरां सिखरै वछेरी पाकड़ी, घोड़ै कनारै आई ।[12] ताहरां लटी पकड़, सिखरो वछेरी असवार हुवो ।[13] ताहरां वछेरी दोड़ी । जायनैं मेळैरै घोड़ै आगै नीसरी ।[14] ताहरां वछेरी अपूठी फिरी । ताहरां सिखरै सांम्हां आय बरछी वाही, सो मेळैरै बरछी दुसार हुई ।[15] मेळो घोड़ैसूं खिर पड़ियो ।[16] सिखरोजी उतरिया । तितरै वांसैसूं वाहर पण आई ।[17] सिखरोजी ऊदैजीनूं वात कही । ताहरां ऊदैजी कह्यो–'मेळैनूं दाग द्यो ।'[18] ताहरां मेळैनूं दाग दियो ।

---

1 सिखराजीने आंखें छँटवाई और शस्त्र बँधवाये । 2 मेलाजी ! उठो । किस प्रकार युद्ध करेंगे ? 3 मेरा घोड़ा बिना जीनका है । 4 परंतु तुमने कह दिया है तो अच्छी बात है, सवार हो जाओ । 5 घोड़ेको ताता करके चाबुक मारा और मेलोजीने तो दूर ही चला दिया । 6 वह जाय ! वह जाय ! सिखरोजी तो देखते ही रह गये । 7 तब सिखराने भी मेलेके पीछे चलाया । 8 घोड़ा पीछे दे कर खूब जोर मारा, परन्तु सिखरेका घोड़ा मेलेके घोड़ेको नहीं पहुंच पाता । 9 सिखरेके घोड़ेके पीछे जो बछेरी आई थी, वह बछेरी दौड़ती-दौड़ती मेलेके घोड़ेसे आगे जाकर फिर बछेरी वापिस लौट आई । 10 आकर के फिर बछेरी (मेलेके घोड़ेसे) आगे निकल जाये और फिर लौट कर आ जाये । 11 इस प्रकार बछेरी दो बार आई और गई । 12 जब बछेरी घोड़ेके पास आई तो सिखरेने उसे पकड़ लिया । 13 तब (बछेरीकी) लटिया पकड़ करके सिखरा बछेरी पर सवार हो गया । 14 जाकरके मेलेके घोड़ेसे आगे निकल गई । 15 तब सिखरेने सामने आकर बर्छीका प्रहार किया सो मेलेके बर्छी आर-पार हो गई । 16 मेला घोड़ेसे गिर पड़ा । 17 इतनेमें पीछेसे वाहर भी आ गई । 18 मेलेका अग्नि संस्कार कर दो ।

ताहरां सिखरैंजी कह्यो–'हालो।' ताहरां ऊदो बोलियो–'मेळै सारीखा रजपूतरा समंचार रड़वड़ता जावै, ताहरां कासूं कोई जांणसी ?[1] हूं जायनै मेळैरी पाघ देय आवीस।'[2]

ताहरां ऊदो पाघ लेयनै चालियो। जाय, मेळैरै गांम पुहुंतो।[3] आगै मेळैरो बेटो कोटड़ी मांहै बैठो छै। घूघरियां पलै घातियां छै।[4] आपरा रजपूत सारा बैठा छै।[5] ताहरां ऊदो जायनै कोटड़ीरै बारणै ऊभो छै।[6] ताहरां ऊदो बोलियो–'कुण ठाकुररी कोटड़ी छै ?'[7] ताहरां रजपूत बोलिया–'मेळाजी सेपटारी कोटड़ी छै।' ताहरां ऊदो बोलियो। कह्यो–'ठाकुरां ! आ मेळाजीरी पाघ छै, मेळोजी कांम आया।[8] सिखरैंजीरै हाथरा घावां ठाकुर कांम आयो छै।[9] साकारिया छै म्हां।[10] आ पाघ छै।' ताहरां मेळैरो बेटो बोलियो–'राज ! वैर म्हां थांसूं कोई छै नहीं, वैर सारीखो हुवो छै।[11] मेळो अन्याई हुओ हुंतो, मेळै आपरो कियो पायो।[12] राज पधारो, मांहरै वैर कोई छै नहीं।'[13]

ताहरां ऊदै कह्यो–'अै कुण-कुण ठाकुर छै ?'[14] कह्यो–'जी, ओ[15] मेळोजीरो बेटो छै। अै[16] दूसरा भाई छै। बीजा[17] रजपूत छै।' ताहरां ऊदोजी बोलिया–'सिखरैंजीरी बेटी मेळैजीरै बेटैनूं

---

1 मेले जैसे राजपूतका मृत्यु-संदेश इधर-उधर भटकता हुआ (उसके घर पर) पहुंचे, तब कोई क्या जानेगा ? 2 मैं जाकरके मेलेकी पघड़ी दे आऊंगा। 3 जाकरके मेलेके गांव पहुंचा। 4 पल्लेमें घूघरियां डाले हुए हैं। (घूघरियां=उबाले हुए गेहूँ और चनों-का एक नाश्ता।) 5 अपने (उसके) सभी राजपूत (भी पासमें) बैठे हैं। 6 तब ऊदा जाकरके कोटड़ीके द्वार पर खड़ा है। 7 किस ठाकुरकी यह कोटड़ी है ? 8 यह मेलाजीकी पाघ है, मेलाजी काम आ गये हैं। 9 सिखरेजीके हाथोंके घावोंसे ठाकुर काम आया है। 10 हमने अग्नि-संस्कार कर दिया है। 11 श्रीमान् ! तुमारे हमारे अब कोई वैर नहीं है। वैर बराबर हो गया है। 12 मेला अन्यायी हो गया था सो उसने अपने कियेका फल पा लिया। 13 आप पधारें, हमारा आपसे कोई वैर नहीं है। 14 ये (यहाँ बैठे हुए) कौन-कौन ठाकुर हैं। 15 यह। 16 ये। 17 दूसरे। 18 सिखरेजीकी बेटी मेलेजीके बेटेको दी (संबंध किया।)

दीनो ।[1] देव ऊठियां पछै बांभण मूकां छां ।[2] वेगा पधारजो ज्युं परणावां ।'[3]

वैर वाढ अर ऊदोजी आपरै घरे आया छै ।[4] सखरा दिन हुवा ताहरां बांभण मेल्हनै मळैजीरै बेटेनूं तेड़नै परणायो छै ।[5] वैर भागो छै ।[6]

इति ऊदैजीरी वात संपूर्ण ।

---

1 सिखरेजीकी बेटी मेलेजीके बेटेको दी (वाग्दान-संबंध कर दिया) (पृ० २६४की टिप्पणी संख्या १८, अंतिम पंक्ति डिलीट समझें) 2 देव उठ जानेके बाद (कार्तिक शु० ११के देवोत्थान पर्वके बाद) ब्राह्मणको भेजते हैं। 3 जल्दी पधारना सो व्याह देंगे। 4 वैर मिटा कर ऊदोजी अपने घर आये हैं। 5 (वर्षा ऋतु मिट कर) अच्छे दिन हो गये तब ब्राह्मणको भेज मेलेजीके बेटेको बुला कर विवाह कर दिया। 6 शत्रुता मिट गई है।

अथ बूंदीरी वारता

बूंदी राव सुरजन राज करै* । राव सुरजनरै दोय बेटा । एकैरो नांव दूदो, जैसै भैरवदासोत चांपावतरो दोहीतरो ।

दूसरो भोज, तिको रावळ सहसमलरो दोहीतरो डूंगरपुररै धणीरो ।[1ख]

युं करतां, दोनूं भायां आपसमें दूदै अर भोज वडो वेध पड़ियो ।[2] ताहरां राव सुरजन बेटा बेऊं तेड़िनै कह्यो—'थे मो ऊपर फिरिया । थे म्हारो कह्यो न मांनो । म्हैं राजसूं कोई कांम नहीं । थे धरती वैंहच ल्यो[3] ।' ताहरां बूंदी तो ३६० गांमांसूं दूदैनूं दीनी[4] । अर खड़खटरो परगनो गांम ३६०सूं भोजनूं दीधो[5] ।

---

*राव सुर्जन हाडा वि. सं. १६११में बूंदीकी गद्दी पर बैठा था । यह राजनीति-चतुर होते हुए भी उदार और धार्मिक-प्रकृतिका शासक था । इनके समयसे बूंदीका संबंध मेवाड़से छूट कर मुगलोंसे हो गया था । पर मुगलोंकी अधीनता स्वीकार करते समयकी संधिमें बादशाह अकबरसे रावने यह शर्त तै करवा ली थी कि मेवाड़के ऊपर शाही आक्रमणके समय बूंदीकी सेना कोई साथ नहीं देगी । राव सुर्जनने द्वारकामें श्रीरणछोड़रायका मंदिर नया बनवाया था जो अभी तक स्थित है । काशीमें भी इन्होंने कई घाट और महल बनवाये थे । काशीमें इनके निवासके समय गौड़ (बंगाल) देशके एक कवि चन्द्रशेखरने चौहान वंश और राव सुर्जनकी प्रशंसामें 'सुर्जन चरित' नामक एक संस्कृत काव्यकी रचना की थी । इनकी मृत्यु वि. सं. १६४६में काशीमें ही हुई थी जहां इनका और इनके साथ सती होने वाली रानियोंके स्मारक बने हुए हैं ।

[ख]स्व. श्रीजगदीशसिंह गहलोतने अपने 'राजपूतानेका इतिहास' द्वितीय भागमें बूंदी राज्यके राव भोजके वर्णनमें 'बांकीदासकी बात ११२६' के आधार पर (टिप्पणीमें उसका संकेत करते हुए) भोजको बांसवाड़ाके रावल जगमाल उदयसिंहोतका दोहिता लिखा है ।

---

1 एकका नाम दूदा जो चांपावत जैसे भैरवदासोतका दोहिता और दूसरा भोज जो डूंगरपुरके स्वामी रावल सहसमलका दोहिता । 2 इस प्रकार चलते दूदा और भोज दोनों भाइयोंमें परस्पर बड़ी अनबन हो गई (परस्पर बड़ा विरोध हुआ) । 3 तब राव सुरजनने दोनों बेटोंको बुला कर कहा कि तुम मेरे ऊपर फिर गये, मेरी आज्ञाका पालन नहीं करते । मेरेको इस राज्यसे अब कोई वास्ता नहीं । तुम धरतीका बंट कर लो । 4 दूदेको दी । 5 भोजको दिया ।

ताहरां हमीर दहियो तिको भोजनूं कहै—'तोनूं मारियो। दूदा आगै टिक सगै नहीं। दूदो तो काळ। दूदो तोनूं गिणिया दिनांमें मारसी।'[1] ताहरां भोज कहियो—'तो हमीरजी ! हूं कासूं करूं ?'[2] ताहरां हमीर कहियो—'तूं अकबर पातसाह आगै जाह।' ताहरां भोज कहियो—'रूड़ां, थे कहियो सु हूं जाईस। पण मोनूं खरच जुड़ै नहीं।'[3] ताहरां हमीर कह्यो—'हूं लाख रुपिया देईस थांनूं।'[4] ताहरां हमीर दहियै लाखेरीरा बोहरा कना लाख रुपिया पटू होयनै देराया।[5]

पछै भोज अकबर पातसाह कनै[6] गयो। सीकरी-फतैहपुर अकबर पातसाह हुंतो, तेथ भोज गयो।[7] ताहरां वांसैसूं[8] दूदैनूं खबर हुई—'जु भोज पातसाह कनै गयो।' ताहरां दूदो डकरियो[9]—'भोजनूं मारूं। पातसाहरै दरबार विचै मारूं।' ताहरां वांसैसूं दूदो ही सीकरी-फतैह-पुर गयो। जायनै हेरो करायो।[10] ताहरां हेरै[11] कह्यो—'म्हां हेरियो छै।[12] वागो घोड़ो हेरियो छै।[13] इसड़ो वागो ईयै रंग घोड़ो भोजनूं चढणनूं छै।'[14] कह्यो—'रे ! चोकस करै।'[15] कह्यो—'जो, म्है चोकस कियो छै।'[16]

ताहरां भोज दरबारनूं वागो पहर तयार हुवो। घोड़ो आंण हाजर कियो।[17] जाहरां भोज घोड़ै असवार हुवण लागो, ताहरां घोड़ो धूजियो।[18] ताहरां जोगो गौड़ बोलियो—'दीवांण ईयै घोड़ै असवार न

---

1 तेरेको मार दिया। दूदाके आगे तू नहीं टिक सकता। दूदा तो तेरा काल है। दूदा तुझको गिने दिनोंमें मार देगा। 2 हमीरजी ! तो मैं क्या करूं ? 3 तब भोजने कहा—'अच्छी बात है। तुमने कहा तो मैं जाऊंगा, परन्तु मेरेको खर्च नहीं जुड़ता (खर्च करनेको मेरे पास पैसे नहीं हैं)। 4 मैं तुमको लाख रुपये दूंगा। 5 तब हमीर दहियेने जामिन होकरके लाखेरीके बोहराके पाससे लाख रुपये दिलवाये। 6 पास। 7 अकबर बादशाह फतहपुर-सीकरीमें था वहां भोज गया। 8 पीछे से। 9 (१) भयभीत हुआ। (२) क्रोधित हुआ। (३) गुर्राया। 10 जाकरके गुप्त रूप से खबर कराई। 11 गुप्तचर। 12 हमने जांच कर ली है। 13 बागा और घोड़े का पता लगा लिया है। 14 ऐसा बागा और इस रंगका घोड़ा भोजके चढ़नेको है। 15 अरे ! चौकस पता लगाना। 16 मैंने चौकस (ठीक) पता लगा लिया है। 17 घोड़ा लाकर हाजिर किया। 18 तब घोड़ेको कँपनी हुई। (सवारी करते समय घोड़ेका कांपना अपशकुन समझा जाता है और प्रस्थान रोक लिया जाता है)।

हुईजै ।' ताहरां भोज ऊ घोड़ो, ऊ वागो खवासनूं बगसिया ।[1] आप बीजो[2] वागो पहरियो । बीजै[3] घोड़ै असवार हुवो । उवै घोड़ै खवास चढियो ।[4] पातसाहरै मुजरै गयो ।

अठै दूदो पण असवार हुवो । भोज पातसाहसूं मुजरो कर पूठो बाहुड़ियो ।[5] दूदै दरबार मांहै नीसरतां उवै वागै खवास हुंतो· सु खवासनूं कटारी वाही ।[6] ताहरां खवास करकियो ।[7] ताहरां दूदै अपूठो घोड़ो वाळ अर कह्यो–'रे ! हेरो खोटो कियो ।'[8] कह्यो–'जी, म्हैं हेरो खरो कियो हुंतो ।'[9] ताहरां कह्यो–'रे ! भोज राव सुरजनरो बेटो; कटारी लागां करकै क्युं ?[10] म्हारो भाई कटारी लागां क्युं करकै ?' ताहरां खबर कराई । ताहरां कह्यो–जी, ऊ वागो, घोड़ो खवासनूं दिया ।' ताहरां दूदो अपूठो बूंदी आयो । आयनै कह्यो– 'भोजनूं पातसाह आगळ कुण मेल्हियो ?'[11] ताहरां कह्यो–'जी, हमीर दहियै मेल्हियो ।' ताहरां दूदो तीन हजार पाखरियांसूं हमीररै गांव किरवाड़ जाय उतरियो ।[12] उतरनै हमीरनूं कह्यो–'भोजनूं लाख रुपिया दीना, मोनूं ही लाख रुपिया दै, काय मारिस ।[13] म्हारै बापरौ रजपूत छै । छांडू नहीं, नहीं तो मारूं । तैं भोजनूं क्यूं मूकियो, पातसाह आगै ?'[14] ताहरां हमीर विचारियो–'कासूं कीजै ?'[15] ताहरां हमीर छोटै भाई दौलतखांननूं तेड़ियो[16] । तेड़नै[17] पूछियो– भाई ! कासूं विचार कीजै ? मुसकिल घणी ही आई छै ।[18] जे रुपिया द्यां तो जाट-गूजर कहावां । हाडोतीमें भूंडा दीसां । न द्यां तो मारीजां ।'[19]

---

1 तब भोजने उस घोड़े और उस वागेको खवासको बख्शिश कर दिया । 2 दूसरा । 3 दूसरे । 4 उस घोड़े पर खवास चढ़ा । 5 भोज बादशाहको मुजरा करके पीछा लौटा । 6 दूदेने दरबारसे निकलते हुए उस वागेको पहने हुए खवास था इसलिये, खवासको कटारी मार दी । 7 तब खवास चिल्लाया । 8 तब दूदेने घोड़ा अपूठा (उल्टा) लौटा कर कहा कि अरे ! जांच गलत की । 9 मैंने जांच पक्की की थी । 10 राव सुरजनका बेटा होकरके कटारी लगनेसे क्यों करके ? 11 भोजको बादशाहके आगे किसने भेजा ? 12 तब दूदा तीन हजार परवरेत सवारोंके साथ हमीरके गांव किरवाड़में जाकर उतरा । 13 मुझको भी लाख रुपये दे नहीं तो मारूंगा । 14 तूने भोजको बादशाहके आगे क्यों भेजा ? 15 क्या किया जाय ? 16 बुलवाया । 17 बुला करके । 18 बहुत ही मुश्किल आ बनी है । 19 यदि रुपये दें तो जाट-गूजर कहलाएँ, हाडोतीमें बुरे दीखें और नहीं देते हैं तो मारे जाते हैं ।

ताहरां दौलतखांन कहै–'हमीरजी ! थे यूं करो । दूदैरै कटकमें पचीस ग्रमराव छै ग्रांपांनूं मारणवाळा ।[1] तिके थे मारो तो दूदो ग्रपूठो जावै ।'[2] ताहरां हमीर कह्यो–'रे दोला ! सारो हाडोतीरा रजपूत मारणा ? सारो सगा-सैण क्यूंकर मारीजै ?'[3] ताहरां दोलो कहै–'वडा ठाकुर समझ !' ताहरां हमीर कह्यो–'भलां भाई ।'[4] ताहरां हमीर दूदैनूं परधांन मेल्हिया ।[5] कह्यो–जी, लाख रुपिया थांनूं ही दईस ।[6] भोजनूं पटू हुयनै दरवाया छै, थांनूं घररा दईस ।[7] पण यूं करो[8], पचास हजार तो रोकड़ा दईस नै पचास हजारमें घोड़ा हाथी देईस ।' ताहरां दूदै कहियो–'वाह, वाह, भलां ।'[9] ताहरां परधांनां वात थपाड़ी ।[10] ताहरां दूदै कहियो–'जावो, हमीरनूं ल्यावो ।' ताहरां हमीररा परधांनां कह्यो–'रावळै ग्रमराव पचीस छै, तियांरी मोनूं बांह हुवै ।[11] ग्राज पछै दूदोजी जे वळै हमीरनूं क्युं ही करै तो ईयांरी बांह छै ।[12] ताहरां दूदै ग्रमरावां सारा ही नूं तेड़िनै[13] कह्यो–'जावो, हमीरनूं बांह द्यो ग्रर हाथी घोड़ा ल्यावो ।' ताहरां ग्रमराव पचीसां चढ ग्रर ग्राया । हमीर ग्रादमी ४०० जीनसालिया कर तयार एकै ठांम राखिया छै ।[14] उवांनूं पण भेद न दीनो ।[15] कहियो–'जी, लाख-लाख रुपियांरो भरणो छै । कि-जांणां कासूं नीवड़ै ? थे चोकस ऊभा रहिज्यो ।[16] जे कोई वात विगड़ै तो थे ग्राय ग्रणी भेळिया ।'[17]

ग्रापसमें भाईयां ग्रो ग्रालोच कियो हुंतो कै म्रग घोड़ै ऊपर उपाव करस्यां ।[18]

---

1 दूदेके कटकमें ग्रपनेको मारने वाले पच्चीस उमराव हैं । 2 उनको तुम मार दो तो दूदा वापिस लौट जाये । 3 ग्ररे दौला ! समस्त हाडोतीके राजपूतोंको मारना ? सभी संबधी ग्रौर सज्जनोंको कैसे मारा जाय ? 4 ग्रच्छी बात है भाई । 5 भेजे । 6 लाख रुपये तुमको भी दूंगा । 7 भोज को जागीर होकरके दिलवाये हैं, तुमको घरसे दूंगा 8 परन्तु ऐसा करो । 9 वाह-वाह ग्रच्छी बात । 10 तब प्रधानोंने यह बात नक्की की । 11/12 ग्रापके जो पच्चीस उमराव हैं, उनकी साक्षी मेरेको हो जाये । ग्राज पीछे दूदोजी हमीरके विरुद्ध फिर कुछ करे तो इनकी साक्षी है । (बाँह= (१) शपथ । (२) वचन । (३) साक्षी । (४) मत । (५) विश्वास, भरोसा) 13 बुला करके । 14 हमीरने ४०० कवचधारी ग्रादमी एक जगह (गुप्त स्थान) पर तैयार करके रखे हैं । 15 उनको भी भेद नहीं दिया । 16 क्या जानें क्या हो जाय, तुम सावधान रहना । 17 जो कोई बात बिगड़ जाय तो तुम ग्राकर युद्ध कर लेना । 18 भाइयोंने परस्पर यह परामर्श (निश्चय) किया था कि मृग-घोड़ेके (मूल्यके) लिये लड़ाई करेंगे ।

ताहरां वनो गौड़ श्रौर धनो गौड़ दूदैरै प्रधान छै, तिके श्राया छै। घोड़ा हाथियांरी कीमत मंडै छै।[1] कागळ[2] हाथ मांहै छै। घोड़ो जिको ४०० सौरो छै, तिकैरा ४० मांडै छै। हजाररो छै तैरो सवहेक मांडै छै।[3]

ताहरां हमीररी बेटी सदाकुंवर, तिकै वात जांणी।[4] तिका बोली–म्हारो देवर छै सु उबारो।' कह्यो–'हिवै क्युंकर ऊबरै ?'[5] ताहरां वा बोली–'न उबारो तो हूं कूकूं छूं–'चूक छै', का उबारो।''[6] ताहरां दोलै जायनै उवैनूं[7] कह्यो–'थांनूं[8] बाई भीतर बुलावै छै।' ताहरां कह्यो–'जी, पछै श्राईस।'[9] ताहरां दोलै कह्यो–'पछै नहीं, पहली श्रावो। काई मांहरी वात कहसी।'[10] ताहरां श्रायो। ताहरां मांहै तेड़िनै कह्यो–'जी, वात सुणो।' ताहरां वात सुणनै श्राघो[11] श्रायो। ताहरां तरवार कटारी काढि लीधी[12] श्रर श्राप बाहिर श्राई। छोकरी कपाट श्राडा दिया।[13] ताहरां श्राफळियो।[14] कह्यो–'भोजाई, कासूं कियो ? हूं श्रापच कर मरीस।'[15] ताहरां कह्यो–'चुप करो।'

ताहरां गोविंद कवियो-चारण हुंतो मांहै।[16] ताहरां हमीर कह्यो—'रे दोला ! चारण ऊबरै।' कह्यो—'जी, क्युंकर ऊबरै ?'[17] कह्यो—'ज्युं जांणै त्युं उबार।'[18] ताहरां दोलै कह्यो—'गोयंदजी थे सीरावणी करो ?'[19] ताहरां चारण कह्यो—'वाह-वाह।' ताहरां हमीर चारणनूं लेजायनै मिठाई पुरसी[20]। चारण तो जीमण बैठो।

ताहरां मोहण दहियो वरस १५ मांहै छै, तिकै ढाल तरवार ले जायनै श्रापरी मा श्रागै नांखी। कह्यो—'मा ! म्हे हथियार युंही

---

1 घोड़े श्रौर हाथियोंका मूल्य लिखा जा रहा है। 2 कागज। 3 जो घोड़ा चार सौ रुपयोंकी कीमतका है उसकी कीमत चालीस रुपये लिखते हैं श्रौर जो एक हजारकी कीमतका है उसकी कीमत एक सौ रुपये लिखते हैं। 4 उसने बातको जान लिया। 5 श्रब कैसे बचे ? 6 नहीं बचाते हो तो मैं हल्ला करती हूं कि धोखा है, नहीं तो उसे बचा लो। 7 उसको। 8 तुमको। 9 पीछे श्राऊंगा। 10 हमारे संबंधमें कुछ बात कहेगी। 11 श्रागे। 12 निकाल ली। 13 दासीने किंवाड़ जड़ दिये। 14 तब पछड़ा (तड़फड़ाया) 15 मैं पछाड़ खा कर (तड़फड़ा कर) मर जाऊंगा। 16 तब कविया-चारण गोविंद भी भीतर था। 17 कैसे बचे ? 18 जैसे हो तैसे बचाश्रो। 19 गोविन्दजी ! तुम नाश्ता करो। 20 परोसी, परोस दी।

बांधां ? डंड जाट-गूजरां दाई भरां ?' ताहरां मा बोली—'बेटा ! हथियार नांख ना। हथियार संभाहि।[1] बाई सदारो देवर हुंतो, सु सदा अणायो, सो चूक छै। मृग घोड़ो कोई छै, तीयै ऊपर उपाव हुसी। तूं वेगो जाह। वैस नां।'[2] ताहिरां मोहण हथियार संग्राहिनै ऊठियो।[3] तितरै अै सिरदार घोड़ा मांडता-मांडता मृग घोड़ै आया।[4] ताहरां कह्यो—'जी, मृग-घोड़ो छै, मांडो।' ताहरां वनो गौड़ बोलियो। कह्यो—'एक हजारमें मांडस्यां।' ताहरां कह्यो—'जी, मृग छै।' वनो गौड़ बोलियो—'मृग छै तो कासूं करां ?'[5] ताहरां कह्यो—'जी, वाध मांडो।'[6] ताहरां वनो गौड़ कहै—सुण रे दहिया ! का गाडर आंपणै भावसूं मूंडावै; नहीं तो पकड़ अर ऊंधी नांखै, गुदी ऊपर पाव दै ऊंधी नांख मूंडै, ताहरां मूंडावै।[7]' ताहरां दोलो दहियो बोलियो—'सुण रे गौड़ ! का ? एक सेलो म्हांकै ही हाथको आवै छै।'[8] ताहरां कागळ-लेखण तो वनैरै हाथ मांहै ही रह्या।[9] मृग-घोड़ैरै पछाडचां मांहै पूंदांत्राणो जाय पड़ियो।[10] तितरै कूकवो हूवो।[11] ताहरां घर मांहैसूं च्यार सै बगतरिया नीसरिया।[12] लोह वाजियो।[13] सारां ही नूं भूड़ नांखिया।[14] दूदैरो सारो ही साथ कूट मारियो।[15] दूदै सांभळियो[16]—'मारणहारा मारिया।'

ताहरां हमीर दहियै साथ कर जायनै कह्यो—'म्हांरा-म्हांरा मारणहारा म्हां मारिया।[17] हिवै दूदा तूं परहो जायै, का म्हे तोनूं

---

1 शस्त्र डाल मत, शस्त्र धारण कर 2 बाई सदा (सदा कुंवरि) का देवर था जिसको सदाने बुला लिया है अतः कोई धोखा है। कोइ मृग-घोड़ा है, जिसके ऊपर झगड़ा होगा, तू जल्दी जा, बैठ मत। 3 मोहन शस्त्र धारण करके खड़ा हुआ। 4 इतने में सरदार भी घोड़ोंका मूल्य लिखते-लिखते मृग-घोड़ेकी कीमत लिखनेके लिये उसके पास आये। 5 मृग है तो क्या करें ? 6 अधिक (मूल्य) लिखो। 7 भेड़ या तो सीधी तरहसे मुंडवा लेती है; नहीं तो पकड कर औंधी डाल देते हैं और गर्दन पर पांव देते हैं, इस प्रकार औंधी डाल कर मूंडते हैं तब मुंडवाती है। 8 और नहीं तो ? यह देख, एक भाला हमारे हाथका भी आता है। 9 (ऐसा कह करके उसने भाला मार दिया सो) कागज कलम बनेके हाथ ही में रह गये। 10 और मृग-घोड़ेकी पिछाड़ियोंमें चूतड़ोंके बल जा गिरा। (पिछाड़ी=घोड़ेको पिछले पाँवोंसे बाँधनेका रस्सा।) 11 इतनेमें शोर हुआ। 12 तब घरमेंसे चार सौ कवचधारी निकले। 13 शस्त्रोंके प्रहार हुए। 14 सबको मार डाला। 15 दूदेके सभी साथ वालोंको मार कर खतम किया। 16 दूदेने सुना। 17 हमारे-हमारे मारनेके थे उनको हमने मार दिया।

ही मारस्यां ।[1] जिसड़ै तू इसड़ा रजपूत जोड़ीस, तितरै म्हे परहा नीसर जावस्यां ।[2] हिवै दूदा तूं जाह । म्हे तोनूं मारां नहीं । म्हे थारै बापरा रजपूत छां, तैसूं काई न करां छां ।'[3]

ताहरां दूदो तो चढनै बूंदी गयो । हमीर सुखसौं घरै बैठै राज कियो ।

जाहरां कितरैहेके वरसै दूदो रांमसरण हुवो,[4] ताहरां भोज बूंदी आयो । भोजनूं पातसाह धरती दीधी । भोज देस मांहै आयो, ताहरां भोज, गौड़ां नैं दहियांरो वैर भागो । गोपाळदास गौड़ दहियै परणायो । वैर भागो ।[5] भोज अमरावांरा वैर दहियांसूं भंजाया ।[6] देस मांहै वडो चैन हुवो ।

॥ इति दूदै भोजरी वात संपूर्ण ॥* शुभं ॥

---

*दूदाके मरनेके बाद उसका भाई भोज बूंदीका शासक बना । इसने २२ वर्ष राज्य किया । यह बड़ा वीर था । अहमदनगरकी प्रसिद्ध वीरांगना चांदबीबीसे लड़ कर इसने अहमदनगर पर विजय प्राप्त की थी । इसीलिये बादशाहने एक बुर्जका नाम 'भोज बुर्ज' रखा था । चांदबीबी इस युद्धमें अपनी सैकड़ों सैनिकाओंके साथ वीरगतिको प्राप्त हुई । इसकी रूपवती कन्याको बादशाह अकबरने मांगा था । तब उसने बिना सगाई किये हुए ही सिवानेके वीर राठौड़ राव कल्ला रायमलोतके साथ सगाई कर दी है, का कह दिया । इस पर बादशाहने कल्लाको सगाई छोड़ देनेको कहा । कल्लाने भोजके धर्म संकटको अपने ऊपर लेकर सगाई छोड़ देना स्वीकार नहीं किया और उसके साथ विवाह कर लिया । अकबर कल्लासे बहुत बिगड़ा और उसने सिवाने पर आक्रमण कर दिया । राव कल्ला बड़ी वीरतासे लड़ कर काम आया । भोजने अपनी दोहिती (आमेरके राजा जगतसिंहकी पुत्री) का विवाह जहांगीरके साथ करनेके प्रस्तावको भी अटका दिया था । इसलिये जहांगीर भी इससे नाराज हो गया था ।

---

1 अब दूदा तू चला जा नहीं तो तेरेको भी मार देंगे । 2 जितनेमें तू ऐसे राजपूतोंको जोड़नेका प्रयत्न करेगा, इतनेमें तो हम दूर निकल जायेंगे । 3 हम तुमारे बापके राजपूत हैं, इसलिये अब तेरे साथ कुछ नहीं करते । 4 तब कितनेक वर्षोंके बाद दूदा जब मर गया । 5 दहियोंने गोपालदास गौड़को ब्याह दिया तब बैर मिट गया । 6 दहियोंसे जो उमरावोंकी शत्रुता चलती थी उसे भोजने मिटा दिया ।

।। श्री रांमजी ।।

अथ क्यांमखांन्यांरी उत्पत नै फतैहपुर जूंझणूं वसायो तैरी वात

दरैरैरा वासी चहुवांण; तिकां ऊपर हंसाररो फोजदार सैद नासर दोड़ियो ।[1] तद दरैरैरो मारियो अर लोक सरब भागो ।[2] पाछै बाळक २ पालणा मांहै रहि गया—एक चहुवांणरो नै एक जाटरो ।[3] पछै बाळक २ फोजदाररै नजर गुदराया ।[4] ताहरां फोजदार दीठा । हुकम कियो–'जु हाथीरै महावतनूं सूंपो अर दूध पावो । म्होटा करो ।'[5]

ताहरां दूसरै दिन फोजदार हंसार आयो । ताहरां फोजदार सैद नासर दोनूं बाळकांनूं आपरी बीबीनूं सांपिया[6] अर कह्यो–'जु हम दो लड़के लाये हैं, सो इनको तुम पाळो ।' ताहरां दोनूं बाळकांनूं बीबी पाळिया । लड़का वरसै १० तथा १२रा हुवा । ताहरां हांसीरै सेखनूं सांपिया ।[7] तद कितरैके दिनां सैद नासर फोत हुवो ।[8] तद सैद नासररा बेटा अर औ दोनूं पुतरेला पातसाह लोदी पठांण, नांम बहलोल, तैरी नजर गुदराया ।[9] ताहरां सैद नासररा बेटा पातसाहरी नजर उसड़ा न आया अर ओ चहुवांण नजर आयो ।[10] तैरो नांम क्यांमखांन हुवो, सु ईयैनूं सैद नासररो मुनसब हुतो सु दियो ।[11] अर जाटरो नांम जेनूं हुतो, तैरा जेननदोत कहाया, सो जूंझणूं-फतैहपुर

---

1 दरेरेके निवासी चौहानोंके ऊपर हिसारका फौजदार सैयद नासिर चढ़ कर आया । 2 तब दरेरेको लूटा और वहांके लोग सब भाग गये । 3 उस समय दो बालक पालनेमें रह गये । उनमेंसे एक चौहानका था और एक जाटका । 4 फिर उन दोनों बालकोंको फौजदारकी नजर पेश कर दिया । 5 हुक्म किया कि हाथीके महावतके सुपुर्द कर दो और दूध पिलाओ । पालन-पोषण करो । 6 तब फौजदार सैयद नासिरने दोनों बालकोंको अपनी बीबीके सुपुर्द कर दिया । 7 तब हांसीके शेखको सुपुर्द कर दिया । 8 तब कितनेक दिनोंके बाद सैयद फौत हो गया । 9 तब सैयद नासिरके बेटे और इन दोनों पोषित पुत्रोंको पठान-बादशाह बहलोल लोदीकी नजर पेश किया । 10 सैयद नासरके बेटे वैसे (योग्य) नजरमें नहीं आये और यह चौहान नजरमें चढ़ा । 11 उसका नाम क्यामखान दिया गया और सैयद नासिरका जो मनसब था वह इसे दे दिया ।

मांहै केहेकि रहै छै ।[1] अर पातसाह थोड़ो बीजांनूं पण दियो ।[2] अर क्यांमखांननूं हंसाररी फोजदारी दीवी ।[3] तद ईयै दीठो–'जु कोइक रहणनूं ठिकांणो कीजै तो भलो ।'[4] ताहरां जूंझणूं आछी दीठी ।[5] ताहरां चोधरीनूं तेड़ियो ।[6] कह्यो–चोधरी ! तूं कहै तो म्हे ठिकांणो रहणनूं करां ।'[7] ताहरां चोधरी बोलियो–'भलां, ठोड़ वणावो, पण म्हारो नांम रहै त्युं करीज्यो ।'[8] ताहरां कह्यो–'भलां ।' ताहरां चोधरीरो नांम जूझो हुतो, सु तिकैरै नांम जूंझणूं वसायो ।[9] अबै जूंझणूं मांहिली हीज धरती काढनै फतैहपुर वसायो, नै अै भोमिया थका रहै ।[10]

पछै कितरैहेके दिनां अकबर पातसाह मांडण कूंपावतनूं जूंझणूं जागीरमें दीवी हुती ।[11] अर फतैहपुर इण जूंझणूं मांहिली हीज हुती सु फतैहपुर गोपाळदास सूजावत कछवाहैनूं दीवी हुती सु भोमिया थको रहतो ।[12] मुकातो देतो । सु पछै जहांगीर पातसाहरो चाकर हुवो । सु पहला तो समसखां जूंझणूं चाकर रह्यो नै पछै अलम[फ]खांरै* रह्यो ।[13]

---

1 और जाटका नाम जेनूं था, इसके वंशज जेननदोत (जैनंदोत) कहाये, सो जूंझनूं फतहपुरके प्रदेशमें कहींक रहते हैं। 2 और बादशाहने (उसमेंका भाग) थोड़ा दूसरोंको भी दिया। 3 और क्यामखानको हिसारकी फौजदारी दी। 4 तब इसने देखा कि कहीं रहनेके लिये कोई ठिकाना अपने लिये भी किया जाय तो ठीक हो। 5 तब इसको जूंझनूं अच्छी लगी। 6 तब चौधरीको बुलाया। 7 चौधरी ! तू कहे तो हमारे रहने के लिये कोई ठिकाना यहाँ बनायें। 8 अच्छी बात है, अपने लिये ठौर बना लो, परन्तु उसमें मेरा भी नाम रहे ऐसी बात करना। 9 चौधरीका नाम जूझा था सो उसके नाम पर जूंझणूं गांव बसाया। 10 अब जूंझणू ही की धरतीका कुछ भाग निकाल कर फतहपुर बसाया और उसमें ये भोमियेकी हैसियतसे रह रहे हैं। 11 पीछे कितनेक दिनोंके बाद अकबर बादशाहने मांडण कूंपावतको जूंझनूं जागीरमें देदी थी। 12 और फतहपुर इस जूंझनूंमें से ही था जिसको कछवाहा गोपालदास सूजावतको दे दिया था सो भोमिया बना हुआ रहता था। 13 सो पहले तो जूंझणूंमें शम्सखांका चाकर रहा और फिर अलफखांके यहाँ रहा।

---

*यह अलफखां संभवतः प्रसिद्ध कवि न्यामतखां उपनाम 'जान कवि'के पिता फतहपुर (शेखावाटी) क्यामखानी नवाब हों। जान कविका 'क्यामखां रासा' क्यामखानियोंके

(शेष टिप्पणी २७५ पर)

दूहा

पहली तो हिंदू हुता, पीछै भये तुरक्क ।
ता पीछै गोलै भये, तातैं वडपण तुक्क ॥ १
धाये कांम न आवही, क्यांमखांनि गंदेह ।
बंदी आद जुगाद के, सैद नासर हंदेह ॥ २[1]

॥ इति क्यांमखांन्यांरी वात संपूर्ण ॥

---

१ दोहोंका भावार्थ—पहले तो यह हिंदू थे और पीछे तुर्क हो गये । जिसके पीछे ये गोले हो गये । इसलिये बड़प्पन तुक्के जितना ही (थोड़ा ही) रहा ॥१॥ क्यांमखानी गंदे हैं वे अघाये हुए काम में नहीं आते, क्योंकि प्रारंभसे ही वे सैयद नासिरके बंदे (चाकर) रहे हैं ।

इतिहासका प्रसिद्ध और मूल्यवान ग्रंथ है । राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानसे यह सर्व प्रथम प्रकाशित हो चुका है । जान कविके बुद्धि सागर, सतनांवा और अलफखांकी पैड़ी आदि ७५ ग्रंथ जाननेमें आये हैं । फदनखांकी पुत्री ताज बीवी भी इसी वंशकी श्री कृष्णकी परम भक्त-कवयित्री थी और गोस्वामी विट्ठलनाथजीकी शिष्या थी । ताज सम्राट अकबरकी पत्नी थी । सम्राट इसकी इस भक्ति-भावनासे आकर्षित था । इसकी कोई दर्जन भरसे अधिक रचनाएँ जाननेमें आई हैं । दौलतखां आदि कई विद्यारसिक, भक्त और कवि इस वंशमें हो गये हैं ।

॥ श्री रांमजी ॥

अथ दौलतावादरा उमरावांरी वात

दौलतावादरा उमराव ईयै तरह[1] ग्राय मिळिया पातसाह जहांगीरसूं—

ताहरां पैहली तो जहांगीरसूं उदैरांम ब्रांह्मण पंच हजारी थो सु ग्राय मिळियो ।

पछै जादूराय ग्राय मिळियो ।

तठा पछै ग्राकूतखां[2] पंच हजारी पातसाहसूं ग्राय मिळियो ।

सु यां सारां ही उमरावांनूं पातसाह जहांगीर पंच हजारी किया ।[3]

ताहरां पछै मलकंबर[4] निजांमसाहनूं कह्यो–'जु म्हारो बेटो फतैसाह छै तैसूं दौलतावाद जासी, सु ईयैनूं मारिस ।'[5] ताहरां निजांमसाह कह्यो–'ग्रो म्हारो[6] मांमो छै ।' ताहरां मलकंबर कह्यो–'थारो[7] मांमो पण[8] म्हारो बेटो छै ।' पछै मारियो नहीं ग्रर कैद मांहै कर राखियो ।[9] ग्रर कह्यो–'जु ईयैनूं दीवांनगीरी कदै देणी नहीं, जो देवो तो सिपाहीपणैरो रिजक दिया ।[10] पछै मलकंबर मुंवो ।[11] तद ईयैनूं दीवांण कियो ।[12]

पछै कितरैहेंके दिनां निजांमसाहनूं मोतीमहल मांहै मारियो । ग्रर निजांमसाहरो बेटो छोटो हुतो तीयैनूं टीको दियो ।[13]

पछै इतरा उमरावांनूं छडाया–[14]

---

1 इस तरह। 2 याकूतखां। 3 इन सभी उमरावोंको बादशाह जहांगीरने पंच-हजारी बनाया। 4 मलिक ग्रंबर। 5 सो इसको मार दूंगा। 6 मेरा। 7 तेरा। 8 परन्तु। 9 फिर मारा तो नहीं परंतु कैद कर दिया। 10 इसको दीवानगीरी कभी नहीं देना, यदि देग्रो तो सिपाहीपनेकी जीविका देना। 11 पीछे मलिक ग्रंबर मर गया। 12 तब इसको दीवान बनाया। 13 जिसको टीका दिया। 14 फिर इतने उमरावोंको कैदसे छुड़ाया।

मुकरबखां। सरफराजखां। साहबखां। दिलावरखां। अर औ साहजीसूं मिळिया। सु एक वेळा मिळ नै पाछा जाय बैठा।[1]

पछै जद छोकरो टीकै बैठो, ताहरां पातसाह फेर मुहिम कीवी।[2] सु मोहबतखां चत्रतोरथ दिसा मोरचो लगायो, सु दिन १५में तोड़ियो।[3] अर भीतरलो गढ छठै महीनै लियो[4] अर बीजा[5] उमराव बीजापुर गया। साहजी पछै बीजापुर गयो। सु दौलताबादरा गढांरी ४५ कूंचियां हुती[6], सु साहजहां आयो जद[7] अलावरदीखांनूं मेल्हनै[8] गढ १२ साहजीनूं दिया नै बाकीरा गढ लिया।

॥ इति दौलताबादरा उमरावांरी वात संपूर्ण ॥

॥ शुभं भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥ श्रीरस्तु ॥

---

1 सो एक बार मिल करके वापिस जा बैठे। 2 तब बादशाहने फिर चढाई की। 3/4 मोहबतखानने चित्र(?) तीर्थकी ओर मोर्चा लगाया जिसको १५ दिनोंमें तोड़ दिया, परंतु भीतरके महल पर छटे महीने जाते अधिकार हुआ। 5 दूसरे। 6 थीं। 7 जब। 8 भेज कर।

आदिदास्त[1]

खांनदोरारो नांम आगै साबर हुतो, सु साहजिहां पातसाहरै त्रिखै मांहै नीसरियो हुतो ।[2] सु मालक मलकंबररै तो इतरो ठीक हुतो जु हिंदुस्तांनी कोई गढमें राखतो नहीं । ढूंढ काढतो, सु पैसण न पावै ।[3] ताहरां पछै खांनदोरा एकी तुरकणीनूं जायनै मिळियो नै कह्यो[4]–'जु मोनूं मलकंबररै जायनै वेच ।'[5] ताहरां तुरकणी जायनै वेचियो । गढ मांहै वड़ियो ।[6] सरब गढरो भेद लियो । लेयनै जद साहजिहां टोकै बैठो, तद जाय मिळियो । सरब हकीकत कही ।[7]

---

1 याददाश्त (स्मरण रखनेके लिये नोट रूपमें लिखी हुई कोई वात) । 2 सो शाहजहां वादशाहके संकटकालमें निकल गया था । 3 मलिक अंवरके यहां इतना ठीक था कि किसी हिन्दुस्तानीको गढ़में नहीं रखता था । ढूंढ करके निकाल देता था जिससे कोई गढ़में प्रवेश नहीं करने पाता था । 4/5 तव खानदोरा एक तुर्कनीसे जाकर मिला और उससे कहा कि मुझे मलिक अंवरके यहां वेचदे । 6 गढ़में घुस गया । 7 साहजहां जब गद्दी पर वैठा तव जाकर उससे मिला और सव हकीकत कह दी ।

अादिदास्त

जद ग्राकूंतखां नै मोहबतखां रीसायो, तद कह्यो–'तूं खबर पोंहचावै छै ।'[1] 'ग्राकूंतखां पण दीठो–'गढ जावै ।' तद नीसर गयो ।[2] पछै दिन ५।६ हुवा, तद दोपहररो नगारो देयनै चढियो ।[3] राव दूदैसूँ लड़ाई कीवी । सु राव दूदो कांम ग्रायो । ग्रर ग्राकूंतखां पण कांम ग्रायो, घड़ी ५ तथा ६ दिन वांसलै थकै ।[4]

खेलूजी मालूजी ग्राया तद ग्राकूंतखां ग्रायो, तद ग्रठैहीज ग्रायो ।[5]

खांनखांना पछै ग्रकबर पातसाहरै दीवांण सेख फरीद हुवो ।[6]

जहांगीर पातसाहनूं प्रयागसूं बुलायनै पातसाही दीवी, घड़ी दोय तद दीवांण हुवो ।[7]

पछै वरस दोय खांनखाना हुवो ।[8]

वरस २ दोय करनै, सु तोडरमल मरतो कहि गयो थो सु दफतर जोवाड़ियो ।[9]

खेलूजी मालूजी कनड़रा पाहाड़ मांहै कोळी रहै, त्यांरा चाकर हुता ।[10] तद मलकंबर कह्यो–'जु यां कोळियांनूं मारो तो ग्रा धरती थांनूं देवां ।[11] ताहरां खेलूजी मालूजी कोळियांनूं मारनै वा सारो ही धरती लीवी । पछै ग्राकूंतखां तद ग्राइ मिळियो । पछै ग्रै ही ग्राय मिळिया ।[12]

---

1 जब याकूतखां ग्रौर मोहबतखां परस्पर नाराज हो गये तब कहा कि तू खबर पहुंचाता है । 2 याकूतखांने देखा कि गढ जा रहा है, तब वहांसे निकल गया । 3 तब दुपहरको नगाड़ा बजवा कर चढ़ा । 4 पांच-छः घड़ी पिछला दिन शेष था तब याकूतखां भी काम ग्राया । 5 खेलूजी ग्रौर मालूजी ग्राये, तब याकूतखां भी यहां ही ग्रा गया । 6 खानखानाके बाद ग्रकबर बादशाहका दीवान शेख फरीद हुग्रा । 7 उसके समय केवल २ घड़ी दीवान रहा । 8 दो वर्ष तक खानखाना रहा । 9 दो वर्षके बाद टोडरमलने मरते समय कहा था, उस दफतरको ढुंढवाया । 10 खेलूजी मालूजी कनड़के पहाड़ोंमें रहने वाले कोलियोंके चाकर थे । 11 मलिक ग्रंबरने इनसे कहा कि यदि तुम इन कोलियों को मार दो तो इनकी यह धरती तुमको देदूं । 12 फिर याकूतखां भी ग्रा मिला ग्रौर उसके बाद ये भी ग्रा मिले ।

॥ श्री गणेशायनमः ॥

अथ सांगमराव राठोड़री वात लिख्यते

सांगमराव जोपसाहरो ।[1] राजा वीसळदे सोळंकी गुजरातरै धणीरो परधांनगी करतो ।[2] ताहरां सांगमराव मांहै क्युंहेक खायकी नीसरी ।[3] ताहरां गोरो वादळ सोनगरा परधांन थापिया वीसळदेजी ।[4] ताहरां गोरो वादळ सांगमराव ऊपर साथ करनै आया ।[5] वडो लड़ाई हुई । सांगमराव नीसरियो । आपरै देस में जाय महेवै, जाळोर वीच रह्यो ।[6]

युं रहतां थकां, एक दिनरो समाजोग । सांवत संढायच चारण थटैरै पातसाहरै घोड़ै दरियाई ऊपर चरवादार हुंतो ।[7] एक दिन सांवत घोड़ो लेनै नीसरियो । दिन ३ तीन सारीखो वूहो, ताहरां युं करतां थाको हुवो ।[8] तद सांगमरावरै गांमरै ताळ* मांहै आयनै सूतो ।[9] ताहरां घोड़ैनै घोड़ियांरी वास पड़ी । घोड़ो हाथसूं ढळ गयो ।[10] ताहरां घोड़ी ताळ मांहै हुंती सु घोड़ो हेकण घोड़ीनूं लागो ।[11] सांवत जागियो । देखै तो घोड़ो नहीं । घोड़ो गयो । दोड़ देखै तो घोड़ो हेके घोड़ीनूं लागो छै ।[12] ताहरां घोड़ैनूं जायनै पकड़ियो नै सांवत हेलो मारियो । कह्यो-'जु भाई ! कोई घोड़ियांमैं हुवै तो

---

1 सांगमराव जोपसाहका लड़का । (जोपसाह राव आसथानका लड़का था) 2 यह गुजरातके स्वामी वीसलदेव सोलंकीके यहां दीवानगी करता था । 3 सांगमरावने कुछ गवन कर लिया जिसका पता पड़ गया । 4 तब वीसलदेवने गोरा वादल सोनगरोंको प्रधान बनाया । 5 गोरा वादल सांगमरावके ऊपर चढ करके आये । 6 सांगमराव वहांसे निकल गया और अपने देश मारवाड़में महेवे और जालोरके बीच आकर रहा । 7 इस प्रकार यहां रहते हुए एक दिन यह प्रसंग बना । सांवत संढायच-चारण जो थट्टेके बादशाहके दरियाई-घोड़े का चरवादार था । 8 तीन दिन तक चलता रहा सो थक गया । 9 तब सांगमरावके गाँवके नजदीक तालमें आकर सो गया । 10 घोड़ा छूट गया । 11 तालमें घोड़ियां खड़ी थीं उनमेंसे एक घोड़ीसे वह घोड़ा जा लगा । 12 दौड़ कर देखता है कि घोड़ा एक घोड़ीसे लग गया है ।

पाठान्तर—*'सांगमरावरै गाँव रै ताळ' केस्थान 'सागमरावरै गाँम रैतळा' पाठ एक प्रति में लिखा है ।

सांभळीज्यो । घोड़ी नूं थटैरै पातसाहरो दरियाई घोड़ो लागो छै ।[1] बीज संभाळ लेज्यो ।'[2] इतरो कहि चालतो रह्यो ।[3] घोड़ो दरयाई हुतो[4] सु सांवत चीत्रोड़[5]रै रांणैनूं लेजायनै[6] निजर कियो । ताहरां रांणै सांवतसीनूं गांम १ सांसण दियो ।[7]

अर उण घोड़ीरै पेटरी वछेरी हुई । नांम बोर हुई, सांगमरावरै घरै ।[8] नै ते चढियां थकां घणो ही गुजरात देसरो उजाड़ कियो ।[9] तिको सांगमराव कुंडळ परणियो आचानणनै ।[10] अर साळैरो नांम विसनदास । तिकै विसनदास सांगमरावजी पासै बोर घोड़ी मांगी नै कह्यो–'म्हारै भाटियांसूं वैर छै । घोड़ी ईयै चढनै वैर लेवां ।'[11] ताहरां सांगमरावजी विसनदासनूं नीछो दियो ।[12] पण आखर घोड़ी विसनदास ले गयो । विसनदास लेजायनै घोड़ी बोरनै घोड़ो दिखायो ।[13] वरस १नूं व्याई । वछेरो जायो ।[14]

जवै बाध सावती कर वछेरी बोर विसनदास पाछी मेल्ह दीवी ।[15] कह्यो–'जी, घोड़ो थांहरी ल्यो । हाजर छै । वैर नीसरियो नहीं ।'[16]

ताहरां सांगमरावजी अमल कर घोड़ी ऊपर चढिया, ताहरां खुरी कीवी ।[17] घोड़ी हुती सु नहीं ।[18] ताहरां सांगमरावजी विसनदासनूं कहायो । कह्यो–'घोड़ी व्याई । कूड़ कियो ? वेम उरहो

---

1 घोड़ियोंमें कोई आदमी हो तो सुन लेना कि घोड़ीको थट्टेके बादशाहका दरियाई घोड़ा लगा है । 2 उसके बीज (नस्ल)को सम्हाल लेना । 3 इतना कह कर चलता बना । 4 था । 5 चित्तौड़ । 6 लेजा कर । 7 तब राणाने सांवतसीको एक गांव शासनमें दिया । 8 सांगमरावके घर उस घोड़ीके पेटसे बोर नामकी एक बछेरी उत्पन्न हुई । 9 उस पर चढ़ कर उसने गुजरात देशका बहुत बिगाड़ किया । 10 सांगमरावने कुंडलमें आचानणसे विवाह किया । 11 इस घोड़ी पर चढ़ करके अपने वैरका बदला लूं । 12 तब सांगमरावजीने मना कर दिया । 13-14 विसनदासने लेजा कर बोरको घोड़ा दिखा दिया । एक वर्ष बाद व्या गई । बछेरा उत्पन्न हुआ । 15 खूब जी खिला कर और पुष्ट बना कर बोरको विसनदासने वापिस भेज दी । 16 तुमारी घोड़ी लेओ । हाजिर है, वैर तो निकल नहीं सका है । 17 तब एक दिन अमल-पानी करके (अफीम लेकर के) घोड़ी पर चढ़े और उसको फिराया । 18 मालूम हुआ कि घोड़ी जैसी थी वैसी नहीं है ।

मेल्हो ।'[1] ताहरां विसनदास सांगमरावजीनूं कहायो–'थे बेहनेई छो, तीयै कारण आसंगो कियो । वेम देवां नहीं ।'[2] ताहरां सांगमराव मांनी नहीं नै लड़णनूं चढियो । ताहरां आचानण सांगमरावजीनूं कहियो–'जु राज ! चढीजै नहीं । घोड़ीरो वेम हूं ले आईस ।'[3] ताहरां आचानण पीहर गई । जायनै भाई विसनदास पासा वछेरो मांगियो । कह्यो–'भाई ! हूं जांणीस म्हनै दायजै दियो ।'[4] ताहरां विसनदास तो वछेरो देवै नहीं । ताहरां आचानण भाई विसनदासरै धरणै बैंठी ।[5] आचानण दिन २ भूखी रही । पण विसनदास तो मांनै नहीं । ताहरां आचानण अठैसूं वहीर हुई सो आगलै गांम उतरी ।[6] जीमण करायो ।[7] आपरा लोग हुंता सो सारा बोलाय वात पूछी ।[8] कह्यो–'अबै हूं कासूं करूं ?[9] मांटी छै सु तो साळैसूं टळै नहीं । घोड़ो छोडै नहीं । ताहरां हूं मांटीनूं वरज अर हूं पीहर घोड़ो लेवणनूं आई हुती, सु म्हारी वात पीहर भाई पण मांनी नहीं ।[10] हमैं हूं कासूं करूं ?' ताहरां लोकां कह्यो–'थांहरै दाय आंवै सु करो ।'[11] ताहरां भला-भला ठिकांणा रजपूतांरा हुता तेथ गई, पण केही झाली नहीं ।[12]

ताहरां गांम भेळू रामचंद ईंदो रहै, तठै आचानण गई ।[13] ताहरां रांमचंद ईंदै कह्यो–'तूं म्हारै माथै समी छै । तूं भलांई नूं

---

1 घोड़ी व्या गई है, हमसे धोखा किया, बछड़ा भेज दो । 2 आप बहनोई हैं, इस संबंधको लेकर उसमें (अपनत्वकी) आसक्तिकी है, इसलिये वेम नहीं दूंगा । 3 घोड़ीके बछड़ेको मैं ले आऊंगी । 4 मैं जानूंगी कि मुझे दहेजमें दिया है । 5 तब आचानण अपने भाई विसनदासके यहाँ धरना देकर बैठ गई । 6 तब आचानण यहांसे रवाना होकर अगले गांव ठहरी । 7 वहां भोजन बनवाया । 8 अपने साथमें जो आदमी थे उन सबको अपने पास बुला कर पूछा । 9 अब मैं क्या करूं ? 10 मेरा पति सो तो अपने सालेसे चूकता नहीं और घोड़ा छोड़ता नहीं । भाईके ऊपर चढ़ कर आते हुए पतिको रोक कर मैं यहां पीहरमें अपने भाईके पास घोड़ा लेनेको आई थी, परन्तु पीहरमें मेरी बातको भी भाईने माना नहीं । 11 तुमारे जंचे सो करो । 12 तब वह राजपूतोंके अच्छे-अच्छे ठिकाने थे वहां गई, परन्तु किसीने इसे स्वीकार नहीं किया । 13 तब भेलू गांवमें जहां रामचंद ईंदा रहता है, उसके यहां आचानण गई ।

आव ।'[1] ताहरां रांमचंद ईंदै राखी । घरवास कियो ।[2] ताहरां आचानण दूहो कहै–

> देसी बोर दबूकड़ा, केही* खलां सिरेह ।
> कुंडलरै आचानणै, भेलूरै ईंदेह ।। १[3]

ताहरां ईंदा छै सु सारा हो हथखारै सांतरा थका रहै । यूं करतां छव मास हुवा ।[4]

ताहरां एक दिन सांगमरावरै गांमरो एक जोगी ईंदांरै गांव गयो । जोगो, रांमचंद ईंदारै घरै भिक्षानूं गयो । ताहरां जोगो अलख जगायो । ताहरां जोगीनूं आचानण ओळखियो ।[5] ताहरां आचानण छोकरीनूं मेल्हनै जोगीनूं घर मांहै बुलायो ।[6] ताहरां जोगी कह्यो– 'अरी माई आचानण ! तूं इहां कहां ?' ताहरां आचानण बोली– 'आयसजी ! म्हारी खबर नहीं ?'[7] ताहरां आयस कह्यो–'जु या खबर है जु घोड़ैकूं गई है पीहर, सो घोड़ा ले आवेगी ।' ताहरां जोगीनूं रुपियो १), पड़लो १ दियो । सोहरो राखियो । जीमायो । रात राख, जोगीनूं सीख दीवी ।[8] औ समंचार कह्या–'ठाकुरांनूं कह्या[9]– म्हारो तो थां मुलायजो न कियो, जो म्हारै भाईनूं मारणनै चढिया ।'[10] ताहरां ठाकुरांनूं राख हूं पीहर आई ।[11] ताहरां पीहर वाळां पण म्हारो कुरब राखियो नहीं ।[12] ताहरां म्हनै तो सासरै पीहर कठै ही

---

1 तू मेरे सिरके समान है, तू खुशीसे मेरे यहां आ जा । 2 तब रामचन्द ईंदेने रख कर उससे घरवास किया । 3 दोहेका भावार्थ—अब बोर घोड़ी शत्रुओंके सिरों पर (शत्रुओं पर) दौड़े करना शुरू कर देगी । कुंडल पर और आचानणके कारण भेलूके ईंदों (रामचंद) पर तो निश्चय ही करेगी । 4 अब सभी ईंदे (सांगमरावके चढ़ कर आनेकी प्रतीक्षामें) हाथोंका खार खाए हुए सज्ज होकर रहते हैं । इस प्रकार छः महीने बीत गये । 5 आचानणने जोगीको पहचान लिया । 6 आचानणने दासीको भेज कर जोगीको घरमें बुलवाया । 7 क्या मेरे यहां आनेकी खबर नहीं है ? 8 तब जोगीको एक रुपया और एक वस्त्र दिया । अच्छी तरहसे रखा, भोजन कराया और रात भर रख करके (प्रातः) विदा किया । 9-10 ठाकुरको कहना कि मेरा तुमने कुछ भी मुलाहिजा नहीं रखा और मेरे भाईको मारनेके लिए चढ़ चले । 11 तब ठाकुरको बरज करके पीहर आई । 12 तब पीहर वालोंने भी मेरा कुरब नहीं रखा ।

---

*पाठांतर – काढी ।

ठोड़ नहीं ।[1] तद म्हैं विचार अर रांमचंद ईंदैरै पले आई ।[2] हमैं ठाकुर तो म्हैं दिसिया गई कर जाय ।'[3]

ताहरां जोगी पाछो गयो । जायनै सांगमरावनूं कह्यो–'आचानण कहां ?' ताहरां सांगमराव कह्यो–''वछेरैनूं गई छै ?'[4] ताहरां जोगी कह्यो–'बाबा ! वछेरा दिया नहीं । ताहरां आचानण रीस कर रांमचंद ईंदैरै घरमें बड़ी ।'[5]

ताहरां सांगमराव ऊठ अर नगारो करायो ।[6] सांगमराव कूंडळ ऊपर चढियो । ताहरां भाईयां कह्यो–'जी, हेकरसूं तो बैररो वैर लेग्रो ।'[7] ताहरां भेळू ऊपर चढिया ।

आचानण जोगीनूं सीख दीवी ताहरां पछै थाळी मांहै मूंग घात बाजोट ऊपर राखिया हुंता ।[8] हेक दिन रातरा थाळी मांहिला मूंग कूदण लागा ।[9] ताहरां आचानण रांमचंदरै पगै हाथ देअर जगायो । कह्यो–'ठाकुरां ! उठो । कटक आयो ।' ताहरां रामचंद कह्यो–'जी, कठै छै कटक ?[10] म्हारा भाईयांनूं कई दिन हुवा, जोनसाळिया थका रहै छै ।[11] कटक कोई नहीं ।' तद आचानण कह्यो–'मूंगां सांम्हां देखो ।'[12] ताहरां रांमचंदजी मूंग कूदता दीठा । ताहरां कह्यो–'कासूं छै ?'[13] ताहरां कह्यो–'बोर घोड़ीरै पौड़ांसूं मूंग कूदै छै । घोड़ी थांरी सीममें आई ।'[14] ताहरां रांमचंदजी कोटड़ी आया नै ढोल दरायो ।[15] लोग भेळो हुवो ।[16] ईंदांरै साथ नै सांगमरावरै साथ

---

1 तव मेरे लिये न तो ससुरालमें और न पीहरमें कहीं भी जगह नहीं । 2 तब इस दुविधाका विचार कर रामचंदके पल्ले आ लगी हूं । 3 अब ठाकुर मेरी ओरका ख्याल छोड़ दें । 4 बछेरा लेनेको गई है । 5 इस पर आचानरा रीस कर रामचंद ईंदेके घरमें घुस गई । 6 तब सांगमरावने उठ कर चढ़ाई करने के लिए नगाड़ा बजवाया । 7 पहले एक वार तो स्त्रीका वैर लेग्रो । 8 तव थालीमें मूंग डाल कर बाजोट (पट्टे) पर रखे थे । 9 एक दिन रातको थालीके अंदरके मूंग कूदने लगे । 10 कहाँ है कटक ? 11 मेरे भाइयोंको कई दिन हुए, कवच धारण ही किये रहते हैं । 12 मूंगोंकी ओर देखो । 13 यह क्या बात है ? 14 बोर घोड़ीकी टापोंसे मूंग कूद रहे हैं । घोड़ी तुमारी हदमें आ गई । 15 तव रामचंदने कोटड़ीमें आकरके युद्धका ढोल बजवाया । 16 लोग इकट्ठे हुए ।

लड़ाई हुई ः सात-वीस रजपूतांसूं रांमचंद ईंदो खेत रह्यो ।[1]

ताहरां आचानण आप सांगमरावजीसूं आय मुजरो कियो[2] नै कह्यो–'राज ! हाथ थांहरो छै ।[3] देह ईंदैरो छै ।' ताहरां आचानण हाथ जीमणो[4] काट सांगमरावजीनूं दीन्हो अर आप रांमचंद ईंदै साथै सती हुई ।

पछै सांगमरावजी कुंडळ ऊपर चढिया अनै[5] कहायो–'जु म्हांरो वछेरो देओ ।' ताहरां विसनदास वछेरो टीकै दियो । अर बीजी छोटी बहन हुंती सु सांगमरावजीनूं परणाई ।[6]

पछै विसनदास वीसळदेजी पासै चाकरीनूं गयो । ताहरां वीसळदेजी विसनदासनूं कह्यो–'लांणत छै थांनै ! सांगमराव थांमें घणी कीवी ।'[7] ताहरां विसनदास कह्यो–'राज ! पहुंच सगां नहीं ।'[8] ताहरां राजा वीसळदेजी कह्यो–'फोज हूं देईस ।'[9]

ताहरां विसनदास फोज लेअर वहीर हुवो ।[10] सांगमरावजी तो कुंडळ मांहै सासरै हीज हुंता ।[11] ताहरां कुंडळरा लोकां कुंडळरा दरवाजा विसनदासरै कहै खोल दीन्हा । ताहरां सांगमरावजीसूं लड़ाई हुई ताहरां सांगमरावजी घोड़ी वाढी अर आप कांम आया ।[12] विसनदास सांगमरावजीनूं कूड़ कर मारिया ।[13]

ता पछै सांगमरावजीरै बेटै मूळू वीसळदेजीसूं वैर कियो । हेक पुकार रोज पाटण दोळी वीसळदेजीरै कांनै पड़ै ।[14] वीसळदेजी फोजां घणी ही मेल्ही[15], पण मूळू हाथ आवै नहीं ।

---

1 एक सौ चालीस राजपूतोंके साथ रामचंद ईंदा खेत रहा (मर गया) । 2 तब आचानणने आकर साँगमरावको मुजरा किया । 3 (पाणिग्रह तुमारे साथ किया था इसलिये) हाथ तुमारा है । 4 दाहिना । 5 और । 6 विसनदासने आचानणकी छोटी बहिन थी जिसे सांगमरावके साथ व्याह दी और बछेरा टीकेमें दे दिया । 7 सांगमरावने तुमारेमें बहुत बिताई, तुम्हें लानत है । 8 श्रीमान् ! मैं उससे पहुंच नहीं सकता । 9 सेना मैं दूंगा । 10 विसनदास सेना लेकर रवाना हुआ । 11 सांगमरावजी तो अपनी ससुराल कुंडलमें ही थे । 12 तब सांगमरावजीने अपनी घोड़ीको काट दिया और स्वयं काम आ गये । 13 विसनदासने सांगमरावजीको धोखेसे मारा । 14 एक न एक पुकार हमेशा पाटणमें वीसळदेजीके कानों सुनाई पड़ती रहे । 15 वीसलदेजीने अनेक बार फौजें भेजी ।

ताहरां चारण विसोढो खीची धारू ग्रानळोतरो निवाजियो राजा वीसळदेजी पासै आयो ।[1] ताहरां वीसळदेजी आदर-सनमांन बहोत कियो । ताहरां हेके दिन चोपड़रो रांमत मांडी ।[2] रुपिया हजार-हजाररी बाजी मांडी ।[3] जो राजा हारै तो रुपिया हजार एक चारण विसोढैनूं देवै । अर जो चारण हारै तो राजा वीसळदेजीनूं मूळू आंखियां देखाळै ।[4]

आ विध कर बाजी मांडी ।[5] ताहरां विसोढै कह्यो—'राज ! हूं तो मूळूनूं जाणूं नहीं ।' ताहरां राजा कहियो—'मूळू भलो रजपूत छै । थारो बोलायो आसी ।[6] जो नावै तो नहीं ।[7] तद चोपड़ रमिया । विसोढो हारियो ।

ताहरां विसोढैरै साथै राजा मांणस दिया ।[8] विसोढो मूळूरै गांम गयो । मूळूसूं मिळियो । ताहरां मूळू आदर कर खीच कियो, ताहरां विसोढो जीमै नहीं ।[9] ताहरां मूळू पूछियो–'राज ! जीमो क्युं नहीं ?'[10] ताहरां विसोढै कह्यो—'जु म्हैं तनै राजाजी वीसळदेजी पासै रुपिया हजार मांहै हारियो । जो तूं हेकरसूं वीसळदेजीनूं मुजरो करै तो जीमूं ।'[11] ताहरां कह्यो—'भलो कियो । पण तैं थोड़ैमें हारियो । वीसळदे तो म्हारा रुपिया लाख खरचै तो दूरा । हूं हाथ न आऊं ।[12] पण थारै कहै हालीस ।'[13] ताहरां विसोढो जीमियो । रात उठै रह्यो ।

चारण पाछो वीसळदेजी पासै गयो । जायनै कह्यो—'बाप ! मूळू आवै नहीं । तद मूळूरा राजा विखोड़ किया ।[14]

---

1 खीची धारू आनलोतका कृपापात्र चारण विसोढा राजा वीसलदेजीके पास आया । 2 तब एक दिन चौपड़ खेलनी शुरू की । 3 हजार-हजार रुपयेकी शर्तकी बाजी लगाई । 4 यदि राजा हार जाये तो एक हजार रुपये विसोढा चारणको दे और जो चारण हार जाय तो वह सांगमरावके बेटे मूलूको राजा वीसलदेको आंखोंसे दिखादे । 5 इस प्रकार तै करके बाजी शुरू की । 6–7 तेरा बुलवाया आ जायगा और नहीं आये तो नहीं सही । 8 तब विसोढाके साथमें राजाने मनुष्य दिये । 9 तब मूलूने (विसोढाका) आदर किया और भोजनके लिये खीच बनवाया । परन्तु विसोढा भोजन नहीं करता (खीच=बाजरी को ऊखलमें कूट कर पकाया हुआ एक भोजन) । 10 भोजन क्यों नहीं करते ? 11 तू एक बार वीसलदेजीको मुजरा करना मंजूर करदे तो जीम लूं । 12 परन्तु तूने मुझे थोड़े में हार दिया । वीसलदे तो लाख रुपये खर्च करे तो भी मैं तो दूर, मैं उसके हाथ नहीं आऊं । 13 परन्तु तेरे कहनेसे चलूंगा । 14 तब राजाने मूलकी हँसी (निंदा) की ।

ताहरां हेक दिन, सोमवाररै दिन राजा वीसळदेजी चौगान खेलणनूं चढिया ।[1] ताहरां मूळू पण तयार हुवो, फोजां मांहै आय भिळियो[2] अर पूछियो—'जु, विसोढो चारण कठै छै ?'[3] लोकां बतायो—'जु, राज ! राजा हाथी असवार छै, तठै वात करतो हालै छै ।'[4] ताहरां मूळू चलाय घोड़ो अर विसोढैजीसूं आय रांम-रांम कियो ।

ताहरां विसोढो दूहो कहै—

वीसोढा ! आ बार, वीसल्दे कहिजै विगत ।
ओ मूळू असवार, सगळा देखै सांगउत ।।[5] १

ताहरां विसोढै कह्यो–'महाराज ! मूळू हाजर छै ।' तद राजा देखियो । मूळू मुजरो कियो ।

फेर दूहो—

जाडी फोजां जेथ, वीसल् की चहुंवे वलां ।
सेल तुहारो तेथ, सुरतांणै उर सांगउत ।।[6] २

कोई सुरतांण वीसळदेरी फोजां मांहै हुतो, तिणनूं मार चालतो हुवो ।[7] वांसैसूं फोजां विदा हुई–'जु, जावण न पावै ।'[8] आगै जावतां वीचमें हेक खाळ आयो[9], ताहरां मूळूरो घोड़ो तो पार हुवो ।

---

1 एक बार सोमवारके दिन राजा वीसलदे मैदानमें खेलनेके लिये चढ़ा । 2 सेनामें आकर शामिल हुआ । 3 विसोढा चारण कहां है ? 4 जहां राजा हाथी पर सवार है वहां वह उससे बात करता हुआ चल रहा है । 5 (दोहेकी उक्ति मूलूकी है, विसोढाकी नहीं होनी चाहिये ।) दोहेका भावार्थ मूळूकी उक्तिमें—

हे विसोढा ! तू वीसलदेको इसी समय मेरे परिचय सम्बन्धी सब वृत्त कह दे और कह दे कि यह घोड़े पर सवार सांगमरावका पुत्र मूलू आ गया है. और उसे अब सभी देख रहे हैं ।

(भावार्थ, विसोढाकी उक्तिमें—विसोढा कहता है कि हे वीसलदे ! अब तुझे उसका परिचय दे रहा हूं । यह घोड़े पर सवार सांगमरावका पुत्र मूलू तेरे सामने उपस्थित है और उसे अब सभी देख रहे हैं ।)

6 दोहेका भावार्थ विसोढाकी उक्ति—

हे सांगमरावके पुत्र मूलू ! वीसलदेने जिस जगह पर बहुत सी फौजें चारों ओर खड़ी की हैं, उनमें वह फौजोंका सरदार सुरतान खड़ा है, उसका उरस्थल तेरे सेलकी प्रतीक्षा कर रहा है । 7 (विसोढाके संकेतानुसार) वीसलदेकी फौजोंमें कोई एक सुरतान था उसको मार करके मूलू चलता बना । 8 पीछेसे फौजें चढीं और उन्हें आज्ञा हुई कि वह जाने न पावे । 9 आगे जाते हुए वीचमें एक नाला आया ।

वीसळदेजीरा असवार उलै पार खड़ा रह्या ।[1] आ खबर राजानूं आई–'जु मूळू साबतो गयो ।'[2] ताहरां राजा फुरमायो–'म्हांरा घोड़ांसूं मूळूरो घोड़ो आगै नीसरियो[3] तो म्हांरा घोड़ांरा कांन काटो ।'[4] ताहरां विसोढो दूहो कहै—

तेजालग तोखार, बाला वीसलदेव कै ।
ऊपरला असवार, सांकै भय सांगावतै[5] ।। ३

राजा घोड़ांरा कांन वाढता मनै किया ।[6]

ताहरां विसोढैनूं कह्यो राजा–'विसोढा ! तैं म्हांनै कह्यो नहीं जु मूळू आसी ।'[7] ताहरां विसोढै कह्यो–'राज ! यो क्यांकर कहीजै ।[8] मूळू म्हनै कह्यो–'जु, तूं म्हनै थोड़ा रुपिय में हारियो । जो म्हारा तो राजा लाख रुपिया देवै, जो हूं निजर पड़ूं तो ।'[9]

ताहरां राजा फेर बाजी मांडी । राजा कह्यो–'म्हे हारां तो लाख देवां । अर थे हारो तो म्हांनूं मूळू पासा कोट मांहै मुजरो करावो ।'[10] ताहरां विसोढै कह्यो–'कोट मांहै किसी विध आवै ?' तद राजा कह्यो–'आवै तो आवै । नहीं तो भलां । नहीं आवै ।'

ताहरां विसोढो फेर हारियो । ताहरां विसोढो फेर मूळू पासै गयो नै मूळूनूं विसोढै कह्यो–'म्हैं तोनूं लाख रुपियां मांहै हारियो, अर कोट मांहै आवणो ।'[11] ताहरां मूळू कह्यो–'जु, म्हनै कोटमें आवण कुण देवै ?[12] अर जे आयो जासी तो तलास घणो ही करीसूं ।'

---

1 मूलूका घोड़ा तो पार हो गया परन्तु वीसलदेजीके सवार तो इस पार खड़े रह गये। 2 जब यह खबर राजाको मिली कि मूलू सकुशल निकल गया । 3 हमारे घोड़ोंसे मूलूका घोड़ा आगे निकल गया । 4 हमारे घोड़ोंके कान काट लो ।

5 दोहेका भावार्थ—

विसोढाने कहा—हे वीसलदे ! तेरे प्रिय घोड़े तो बहुत तेज गति वाले हैं । किन्तु उनके ऊपरके सवार सगतावत मूलूके आतंकसे डर गये हैं । (इसलिए वे आगे नहीं बढ़े ।) 6 तब राजाने घोड़ोंके कान काटते हुओंको मना कर दिया । 7 तूने हमको कहा नहीं कि मूलू आ जायगा । 8 राजन् ! यह बात कैसे कही जाय ? 9 मैं यदि नजरमें आ जाऊं तो राजा तो मेरे लिए लाख रुपए भी शर्त पर लगा दे । 10 यदि तुम हार जाओ तो मूलूसे मुझे कोटमें मुजरा कराओ । 11 तुमारे कोट में आनेकी बात पर लाख रुपयोंकी शर्त पर मैंने तुमको हारा है । 12 मुझे कोटमें कौन आने दे ?

ताहरां विसोढो पाछो आयो। आयनै राजानूं कह्यो–'बाप ! मूळू कोटमें किसी तरह आवै ? म्हैं तो घणो ही कह्यो, पण आवै नहीं।'[1] ताहरां अठै गोरै वादळ मूळूरा विखोड़ किया–'जु जाह रे, भला रजपूत ! आवणो हुंतो।[2]

ताहरां हेक दिन, भाद्रवैरा दिन हुंता। मूळू घोड़ै चढ पाटण आयो, सो माळीरै घररै पिछोकड़ै आय ऊभो रह्यो।[3] पाछै परनाळो हुतो अर मेह वरसतो हुतो, तै परनाळा नीचै मूळू माथै ढाल देय ऊभो रह्यो।[4] ताहरां माळीनूं मालण कह्यो–'देखो छो, परनाळो किसी विध वाजै छै ?'[5] ताहरां माळी ऊठ अर देखै तो हेक असवार घोड़ै चढियो ऊभो छै, ताहरां माळी मालणनूं कह्यो–'देख ! कोई असवार ऊभो छै। ताहरां मालण कह्यो–'ओ तो म्हारै मूळू सारीखो छै, जु बापरै वैरनूं धुखै छै।'[6] माळी ऊठ देखै तो मूळू हीज छै।

ताहरां मूळूनूं माळी घर मांहै भीतर लियो। घोड़ो भीतर लियो, बाधो।[7] मूळूनूं जीमायो।[8] रात माळी मूळूनूं घर मांहै राखियो। प्रभात हुवो तरां मालण भीतर राजानी सेवाना फूल ले हाली।[9] ताहरां मूळू कह्यो–'हेकर सौं हों पण राजानै देखीस।'[10] ताहरां मूळू पण जनाना कपड़ा पहरिया।[11] फूलांरी छाब माथै लीवी।[12] फूलां-में कटारी घाती अनै बेहूं हजूर गया।[13] राजा भीतर बैठो थो। ताहरां चारण विसोढो पण हजूर मांहै छै। इतरैमें मालण छाब लेय भीतर गई। ताहरां वीच गोरो वादळ बैठा हुंता।[14] ताहरां मूळू

---

1 मूलू कोटमें किस प्रकार आये ? मैंने तो बहुत कहा परंतु वह नहीं आता। 2 तब यहां गोरे और बादलने मूलूकी हंसी (निंदा) की कि जारे भला रजपूत ! आ जाना चाहिये था। 3 सो मालीके घरके पीछेकी ओर आकर खड़ा रहा। 4 पीछे पनाला था और मेह बरस रहा था। मूलू उस पनालेके नीचे सिर पर ढालको लगा कर खड़ा रहा। 5 देखते हो ! यह पनाला ऐसी आवाज क्यों कर रहा है ? 6 यह तो मेरे मूलूके जैसा लगता है जो अपने बापके वैरका वदला लेनेके लिए खीज रहा है। 7 घोड़ेको अंदर लिया और बांध दिया। 8 मूलूको भोजन कराया। 9 प्रभात हुआ तब मालिन भीतरसे राजाकी सेवा-पूजाके लिये फूल ले कर चली। 10 एक बार मैं भी राजाको देखूंगा। 11 तब मूलूने भी जनाना कपड़े पहिने। 12 फूलोंकी छावड़ी सिर पर ली। 13 फूलोंमें कटारी रख दी और दोनों राजाकी हुजूरमें गये। 14 तब बीचमें गोरा और बादल बैठे हुए थे।

गोरै वादळनूं दीठा ।[1] ताहरां मूळूरा पग ठांहै पड़ै नहीं । ताहरां गोरै कह्यो–'वादळजी ! देखो छो ! मालणरा पग ठाहै पड़ै न छै ।[2] सु जांणां सांगमरावरो बीज छै ।'[3] ताहरां वादळ कहै–'हवै-हवै ! माळीरै घरै सांगमरावजीरो डेरो हुंतो !'[4] ताहरां इतरो[5] सुणनै मूळू भीतर गयो । हजूर जायनै फूलांरो छाब उतारी । मूळू उठै विसोढैनूं देख रांम-रांम कियो ।[6] ताहरां विसोढो ऊठ ऊभो हुवो । सुभराज कियो ।[7] ताहरां विसोढै कह्यो–'महाराज ! मूळू मुजरो कियो छै ।'[8] इतरै तो मूळू कटारी लेयनै राजा पासै जाय बैठो ।[9] कह्यो–'जो राज ऊठिया तो मारीस ।'[10] ताहरां राजा कह्यो–'किही भांत छाडै ही ?'[11] मूळू छाडै नहीं । ताहरां मूळू कह्यो–'थांरी बेटी देवो तो छाडूं । बिना बेटी दियां छाडै नहीं ।'[12] ताहरां राजा कह्यो–'बेटी दियां बिना तूं म्हनै छाडै नहीं ?' ताहरां राजा घणा ही जतन किया, पण मूळू मांनै नहीं । ताहरां राजा बेटी कबूली । मूळू राजारी बेटी उठैहीज परणी ।[13] श्री ठाकुरद्वारै मांहै परणीज, उवैहीज घड़ी कुंवरीरो हाथ पकड़ महल मांहै जाय सूतो ।[14] ताहरां राजा वीसळदेजीनूं वडो धोखो हुवो ।[15] जु मूळू घणी कीवी ।[16]

ताहरां रात आधीरै समै गोरो वादळ हजूर आया । आयनै कह्यो–'म्हांसूं तो आ वात सही न जाय । 'जु थांहरी बेटी मूळू जोरा-

---

1 तब मूलूने गोरा और बादलको देखा । 2 तब गोरेने कहा—बादलजी ! देखते हो ! मालिनके पांव ठिकाने नहीं पड़ रहे हैं । 3 ऐसा मालूम होता है जैसे कोई सांगमरावका बीज (संतति) है । 4 तब बादल कहता है कि–हां-हां, मालीके घर सांगमरावजीका डेरा था । 5 इतना । 6 मूलूने उधर विसोढ़ाको देख करके राम-राम (जुहार) किया । 7 तब विसोढ़ा खड़ा हुआ और शुभराज किया । (शुभराज=याचकोंकी ओरसे कहा जाने वाला एक आशीर्वादात्मक वचन ।) 8 महाराज ! मूलूने मुजरा किया है । 9 इतनेमें तो मूलू कटारी लेकर राजाके पास जा बैठा । 10 जो आप खड़े हुए तो मार दूंगा । 11 किसी भी प्रकार छोड़े भी ? 12 तुमारी लड़की मुझे दो (व्याहो) तो छोड़ूं । बेटीको दिए बिना छोड़ूं नहीं । 13 तब राजाने बेटी देना कबूल किया और वहीं पर राजाकी बेटीको मूलूने व्याहा । 14 (महलोंके) श्रीठाकुरद्वारामें विवाह कर उसी समय कुंवरीका हाथ पकड़ और महलमें लेजाकर सो गया । 15-16 तब राजा वीसलदेजीको बड़ा पश्चाताप हुआ कि मूलूने खूब की (गजबकी बात कर दी) ।

वरी परणी, सु म्हे तो मूळनूं मारसियां ।[1] बेटी किणी बीजैनूं परणा- विस्यां ।'[2] ताहरां राजा वीसळदे कह्यो–'थे जांणो ।'[3] ताहरां ग्रै दोनूं ही मूळ ऊपर ग्राया । ग्रायनै कह्यो–'मूळ ! संभाय ।'[4] ताहरां मूळ सोळंकणीनूं कह्यो–'जु तैसौं ऊबरूं ।'[5] ताहरां सोळंकणो कह्यो–'हूं हाजर छूं ।' तद मूळ कह्यो–'थांरा कपड़ा देवो ।' ताहरां मूळ जनाना कपड़ा पहर ऊभो रह्यो । ताहरां सोळंकणी परधांनांनूं कह्यो–'जु म्हनै तो नीसरण देवो ।'[6] ताहरां गोरो वादळ दूर हुवा । मूळ नीसर गयो ।[7] सोळंकणी भीतर किंवाड़ कुलफ कर लिया ।[8] गोरो वादळ किंवाड़रै वारै ग्रांण ऊभा रह्या ।[9] मूळ तो जाय घोड़ै चढ चालतो हुवो । इंयां किंवाड़ खोलिया, तो भीतर सोळंकणी बैठी छै ।[10] ताहरां हाथ पीटै ऊभा रह्या ।[11] मूळ घरै गयो !

पछै मास २ दोयर सोळंकणीरै पेट ग्राधांन रह्यो मूळरो । ताहरां सोळंकणीनूं परणावणी मांडी ।[12] सो जियैनूं देवै सु कोई लेवै नहीं ।[13] ताहरां सांवतसिंघ सोनगरै जाळोररै धणी लीवी । ताहरां परणाय दीवी ।[14] ताहरां मूळ कह्यो–म्हारो वैर सोळंकियांसूं चूको जु ईयां बेटी परणाई ।[15] हमैं मूळरो वैर सोनगरांसूं वाधो ।[16] ताहरां

---

1 हमारेसे तो यह बात सहन नहीं की जाती कि तुमारी बेटीको मूलूने जोरावरीसे व्याह ली । सो हम तो मूलूको मार देंगे । 2 ग्रापकी बेटी किसी दूसरेको व्याहेंगे । 3 तो तुम जानो । 4 तब ये दोनों मूलूके ऊपर ग्राये ग्रौर कहा कि मूलू सम्हल जाग्रो । 5 मूलूने सोलंकिनीको कहा कि ग्रब तो तेरे बचाये ही बच सकता हूं । 6 मुझे तो निकलने दो । 7 मूलू निकल गया । 8 सोलंकिनीने भीतरसे किंवाड़ ताला लगा कर बंद कर दिये । 9 गोरा ग्रौर बादल किंवाड़के बाहिरकी ग्रोर ग्राकर खड़े रहे । 10 इन्होंने किंवाड़ खोले तो भीतर तो सोलंकिनी बैठी है । 11 तब ये हाथ पीट कर खड़े रहे । 12 सोलंकिनीको जब मूलूका गर्भ दो मासका हो गया था, तब सोलंकिनीका विवाह (पुनर्लग्न) करने लगे । 13 सो जिसको देनेका विचार करे वह उसे लेना स्वीकार नहीं करे । 14 तब जालोरके स्वामी सांवतसिंह सोनगरेने लेना स्वीकार किया । उसके साथ उसका विवाह (पुनर्लग्न) कर दिया । 15 मूलूने कहा कि सोलंकियोंसे मेरा बैर चुकता हो गया क्योंकि उन्होंने तो ग्रपनी बेटी मुझे व्याह दी । 16 ग्रब मूलूका बैर सोनगरोंसे बँधा ।

मूळ रोजीना सोनगरां ऊपर दोड़ै । पण जाळोरसूं पहुंच सगै नहीं ।[1]

हेक दिन सोनगरांरै देवीजी श्री ग्रासापुरीजीरी पूजा हुंती दसराहैरै दिन । सोनगरांरी वडारण पूजण ग्राई हुंती ।[2] देवीजीरो द्वारो गढसूं नीचै हुंतो ।[3] सु मूळ देवी-द्वारा ग्रागै ग्राय बैठो। ताहरां वडारण पूजा करणनूं ग्राई । ताहरां मूळ वडारणनूं पकड़ ग्रापरी दोवड़ मांहै पोट बांध ग्रर उवैरा कपड़ा पैहरनै कोट ऊपर चढियो ।[4] महल मांहै भीतर तुळसीरो थांणो हुंतो तठै जाय बैठो ।[5] कटारी हाथ मांहै छै । तद पोहर १ एक रात गई । ताहरां सांवतसी ग्रापरैं महल गयो। ताहरां जीमणनूं थाळ ग्रायो ।[6] ताहरां सांवतसी ग्राप कह्यो–'मूळरै बेटैनूं उरहो ल्यावो ।'[7] सोळंकणीरै मूळरो बेटो हुवो हुंतो ।[8] ताहरां सोळंकणी कह्यो–'ग्रो तो सोय रह्यो ।'[9] ताहरां सांवतसीजी कह्यो–'जगाय ले ग्रावो, ज्युं भेळो जीमावूं । भेळो जीमियां ईयैरी ग्रोंठ खावूं तो म्हैं में ही कूं ही सत ग्रावै ।[10] मूळ वडो सांवत छै।[11] हेकरसूं मो ऊपर जरूर ग्रासी ।'[12] मूळरो घणोहीज सुकर सांवतसी बोलियो।[13] ताहरां मूळ जांणियो–ईयैनूं मारूं नहीं ।'[14] मूळ ऊठ ग्रर ग्राय रांम-रांम कियो। कह्यो–'न मारूं । वैर भागो ।'[15] तद सांवतसो कह्यो–थांरी बैर ले ।'[16] तद मूळ कह्यो–'म्हैं तनै दीवी ।'[17] ताहरां मूळनूं दूजो

---

1 ग्रब मूलू हमेशा सोनगरोंके ऊपर दौड़ता है, परंतु जालोरसे पहुंच नहीं सकता । (जालोरके सोनगरे काबूमें नहीं ग्राते ।) २ एक दिनका ग्रवसर, दशहरेके दिन सोनगरोंकी देवी श्री ग्राशापुरीजीकी पूजा थी सो सोनगरोंकी वडारण (दासी) पूजनेको ग्राई थी । 3 देवीजीका मंदिर गढ़के नीचे था । 4 तब मूलूने वडारणको पकड़ करके ग्रपनी दोवड़में उसकी गठरी बांध दी ग्रौर उसके कपड़े पहिन कर गढ़ पर चढ़ा । 5 महलके ग्रंदर जहां तुलसीका थांवला था उसकी ग्रोटमें जा बैठा । 6 भोजनके लिए थाल परोसकर लाया गया । 7 मूलूके बेटोको ले ग्राग्रो । 8 सोलंकिनीको मूलूसे बेटा उत्पन्न हुग्रा था । 9 वह तो सो गया है । 10 जगा करके ले ग्राग्रो सो ग्रपने सामिल बिठा कर उसको खिलाऊं। सामिल बैठ कर खिलानेसे मैं भी इसकी जूठन खाऊं तो मेरेमें भी कुछ सत ग्राए (सत = १ मनुष्यत्व। २ रजस। ३ पराक्रम, वीरत्व)। 11 मूलू बड़ा सामंत है। 12 एक बार मेरे पर जरूर चढ कर ग्रायेगा। 13 सांवतसीने मूलूके संबंधमें बहुत ही ग्रच्छे भाव व्यक्त किये। 14 तब मूलूने विचार किया कि इसको ग्रब नहीं मारूं। 15 मूलूने वहांसे उठ ग्रौर सांवतसीके पास ग्राकर राम-राम (प्रणाम) किया। ग्रौर कहा कि तुमको मारूंगा नहीं। वैर था सो मिट गया। 16 तुमारी स्त्रीको लेलो। 17 मूलूने कहा कि मैंने तुमको देदी

वीमाह दियो ।[1] तद मूळू आपरो बेटो मांगियो ।[2] पण सांवतसी दियो नहीं । कह्यो–ओ थांरो बेटो छै । म्हनै घणी भीड़ पड़सी तद म्हारै वडै कांम आवसी ।'[3] ताहरां मूळू बेटैनूं पण दे गयो ।[4]

बेटैरो नांम कांधळ । तिको कांधळ सांवतसी पासै रहै । जनांनै नावै । हथियार कपड़ो और ही वस्तु जनांनै नांवै हुवै सु नहीं ढाबै ।[5]

युं करतां कांधळ रोज सोनैरी थाळी मांहै जीमै । रोज गोळियैसं थाळी भांजै ।[6]

हेक दिन कान्हड़देरी मा कह्यो– रोज थाळी भांज ना, भाठै ऊपर ठरकाय ।'[7] ताहरां उवै ऊपर ऊहीज गोळियो वाह्यो । कांनरै लागो, कांन तूटो । धड़ हुंती ढह पड़ी । रांणी क्युं ही कह्यो नहीं ।[8]

इसड़ै अलावदीन जाळोर ऊपर आयो । सोनगरांसूं लड़ाई हुई । कांधळ खांडांरै मुंहडै हुतो, सु लड़तां सात-वीसी खांडा भागा । खांडा खूटा । कटारी पकड़ अर कांम आयो* ।[10]

---

1 तब मूलूका दूसरा विवाह कर दिया । 2 फिर मूलूने अपने पुत्रको मांगा । 3 कहा कि यह लड़का तुम्हारा है, परंतु मेरेमें अति संकट पड़ेगा तब यह मेरे वड़ा काम आयेगा । 4 तब मूलू अपने बेटेको भी दे गया । 5 बेटेका नाम कांधल जो सांवतसीके पास ही रहता है । जनांनामें नहीं आता है । शस्त्र, वस्त्र आदि कोई वस्तु स्त्री नामपरक होती है, उसे ग्रहण नहीं करता । 6 इस प्रकार रहते हुए कांधल नित्य सोनेकी थालीमें भोजन करता है और (स्त्रीलिंग वस्तु होनेके कारण) नित्य गुलेलसे तोड़ देता है । 7 एक दिन कान्हड़देकी मा ने कहा कि इस प्रकार पत्थरसे ठरका कर नित्य थालीको मत तोड़ । 8 तब उसके ऊपर ही गुलेल मार दी । कानके लगा सो कान टूट गया और धड़ सहित गिर पड़ी, परंतु रानीने कुछ भी नहीं कहा । 9 उन्हीं दिनों अलाउद्दीन जालोर पर चढ कर आया । 10 कांधल खांडों (शस्त्रों) के सम्मुख था, सो कांधलके लड़ते हुए १४० खांडे टूट गये; तब कटारी (स्त्रीलिंग शस्त्र) पकड़ कर काम आ गया ।

---

*डाह्याभाई पीताम्बरदास देरासरी द्वारा गुजरातीमें रूपान्तरित 'कान्हड़दे प्रबन्ध' में भी कांधलके सम्बन्धमें कवि पद्मनाभने यही बात कही है—

सहु पहेलां राये मोकल्यो, धिंगाणे कांधल भडभडायो । २०६
कटक तुरक नुं सूडयुं भलुं, आठ पहोर धिंगाणुं थयुं । (२०७–१)

× × ×

वाळे हुमलो हल्लो करतो, कांधल लड़तो दीठो । २०९

तद मा कह्यो–'बेटा कांधळ ! जो इम जांणती तो खांडांसूं घर भरावूं ।'[1] ताहरां कांधळ कहै–माजी ! न जांणो वीरमरी मा अर कान्हड़देरो महळ तैरै गोळियैरी दूं हूं° ? म्हैं तो तैहीज दिन कही हुंती ।[2]

इति वात सांगमराव राठोड़री संपूर्ण ।

॥ शुभं भवतु । कल्यांणमस्तु ॥

---

1 तब मा ने कहा बेटा कांधल ! ऐसा जानती तो खांडोंसे घर भरवा देती । 2 तब कांधल कहता है कि माजी ! वीरमकी माता और कान्हड़देकी पत्नी इन्हें गुलेलकी मैं मारूं ? (यह कैसे हो सकता है ? मेरी प्रतिज्ञाको खंडित होती हुई देख कर क्रोधावेशमें इस आश्चर्यपूर्णं अघटित कामको करके) मैंने तो उसी दिन आपसे कह दिया था । फिर भी आपने नहीं जाना ।

[शेष पृ० २९३ का]

राय कहे आगळ अम कांधल, जोधो आम न जाण्यो
कांगरे कोठो भरी ज नाखे, अेवुं कही वखाण्यो । २१०
चढी रसे वीर कांधल बोले, रायजी जाण न जाण
प्रथम थी अमे सहु दिन अेवा, आ वेळा न वखाण । २११

मुंहता नैणसीरी ख्यात (हमारे द्वारा सम्पादित) भाग १, पृ० २१६ से २२६ तकमें अलाउद्दीन द्वारा सोमइया महादेव (सोमनाथ महादेव)को गाड़ेमें डाल कर ले जाते हुए कान्हड़देसे जालोरमें जो युद्ध हुआ है, वहां भी कांधलकी वीरताका उल्लेख पठनीय है ।

°कई प्रतियोंमें 'छूं' पाठ है जो वर्तमानकालिक उत्तमपुरुषकी क्रियाका सूचक है। भूतकालिक घटनाका उल्लेख होनेसे 'हूं' पाठ ठीक जँचता है, जो सर्वनाम उत्तमपुरुषके कर्त्ता-का रूप है ।

मुद्रक : राज्य केन्द्रीय मुद्रणालय, जयपुर

मुद्रक : राज्य केन्द्रीय मुद्रणालय, जयपुर